Ce Livre appartien
a Martin degraix
a La Boucherie

Ce 19 juin 1826—


Quotiescumque feceritis in mei memoriam facietis
RÈGLES, STATUTS
ET OFFICE
DES COMPAGNIES
DES PÉNITENS
DU TRÈS-AUGUSTE
ET TRÈS-SAINT SACREMENT
DE L'AUTEL.

# BRÉVIAIRE

A L'USAGE

## DE LA CONFRÉRIE

DES

# PÉNITENS BLANCS

***DE S. LAURENT-LES-GRENOBLE,***

**Et autres Confréries érigées sous le vocable**

***DU TRÈS-AUGUSTE ET TRÈS-SAINT SACREMENT DE L'AUTEL;***

CONTENANT l'Office du très-Saint Sacrement, celui de la Sainte Vierge, et autres Offices des principales Fêtes, selon le Bréviaire Romain; les Hymnes et Antiennes propres des Dimanches, Fêtes et jours fériés de l'année; et les Prières pour le Roi.




**A LYON,**

**CHEZ THÉODORE PITRAT, IMPRIMEUR-LIBRAIRE.**

*M. DCCC. XVIII.*

**AVEC PERMISSION DU CLERGÉ.**

# DU JOUR DE PAQUES

## *ET DES FÊTES MOBILES.*

LA Fête de Pâques est la principale des Fêtes mobiles, c'est-à-dire, des Fêtes qui changent de jour toutes les années. Cette grande Fête se célèbre toujours le Dimanche après le 14.e jour de la Lune, qui arrive ordinairement dans l'équinoxe du Printemps, fixé par l'Eglise au 21 de Mars, ou après l'équinoxe. Le changement annuel de cette Fête fait changer toutes les autres Fêtes qui doivent précéder ou suivre celle de Pâques; ainsi on peut compter en rétrogradant six Dimanches devant Pâques, pour trouver le premier Dimanche de Carême, le Mercredi des Cendres, la Quinquagésime, la Sexagésime et la Septuagésime : on peut de même compter les Dimanches après Pâques, et l'on trouvera facilement l'Ascension, la Pentecôte, et les autres Fêtes, etc.

Le premier Dimanche de l'Avent doit être le quatrième avant Noël, et par conséquent le plus proche de la Fête de Saint André, c'est-à-dire, celui qui est après le 26 Novembre.

# TABLE DU TEMPS.

| Années de Grace. | Lettres Dominicales. | Epacte. | Nombre d'Or. | Septuagésime. | Les Cendres. | Pâques. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1806 | e | xj | 2 | 2 Févr. | 19 Févr | 6 Avril |
| 1807 | d | xxij | 3 | 25 Janv. | 11 Févr. | 29 Mars |
| 1808 | c b | iij | 4 | 7 Févr | 2 Mars | 17 Avril. |
| 1809 | A | xiv | 5 | 29 Janv | 15 Févr. | 2 Avril. |
| 1810 | g | xxv | 6 | 18 Févr | 7 Mars | 22 Avril. |
| 1811 | f | vj | 7 | 10 Févr | 27 Févr. | 14 Avril. |
| 1812 | e d | xvij | 8 | 26 Janv | 12 Févr. | 29 Mars. |
| 1813 | c | xxviij | 9 | 14 Févr. | 3 Mars | 18 Avril. |
| 1814 | b | ix | 10 | 6 Févr | 23 Févr. | 10 Avril. |
| 1815 | A | xx | 11 | 22 Janv. | 8 Févr. | 26 Mars. |
| 1816 | g f | j | 12 | 11 Févr | 27 Févr. | 14 Avril. |
| 1817 | e | xij | 13 | 2 Févr. | 19 Févr. | 6 Avril. |
| 1818 | d | xxiij | 14 | 18 Janv. | 4 Févr | 22 Mars. |
| 1819 | c | iv | 15 | 7 Févr. | 24 Févr. | 11 Avril. |
| 1820 | b A | xv | 16 | 30 Janv. | 16 Févr. | 2 Avril. |
| 1821 | g | xxvj | 17 | 18 Févr | 7 Mars | 22 Avril. |
| 1822 | f | vij | 18 | 3 Févr | 20 Févr | 7 Avril. |
| 1823 | e | xviij | 19 | 26 Janv. | 12 Févr | 30 Mars. |
| 1824 | d c | * | 1 | 15 Févr. | 3 Mars | 18 Avril |
| 1825 | b | xj | 2 | 30 Janv. | 16 Févr. | 3 Avril. |
| 1826 | A | xxij | 3 | 22 Janv. | 8 Févr. | 26 Mars |
| 1827 | g | iij | 4 | 11 Févr. | 28 Févr. | 15 Avril. |
| 1828 | f e | xiv | 5 | 27 Janv | 13 Févr | 6 Avril. |
| 1829 | d | xxv | 6 | 15 Févr. | 4 Mars | 19 Avril. |
| 1830 | c | vj | 7 | 7 Févr. | 24 Févr | 11 Avril. |
| 1831 | b | xvij | 8 | 30 Janv. | 16 Févr. | 3 Avril. |
| 1832 | A g | xxviij | 9 | 19 Févr. | 7 Mars | 22 Avril. |
| 1833 | f | ix | 10 | 3 Févr. | 20 Févr | 7 Avril. |
| 1834 | e | xx | 11 | 26 Janv. | 12 Févr. | 30 Mars. |
| 1835 | d | j | 12 | 15 Févr | 4 Mars | 19 Avril. |
| 1836 | c b | xij | 13 | 31 Janv. | 17 Févr. | 3 Avril. |
| 1837 | A | xxiij | 14 | 22 Janv | 8 Févr. | 26 Mars. |
| 1838 | g | iv | 15 | 11 Févr | 28 Févr. | 15 Avril. |
| 1839 | f | xv | 16 | 27 Janv. | 13 Févr. | 31 Mars. |
| 1840 | e d | xxvj | 17 | 16 Févr. | 4 Mars | 19 Avril. |

# DES FÊTES MOBILES.

| *Années de Grace.* | *Ascension.* | *Pentecôte.* | *Fête-Dieu.* | *Indiction.* | *Dimanches après la Pentecôte.* | *Premier Dimanche de l'Avent.* |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1806 | 15 Mai. | 25 Mai. | 5 Juin. | 9 | 26 | 30 Nov. |
| 1807 | 7 Mai. | 17 Mai. | 28 Mai. | 10 | 27 | 29 Nov. |
| 1808 | 26 Mai. | 5 Juin. | 16 Juin. | 11 | 24 | 27 Nov. |
| 1809 | 11 Mai. | 21 Mai. | 1 Juin. | 12 | 27 | 3 Déc. |
| 1810 | 31 Mai. | 10 Juin. | 21 Juin. | 13 | 24 | 2 Déc. |
| 1811 | 23 Mai. | 2 Juin. | 13 Juin. | 14 | 25 | 1 Déc. |
| 1812 | 7 Mai. | 17 Mai. | 28 Mai. | 15 | 27 | 29 Nov. |
| 1813 | 27 Mai. | 6 Juin. | 17 Juin. | 1 | 24 | 28 Nov. |
| 1814 | 19 Mai. | 29 Mai. | 9 Juin. | 2 | 25 | 27 Nov. |
| 1815 | 4 Mai. | 14 Mai. | 25 Mai. | 3 | 28 | 3 Déc. |
| 1816 | 23 Mai. | 2 Juin. | 13 Juin. | 4 | 25 | 1 Déc. |
| 1817 | 15 Mai. | 25 Mai. | 5 Juin. | 5 | 26 | 30 Nov. |
| 1818 | 30 Avr. | 10 Mai. | 21 Mai. | 6 | 28 | 29 Nov. |
| 1819 | 20 Mai. | 30 Mai. | 10 Juin. | 7 | 25 | 28 Nov. |
| 1820 | 11 Mai. | 21 Mai. | 1 Juin. | 8 | 27 | 3 Déc. |
| 1821 | 31 Mai. | 10 Juin. | 21 Juin. | 9 | 24 | 2 Déc. |
| 1822 | 16 Mai. | 26 Mai. | 6 Juin. | 10 | 26 | 1 Déc. |
| 1823 | 8 Mai. | 18 Mai. | 29 Mai. | 11 | 27 | 30 Nov. |
| 1824 | 27 Mai. | 6 Juin. | 17 Juin. | 12 | 24 | 28 Nov. |
| 1825 | 12 Mai. | 22 Mai. | 2 Juin. | 13 | 26 | 27 Nov. |
| 1826 | 4 Mai. | 14 Mai. | 25 Mai. | 14 | 28 | 3 Déc. |
| 1827 | 24 Mai. | 3 Juin | 14 Juin. | 15 | 25 | 2 Déc. |
| 1828 | 15 Mai. | 25 Mai. | 5 Juin | 1 | 26 | 30 Nov. |
| 1829 | 28 Mai. | 7 Juin | 18 Juin | 2 | 24 | 29 Nov. |
| 1830 | 20 Mai. | 30 Mai. | 10 Juin | 3 | 25 | 28 Nov. |
| 1831 | 12 Mai. | 22 Mai. | 2 Juin. | 4 | 26 | 27 Nov. |
| 1832 | 31 Mai. | 10 Juin. | 21 Juin | 5 | 24 | 2 Déc. |
| 1833 | 16 Mai. | 26 Mai. | 6 Juin | 6 | 26 | 1 Déc. |
| 1834 | 8 Mai. | 18 Mai. | 29 Mai. | 7 | 27 | 30 Nov. |
| 1835 | 28 Mai. | 7 Juin. | 18 Juin. | 8 | 24 | 29 Nov. |
| 1836 | 12 Mai. | 22 Mai. | 2 Juin | 9 | 26 | 27 Nov. |
| 1837 | 4 Mai. | 14 Mai. | 25 Mai. | 10 | 28 | 3 Déc. |
| 1838 | 24 Mai. | 3 Juin. | 14 Juin. | 11 | 25 | 2 Déc. |
| 1839 | 9 Mai. | 19 Mai. | 30 Mai. | 12 | 27 | 1 Déc. |
| 1840 | 28 Mai. | 7 Juin. | 18 Juin. | 13 | 24 | 29 Nov. |

## JANVIER.

*Ce Mois a 31 jours, et la Lune 30.*

| | | |
|---|---|---|
| A | 1 | *Circoncision.* |
| b | 2 | s. Clair, abbé. |
| c | 3 | ste. Geneviève. |
| d | 4 | ste. Benoîte. |
| e | 5 | s. Siméon. |
| f | 6 | *Les Rois.* |
| g | 7 | s. Lucien, mart. |
| A | 8 | s. Apollinaire, Ev. |
| b | 9 | s. Julien, Martyr. |
| c | 10 | s. Guillaume, Arch. |
| d | 11 | s. Hygin, P. et M. |
| e | 12 | s. Théodore, Ev. |
| f | 13 | s. Hilaire, Evêque. |
| g | 14 | s. Félix, Confesseur. |
| A | 15 | s. Paul, 1er Hermite. |
| b | 16 | s. Marcel P. et M. |
| c | 17 | s. Antoine, Abbé. |
| d | 18 | La Ch. s. Pierre à R. |
| e | 19 | s. Canut, Mart. |
| f | 20 | ss. Fabien et Sébast. |
| g | 21 | ste. Agnès, V. et M. |
| A | 22 | s. Vincent, Martyr. |
| b | 23 | s. Raymond, Conf. |
| c | 24 | s. Timothée, Ev. M. |
| d | 25 | Conversion s. Paul. |
| e | 26 | s. Polycarpe, Ev. M. |
| f | 27 | s. Jean Chrys. Ev. D. |
| g | 28 | ste. Véronique. |
| A | 29 | s. Franç. de Sales, E. |
| b | 30 | ste. Martine, V. et M |
| c | 31 | s. Pierre, Nolasq. C. |

## FÉVRIER.

*Ce Mois a 28 jours, et la Lune 29.*

| | | |
|---|---|---|
| d | 1 | s. Ignace, Ev. et M. |
| e | 2 | *La Purific.* N. D. |
| f | 3 | s. Blaise, Ev. et M. |
| g | 4 | s. André Corsin, Ev. |
| A | 5 | ste. Agathe, V. et M. |
| b | 6 | ste. Dorothée, V. M. |
| c | 7 | s. Romuald, Abbé. |
| d | 8 | s. Jean de Matha, C. |
| e | 9 | ste. Appollonie, V. M |
| f | 10 | ste. Scholastique, V. |
| g | 11 | s. Severin, Abbé. |
| A | 12 | ste. Eulalie, V. et M. |
| b | 13 | s. Benigne, C. |
| c | 14 | s. Valentin, Mart. |
| d | 15 | s. Faustin, Mart. |
| e | 16 | ste. Julienne, V. |
| f | 17 | s. Germain, Conf. |
| g | 18 | s. Siméon, Ev. et M. |
| A | 19 | s. Boniface, Mart. |
| b | 20 | s. Eleuthère, Mart. |
| c | 21 | s. Flavien, Conf. |
| d | 22 | La Ch. s. Pierre à A. |
| e | 23 | s. Lazare, Evêque. |
| f | 24 | *s. Matthias Apôtre.* |
| g | 25 | s. Victorin, Mart. |
| A | 26 | s. Alexandre, Mart. |
| b | 27 | ste. Honorine, V. M. |
| c | 28 | Transl. s. Augustin. |

*Lorsque l'année est Bissextile, Février a 29 jours, et la Lune 30; et la Fête de saint Matthias se célèbre le 25.*

## MARS.

*Ce Mois a 31 jours, et la Lune 30.*

| | | |
|---|---|---|
| d | 1 | s. Aubin, Ev. C. |
| e | 2 | s. Simplice, Mart. |
| f | 3 | ste. Cunégonde, V. |
| g | 4 | s. Casimir, Conf. |
| A | 5 | s. Théophile, Mart. |
| b | 6 | ste. Colette, V. |
| c | 7 | s. Thomas d'Aq. D. |
| d | 8 | s. Jean de Dieu, C. |
| e | 9 | ste Françoise, veuv. |
| f | 10 | Les 40 Martyrs. |
| g | 11 | s. Firmin, Mart. |
| A | 12 | s. Grégoire, Pap. D. |
| b | 13 | s. Donat, Ev. C. |
| c | 14 | ste. Mathilde, Reine. |
| d | 15 | s. Longin, Mart. |
| e | 16 | s. Isice, Ev. et M. |
| f | 17 | s. Patrice, Ev. C. |
| g | 18 | s. Cyrille, Mart. |
| A | 19 | s. *Joseph, Conf.* |
| b | 20 | s. Higin, Mart. |
| c | 21 | s. Benoît, Abbé. |
| d | 22 | s. Vincent, Mart. |
| e | 23 | s. Raymond, Conf. |
| f | 24 | s. Gabriel, Arch. |
| g | 25 | *Annonciat. N. D.* |
| A | 26 | s. Urbice, Ev. C. |
| b | 27 | s. Jean, Hermite. |
| c | 28 | s. Gontran, Conf. |
| d | 29 | s. Rupert, Ev. C. |
| e | 30 | s. Quirin, Mart. |
| f | 31 | ste. Balbine, Vierge. |

Le Vendredi après le Dim. de la Pass. la fête de N. D. des Sept Douleurs

## AVRIL.

*Ce Mois a 30 jours, et la Lune 29.*

| | | |
|---|---|---|
| g | 1 | s. Hugues, Ev. Conf. |
| A | 2 | s. François de Paule. |
| b | 3 | s. Richard, Conf. |
| c | 4 | s. Isidore, Ev. Conf. |
| d | 5 | s. Vincent Ferr. C. |
| e | 6 | s. Prosper, Mart. |
| f | 7 | s. Hégesipe, Conf. |
| g | 8 | s. Amant, Ev. Conf. |
| A | 9 | Transl. ste. Monique. |
| b | 10 | s. Macaire, Ev. C. |
| c | 11 | s. Léon, Pap. Conf. |
| d | 12 | s. Jules, Pape, Conf. |
| e | 13 | s. Hermenegilde, M. |
| f | 14 | ss. Tiburce, etc. M. |
| g | 15 | s. Victor, Martyr. |
| A | 16 | s. Onesime, Conf. |
| b | 17 | s. Anicet, Pape, M. |
| c | 18 | s. Jubin, Ev. Conf. |
| d | 19 | s. Marcellin, Ev. C. |
| e | 20 | s. Crescent, Mart. |
| f | 21 | s. Anselme, Ev. C. |
| g | 22 | ss. Soter et Caïus. |
| A | 23 | s. George, Martyr. |
| b | 24 | s. Alexandre, Mart. |
| c | 25 | s. Marc, Evangél. |
| d | 26 | s. Clet, Pape et M. |
| e | 27 | s. Anastase, Mart. |
| f | 28 | s. Vital, Martyr. |
| g | 29 | s. Pierre, Martyr. |
| A | 30 | ste. Catherine de Sienne, Vierge. |

## MAI.

*Ce Mois a* 31 *jours, et la Lune* 30.

| | | |
|---|---|---|
| b | 1 | *s. Jacq. et s. Philip.* |
| c | 2 | S. Athanase, év. C. |
| d | 3 | Invention ste. Croix. |
| e | 4 | ste. Monique, Veuv. |
| f | 5 | s. Pie V, Pap. Conf. |
| g | 6 | s. Jean Porte-Lat. |
| A | 7 | s. Stanislas, Ev. M. |
| b | 8 | Apparit. s. Michel. |
| c | 9 | s. Grég. de Naz. |
| d | 10 | s. Antonin, Ev. C. |
| e | 11 | s. Mammert, Abbé. |
| f | 12 | ss. Nérée, etc. M. |
| g | 13 | s. Servais, Ev. et C. |
| A | 14 | s. Boniface, Mart. |
| b | 15 | s. Isidore, Conf. |
| c | 16 | s. Ubald, Ev. C. |
| d | 17 | s. Sévère, Mart. |
| e | 18 | s. Venance, Mart. |
| f | 19 | s. Pierre, Cél. P. |
| g | 20 | s. Bernardin, Conf. |
| A | 21 | ste. Hélène, Veuv. |
| b | 22 | ste. Julie, V. et M. |
| c | 23 | ste. Jeanne, Vierge. |
| d | 24 | s. Donatien, Mart. |
| e | 25 | ste. Magdeleine de P. |
| f | 26 | s. Philippe de Néri. |
| g | 27 | s. Jean, Pap. Mart. |
| A | 28 | s. Germain, Conf. |
| b | 29 | s. Maximin, Ev. M. |
| c | 30 | s. Félix, Pap. et M. |
| d | 31 | ste. Pétronille, V. |

## JUIN.

*Ce Mois a* 30 *jours, et la Lune* 29.

| | | |
|---|---|---|
| e | 1 | s. Pamphile, Mart. |
| f | 2 | ss. Marcellin, etc. |
| g | 3 | ste. Clothilde, Veuv. |
| A | 4 | s. Quirin, Mart. |
| b | 5 | s. Erasme, Mart. |
| c | 6 | s. Norbert, Ev. C. |
| d | 7 | s. Guillaume, Conf. |
| e | 8 | s. Médard, Mart. |
| f | 9 | ss. Prime et Félicien. |
| g | 10 | ste. Marg. R. d'Ec. |
| A | 11 | s. Barnabé, Ap. |
| b | 12 | s. Jean Faconde, C. |
| c | 13 | s. Antoin. de Pad. C. |
| d | 14 | s. Basile-le-Gr. D. |
| e | 15 | ss. Vite, etc. Mart. |
| f | 16 | s. J. François Reg. |
| g | 17 | s. Avit, Abbé. |
| A | 18 | ss. Marc et Marcelle. |
| b | 19 | ste. Julienne, Vier. |
| c | 20 | s. Silvère, P. et M. |
| d | 21 | s. Eusèbe, Ev. M. |
| e | 22 | s. Paulin, Ev. Conf. |
| f | 23 | *Vigile.* s. Victor, A. |
| g | 24 | *Nativ. de S. Jean-Baptiste.* |
| A | 25 | s. Eloy, Evêque. |
| b | 26 | ss. Jean et Paul, M. |
| c | 27 | s. Crescent, Conf. |
| d | 28 | *Vigile.* s. Leon, M. |
| e | 29 | *s. Pierre et s. Paul.* |
| f | 30 | Comm. de s. Paul. |

# JUILLET.

*Ce Mois a* 31 *jours, et la Lune* 30.

| | | |
|---|---|---|
| g | 1 | s. Thibaut, Conf. |
| A | 2 | Visitat. de N. D. |
| b | 3 | s. Anatole, Ev. |
| c | 4 | ste. Romule, V. |
| d | 5 | s. Pierre de Lux. |
| e | 6 | s. Goard, Confess. |
| f | 7 | ste. Aubierge, V. |
| g | 8 | ste Elisabeth, R. de P. |
| A | 9 | s. Cyrille, Ev. de C. |
| b | 10 | Les 7 frères Mart. |
| c | 11 | s. Pie, Pape et M. |
| d | 12 | s. Jean Gualbert, A. |
| e | 13 | s. Anaclet, P. et M. |
| f | 14 | s. Bonaventure, E. D |
| g | 15 | s. Henri, Emp. C. |
| A | 16 | N. D. des Carmes. |
| b | 17 | s. Alexis, Conf. |
| c | 18 | ste. Symphorose, M. |
| d | 19 | s. Vinc. d. Paule. |
| e | 20 | ste. Marguerite, V. |
| f | 21 | ste. Praxède, Vier. |
| g | 22 | ste. Marie-Magdel. |
| A | 23 | s. Appollinaire, Ev. |
| b | 24 | ste Christine, V. M. |
| c | 25 | *ss. Jacques et Christ.* |
| d | 26 | ste. Anne. |
| e | 27 | s. Pantaléon, Mart. |
| f | 28 | ss. Nazaire, etc. M. |
| g | 29 | ste. Marthe, V. |
| A | 30 | ss. Abdon, etc. M. |
| b | 31 | s. Ignace, Conf. |

# AOUT.

*Ce Mois a* 31 *jours, et la Lune* 30.

| | | |
|---|---|---|
| c | 1 | s. Pierre ès liens. |
| d | 2 | N. D. des Anges. |
| e | 3 | Invent. s. Etienne. |
| f | 4 | s. Dominique, Conf. |
| g | 5 | N. D. des Neiges. |
| A | 6 | Transfig. de N. S. |
| b | 7 | s. Cajetan, Conf. |
| c | 8 | ss. Cyriaque, etc. |
| d | 9 | s. Romain, Martyr. |
| e | 10 | *s. Laurent, Martyr.* |
| f | 11 | ste. Susanne, V. |
| g | 12 | ste. Claire, V. |
| A | 13 | ss. Hippolyte, etc. M |
| b | 14 | *Vigile.* s. Eusèbe, C. |
| c | 15 | *Assomption N. D.* |
| d | 16 | s. *Roch, Confess.* |
| e | 17 | s. Mammès, Mart. |
| f | 18 | s. Agapite, Mart. |
| g | 19 | s. Loup, Evêq. |
| A | 20 | s. Bernard, Abbé. |
| b | 21 | s. Anastase. |
| c | 22 | ss. Thimothée, etc. |
| d | 23 | s. Philippe Beniti, C. |
| e | 24 | *s. Barthelemy, Ap.* |
| f | 25 | s. *Louis*, roi. |
| g | 26 | s. Zéphirin, P. et M. |
| A | 27 | s. Césaire, Ev. C. |
| b | 28 | s. Augustin, Ev. D. |
| c | 29 | Déc. de s. Jean-B. |
| d | 30 | ste. Rose. V. |
| e | 31 | s. Raymond, Conf. |

## SEPTEMBRE.

*Ce Mois a 30 jours, et la Lune 29.*

| | | |
|---|---|---|
| f | 1 | s. Gilles, Abbé. |
| g | 2 | s. Etienne, Roi. |
| A | 3 | ste. Séraphie, Vierg. |
| b | 4 | s. Marcel, Conf. |
| c | 5 | s. Laurent Justin, C. |
| d | 6 | s. Cloud, Ev. Mart. |
| e | 7 | ste. Reine, Vierge. |
| f | 8 | *Nativ. de N. D.* |
| g | 9 | s. Omer, Evêque. |
| A | 10 | s. Nicolas de Tol. C. |
| b | 11 | ss. Prothe, etc. M. |
| c | 12 | s. Guy, Conf. |
| d | 13 | s. Aimé, Abbé. |
| e | 14 | Exalt. ste. Croix. |
| f | 15 | s. Nicomède, Mart. |
| g | 16 | s. Corneille, etc. M. |
| A | 17 | Stig. de s. François. |
| b | 18 | s. Thomas de Vill. E. |
| c | 19 | s. Janvier, Evêq. M. |
| d | 20 | s. Eustache, Mart. |
| e | 21 | *s. Matthieu, Ap. et E.* |
| f | 22 | s. Maurice, etc. M. |
| g | 23 | s. Lin, P. M. |
| A | 24 | N. D. de la Merci. |
| b | 25 | s. Firmin, Evêq. |
| c | 26 | ste. Justine, Vierge. |
| d | 27 | ss. Cosme et Dam. |
| e | 28 | s. Venceslas, Mart. |
| f | 29 | Dédic. de s. Michel. |
| g | 30 | s. Jérome, Confess. et Doct. |

## OCTOBRE.

*Ce Mois a 31 jours, et la Lune 30.*

| | | |
|---|---|---|
| A | 1 | s. Remi, Ev. et Conf. |
| b | 2 | Les ss. Anges Gard. |
| c | 3 | s. Gilbert, Abbé. |
| d | 4 | s. François d'Assis. |
| e | 5 | s. Placide, etc. M. |
| f | 6 | s. Bruno, Confes. |
| g | 7 | s. Marc, Pape et C. |
| A | 8 | ste. Brigitte, Veuve. |
| b | 9 | s. Denis, Martyr. |
| c | 10 | s. François. de Borg. |
| d | 11 | Transl. s. Augustin. |
| e | 12 | s. Maximin, Conf. |
| f | 13 | s. Edouard, Roi. |
| g | 14 | s. Calliste, P. et M. |
| A | 15 | ste. Thérèse, V. |
| b | 16 | s. Gal, Abbé. |
| c | 17 | ste. Hedwige, Veu. |
| d | 18 | s. Luc, Evangéliste. |
| e | 19 | s. Pierre d'Alcant. |
| f | 20 | s. Caprais, Mart. |
| g | 21 | ste. Ursule, V. et M. |
| A | 22 | s. Melon, Evêq. |
| b | 23 | s. Severin, Evêque. |
| c | 24 | s. Magloire, Ev. C. |
| d | 25 | s. Crépin et s. Crép. |
| e | 26 | s. Evariste, P. et M. |
| f | 27 | s. Florent, Conf. |
| g | 28 | *s. Simon et s. Jude.* |
| A | 29 | s. Narcisse, Mart. |
| b | 30 | s. Lucain. |
| c | 31 | *Vigile.* s. Quentin. |

## NOVEMBRE.

*Ce Mois a 30 jours, et la Lune 29.*

| | | |
|---|---|---|
| d | 1 | *La Toussaint.* |
| e | 2 | *Les Trépassés.* |
| f | 3 | s. Hubert, Evêque. |
| g | 4 | s. Charles-Borr. Ev. |
| A | 5 | s. Zacharie. |
| b | 6 | s. Léonard, Conf. |
| c | 7 | s. Restitut, Conf. |
| d | 8 | les 40 Couronnés. |
| e | 9 | Dédic. du Sauveur. |
| f | 10 | s. André Avel. C. |
| g | 11 | s. Martin, P. et M. |
| A | 12 | s. Martin, Ev. et C. |
| b | 13 | s. Didace, Conf. |
| c | 14 | s. Ruf, Ev. |
| d | 15 | ste. Gertrude, V. |
| e | 16 | s. Eucher, Mart. |
| f | 17 | s. Grégoire, Ev. C. |
| g | 18 | Déd. des Apôtres. |
| A | 19 | ste. Elisabeth, V. |
| b | 20 | s. Félix de Valois, C. |
| c | 21 | Présentat. N. D. |
| d | 22 | ste. Cécile, V. et M. |
| e | 23 | s. Clément, P. et M. |
| f | 24 | s. Jean de la Croix. |
| g | 25 | ste. Catherine, V. M. |
| A | 26 | s. Pierre d'Alexand. |
| b | 27 | s. Agricol, Mart. |
| c | 28 | s. Sothènes, Mart. |
| d | 29 | s. Saturnin, Mart. |
| e | 30 | *s. André, Apôtre.* |

## DÉCEMBRE.

*Ce Mois a 31 jours, et la Lune 30.*

| | | |
|---|---|---|
| f | 1 | s. Eloi, Ev. Conf. |
| g | 2 | ste. Bibiane, V. M. |
| A | 3 | s. François-Xavier. |
| b | 4 | ste. Barbe, V. et M. |
| c | 5 | s. Sabbas, Abbé. |
| d | 6 | s. Nicolas, Ev. Conf. |
| e | 7 | s. Ambroise, Doct. |
| f | 8 | *Concept. de N. D.* |
| g | 9 | ste. Valère, V. |
| A | 10 | s. Melchiade, P. M. |
| b | 11 | s. Damase, Pap. C. |
| c | 12 | s. Justin, Mart. |
| d | 13 | ste. Luce, V. et M. |
| e | 14 | s. Nicaise. |
| f | 15 | s. Clément, Pape. |
| g | 16 | s. Eusèbe, Ev. et M. |
| A | 17 | s. Lazare, Ev. |
| b | 18 | s. Gratien, Conf. |
| c | 19 | ste. Fauste, Vierge. |
| d | 20 | s. Liberat, Mart. |
| e | 21 | *s. Thomas, Apôtre.* |
| f | 22 | s. Théodore, Mart. |
| g | 23 | ste. Victoire, V. M. |
| A | 24 | *Vigile.* s. Grégoire, C. |
| b | 25 | *NOEL.* |
| c | 26 | *s. Etienne, 1. Mart.* |
| d | 27 | *s. Jean, Evangél.* |
| e | 28 | les ss. Innocens. |
| f | 29 | s. Thomas, Ev. M. |
| g | 30 | s. Sabin, Mart. |
| A | 31 | s. Silvestre, P. et C. |

# CALENDRIER

*Des jours auxquels les Frères Pénitens sont tenus de s'assembler dans leur Chapelle, pour y réciter l'Office divin.*

Ils s'y assembleront tous les Dimanches et Fêtes de l'année, savoir : depuis le Dimanche des Rameaux jusqu'à la Fête de Saint Michel Archange, à six heures du matin ; et dans le reste de l'année à sept heures, pour réciter Matines, Laudes et les petites Heures, et assister ensuite au saint sacrifice de la Messe ; et à deux heures après midi, pendant tout le cours de l'année, pour Vêpres et Complies, attendant un quart d'heure, après les Heures dites, pour donner le temps à ceux qui sont éloignés d'y pouvoir assister.

## *FÊTES MOBILES.*

Le Mercredi des Cendres, le matin seulement.

Tous les Vendredis de Carême à quatre heures après midi, pour dire Complies comme au Dimanche des Rameaux, ensuite le *Stabat* et les Litanies de la Passion.

Le Mercredi-Saint, à trois heures après midi, pour Matines et Laudes du Jeudi.

Le Jeudi-Saint, à neuf heures du matin, pour les petites Heures et la Messe ; à une heure après midi, pour le lavement des pieds : et à trois heures, pour Matines et Laudes du Vendredi : la Procession se fera ensuite.

Le Vendredi-Saint, à neuf heures du matin, comme dessus ; et le soir à trois heures, pour Matines et Laudes du Samedi.

Le Samedi-Saint, à huit heures du matin, pour les petites Heures, les prophéties et les cérémonies accoutumées ; et à quatre heures après midi, pour Complies.

Le jour de Pâques, le matin à six heures ; et le soir on ne dira Vêpres et Complies qu'après le Sermon de

la Cathédrale. Il y aura la Bénédiction du Saint Sacrement le matin et le soir.

La seconde et troisième Fête de Pâques, aux heures ordinaires.

La Fête de l'Ascension, la veille à quatre heures pour les premières Vêpres, et le jour aux heures ordinaires.

Le Dimanche de la Pentecôte, la veille à quatre heures, comme dessus; et le jour aux heures ordinaires, et la Bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres.

Le Dimanche de la Sainte Trinité, la veille à quatre heures, comme dessus; et le jour aux heures ordinaires. Il y a Indulgence plénière, et la Bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres.

La Fête-Dieu, la veille à quatre heures, comme dessus, et le matin à l'heure ordinaire, et le soir à trois heures pour Vêpres et Complies: la Bénédiction du Saint Sacrement étant donnée, la Procession se fera ensuite; et au retour, sera de rechef donnée la Bénédiction du Saint Sacrement.

Le Jeudi de l'Octave, le matin à l'heure ordinaire; et le soir à quatre heures pour Vêpres et Complies.

## *Fêtes de Janvier.*

Le 1. la Circoncision, la veille à trois heures pour les premières Vêpres, et le jour aux heures ordinaires: après les secondes Vêpres, on dira celles des Morts, ensuite Complies. Le jour suivant à sept heures du matin, pour Matines, Laudes et la Messe des Morts, et les Suffrages accoutumés.

Le 6. l'Epiphanie; la veille à trois heures comme dessus, et le jour aux heures ordinaires.

Le 17. Saint Antoine.

Le 20. Saint Fabien et Saint Sébastien.

## *Fêtes de Février.*

Le 2. la Purification de la Sainte Vierge; la veille à trois heures comme dessus, et le jour, le matin à l'heure ordinaire, et le soir à trois heures pour Vêpres et Complies, et la Bénédiction du Saint Sacrement dès

les premières Vêpres : la Procession se fera ensuite, et au retour sera de rechef donnée la Bénédiction du Saint Sacrement.

Le 24. S. Matthias.

### *Fêtes de Mars.*

Le 19. S. Joseph.

Le 25. L'Annonciation de la Sainte Vierge ; la veille à trois heures, comme dessus, et le jour aux heures ordinaires. Il y a Indulgence plénière, et la Bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres.

### *Fêtes d'Avril.*

Le 1. S. Hugues.

### *Fêtes de Mai.*

Le 1. S. Jacques et S. Philippe.

### *Fêtes de Juin.*

Le 24. La Nativité de S. Jean-Baptiste ; la veille à quatre heures pour les premières Vêpres, et le jour aux heures ordinaires.

Le 29. S. Pierre et S. Paul.

### *Fêtes de Juillet.*

Le 25. S. Jacques et S. Christophe ; la veille à quatre heures, comme dessus, et le jour aux heures ordinaires. Il y aura Indulgence plénière, et la Bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres.

### *Fêtes d'Aout.*

Le 10. S. Laurent.

Le 15. L'Assomption de la Sainte Vierge ; la veille à quatre heures, comme dessus ; et le jour, le matin à l'heure ordinaire, et le soir à trois heures pour les secondes Vêpres et Complies. Il y aura Indulgence plénière, et la Bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres : la Procession se fera ensuite, et au

au retour sera de rechef donnée la Bénédiction du Saint Sacrement.

Le 16. S. Roch.

Le 24. S. Barthelemi. Le 25. S. Louis.

## *Fêtes de Septembre.*

Le 8. la Nativité de la Sainte Vierge ; la veille à quatre heures, comme dessus ; et le jour aux heures ordinaires, et la bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres.

Le 21. S. Matthieu.

## *Fêtes d'Octobre.*

Le 28. S. Simon et S. Jude.

## *Fêtes de Novembre.*

Le 1. la Toussaint ; la veille à trois heures pour les premières Vêpres ; et le jour aux heures ordinaires, et la bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres ; après les secondes Vêpres se donnera la bénédiction du Saint Sacrement ; après quoi on dira Vêpres des Morts, ensuite Complies : et le jour suivant, à sept heures du matin, pour Matines, Laudes et la Messe des Morts, et les suffrages accoutumés.

Le 30. S. André.

## *Fêtes de Décembre.*

Le 8. la Conception de la Sainte Vierge ; la veille à trois heures comme dessus ; et le jour aux heures ordinaires ; et la bénédiction du Saint Sacrement, dès les premières Vêpres.

Le 21. S. Thomas.

Le 25. La Nativité de N. S. Jésus-Christ ; la veille à trois heures pour les premières Vêpres ; à neuf heures du soir pour Matines et Laudes ; et le jour le matin à huit heures, pour les petites Heures ; et le soir on ne dira Vêpres et Complies qu'après le Sermon de la Cathédrale. Il y aura la bénédiction du Saint Sacrement dès les premières Vêpres.

Le 26. S. Etienne.

Le 27. S. Jean l'Evangéliste.

## *L'ANCIENNE FONDATION DE LA CONFRÉRIE du Saint Sacrement ; son Approbation Apostolique ; le Sommaire des Indulgences concédées par Nos SS. Pères les Papes à ceux qui en sont, et les Statuts par l'observation desquels on gagne lesdites Indulgences.*

PLUSIEURS Papes désireux de maintenir et avancer la dévotion des Chrétiens envers le très-Saint Sacrement de l'Autel, dans lequel avec le Corps, le Sang, l'Ame et la Divinité de JÉSUS-CHRIST, sont contenus tous leurs Trésors Spirituels et les gages de la gloire éternelle qu'ils espèrent, ont érigé des confréries ou assemblées saintes à cette fin, et les ont dotées de plusieurs grandes Indulgences et grâces ; particulièrement les Papes Urbain IV, l'an 1264 ; Martin V, Eugène IV, l'an 1433 ; Paul III, l'an 1539 ; et plus que tous ses Prédécesseurs, Paul V, qui a donné les Indulgences suivantes, l'an 1606,

PREMIÈREMENT, à tous ceux et celles qui, vraiment repentans, confessés et communiés, s'enrôleront en la confrérie du Saint Sacrement, Indulgence plénière au jour de la réception en cette confrérie.

*Item*, Donne Indulgence plénière à tous ceux et celles qui, enrôlés en ladite confrérie, vraiment repentans, confessés et communiés à l'article de la mort, invoqueront dévotement de bouche ou de cœur le Saint Nom de Jésus.

*Item*, Indulgence plénière à tous lesdits confrères qui, repentans, confessés et communiés, assisteront à la procession que la confrérie fait aux jours de la Fête-Dieu et de l'Octave ; si lors ils prient Dieu pour l'union des Princes Chrétiens, l'extirpation des hérésies, et l'exaltation de la Sainte Eglise Catholique, Apostolique et Romaine.

*Item*, Indulgence plénière auxdits confrères qui, contrits, confessés et communiés en ces jours-là, ne pouvant assister à ladite Procession, néanmoins feront Prières à même fin que dessus.

*Item*, Cent jours d'Indulgences aux mêmes confrères, lesquels ayant pour le moins contrition de leurs péchés,

accompagneront le très-Saint Sacrement au jour du Jeudi-Saint.

*Item*, Cent jours d'Indulgences aux confrères, lesquels au jour du Jeudi-Saint visiteront le lieu auquel est exposé le Saint Sacrement, s'ils y prient Dieu pour l'Eglise, comme dessus.

*Item*, Cent jours d'Indulgences aux confrères qui assisteront au Divin Service de la Messe le quatrième Dimanche de chaque mois.

*Item*, Indulgence de sept ans et de sept quarantaines (qu'anciennement les Pénitens jeûnoient au pain et à l'eau) aux confrères, lesquels contrits, confessés et communiés, assisteront à la Procession qui se fait au quatrième dimanche du mois, dehors ou dedans l'Eglise.

*Item*, Deux cents jours d'Indulgences à tous chrétiens et chrétiennes qui, n'étant enrôlés en ladite confrérie, assisteront néanmoins aux divins Offices, et à la Procession du troisième dimanche.

*Item*, Cent jours d'Indulgences à ceux et celles de la confrérie, qui, au vendredi de chaque semaine, visiteront dévotement l'Eglise de la confrérie, et prieront là, comme il a été dit.

*Item*, Sept ans d'Indulgences à ceux et celles qui accompagneront le très-Saint Sacrement, lorsqu'on le porte aux malades, de quelle condition qu'ils soient.

*Item*, Cinq ans d'Indulgences, et autant de quarantaines à tous ceux de la Paroisse, et à tous autres chrétiens et chrétiennes qui accompagneront le Saint Sacrement avec lumière, ou sans lumière : ou si étant empêchés, ils disent une fois le *Pater* et l'*Ave Maria* à l'intention susdite, il leur donne cent ans d'Indulgences ; et cent jours d'Indulgences aux femmes, lesquelles (pour justes causes) ne pouvant accompagner le Saint Sacrement, diront une fois le *Pater* et l'*Ave Maria*, priant Dieu pour le malade auquel on le porte.

Le Pape Paul III, en une sienne Bulle, donne plein pouvoir aux administrateurs et recteurs des confréries du Très-Saint Sacrement, de composer et faire des Statuts et Ordonnances, tels qu'ils jugeront être propres et nécessaires, tant pour l'avancement spirituel desdites confréries, que pour le salut des ames, à la plus grande gloire de Dieu, sans qu'il soit besoin d'en avoir aucune approbation particulière du saint Siége. A ces fins, les Statuts

suivans ont été jugés propres pour cette confrérie, sous le bon plaisir de Monseigneur l'Evêque.

1.° La fin de cette confrérie étant d'adorer et recevoir révéremment et fréquemment le précieux corps de Notre Sauveur, et de le tenir ès Eglises, avec tout ce qui appartient à son service, le plus honorablement qu'il sera possible, et de l'accompagner dévotement avec des lumières, lorsqu'on le porte en procession, ou aux malades; tous les confrères s'évertueront de s'acquitter de ce devoir.

Chaque confrérie sera gouvernée par un recteur et un vice-recteur, quatre ou six conseillers, deux maîtres des cérémonies, un trésorier et autres moindres officiers, qui seront élus ou confirmés tous les ans à la Fête-Dieu. Les femmes se règleront prudemment et charitablement, à proportion du réglement des hommes.

2.° Ledit recteur veillera soigneusement au bien spirituel et temporel de la confrérie, faisant que les Statuts se gardent toujours bien. Il ordonnera les assemblées, et y présidera; fera enrôler ceux qui le demanderont dévotement; avertira prudemment les délinquans, et fera fleurir la confrérie autant qu'il lui sera possible, durant l'année de sa charge.

3.° Le vice-recteur et les autres officiers doivent seconder le recteur avec zèle et charité, et conférer souvent ensemble de l'état de la confrérie; procurer que le corps du Sauveur soit bien honoré, les Sacremens fréquentés; que la charité règne; que les dissensions soient pacifiées; qu'on ne reçoive, ni tolère les scandaleux; que les malades soient visités et avertis de recevoir les Sacremens, de faire leur testament de bonne heure pour le regard de ceux qui en sont capables, et ceux qui sont à l'article de la mort soient assistés; que les Trépassés soient honorés et secourus promptement par messes et prières.

Les conseillers, chacun en leur quartier, pourvoient que lesdits actes de piété et de charité se pratiquent fraternellement, et nommément feront accompagner le Saint Sacrement lorsqu'on le porte aux malades; et les corps des confrères trépassés avec le plus grand nombre

des confrères qu'ils pourront assembler; et feront tous les mois savoir au recteur l'état de leur quartier.

4.° Les maîtres des cérémonies auront soin que l'autel soit bien paré, les offices divins et les processions bien réglés, et que les confrères y assistent et marchent par ordre, modestement et dévotement, les heures ou le chapelet en main, sans parler, ni faire bruit, ni quitter leur rang. Que si quelqu'un contrevenoit à ceci, lesdits maîtres des cérémonies devront les avertir aussitôt.

5.° Le trésorier recevra les aumônes et contributions, en rendra compte tous les ans au recteur de la confrérie et aux conseillers, et ne distribuera rien sans leur aveu.

6.° Les autres moindres officiers seront réglés par l'avis dudit recteur et des conseillers.

7.° Aux confréries où il y aura nombre suffisant de gens sachant lire pour chanter l'office du S. Sacrement, le recteur et les autres officiers procureront qu'il soit dit dévotement et distinctement, en habit de Pénitent, avec édification.

8.° Tous les ans on honorera et solemnisera avec dévotion le Jeudi-Saint et la Fête-Dieu, qui sont les deux plus grandes solemnités de la confrérie, et tous recevront saintement le précieux Sacrement, assisteront ensemble à la messe, à la procession, aux autres offices, et au sermon, s'il y en a.

9.° Tous les mois au quatrième dimanche, ou à tel autre qui sera désigné par le recteur et les conseillers, on fera la procession avec le Saint Sacrement; et on le recevra dévotement; mais sans aucune obligation de donner de l'argent pour les confessions et communions, non plus que pour l'entrée à la confrérie. Il est louable toutefois de donner et léguer quelque chose pour l'entretien de l'Autel, des ornemens, et de la lampe toujours ardente devant le Saint Sacrement, pour avoir un beau ciboire, un soleil, et un calice d'argent, ainsi qu'un dais et des flambeaux ou cierges, pour accompagner le Saint Sacrement.

10.° Toutes les semaines les confrères réciteront cinq *Pater* et cinq *Ave* à l'honneur du Saint Sacrement ; ceux qui savent lire, y pourront ajouter les litanies du Saint Sacrement ou de la Passion ; et les autres, à leur commodité, pourront réciter le chapelet.

11.° Les confrères adoreront tous les jours le Saint Sacrement le mieux qu'ils pourront, feront quelques prières le matin et le soir à genoux, et le soir l'examen de conscience avant de se mettre au lit.

12.° Tous les confrères, par leurs paroles et actions, doivent donner à tous autres exemple de l'honneur et révérence qui doit se rendre au Saint Sacrement, soit en l'Eglise, soit dehors. Et d'autant que c'est le Sacrement d'amour et d'union, qu'ils s'entr'aiment d'une sainte et chrétienne dilection, évitant toutes occasions de haine, envie, dissension et de tout scandale, et s'exercent de tout leur possible aux œuvres de charité et de piété, et induisent tous ceux qu'ils pourront à fréquenter ce Sacrement, source de vie et de tous biens.

Or, parce que la sapience cachée et le trésor inconnu ne profitent point, les curés et prédicateurs zélés à l'avancement de la gloire de Dieu et au salut des ames, sont par Monseigneur l'Evêque exhortés de publier partout ces Indulgences et Statuts, les lisant en leurs Eglises, les exposant aux portes, et y affichant la présente feuille. Et lorsque quelque paroisse sera résolue d'établir cette très-sainte et très-utile confrérie, on présentera à Mondit Seigneur l'Evêque, ou à M. son Grand-Vicaire une Requête, afin qu'il lui plaise approuver et confirmer canoniquement cette sainte résolution, enrôlant en ladite confrérie les paroissiens qui le désireront ; et après avoir obtenu l'appointement, ils désigneront, à l'usage de la confrérie, non seulement le grand Autel, mais aussi ès petits lieux la grande messe avec la procession du quatrième dimanche, pour ne pas se surcharger en un même dimanche d'une autre messe et d'une autre procession.

Ils feront aussi sonner la grande cloche, pour assembler en l'Eglise ceux du peuple ou de la confrérie qui sont députés à porter la clochette, les flambeaux ou

cierges, avec le poêle ou dais ( si on peut ) quand on porte le Saint Sacrement aux malades, et en procession.

Ils disposeront encore le peuple à gagner ces pardons, par la vraie et parfaite contrition de ses péchés, accompagnée d'un bon et ferme propos de s'amender et confesser du moins au temps ordonné : ou, ce qui est plus aisé et plus assuré, par une bonne et entière confession générale à leur entrée en la confrérie. Bref, ils avertiront les confrères de lire, ou ouir souvent lire ce sommaire, pour se souvenir de gagner ces pardons, et gardant les Statuts, pour vivre saintement, et mourir heureusement. Et ainsi nous espérons qu'en toutes les Eglises paroissiales où cette confrérie sera dressée, et jointe avec les autres ( s'il n'y en avoit point d'érigée ), par ce moyen s'augmentera l'honneur dû au Saint Sacrement et à la sainte Messe ; et ensuite s'enseveliront toutes les hérésies suscitées contre ce pieux et fréquent usage, et contre l'adoration de la Foi Catholique de ce divin mystère.

Finalement tous se souviendront de prier souvent Dieu pour Mondit seigneur l'Evêque, et seront avertis qu'il n'y a rien de ce saint exercice de ladite confrérie qui oblige de soi à péché : de sorte que quand on ne sait pas quelque chose de ce qui est prescrit en ces Statuts, on ne pèche point ; mais en le faisant, on mérite, et ce sont de bonnes œuvres très-agréables à Dieu, et très-efficaces pour obtenir abondance de ses saintes grâces et bénédictions.

---

## MANDEMENT DE MONSEIGNEUR L'ÉVÊQUE de Grenoble, pour faire publier aux prônes par les Curés les Indulgences concédées aux Confréries des Pénitens du Saint Sacrement.

*PIERRE SCARRON, par la grâce de Dieu et du Saint Siége Apostolique, Evêque et Prince de Grenoble, Doyen du Décanat de Savoie, etc. A tous Curés et Recteurs d'Eglise constitués en quelque part que ce soit en notre Diocèse et audit Décanat, et à chacun d'iceux; SALUT. Nous vous mandons et enjoignons, par la teneur des présentes, que vous ayez à publier les présentes Indulgences à vos Prônes quelques jours de Dimanche, aux peuples à vous commis, ès Eglises où est érigée la confrérie du Saint Sacrement, les exhortant, comme nous faisons, à se disposer d'en gagner le fruit ainsi qu'il appartient, et qu'il est porté par la Bulle de Sa Sainteté; comme aussi à procurer l'érection de ladite confrérie du Saint Sacrement ès Eglises où elle n'est encore dressée. DONNÉ à Grenoble, en notre Palais Episcopal, le dernier jour de février 1631.*

† PIERRE, Ev. de Grenoble.

DU PORT, Secrét.

## REQUÊTE A MONSEIGNEUR L'ÉVÊQUE de Grenoble, pour permettre l'érection de la Confrérie du Saint Sacrement dans l'Eglise de Saint Laurent-lès-Grenoble.

*SUPPLIENT humblement Messire Reynaud de Revigliasc, Seigneur de Rommette, Cosseigneur de la Rochette, Conseiller du Roi en sa Cour de Parlement, Aides et Finances de ce pays du Dauphiné, et Prieur du Prieuré Saint Laurent de Grenoble; Messire François Decrouz, Curé dudit Saint Laurent; Sieur Balthazard Perrin, quatrième Consul dudit Grenoble, et les Habitans de la Paroisse dudit Saint Laurent et la Perrière dudit Grenoble.*

DISANT que pour accroître la dévotion au Saint Sacrement en leur Paroisse, être préservés des dangers corporels et spirituels qui nous menacent conti-

nuellement, et jouir des grâces et faveurs qu'apporte cette dévotion, il vous plaise leur permettre l'érection de la Confrérie du Saint Sacrement, et de l'incorporer à celle de Rome, avec les grâces, Indulgences et Priviléges concédés à icelles par les Souverains Pontifes; et par ce singulier bénéfice ils demeureront obligés de prier Dieu pour la prospérité de votre Seigneurie. MILLIO.

*Nous permettons aux Supplians l'établissement de la susdite confrérie, aux conditions accoutumées, avec les Indulgences et Priviléges accordés par nos Souverains Pontifes.*

*FAIT ce trois avril mil six cent trente-un.*

† PIERRE, Ev. de Grenoble.

---

## *BULLE DE NOTRE S. P. LE PAPE PAUL V. contenant les Indulgences accordées aux Confréries des Pénitens du Très-Saint Sacrement de l'Autel.*

AU Nom de JÉSUS-CHRIST, Ainsi soit-il. PALUTIUS DE ALTERIS, Cardinal, Prêtre de la Sainte Eglise Romaine sous le titre des douze Apôtres, Camérier de la pieuse et vénérable Archiconfrérie du Sacré Corps de Jésus-Christ, dans l'Eglise de la Bienheureuse Marie sur la Minerve, Protecteur de la Ville; FRANÇOIS DE MARINIS, par la grâce de DIEU et du Saint Siége, Archevêque de Théodose, et JÉRÔME-MARCHIO MELCHIORIUS, Administrateurs : Aux chers confrères de la confrérie du Sacré Corps de Jésus-Christ, érigée par l'autorité du Saint Siége Apostolique dans l'Eglise de S. Laurent-lès-Grenoble; SALUT en Notre-Seigneur. Nous qui, suivant le devoir de notre charge, devons procurer le salut de tous les Fidèles, et le progrès de la Religion, joignons et aggrégeons volontiers à notre archiconfrérie toutes les autres confréries du même Ordre; et étant ainsi aggrégées, nous leur communiquons, suivant le pouvoir à nous donné par les Souverains Pontifes, toutes les Indulgences, facultés, et les autres grâces spirituelles. C'est pour-

quoi, comme l'illustre Seigneur François Bertet, Prieur de cette confrérie, eut demandé avec ardeur cette aggrégation et la communication des Indulgences, Nous Protecteur et Administrateurs ci-dessus, représentant cette confrérie, et nous conformant à la constitution de Notre S. P. Clément VIII, d'heureuse mémoire, sur les réglemens de cette nouvelle aggrégation, et de la communication des trésors de l'Eglise par nos présentes lettres, et conduits par un pur amour de Dieu, et par le zèle d'augmenter la religion Chrétienne, nous joignons et aggrégeons, suivant le pouvoir à nous donné par le Saint Siége, ladite confrérie érigée canoniquement par l'autorité Apostolique, eu égard aux lettres de témoignage, et au consentement de l'Evêque du lieu, à notre archiconfrérie (pourvu que semblable grâce n'ait pas été auparavant accordée dans le même lieu à une autre confrérie, et aggrégée à une autre archiconfrérie, dans le temps de cette concession), et nous lui accordons et communiquons, et à tous les confrères, les Indulgences et grâces spirituelles, rapportées ci-dessus, accordées à notre archiconfrérie expressément et spécialement par les lettres des Souverains Pontifes, dont la teneur est égale aux nôtres, et au dos desquelles on lit cette inscription : A nos bien-aimés enfans les Administrateurs et Confrères de l'archiconfrérie du Très-Saint Sacrement, érigée canoniquement dans l'Eglise de Notre-Dame sur la Minerve de Rome, de l'Ordre des Frères Prêcheurs. Et au dedans on voit les paroles suivantes :

PAUL Pape V. Mes bien-aimés Enfans, Salut et Bénédiction Apostolique. Sur la résolution que nous avons prise de donner à chaque archiconfrérie des Indulgences et grâces spirituelles, dont elle puisse avec assurance jouir à l'avenir, premièrement, Nous révoquons, annullons, et déclarons être de nulle force et vigueur toutes en général et en particulier Indulgences, rémissions de péchés et rélaxations de pénitence, octroyées par les Souverains Pontifes nos prédécesseurs, à votre archiconfrérie, et à tous les confrères de l'un et de l'autre sexe qui la composent : et puis nous

confiant en la miséricorde de Dieu tout-puissant, et en l'autorité de ses bienheureux Apôtres S. Pierre, S. Paul, Nous accordons misérieordieusement à tous les fidèles de l'un et de l'autre sexe qui à l'avenir seront reçus en ladite archiconfrérie, au premier jour de leur entrée, s'ils sont vraiment repentans, confessés et communiés, Indulgence plénière, et rémission de tous leurs péchés.

*Item*, A tous les confrères et sœurs déjà reçus, ou à recevoir, qui vraiment repentans, confessés et communiés, assisteront à la procession que lesdits confrères ont accoutumé de faire l'Octave de la Fête-Dieu, et y accompagneront le Très-Saint Sacrement, et là ils feront prière pour la paix entre les Princes Chrétiens, pour l'extirpation des hérésies, et pour l'exaltation de notre Mère Sainte Eglise, Indulgence plénière.

*Item*, A tous les confrères et sœurs, qui par l'ordre de ladite archiconfrérie, et suivant ses constitutions, auront été empêchés d'assister à ladite procession, pourvu que repentans, confessés et communiés, ils fassent la susdite prière, Indulgence plénière.

*Item*, A tous les fidèles de l'un et de l'autre sexe, qui, à l'article de la mort, repentans, confessés et communiés, invoqueront, de bouche, s'ils le peuvent, ou du moins de cœur, le sacré Nom de JÉSUS, Indulgence plénière, et rémission de tous leurs péchés.

*Item*, Aux mêmes confrères, qui, repentans et confessés, recevront le Très-Saint Sacrement, au jour et fête du même Très-Saint Sacrement, et feront la susdite prière, sept ans d'Indulgences, et autant de quarantaines.

*Item*, A ceux qui assisteront aux Offices divins, et aux processions de ladite archiconfrérie, cent jours d'Indulgences.

*Item*, A ceux qui, chaque vendredi visiteront l'Eglise de Notre-Dame sur la Minerve à Rome de l'ordre des Frères Prêcheurs, et là feront la susdite prière, cent jours d'Indulgences.

*Item*, Aux mêmes confrères et sœurs, qui repentans, confessés et communiés, assisteront aux processions qu'ils ont accoutumé de faire tous les troisièmes dimanches de chaque mois et le Jeudi-Saint, et y feront la susdite prière, sept ans d'Indulgences et autant de quarantaines.

*Item*, A tous les autres fidèles de l'un et de l'autre sexe, qui ne sont pas reçus en ladite archiconfrérie, et néanmoins assisteront à quelqu'une des susdites processions, deux cents jours d'Indulgences.

De plus, aux mêmes confrères et sœurs, qui à tout le moins contrits et confessés, le Jeudi-Saint accompagneront le Très-Saint Sacrement, cent jours d'Indulgences.

Et à ceux qui semblablement accompagneront le Très-Saint Sacrement, soit qu'on le porte aux malades, ou pour quelque façon que ce soit, avec ou sans flambeaux, cinq ans d'Indulgences, et autant de quarantaines.

Et à ceux qui en seront empêchés, diront un *Pater* et un *Ave*, et feront la susdite prière, cent jours d'Indulgences.

De plus aux femmes qui, pour quelque juste sujet, n'auront pu accompagner le Très-Saint Sacrement, en disant une fois le *Pater* et une fois l'*Ave*, et priant dévotement pour le malade, semblablement cent jours d'Indulgences.

Auxdits confrères et sœurs, qui le Jeudi-Saint visiteront le lieu où repose le Très-Saint Sacrement, et là feront leurs susdites prières, nous leur relâchons semblablement cent jours de pénitence à eux enjointes, ou par eux encourues selon la forme et coutume de l'Eglise.

Finalement, de notre autorité apostolique, nous vous donnons, et à votre archiconfrérie, plein pouvoir d'associer et vous aggréger les autres confréries, et leur communiquer toutes les susdites Indulgences,

y observant toutefois la formule contenue en la constitution faite par notre prédécesseur Clément VIII, d'heureuse mémoire, pour le réglement desdites aggrégations des autres confréries, nonobstant tous décrets et constitutions apostoliques à ce contraires; ces présentes valables à perpétuité. DONNÉ à Rome à Saint-Pierre, sous l'Anneau du Pêcheur, ce 3 novembre 1606, et de notre Pontificat le deuxième. De toutes lesquelles Indulgences et grâces spirituelles ci-dessus rapportées, ladite confrérie et les confrères pourront se servir, et en jouir selon la constitution de Clément Pape VIII, d'heureuse mémoire, dont voici la teneur :

CLÉMENT Pape VIII. Nous approuvons à perpétuité par notre présente constitution tout ce que le Saint Siége a ci-devant octroyé pour le progrès du salut des fidèles. Mais il seroit arrivé que plusieurs Pontifes Romains nos prédécesseurs, et peut-être nous-mêmes aurions accordé à quelques Ordres et Instituts réguliers, et même aux archiconfréries des fidèles séculiers, et aux congrégations de diverses nations, noms et instituts, érigées et instituées par l'autorité du Saint Siége, tant en cette ville de Rome qu'aux autres villes et lieux de la Chrétienté, le pouvoir et la faculté d'ériger, tant en leurs Eglises ou Colléges, qu'aux autres lieux, et de s'associer et aggréger des autres confréries et congrégations déjà érigées et instituées, soit à Rome ou ailleurs, et de leur communiquer les priviléges, facultés, indulgences et autres grâces spirituelles et indults : C'est pourquoi à l'avenir tous Maîtres, Prieurs, Prévôts, Recteurs, Gouverneurs, Précepteurs, Primicères, Prélats, Custodes, Gardiens, Préfets, Administrateurs, et autres Officiers ou Supérieurs, de quel nom qu'ils soient, de tous ordres réguliers, religions et instituts, ne pourront ériger ou instituer qu'une seule confrérie ou congrégation, et ce avec le consentement de l'Ordinaire du lieu, et à la vue des lettres testimoniales qui feront foi de la piété et offices de charité chrétienne que prétend exercer la confrérie ou congrégation qui doit être érigée. Et les supérieurs susnommés des archi-

confréries ou congrégations susdites, avec le consentement de l'Ordinaire, et lettres testimoniales qui feront foi de l'institut, piété et exercices de charité chrétienne accoutumés en la congrégation ou confrérie qui doit être aggrégée, pourront s'associer ou aggréger, en chaque cité, ville ou lieu, une seule confrérie ou congrégation déjà érigée et instituée audit lieu par l'autorité du Saint Siége ou de l'Ordinaire, et non encore aggrégée à aucun ordre, religion, institut, archiconfrérie ou congrégation de même ou différente nation, nom et institut. Et auxdites confréries ou congrégations ainsi érigées, instituées, aggrégées, ne pourront être communiqués les priviléges, indulgences, facultés ou autres grâces spirituelles, ou indults qui ont été octroyés par extension et communication à l'ordre, religion ou institut qui érige, institue ou communique, ou à l'archiconfrérie et congrégation qui aggrége; mais ceux-là seulement qui leur ont été spécialement et nommément concédés; et ne les pourront communiquer sous des causes générales de parole, ni à l'instar, mais expressément, spécialement et nommément. Les statuts déjà reçus et établis pour le gouvernement des ordres, religions et instituts qui érigent, instituent et communiquent, ou des archiconfréries et congrégations qui aggrégent, ne pourront être communiqués aux confréries ou congrégations qui sont érigées, instituées, ou à qui la communication des priviléges et autres grâces susdites aura été faite, sinon étant examinés par l'Evêque Diocésain, et approuvés par lui, selon la portée du lieu; mais en telle sorte qu'ils demeurent en tout et pour toujours sujets aux décrets, réglemens et correction dudit Evêque. De plus, Nous voulons et ordonnons qu'aux susdites érections, institutions, communications, aggrégations, tous les susdits ordres, religions ou instituts qui érigent, instituent et communiquent, et les archiconfréries ou congrégations qui aggrégent, observent soigneusement à l'avenir la formule que Nous leur avons naguères prescrite, suivant laquelle les ordres, religions et instituts qui érigent, instituent et communiquent, et les archiconfréries ou congrégations qui aggrégent, peuvent

seulement communiquer les priviléges, facultés, indulgences et autres grâces spirituelles ou indults qui leur sont nommément et expressément concédés, et non ceux qui leur sont donnés par communication, et à l'instar, comme il est dit ci-dessus, aux confréries et congrégations qui seront à l'avenir érigées, instituées, aggrégées, et à qui l'on fera la susdite communication : et des grâces susdites, les confréries et congrégations seulement qui seront de même nation, nom, ordre, religion ou institut, avec l'archiconfrérie ou congrégation à laquelle elles sont à présent, ou seront à l'avenir aggrégées, pourront pleinement jouir. Tellement que les ministres, officiers, ou autres susnommés supérieurs desdites confréries ou congrégations érigées, instituées, aggrégées, et à qui la susdite communication aura été faite, pourront, lorsqu'il sera convenable, promulguer et publier les susdits priviléges, indulgences, faculté et autres grâces spirituelles ou indults; tout néanmoins vu et reconnu au préalable par l'Ordinaire du lieu, qui de l'avis de deux du corps ou chapitre de son Eglise, y joindra son ordonnance et permission, suivant le décret du sacré Concile de Trente. Pourront aussi lesdits ministres, officiers ou autres susnommés supérieurs, recevoir toutes les aumônes et bienfaits que la charité des fidèles leur apportera, selon la manière et forme qui leur sera prescrite par l'Ordinaire du lieu; néanmoins toutes tables, bassins, boîtes et troncs qu'on a coutume d'exposer publiquement aux portes des Eglises ou Oratoires desdites confréries, leur étant ôtés et interdits : ce que seront tenus d'observer les ordres, religions ou instituts qui érigent, instituent et communiquent, et les archiconfréries ou congrégations qui aggrégent, soit en cette ville de Rome, soit en toute autre cité, ville ou lieu que ce soit, selon la forme et manière qui leur sera prescrite, ou par notre vicaire en cette ville, ou respectivement par les Ordinaires des lieux, procureront que par l'avis ou de notre susdit Vicaire, ou respectivement des autres Ordinaires des lieux, les aumônes ainsi reçues soient fidèlement employées aux réparations ou ornemens des Eglises, soit des ordres, religions et instituts qu érigent, instituent, et des archiconfréries qui aggré-

gent, soit respectivement des confréries, ou congrégations érigées, instituées et aggrégées, et auxquelles sera faite la susdite communication, ou qu'elles soient employées à quelques autres usages, ou œuvres pies et charitables, afin que tous entendent que la débonnaireté du Saint Siége n'ouvre pas aux fidèles les célestes trésors de l'Eglise par aucun motif d'avarice ou de lucre, mais pour réveiller et accroître leur piété et charité. En outre, nous entendons que les confesseurs qui sont ou seront choisis en vertu des priviléges concédés aux ordres, religions et instituts qui érigent et communiquent, ou aux archiconfréries, ou congrégations qui aggrégent et communiquent aux confréries ou congrégations aggrégées, soient approuvés, s'ils sont séculiers, en cette ville par Notre susdit Vicaire; si dehors, par les Ordinaires des lieux : s'ils sont réguliers, non seulement par notre susdit Vicaire ou autres Ordinaires des lieux respectivement, mais encore par leurs supérieurs, et qu'ils puissent absoudre les confrères de tous crimes, cas et censures, autant seulement qu'il est porté par la teneur et forme de leursdits priviléges, selon qu'ils sont en usage et vigueur, et non contraires aux décrets du saint concile de Trente, ou aux constitutions des Pontifes Romains nos prédécesseurs, ou aux nôtres, et non révoqués expressément, ou non compris sous quelques générales révocations. De plus, Nous déclarons que lesdits confesseurs ne peuvent, sous prétexte et en faveur de leursdits priviléges, absoudre les cas contenus en la Bulle ou aux lettres qu'on publie annuellement le Jeudi-Saint, ni la violation de l'immunité ou liberté ecclésiastique, ou de la clôture des monastères des Religieuses, si quelqu'un, sans griève et urgente nécessité, et sans permission des supérieurs, y étoit entré, et même s'il y avoit eu de l'abus en ladite entrée, bien qu'elle ait été avec cause et permission, ni d'avoir frappé ou offensé une personne ecclésiastique, ni du duel, ni de tous autres cas réservés (à présent et à l'avenir) à Nous et à notre susdit Vicaire, ou aux ordinaires des autres lieux, ni d'aucune excommunication *ab homine*, ni dispenser sur aucunes irrégularités, soit qu'elles proviennent *ex defectu*, soit qu'elles soient encourues *ob delictum*, etc. Donné à Rome, à Saint Pierre, sous l'anneau du pécheur,

cheur, le septième décembre mille six cent quatre, et de notre Pontificat le treizième. Nous voulons et ordonnons que pareille foi soit ajoutée à nos présentes Lettres que l'on ajouteroit à l'original, s'il étoit exhibé et présenté. Et pour plus grande foi et témoignage d'icelles, Nous les avons fait souscrire et publier par le Secrétaire de l'Archiconfrérie, et y avons fait apposer les sceaux du Protecteur et de l'Archiconfrérie. Donné à Rome, dans le lieu ordinaire de notre congrégation, l'an de Notre-Seigneur mille six cent soixante dix-neuf, Indiction seconde, le huitième Mai, et du Pontificat de Notre Saint Père en Jésus-Christ, Innocent par la grâce de Dieu Pape XI, le troisième.

P. CARDINAL DE ALTERIS, Protecteur.

FALLACINI, Archev. de Théodose, Administrateur.

JEROME MELCHIORIUS, Administrateur.

*Reg. lib.* 3. *fol.* 30.

*JEAN-BAPTISTE SAURUS, Secrétaire.*

# RÈGLES ET STATUTS

## DE LA COMPAGNIE

## *DES PÉNITENS BLANCS*

## DE SAINT-LAURENT-LÈS-GRENOBLE.

# PREMIÈRE PARTIE.

## CHAPITRE PREMIER.

### *De la Présentation et Réception des Confrères.*

#### ARTICLE PREMIER.

LORSQUE quelqu'un aura dessein de se faire recevoir en cette compagnie, il s'adressera aux Recteur, Vice-Recteur et Infirmier général ; les deux premiers pour les prier d'agréer qu'on le propose au conseil, et le dernier pour en faire la proposition.

#### ART. II.

L'Infirmier, après avoir conféré avec les Recteur et Vice-Recteur, demandera à ce que le conseil soit assemblé, auquel il remontrera comme il se seroit présenté un postulant, et qu'il auroit requis à ce qu'ils fussent convoqués pour délibérer s'il doit être proposé à la compagnie. Sur quoi chacun opinera selon la connoissance qu'il en pourra avoir : que si le postulant étoit une personne dont la vie et les mœurs n'étant pas bien connues, on ne pût délibérer sur-le-champ, on renverra les opinions au premier conseil, pour cependant s'en informer, ou ainsi que le jugera à propos le Recteur : que s'il étoit jugé incapable d'être admis en la compagnie, on le refusera le plus honnêtement qu'il sera possible.

ART. III.

Si le postulant se sert d'un confrère pour le présenter, qui ait droit d'entrer au conseil, il ne pourra toutefois assister à celui-ci, comme étant suspect.

ART. IV.

Que si le conseil ne trouve rien à dire ni dans sa vie, ni dans ses moeurs, le Recteur le proposera à la compagnie trois Dimanches ou Fêtes solemnelles consécutives, après la Messe ou les Vêpres, et sans qu'on puisse faire deux proclamations en un jour pour une même personne, afin que si quelqu'un ayant une connoissance plus particulière de sa vie, savoit quelque chose qui lui en dût empêcher l'entrée, il pût en avertir le Recteur, qui faisant assembler le conseil, ouïra les causes d'empêchement, sur la validité desquelles sera délibéré.

ART. V.

Le Secrétaire tiendra état des proclamations, et les affichera en un papier volant à l'entrée du Choeur, afin que chacun en puisse être informé; les Prêtres et Officiers, tant du Parlement et Chambre des Comptes, que bureau des Finances, pour la réception desquels on aura fait enquête dans leur Corps (à la réserve des suppôts) n'étant pas sujets à ces proclamations.

ART. VI.

Dès la première, le postulant ira voir le Maître des Novices, qui l'instruira des Statuts de la Compagnie; lui enseignera l'Office qui se chante au Choeur, auquel il est obligé d'assister à la tribune jusque à sa réception : de plus il lui ordonnera de se disposer à une confession générale (s'il le peut) et à la communion pour ce jour, et de préparer un sac de toile blanche commune, sans dentelles ni autres agrémens, avec une ceinture qui tombe au-dessous du genou, un capuchon de même toile que le sac, un chapelet blanc de médiocre grosseur, et un écusson qu'il doit porter sur le bras gauche.

### Art. VII.

Le postulant, au jour pris pour sa réception, autre qu'un de ceux auxquels il aura été proclamé, se trouvera à l'heure de l'Office dans le Revestiaire, avec son sac et tout ce qui lui est nécessaire; il sera conduit au Chœur en son habit ordinaire par un Maître des cérémonies, et là remis entre les mains du Maître des Novices, qui siégera avec lui au-dessous du Recteur pendant l'Office, le conduira à la communion, et après la Messe au pied de l'autel, où étant à genoux il sera revêtu du sac de la Confrérie par le Recteur, après avoir promis de garder fidèlement les Statuts de la Compagnie, et d'obéir à ses Officiers; à quoi faire il sera exhorté par celui qui l'aura reçu.

### Art. VIII.

Si celui qui doit être reçu est Prêtre, on lui donnera l'Habit étant débout, et on ne lui fera aucun discours: et après sa réception il ira recevoir la félicitation de tous les confrères, pendant qu'on chantera le Te Deum; ce qui sera fait aussi par tous les autres.

### Art. IX.

Le Secrétaire, après avoir vu la quittance du Trésorier pour les droits de la chapelle, passée en faveur du nouveau reçu, dressera un acte de la réception, signé par l'Officiant et deux Conseillers avec l'Infirmier général; auquel acte sera inséré le nom, surnom et qualité dudit nouveau confrère, daté de l'an, jour et heure, et il demeurera dans les archives de la compagnie.

### Art. X.

S'il y avoit plusieurs personnes à recevoir, le plus âgé sera reçu le premier, à moins que les qualités n'en fassent la différence.

### Art. XI.

On ne recevra personne avant l'âge de quinze ans, et qui ne soit habitant de la ville, ou des lieux si voisins qu'il puisse assister aux Offices et assemblées qui se font.

## CHAPITRE II.

### *De l'Aggrégation.*

### ARTICLE PREMIER.

S'IL se trouve quelque confrère étranger, qui s'habituant dans la ville, désire d'être aggrégé, il ira voir les Recteur, Sous-Recteur et Infirmier général, et remettra ses lettres et attestations à ce dernier, pour les faire voir au conseil, duquel ayant été approuvé, il sera proclamé aux formes ordinaires; et au jour pris pour l'aggrégation, il se confessera et communiera; et ayant payé les droits de la chapelle, il en sera dressé un acte par le Secrétaire, qui sera lu et publié dans la chapelle.

## CHAPITRE III.

### *De la création des Officiers.*

### ARTICLE PREMIER.

LES Officiers de la compagnie seront, un Recteur, un Vice-Recteur, six Maîtres des cérémonies, un Infirmier général, six Conseillers, deux Maîtres de Novices, six Sacristains, si Choristes, six Infirmiers particuliers, deux Secrétaires et un Trésorier; desquels on fera l'élection tous les ans ans à la Fête-Dieu, à laquelle tous les confrères seront obligés d'assister; et en cas d'absence sans cause légitime, jugée telle par la Recteur, les défaillans seront condamnés en trois livres de cire blanche le chacun.

### ART. II.

Avant de procéder à cette élection, incontinent après que l'Office aura été fait, qu'on finit à Laudes, renvoyant à dire les petits Offices pendant qu'on ouvre

les billets ; et la Messe étant achevée, les portes de la chapelle ayant été fermées, on chantera le *Veni, Creator*; ensuite duquel le Recteur fera une petite exhortation, pour convier tous les confrères à se comporter sans passion à cette rencontre, et à choisir les plus exemplaires et les plus assidus; et à l'instant chacun fera son billet, dans lequel on nommera ceux qu'on jugera à propos pour Recteur ou Vice-Recteur; et pour ceux des confrères qui ne sauront pas écrire, ils s'adresseront au chapelain, qui sera dans la Sacristie pour suppléer à leur défaut, sans qu'il soit permis de briguer les charges, à peine d'en être déclarés indignes, ni aussi à personne de les refuser sans cause légitime, jugée telle par le conseil.

## ART. III.

Cela étant fait, le Recteur et Vice-Recteur, tant ceux qui sortent de charge, que les deux qui plus récemment les auront exercées, avec l'Infirmier général et les deux anciens Conseillers, s'assembleront dans la chambre du confessionnal pour nommer un Disquisiteur et un Secrétaire qui puissent visiter les billets; lesquels ayant été choisis, prêteront serment entre les mains du Recteur, sur le Crucifix, au pied de l'Autel, de garder inviolablement le secret; et au cas qu'ils y contreviennent, ils seront déclarés inhabiles d'être jamais admis à de pareils emplois, et il sera pris conclusion contre eux.

## ART. IV.

Cela fait, le Recteur s'asseoira auprès d'une table préparée pour cela au bas de l'Autel, sur laquelle sera le livre des élections avec un bassin; le Chapelain siégera à sa droite, le Disquisiteur à sa gauche et le Secrétaire vis-à-vis d'eux, lequel appellera tous les confrères, commençant par les anciens confrères, pour apporter leurs billets, sans qu'aucun puisse s'ingérer d'en bailler d'autre que le sien, ni qu'il soit permis d'en recevoir que des présens qui auront payé leurs pensions, les défaillans n'ayant aucune voix active ni passive, et pour cet effet, le Trésorier sera là présent pour les accuser.

ART. V.

Après quoi le Recteur ayant compté s'il y a plus ou moins de billets que de confrères présens ; auquel cas, s'il y avoit erreur, il les avertira pour procéder à un nouveau scrutin, et fera brûler les premiers billets par le Secrétaire à la porte qui est derrière l'autel. Il se lèvera de sa place, s'il n'y a point d'erreur, et ayant mis sur la table le sceau de la confrérie avec les clefs des archives, il ira se mettre parmi les autres confrères, le Vice-Recteur sortant aussi en même temps de la place qu'il occupoit ; et ils réciteront tous ensemble les petits Offices, qui seront achevés par le plus ancien des confrères.

ART. VI.

Cependant le chapelain ouvrant les billets, les montrera au Disquisiteur, et au Secrétaire, qui écrira les noms de tous ceux qui se trouveront avoir quelque suffrage ; et ensuite il tirera une ligne, qu'il croisera toutes les fois que le même sera nommé, pour connoître plus aisément celui qui, ayant le plus de voix, doit être élu pour Recteur, de même pour Vice-Recteur ; après quoi il brûlera tous les billets à la porte qui est derrière l'autel.

ART. VII.

L'élection des Recteur et Vice-Recteur étant faite, le Secrétaire en dressera un acte dans le livre des élections, daté de l'an, jour et heure, auquel il insérera les nom, surnom et qualités des nouveaux élus, et les publiera à l'instant dans la chapelle en cette forme :

ART. VIII

*Au Nom de Notre-Seigneur; ainsi soit-il. C'est ici l'élection des Recteur et Vice-Recteur de la Confrérie des Pénitens Blancs, sous le Vocable du Saint Sacrement, établie en la ville de....... faite par tous les Confrères légitimement assemblés dans leur chapelle ce jourd'hui N. du mois de N. de l'année N. en laquelle Frère N. a eu pour être Recteur tant de suffrages, et Frère N. pour être Vice-Recteur, tant* ( Il faut dire leurs qualités ) : *et partant moi Secré-*

*taire de la présente Election, tant en mon nom qu'en celui de tous mes confrères ici assemblés, je nomme ledit frère N. pour Recteur, et frère N. pour Vice-Recteur, et les déclare canoniquement et légitimement élus.*

### Art. IX.

Après quoi les Recteur et Vice-Recteur nouvellement créés seront conduits devant l'Autel par deux des anciens confrères avec les cannes; et là, à genoux, et le Chapelain assis en une chaire, tenant le livre des Evangiles en main, ils promettront de se bien et duement comporter au fait de leur charge, de tenir exactement la main, apporter tous leurs soins à l'observation des Statuts, et se comporter comme de bons et fidèles chefs, là où il s'agira de la gloire de Dieu et du bien de la compagnie. Le Chapelain ayant reçu leur serment, leur remettra le Sceau et les clefs des Archives et de la Chapelle, pour marque de leur autorité; et ils seront ensuite conduits à leurs places, où ils seront félicités des frères, conduits par les mêmes anciens confrères, en défilant le long des bancs et sans confusion, après qu'on aura achevé le *Te Deum*, et que le Recteur aura dit l'Oraison.

### Art. X.

L'élection des autres Officiers ayant été renvoyée après les Vêpres du même jour, si-tôt qu'elles auront été parachevées, les Recteurs et Vice-Recteurs nouveaux et anciens, ou en leur absence quelqu'un de ceux qui plus récemment auront exercé les mêmes charges, avec l'Infirmier général, les deux anciens Conseillers et un Secrétaire, s'assembleront dans la chambre du conseil pour choisir ceux qu'ils jugeront plus capables pour chaque Office; et ensuite il sera dressé un acte de leur élection, qui sera lu et publié à l'instant.

### Art. XI.

Après que la publication aura été faite, le Recteur ayant été conduit à l'Autel par deux des anciens confrères, il s'asseoira au bas d'icelui pour exhorter tous les nouveaux Officiers à s'acquitter de leur devoir, et recevoir leur serment sur le Crucifix qu'il tiendra;

après quoi il sera reconduit à sa place, dans le même ordre qu'il sera venu ; et dira l'Oraison après le *Te Deum*, qui sera chanté incontinent.

## CHAPITRE IV.

### *De l'ordre et économie.*

### ARTICLE PREMIER.

La paix et l'ordre étant les principaux appuis d'une compagnie, et dépendant d'un bon conseil qui puisse remédier aux affaires qui se présentent, il y aura pour cet effet, outre le conseil général, un conseil particulier, composé tant des Recteur et Vice-Recteur actuels, et de ceux qui ont eu auparavant les mêmes charges, que de ceux qui se trouvent pour lors Officiers.

### ART. II.

Ce conseil s'assemblera toutes les fois qu'il sera jugé à propos par le Recteur ou Vice-Recteur, et en leur absence, par celui qui les représente, lorsque c'est une affaire qui ne peut souffrir aucun retardement : et pour que les conclusions qui y seront prises soient valables, il faut que les assemblées soient pour le moins au nombre de sept. Ils sont tous inviolablement obligés au secret, à peine d'être déclarés indignes d'y pouvoir jamais être admis. Il aura pouvoir de juger de toutes les affaires de la compagnie ; et s'il s'en rencontre quelqu'une qui soit importante, la conclusion qu'on y aura prise, sera proposée à tous les confrères, pour être par eux ratifiée s'il y échoit, et y obéir ponctuellement, à peine d'être puni ainsi qu'il sera avisé par ledit conseil particulier.

### ART. III.

Lorsqu'audit conseil il sera fait quelque proposition par l'un des confrères, soit Officier ou autre, celui qui l'aura faite se retirera pour laisser opiner avec liberté, à la réserve du Recteur et de l'Infirmier

général, ou les particuliers, lorsqu'ils feront les fonctions de leurs charges.

### ART. IV.

Les Secrétaires tiendront un registre exact des conclusions qui y seront prises, auquel ils inséreront les noms et les charges des Officiers présens, par lesquels elles seront signées; ledit registre et autres livres de la chapelle, demeurant dans les archives, qui fermeront à deux serrures, desquelles le Recteur aura la clef de l'une, et les Secrétaires, de l'autre.

### ART. V.

Le Trésorier ne pourra accepter aucun mandat, qu'il ne soit signé du Recteur ou Vice-Recteur, et de l'Infirmier général, lesquels n'en feront expédier aucun que pour les charges de la compagnie, ou pour choses utiles et nécessaires, à peine d'en demeurer responsables, et être obligés à la restitution des deniers, suivant qu'il sera jugé par le conseil.

### ART. VI.

Tous les confrères paieront annuellement une pension telle qu'il sera avisé par le conseil particulier, et ensuite ordonné par le géneral, pour subvenir aux frais et charges de la compagnie; et ce paiement se fera entre les mains du Trésorier, qui en passera sa quittance, depuis le premier du mois de Janvier jusqu'au Samedi-Saint inclusivement; passé lequel jour, les défaillans ne pourront être admis à aucune délibération au conseil, ni être faits Officiers; et l'année échue, ils seront contraints au paiement desdites pensions par les voies de la Justice.

### ART. VII.

Il y aura un tronc à l'entrée de la chappelle, pour recevoir les deniers, tant des aumônes particulières des confrères, que des amendes et collectes, lequel fermera à deux différentes clefs, dont l'une sera gardée par le Recteur, et l'autre par l'Infirmier général. On ouvrira le tronc le lendemain de Pâques, et le jour

de la Nativité de Notre-Dame, le huit septembre, à l'issue des Complies; et l'argent qui s'y trouvera, sera remis entre les mains du Trésorier, qui s'en chargera, pour être employé, suivant les mandats qui en seront expédiés, ainsi qu'il a été dit en l'art. V.

### ART. VIII.

La compagnie fournira les cierges pour l'usage de la chapelle, pour accompagner le Saint-Sacrement, lorsqu'on le porte aux malades; pour les quatre écussons aux enterremens des confrères décédés, et pour les étrangers qu'on fait venir à la musique aux jours de procession; pour ce qui est des confrères, ils s'en pourvoiront à leurs frais.

---

## CHAPITRE V.

### *De l'Office divin.*

### ARTICLE PREMIER.

LES confrères s'appliqueront sur-tout à dire dévotement, posément et distinctement leur Office, et seront exacts à se trouver en leur chapelle aux heures déterminées, pour y réciter à haute voix l'Office du S. Sacrement, sans empêcher toutefois ou détourner l'Office ordinaire de l'Eglise paroissiale. Les jours assignés pour chanter leur Office, sont les suivans: Tous les troisièmes Dimanches des mois et les Fêtes principales de l'année; savoir, les jours de la Circoncision, des Rois, de la Purification de Notre-Dame, de l'Annonciation, le Lundi et le Mardi de Pâques, le jour de l'Ascension, les deux Fêtes de la Pentecôte, celle de la Trinité, les jours de Saint Jean-Baptiste, de Saint Pierre, de Saint Magdeleine, de l'Assomption de Notre-Dame, de Saint Louis, de la Nativité de Notre-Dame, de Saint Côme et Saint Damien, la Fête de tous les Saints, celle de la Conception de Notre-Dame, de Noël et le jour suivant, outre les jours de la Semaine Sainte, qu'on chantera les Ténèbres après celles de la grande Eglise : mais

par-dessus toutes les Fêtes, on célébrera solemnellement celle du Très-Auguste et Très-Saint Sacrement, disant l'Office du Jeudi, le dimanche et le jour de l'Octave, s'assemblant tous les autres jours dans la chapelle entre quatre et cinq heures du soir, pour chanter dévotement les hymnes du Saint Sacrement avec l'Oraison. Le Saint Sacrement sera exposé pendant toute l'Octave, et toujours accompagné au moins de deux confrères revêtus de leurs habits, qui feront Oraison les uns après les autres, pour le moins chacun l'espace d'une heure à genoux, sans se découvrir aucunement.

### Art. II.

Et parce que nous prétendons par tels et semblables exercices de piété et de dévotion nous affranchir d'une infinité de maux qui se commettent journellement dans les compagnies du monde, à cet effet, nous avons trouvé bon d'exhorter les confrères à faire pendant les trois derniers jours du carnaval quelques prières particulières en leur chapelle, au moins le matin, y entendant la Messe, et à communier le Dimanche; ce qui ne semblera pas difficile à ceux qui auront à cœur le salut des ames, si chèrement rachetées par le Sang de Jésus-Christ.

### Art. III.

Il ne sera pas permis aux confrères d'assister aux Offices sans leur habit, lequel ils prendront en silence, se remettant en mémoire la pénitence des Ninivites, lorsqu'ils se couvrirent de sacs pour appaiser l'ire de Dieu. Entrant au Chœur, ou dans le lieu destiné pour chanter, ils auront la face découverte; et s'étant mis à genoux devant l'autel, après une courte prière, ils baiseront la terre avant que d'aller à leur place : en y allant, ils salueront le Recteur ou le Vice-Recteur, et non les autres, et demeureront dévotement à genoux jusqu'à ce que l'Office commence, n'étant nullement permis sans nécessité de tenir de longs discours dans la chapelle. En sortant, ils feront les mêmes révérences ou baisemens de terre.

## ART. IV.

Le dernier coup de l'Office ne sonnera jamais que par le commandement du Maître ou Vice-Recteur ; et surtout on ne permettra à personne d'entrer dans le lieu où les confrères chantent leur office, s'il n'est du corps de la compagnie, ou des désirans ou fréquentans : que si quelqu'un s'absente de l'office et des exercices ordinaires (ce que le Portier reconnoîtra par le moyen de la table attachée tout à l'entrée de la chapelle, où chacun en entrant se doit marquer), il ne manquera pas d'en donner avis au Recteur. Si l'absent n'a pas une légitime excuse, *il mettra la première fois 2 sols dans la boite des pauvres; et en cas qu'il ne s'amende point après la correction publique faite en présence des Confrères par le Recteur, on l'effacera du Catalogue.* Et parce qu'il s'en pourroit recevoir quelques-uns qui ne seroient point lettrés, et qui faute de ne pouvoir dire l'Office, seroient privés des Indulgences accordées à ceux qui le récitent, en disant à chacune des heures dudit office, trois fois le *Pater noster*, l'*Ave Maria* et le *Credo* ; ils seront participans de toutes les grâces accordées à la congrégation.

## ART. V.

Mais tous seront généralement avertis, que pour facilement gagner les Indulgences que les Saints Pères ont miséricordieusement octroyées à cette congrégation, il est bon qu'ils disent tous les jours, à l'heure qui leur sera la plus commode, le *Pange lingua*, avec l'oraison *Deus, qui nobis sub Sacramento, etc*; et ceux qui ne sauront lire, diront trois fois le *Pater noster* et l'*Ave Maria* ; et le tout pour remercier Notre-Seigneur Jésus-Christ, qui, par une invention si admirable, se communique à nous au Sacrement de l'Eucharistie.

## CHAPITRE VI.

### *Des Processions.*

#### ARTICLE PREMIER.

LES Processions de la compagnie sont réglées à quatre ; savoir , la première , le Jeudi-Saint;la Seconde , le Dimanche de l'Octave du Saint Sacrement ; la troisième , le dernier jour de l'Octave qui est le Jeudi ,( l'on porte le Saint Sacrement à ces deux dernières ) ; et la quatrième, qui est le jour de Saint-Roch , auquel jour on va en procession à la chapelle dédiée à ce Saint , située hors la ville , et là on y fait dire une Messe et donner la bénédiction du Saint Sacrement. Outres ces quatre processions solemnelles , il y en a encore une autre que les confrères font tous les quatrièmes Dimanches du mois autour du cloître.

#### ART. II.

Tous les confrères sont obligés d'y assister, ou d'avertir le Recteur de la cause de leur absence ; et faute d'y satisfaire , ou que leur excuse ne soit pas jugée légitime, les défaillans seront condamnés en une livre de cire blanche au profit de la chapelle.

## CHAPITRE VII.

### *Du Chapelain.*

#### ARTICLE PREMIER.

LA compagnie ayant besoin d'un chapelain , soit pour dire la Messe, ou pour ouïr les confessions , le conseil aura soin d'en choisir un qui soit sage , discret, dévot , de bonne réputation , et approuvé par l'Ordinaire ; si mieux il n'aime s'adresser à quelqu'un des Ordres Religieux qui sont dans la ville ; et l'ayant choisi , il sera proposé au conseil général, pour avoir son agrément.

## ART. II.

Lorsqu'il aura été agréé, le même conseil particulier conviendra avec lui d'une pension payable annuellement, quartier par quartier, en considération des services qu'il rendra à la compagnie, et le secrétaire dressera un acte dans les registres, du choix qu'on en aura fait et du traité et obligation respective, tant du couvent ou du Prêtre envers le conseil, que du conseil, pour et au nom de la compagnie, envers lui.

## ART. III.

L'Office du chapelain consiste à se rendre à la chapelle tous les jours qu'on fera l'Office, incontinent après le dernier coup de Matines, pour ouïr les confessions, ou plutôt s'il en est requis, et de célébrer la Messe si-tôt après l'Office. Aux veilles des Fêtes où le Saint Sacrement doit être en évidence, à la chapelle, il y viendra dire la Messe pour consacrer une Hostie qu'il mettra dans le Soleil, et fermera dans le Tabernacle jusqu'à l'heure de Vêpres, qu'il l'exposera incontinent après qu'on aura sonné le dernier. Il viendra l'exposer de nouveau le lendemain avant Matines, et aux autres heures qui lui seront indiquées par les Sacristains, et donner la bénédiction, soit la veille ou le jour de la Fête, suivant l'avis qu'il en aura eu des mêmes Sacristains, qui en auront reçu l'ordre des Maîtres des cérémonies.

## ART. IV.

Il est aussi obligé d'aller visiter les confrères malades : ouïr leur confession (si mieux ils n'en aiment un autre); d'assister lorsqu'on leur portera l'Extrême-Onction ; de les exhorter à la mort, et enfin de faire toutes les fonctions auxquelles sa profession l'oblige déjà en pareilles occasions.

## ART. V.

Au cas qu'il arrive qu'il soit indisposé ou absent, il aura soin de pourvoir la compagnie d'une personne en sa place qui lui soit agréable.

## CHAPITRE VIII.

### *Des mœurs des Confrères.*

### ARTICLE PREMIER.

TOUS les confrères devant faire profession d'une piété et d'une dévotion plus particulière que le reste des chrétiens, non seulement ils s'attacheront inviolablement à l'observation des commandemens de Dieu et de l'Eglise, mais ils s'étudieront encore à mettre en pratique les conseils de l'Evangile, et à faire connoître par leur vie qu'ils sont de véritables confrères, soit par la charité qu'ils pratiqueront entr'eux, ou l'amitié qu'ils y feront remarquer, telle qu'elle doit être parmi des frères, soit par la modestie et la douceur avec laquelle ils se comporteront dans toutes leurs actions, de façon qu'ils puissent servir d'exemple à tous leurs voisins, et de modèle à toute la ville.

### ART. II.

Ils auront une dévotion toute particulière à la Sainte Vierge comme à leur avocate. Dès qu'ils seront éveillés, ils feront leurs prières à Dieu pour le remercier des grâces qu'il leur a faites, et en demander la continuation. Ils iront adorer le Saint Sacrement à l'Eglise en sortant de chez eux, et ouïr la Messe. Ils ne se coucheront jamais qu'ils n'aient fait leurs prières et un examen de conscience, récité les Litanies de la Vierge, et demandé à leur bon Ange la continuation de ses soins.

### ART. III.

Ils feront étroitement garder dans leur famille les commandemens de Dieu et de l'Eglise; et au cas qu'eux-mêmes vinssent à les transgresser, sur-tout avec scandale, les confrères qui le sauront sont obligés d'en avertir le Recteur ou Vice-Recteur, ou l'Infirmier général, afin que s'ils le jugent nécessaire, ils en puissent donner avis au conseil, pour être corrigés et punis ainsi qu'il avisera.

ART.

ART. IV.

Ils tâcheront de régler leur vie à ce qu'elle soit exemplaire, que la paix règne dans leurs familles, et que leurs domestiques vivent chrétiennement.

ART. V.

Ils fuiront tous les lieux et les compagnies où ils pourront donner ou recevoir du scandale ; et au cas qu'il y soit contrevenu, celui des confrères qui s'en apercevra le premier, est de même obligé, ainsi qu'il a été ordonné ci-devant; et si c'est un Officier qui l'ait remarqué, il pourra, par l'autorité que lui donne sa charge, tâcher de remédier lui-même à ce déréglement, avant que d'en donner avis.

ART. VI.

Lorsque les confrères auront quelque différend, soit entr'eux ou des étrangers, ils tâcheront de s'accommoder amiablement avant que d'intenter un procès : que s'ils ne peuvent pas y réussir, ils prendront d'autant plus soigneusement garde que l'amitié ne vienne à se refroidir en eux, qu'ils y sont obligés par la qualité de confrères.

ART. VII.

Au cas qu'il arrive quelques inimitiés entre les confrères, pour quelque sujet que ce puisse être, après que le Recteur et le Conseil leur auront ordonné de se réconcilier, celui qui refusera, sera condamné à une peine arbitraire par le Conseil ; de même si c'est un confrère avec un étranger, et que ce soit le confrère qui soit refusant de se mettre bien avec son ennemi, il encourra la même peine.

ART. VIII.

Que s'il arrivoit quelque querelle dans l'enclos de la chapelle, les confrères sont obligés d'en avertir incontinent le Recteur ou l'Infirmier général : et le Conseil ayant été assemblé, on citera sur l'heure les querellans, pour ouïr la cause de leur différend ; et celui qui l'aura tort, sera puni pour le peu de respect qu'il auroit eu pour le lieu où il est.

## CHAPITRE IX.

### Des actions de dévotion.

### ARTICLE PREMIER.

TOUS les confrères se confesseront et communieront tous les premiers Dimanches de chaque mois, et celui de la Quinquagésime; de même aux Fêtes de Notre-Seigneur et de la Vierge ; savoir, les jours de Noël, de la Circoncision, le Jeudi Saint, la Pentecôte, la Fête-Dieu, la Conception de Notre-Dame, la Nativité, l'Annonciation, la Purification et l'Assomption ; de plus la Fête de Saint Jean-Baptiste et celle de tous les Saints ; ils sont exhortés de le faire aussi le jour de la Trinité ; et au cas qu'une de ces Fêtes arrivât peu de jours avant ou après le premier Dimanche du mois, la communion du jour de la Fête servira pour celle du Dimanche.

### ART. II.

Lorsque le Saint Sacrement sera en évidence à la chapelle, les confrères, revêtus de leur sac, la tête nue, l'iront garder à l'heure qui leur sera prescrite, suivant le rôle qui en sera dressé par les Secrétaires, et affiché à l'entrée du revestiaire, à peine d'une livre de cire blanche au profit de la sacristie.

### ART. III.

Ils feront le Pain-bénit à tour de rôle, selon l'ordre du catalogue, lequel sera distribué par le Concierge au Commun, et par les Sacristains au Chœur ; et en cas que quelqu'un refusât de le faire, il en dira ses raisons au Recteur, qui ne pourront être valables que par la pauvreté ; et les autres, après avoir été mandés au Conseil, en cas d'obstination, il y sera pourvu ainsi qu'il sera avisé.

### ART. IV.

Tous les Vendredis de Carême, les Confrères, en plus grand nombre qu'il se pourra, s'assembleront sur le soir

en la chapelle,pour réciter les Complies, le *Stabat*, et les Litanies de la Passion.

ART. V.

Le Jeudi-Saint après le dîner, les confrères étant assemblés,le Recteur fera le lavement des pieds à la manière portée en son lieu.

ART. VI.

La charité nous obligeant d'avoir un soin tout particulier des malades, les confrères sont obligés de se visiter les uns les autres en cas de maladie, d'avertir l'Infirmier du quartier,pour qu'il ait à faire les fonctions de sa charge, et avoir soin de se secourir et assister ceux qui étant dénués de moyens, n'ont pas de quoi le faire.

ART. VII.

Lorsqu'on doit porter le Saint Sacrement à un malade, s'il est confrère, huit d'iceux qui auront été commandés par l'Infirmier, se rendront à la Paroisse, et se revêtiront de leurs sacs, quatre desquels porteront le dais, et les quatre autres des flambeaux aux écussons de la compagnie : si c'est un malade qui ne soit pas confrère, incontinent qu'on en aura été averti par la grosse cloche qu'on sonne à la Cathédrale pour cet effet, deux confrères se rendront à l'Eglise en habit de séculier, et portant le chacun un flambeau aux écussons de la compagnie, ils suivront en leur rang le Saint Sacrement par-tout où il sera porté.

ART. VIII.

Et afin qu'il y ait assidûment des confrères, il sera dressé un rôle signé par l'un des Secrétaires, lequel sera affiché aux deux portes par où l'on entre au revestiaire, de mois en mois, dans lequel deux confrères seront nommés par semaine pour y assister,et iceux avertis dès le Samedi par le Concierge : que s'ils se trouvoient absens, ou qu'ils eussent quelqu'excuse légitime qui les en dispensât, ils avertiront l'Infirmier du quartier, ou l'un d'eux, pour y pourvoir ; et au cas que ceux qui auront été nommés viennent à y manquer, ils seront condamnés en une livre de cire blanche au profit de la chapelle.

## CHAPITRE X.

### *Des Obsèques et Sépultures des Confrères.*

### ARTICLE PREMIER.

La Sépulture étant le dernier devoir et la dernière preuve d'amitié et de charité que nous pouvons donner à nos amis, tous les confrères s'étudieront avec empressement à rendre ce dernier office à un confrère décédé, dès qu'ils en seront avertis : à cet effet, le premier qui saura son décès, en donnera incontinent avis au Recteur, s'il le peut, ou à l'un des Officiers, pour le lui faire savoir; et si l'heure le permet, les confrères s'assembleront à l'instant pour dire les Vêpres des Morts.

### ART. II.

Le lendemain, à l'heure qui aura été ordonnée par le Recteur, les confrères, après avoir récité l'Office des Morts, ouïront la Messe qui sera dite pour le repos de l'ame du défunt, et assisteront aux prières qui se feront après à l'entour de la bière de la compagnie.

### ART. III.

Les Prêtres qui sont de la compagnie, diront du moins une Messe, et les autres en feront dire selon leur commodité; et ils iront tous, s'ils le peuvent, visiter le corps en leur particulier, lui donner de l'eau-bénite, et prier Dieu pour lui.

### ART. IV.

Lorsqu'on voudra l'inhumer, tous les confrères se rendront à la chapelle, et revêtus de leurs sacs, recevront l'ordre des Maîtres des cérémonies pour le convoi; puis sortiront de la chapelle modestement et en silence, portant avec eux la bière, les flambeaux et écussons de la compagnie.

### ART. V.

Les confrères étant arrivés à la porte du logis où est le défunt, se rangeront en haie, et là attendront modes-

tement, en disant leur chapelet ou autres prières vocales : et la bière ayant été posée, les huit qui auront été ordonnés pour porter le corps et les flambeaux, conduits par l'un des Maîtres des cérémonies, iront lever le corps et le porter dans la bière, et quatre desdits confrères le chargeront sur leurs épaules, et suivront le Clergé ; pour le porter au lieu de la sépulture.

ART. VI.

Les cérémonies de l'Église étant achevées, ils feront sur la tombe les prières ordonnées dans le Rituel ; après quoi, lui ayant donné de l'eau-bénite, et salué le Saint Sacrement qui repose au Maître-Autel, ils reprendront la bière et se retireront au même ordre qu'ils seront venus. En entrant dans la chapelle, ils diront le *De profundis* ; et le Recteur ayant dit l'Oraison, ils sortiront du chœur, ainsi qu'il a été ordonné.

ART. VII.

Si quelque confrère manque à son devoir, tant pour l'Office que pour la sépulture, sans une excuse légitime, jugée telle par le Recteur, il est condamné en deux livres de cire blanche au profit de la chapelle, exigibles par l'Infirmier général.

ART. VIII.

La garde-robe avec les sacs et autres meubles du défunt pour l'usage de la chapelle qui s'y trouveront lors du décès, appartiendront à la compagnie, sans que les héritiers y puissent rien prétendre, et seront retirés par les Sacristains, qui s'en chargeront, pourvu qu'il n'ait point de fils qui soit confrère ou novice ; auquel cas ils lui appartiennent.

---

# *SECONDE PARTIE*

## CONTENANT LES RÈGLES PARTICULIÈRES des Officiers de la Compagnie.

## CHAPITRE PREMIER.

### *Du Recteur.*

### ARTICLE PREMIER.

LE Recteur étant le chef de cette compagnie, doit lui servir comme d'un guide fidèle et d'un sage conducteur qui mène tous ceux qui lui obéissent et qui le suivent, à la conquête des vertus; il doit par son exemple animer tous les confrères, et ne pas être obligé à rougir, si, lorsqu'il les exhorte à quelqu'action de dévotion, ou qu'il les corrige de quelque défaut, venant à faire une réflexion sur soi-même, il se trouve le moins zélé de tous et le premier coupable.

### ART. II.

Il sera assidu aux Offices, et aura soin que les confrères le soient aussi: il les corrigera avec charité; il sera circonspect dans les punitions qu'il ordonnera, et généralement dans toutes les actions de sa vie, fort modéré; il aura soin de faire observer exactement les Statuts; et, sans avoir égard à aucun parent, ami ou allié, ni même aux conditions, il prendra garde que chacun fasse son devoir.

### ART. III.

Il présidera au conseil; il aura une clé des archives, et une du tronc des aumônes; il signera les mandats, qu'il ne fera expédier que pour de bonnes causes, à peine d'en demeurer responsable; enfin, c'est lui qui sera le premier mobile de ce grand Corps, et de lui qu'on prendra les ordres dans toutes les occasions, et qui les donnera, après en avoir conféré avec son conseil, si la chose le requiert.

## CHAPITRE II.

### *Du Vice-Recteur.*

#### ARTICLE PREMIER.

IL y aura un Vice-Recteur, cela veut dire un Lieutenant du Recteur, et qui, en son absence, ou pour le soulager, en fera la fonction ; et par conséquent il doit être sage, discret, modeste, circonspect et prudent ; tel enfin qu'est le Recteur lui-même, les fonctions des deux charges étant aussi les mêmes.

## CHAPITRE III.

### *Des Maîtres des Cérémonies.*

#### ARTICLE PREMIER.

CES emplois étant des plus importans de la Compagnie, demandent des personnes modérées et prudentes ; ils doivent donner l'Ordre pour toutes les cérémonies dans les assemblées et actions de la compagnie, et les faire observer.

#### ART. II.

Ils prendront garde qu'aucun confrère ne parle, ni ne sorte du Chœur pendant l'Office ; et si l'on y contrevient, ils avertiront le défaillant de se comporter modestement : s'il ne le fait, ils le feront sortir du Chœur.

#### ART. III.

Ils conduiront les confrères à la Communion, et lorsqu'il faudra aller prendre des cendres et des rameaux, de même à l'adoration de la Croix du Vendredi-Saint : si quelqu'un de ceux qui ne sont point de la compagnie veut communier, ou recevoir à la chapelle une des susdites choses, l'un d'eux les ira prendre à la porte, les conduira à l'Autel et les ramènera.

ART. IV.

Ils prendront garde de mettre un tel ordre au Chœur, qu'il n'y puisse point arriver de confusion; et tous les derniers Dimanches du mois il mettront au pupître un catalogue des jours qu'on doit faire l'Office le mois suivant, et de l'ordre qu'on y doit tenir.

ART. V.

Ils auront soin de faire faire le motet qu'on doit chanter aux Processions, et de choisir tant ceux qui doivent aider aux Choristes, que ceux qui doivent porter le crucifix et les falots; et dans les Enterremens, la bière et les cierges.

ART. VI.

Ils veilleront à ce que les confrères gardent le silence, et marchent modestement aux Processions et actions publiques, et qu'ils se confessent et communient aux jours prescrits.

ART. VII.

Tous les Maîtres, pour marque de leur office, auront une canne qui sera dans les bancs auprès de leur place, et ils la porteront faisant les cérémonies au Chœur, et dans les Processions et Enterremens; ils pourront, dans ces deux dernières occasions, remettre à ceux des confrères qu'ils voudront, soit la leur ou celle de leurs collègues absens.

ART. VIII.

Ils auront l'œil à ce qu'aucun étranger ne se revête du sac, soit au Chœur ou ailleurs, sans la permission du Recteur; et au cas que quelqu'un s'y fût glissé, ils le feront sortir de l'avis du même Recteur.

ART. IX.

Ils écouteront si quelqu'un ne suit le ton donné par les Choristes, ou vient à discorder, pour le faire taire, et reprendre le ton qu'il aura manqué; et ils iront aux Fêtes solemnelles aux bancs à selles derrière les Choristes, pour annoncer les antiennes.

ART. X.

Finalement ils recevront et conduiront au Chœur les confrères étrangers, et les Magistrats qui s'y présenteront, sous l'avis du Recteur.

## CHAPITRE IV.

### *De l'Infirmier général.*

ARTICLE PREMIER.

On doit prendre garde, quand on procède à l'élection des Officiers, de ne donner cette charge qu'à un confrère qui soit non-seulement sage et dévot comme tous les autres, ayant charge dans la chapelle, mais qui soit encore prudent, vigilant, entendu et vigoureux dans les affaires de la Compagnie, puisqu'il doit être comme son Procureur.

ART. II.

Il veillera généralement sur toutes les mœurs des confrères, tant au dedans qu'au dehors de la chapelle, à ce qu'ils aient à garder inviolablement les Statuts, et il doit les reprendre charitablement s'ils viennent à y manquer; et en cas de récidive, il en avertira le Recteur, et demandera à ce que le conseil soit assemblé pour y être pourvu.

ART. III.

Il remarquera tous les confrères qui font coutume de manquer l'Office, et en avertira le Recteur; il recueillera à la fin de l'Office, avant la Messe, l'aumône, dont il distribuera un quart aux pauvres, et les trois autres quarts restans seront mis dans le tronc dont il a une clé, pour être employés, ainsi qu'il a été dit en la première partie, chap. IV, art. VII.

ART. IV.

Il fera toutes les propositions qu'il échoit de faire au conseil, soit pour la correction des défaillans, ou pour le bien de la compagnie, et aura voix délibérative.

ART. V.

Il est obligé de s'employer absolument à la réconciliation des confrères, s'il arrivoit quelque désordre entr'eux; et si la chose est considérable, d'en faire

son rapport au conseil, après en avoir conféré avec le Recteur.

ART. VI.

Il poursuivra le paiement des amendes, sans considération des parens, amis ou alliés, à peine d'en répondre en son particulier ; signera tous les mandats après le Recteur ; il aura l'œil à l'économie, entretenement et réparation de la chapelle.

ART. VII.

Il aura soin de faire lire le Statut à la chapelle le Lundi de Pâques et le quatrième Dimanche de l'Avent, avant la Messe.

---

## CHAPITRE V.

### *Des Conseillers.*

ARTICLE PREMIER.

ILS sont obligés de se rendre dans la chambre du conseil et ailleurs, toutes et quantes fois qu'ils seront mandés par le Recteur, et de s'y comporter sans passion, et dans la seule pensée du service de Dieu et du bien public.

ART. II.

Ils s'instruiront des affaires de la compagnie, et des Statuts qu'ils pratiqueront exactement en tous leurs points, pour, dans les occurrences, juger plus sainement des affaires.

---

## CHAPITRE VI.

### *Des Maîtres des Novices.*

ARTICLE PREMIER.

ILS auront soin d'instruire du devoir d'un véritable confrère tous ceux qui se présenteront pour être reçus ; et un d'eux les conduira au Recteur le jour qu'ils

devront être reçus, pour être revêtus du sac de Pénitence.

ART. II.

Ils veilleront sur les actions des Novices, afin qu'ils se contiennent modestement; et pour cela, ils prendront leurs places dans le Chœur, au-dessus de l'endroit où ils siégent, marcheront les premiers aux Processions, pour prendre garde à leurs déportemens.

ART. III.

Ils les instruiront des services qu'ils doivent rendre à la chapelle, et choisiront les plus capables pour cet effet; donneront ordre qu'aux jours auxquels on fait l'Office à la chapelle, du moins il y en ait deux. Ils auront soin de les faire confesser souvent, et faire instruire pour la sainte communion ceux qui ne l'auront pas encore faite; et immédiatement après le Recteur et le Vice-Recteur, ils auront un pouvoir absolu sur eux.

---

## CHAPITRE VII.

### *Des Sacristains.*

ARTICLE PREMIER.

CEUX-CI étant obligés d'approcher souvent l'Autel, doivent être doués d'une piété et d'une retenue plus grande que le reste des confrères.

ART. II.

Ils auront soin des meubles de l'Autel et de la Chapelle, desquels ils seront chargés et en rendront compte en sortant de charge: ils pareront l'Autel aux jours qu'on doit s'assembler, des couleurs ordonnées par l'Eglise, prendront garde que le linge soit blanc et propre, et qu'il y ait du vin, des hosties, et ce qui sera nécessaire, aux frais pourtant de la compagnie.

ART. III.

Ils tiendront toutes choses prêtes, soit pour l'Eau bénite, les Cendres, les Rameaux, ou le lavement des

pieds le Jeudi de la Semaine Sainte, sans attendre de s'en pourvoir dans le moment qu'il faut s'en servir.

ART. IV.

L'un d'eux aura le soin de faire la quête aux jours de communion ; et ce qu'ils auront reçu sera mis dans une boîte, pour être employé à l'achat des hosties et du vin pour l'Autel : que si cela n'étoit pas suffisant, la compagnie en fera la dépense ; et s'il en reste quelque chose à la fin de l'année, il sera remis à l'Infirmier général, pour être distribué avec les aumônes.

ART. V.

Ils serviront le Prêtre dans toutes les fonctions ; ils éclaireront les cierges, ils encenseront l'autel et la chapelle, lors et ainsi qu'il leur sera ordonné par les Maîtres des cérémonies ; et aux jours des Dimanches, distribueront le Pain-bénit aux confrères.

ART. VI.

Ils sonneront la cloche, ou donneront ordre au Concierge de la sonner toutes les fois qu'il sera nécessaire d'assembler la compagnie, et avant l'Office ; donneront si bien ordre à tout ce qui sera nécessaire à leur Sacristie, que dans le temps qu'on le commencera, ils en puissent fermer la porte et venir au Chœur, en sorte que personne n'y entre plus.

---

## CHAPITRE VIII.

### *Des Choristes.*

ARTICLE PREMIER.

Ils seront assidus à la chapelle ; toutes les fois qu'on fera l'Office, ils s'y trouveront des premiers ; et étant exposés à la vue de tout le monde, ils s'étudieront à être modestes et posés.

ART. II.

Ils entonneront selon les tons ordinaires ; ils chanteront distinctement et ponctuellement, et prendront garde à bien observer les cérémonies, ainsi qu'ils en auront reçu l'ordre des Maîtres, et qu'elles sont marquées dans le cérémonial.

## CHAPITRE IX.

### *Des Infirmiers particuliers.*

ARTICLE PREMIER.

On ne doit pas apporter un moindre soin pour l'élection de ceux qu'on veut proposer à ces charges, que pour celle de l'Infirmier général ; puisque, dans le quartier, sur tous ceux qui sont commis à leurs soins, et dans la chapelle sur tous leurs confrères, en l'absence de ce dernier, ils ont toutes les mêmes fonctions et la même autorité.

ART. II.

De plus, ils s'enquerront des malades, le chacun dans son quartier, pour en avertir l'Infirmier général, et celui-ci le Recteur et le Chapelain, pour les faire assister corporellement et spirituellement.

ART. III.

Ils auront soin de faire accompagner le Saint Sacrement, aux confrères malades, par huit des confrères, ainsi qu'il a été dit en la première partie, chap. IX, art. VII; et lorsqu'on le porte à des malades de la ville, de faire que ceux qui doivent accompagner n'y manquent point.

## CHAPITRE X

### *Des Secrétaires.*

ARTICLE PREMIER.

Les Secrétaires auront cinq Registres au dépens de la compagnie ; le premier, pour les réceptions des frères, dans lequel ils ne feront aucun enregistrement qu'il ne leur apparoisse de la quittance pour les droits de la chapelle ; le second, pour la création des Officiers ; le troisième, pour les conclusions et délibérations qui se prendront au conseil, où ils seront assidus pour cet effet;

le quatrième, pour l'inventaire tant des meubles de la chapelle que de la sacristie, avec les noms des bienfaiteurs et leurs présens; le cinquième, pour la recette et emploi des deniers de la compagnie.

ART. II.

Tous ces registres demeureront rière la chapelle, dans un cabinet fermant à deux serrures, dont ils auront la clé de l'une; et lesdits registres n'en pourront être tirés sans la permission du Recteur, qui aura la clé de l'autre serrure. L'on y tiendra aussi les Bulles, Patentes et Indulgences qui concernent la chapelle; les originaux desquelles pièces ne pourront jamais être transportés hors l'enclos d'icelle.

ART. III.

Ils dresseront les Lettres testimoniales de la réception des confrères, que le Recteur signera et scellera, et l'un d'eux au-dessous.

## CHAPITRE XI.

### *Du Trésorier.*

ARTICLE PREMIER.

LE Trésorier recevra tous les droits de la chapelle, tant des entrées, pensions, légats, qu'autres, de quelle nature qu'ils soient; en passera sa quittance en qualité de trésorier, s'en chargera et en rendra compte à la fin de l'année, et remettra entre les mains de son successeur les restans de son compte; il n'acceptera aussi aucun mandat qui ne soit signé du Recteur ou Vice-Recteur, et de l'Infirmier général, à peine de lui être rayé, et d'en demeurer responsable en son propre et privé nom.

# EXHORTATION

## *Pour recevoir un Confrère Pénitent.*

MON TRÈS-CHER FRÈRE,

*Hodie si vocem ejus audieritis, nolite obdurare corda vestra.*

Si vous avez entendu aujourd'hui la voix du Seigneur, qui vous a appelé à la pénitence, n'endurcissez point votre cœur à la tentation, et ne vous désistez jamais du dessein et de la bonne volonté que vous avez prise. Satan, l'ennemi des chrétiens et des enfans de Dieu, ne manquera pas de faire ses efforts pour vous tenter, et vous faire abandonner votre pieuse entreprise. Soyez ferme à lui résister, et ne vous laissez pas vaincre à ses tentations ; souvenez-vous toujours que Dieu vous a appelé à la pénitence, qui est un chemin assuré pour votre salut ; priez-le souvent qu'il ne vous abandonne pas, et qu'il ne se retire pas de vous.

C'est une nécessité, MON TRÈS-CHER FRÈRE, c'est une nécessité indispensable à un chrétien de faire pénitence, pour parvenir à son salut. Le Seigneur nous en a donné l'exemple, tous les Saints l'ont pratiqué pendant leur vie. Rien ne vous doit empêcher à présent de les imiter, les suivre, et vous sanctifier avec eux : peut-être trouverez-vous quelque peine à cela, par le changement que vous devez maintenant faire de votre vie, et un désistement général de tous les vains plaisirs de ce monde, pour embrasser la Croix de JÉSUS-CHRIST. Hélas ! que ne doit pas faire un chrétien pour un Dieu crucifié qui a répandu son sang pour nous, et ouvert son Paradis ? Ce qui nous doit faire trembler, c'est l'abandon que nous faisons le plus souvent de ses grâces. Profitez donc de la grâce que Dieu vous accorde aujourd'hui : suivez, suivez l'exemple de tant de Saints, qui dans leur tendre jeunesse ont embrassé si courageusement la vertu et la pénitence, l'ont pratiqué pendant leur vie et jusqu'à la mort. Ayez recours, MON CHER FRÈRE,

aux exercices de votre dévote Confrérie ; elle n'a point d'autre but dans son institution que d'attirer les chrétiens, et les acheminer à une vie parfaite, en fuyant le monde, ses pompes et ses vanités ; s'adonner à faire pénitence pour se rendre plus agréable à Dieu, par la pratique des bonnes œuvres, ainsi que vous avez lu ou dû lire dans les Statuts qu'elle a établis. Si vous voulez, MON CHER FRÈRE, exécuter ses intentions, et satisfaire au dessein qu'elle s'est proposé, vous devez, dès maintenant, vous dépouiller et quitter pour toujours les mauvaises habitudes que vous pouvez avoir, et recevoir présentement avec humilité et dévotion l'habit de Pénitent, suivre avec exactitudes les règles qu'elle a ordonnées, et que votre vie commence aujourd'hui d'être et soit toujours un exemple de vertus.

Pour cet effet, MON TRÈS-CHER FRÈRE, nous vous prions de faire votre possible pour ne tomber jamais dans le péché mortel ; d'éviter les occasions qui portent au mal ; de fuir les mauvaises compagnies ; vous empêcher de donner scandale à votre prochain, et que toutes vos actions ne soient dorénavant qu'une vraie et parfaite pénitence, accompagnée d'un perpétuel vouloir de bien faire ; aimer Dieu de tout votre cœur ; chérir votre prochain comme vous-même, et lui servir toujours d'exemple à bien faire.

Je vous exhorte donc, MON TRÈS-CHER FRÈRE, de vous trouver à tous les divins offices qui se feront dans cette chapelle, mais d'y venir avec empressement et une grande joie, pour y plaire à Dieu, l'adorer et le remercier de la grâce qu'il nous a faite d'avoir cette occasion pour travailler à notre salut ; d'obéir aux Officiers ; d'aimer nos confrères, les visiter lorsqu'ils sont malades, assister à leurs sépultures, vous aider à porter leurs corps et les ensevelir ; comme aussi de vous trouver à toutes les Assemblées et aux processions que la confrérie fera, lorsqu'il sera ordonné et commandé, ainsi que vous y êtes à présent obligé.

MANIÈRE

# Manière de servir et de répondre au Prêtre célébrant la Messe, suivant le sacré Concile de Trente.

*Premièrement, celui qui voudra servir et répondre au Prêtre célébrant la Messe, se mettra à genoux à son côté gauche, et lui répondra lorsqu'il dira ce qui s'ensuit.*

LE PRÊTRE.

INtroibo ad altare Dei.

*Celui qui sert.* Ad Deum qui lætificat juventutem meam.

*Le Prètre.* Judica me, Deus, et discerne causam meam de gente non sanctâ; ab homine iniquo et doloso erue me.

*Celui qui sert.* Quia tu es, Deus, fortitudo mea: quare me repulisti, et quare tristis incedo dum affligit me inimicus?

*Le prêtre.* Emitte lucem tuam et veritatem tuam; ipsa me deduxerunt et adduxerunt in montem sanctum tuum, et in tabernacula tua.

*Celui qui sert.* Et introibo ad altare Dei: ad Deum qui lætificat juventutem meam.

*Le prêtre.* Confitebor in cithara, Deus, Deus meus: quare tristis es anima mea, et quare conturbas me?

*Celui qui sert.* Spera in Deo, quoniam adhuc confitebor illi: salutare vultûs mei, et Deus meus.

*Le Prêtre.* Gloria Patri, et Filio, et Spiritui Sancto.

*Celui qui sert.* Sicut erat in principio, et nunc, et semper, et in secula seculorum. Amen.

*Le Prêtre.* Introibo ad altare Dei.

*Celui qui sert.* Ad Deum qui lætificat juventutem meam.

*Le Prêtre se bénissant.* Adjutorium nostrum in nomine Domini.

*Celui qui sert.* Qui fecit cœlum et terram.

*Le Prêtre se baissant fort bas, dit*: Confiteor Deo, etc.

*Celui qui sert.* Misereatur tui, omnipotens Deus, et

dimissis omnibus peccatis tuis, perducat te ad vitam æternam.

*Le Prêtre en se levant, répondra :* Amen.

*Celui qui sert, baissant la tête fort bas, dira :*

CONfiteor Deo omnipotenti, beatæ Mariæ semper Virgini, beato Michaeli Archangelo, beato Joanni Baptistæ, sanctis Apostolis Petro et Paulo, omnibus Sanctis, et tibi, Pater, quia peccavi nimis cogitatione, verbo et opere; *se frappant la poitrine, disant* : meâ culpâ, meâ culpâ, meâ maximâ culpâ : ideo precor beatam Mariam semper Virginem, beatum Michaelem Archangelum, beatum Joannem Baptistam, sanctos Apostolos Petrum et Paulum, omnes Sanctos, et te, Pater, orare pro me ad Dominum Deum nostrum.

*Le Prêtre.* Amen.

*Le Prêtre.* Misereatur vestrî omnipotens Deus, et dimissis omnibus peccatis vestris, perducat vos Jesus Christus Filius Dei ad vitam æternam.

*Celui qui sert.* Amen.

*Le prêtre.* Indulgentiam, absolutionem et remissionem omnium peccatorum nostrorum tribuat nobis omnipotens et misericors Dominus.

*Celui qui sert.* Amen.

*Le Prêtre se baissant un peu, dira :* Deus tu conversus vivificabis nos.

*Celui qui sert.* Et plebs tua lætabitur in te.

*Le Prêtre.* Ostende nobis, Domine, misericordiam tuam.

*Celui qui sert.* Et salutare tuum da nobis.

*Le Prêtre.* Domine exaudi orationem meam.

*Celui qui sert.* Et clamor meus ad te veniat.

*Le Prêtre.* Dominus vobiscum.

*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.

*Et après, un des Sacristains présentera l'encensoir au Prêtre avec l'accerre ou navette, pour encenser l'autel.*

*Le Prêtre.* Kyrie eleison.

*Celui qui sert.* Kyrie eléison.

*Le Prêtre.* Kyrie eleison.

*Celui qui sert.* Christe eleison.

*Le Prêtre.* Christe eleison.

*Celui qui sert.* Christe eleison.

*Le Prêtre.* Kyrie eleison.
*Celui qui sert.* Kyrie eleison.
*Le Prêtre* Kyrie eleison.

*Le Prêtre, avant les Oraisons.* Dominus vobiscum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.
*Le Pr. à la fin des Oraisons.* Per omnia secula seculorum.
*Celui qui sert doit toujours répondre à la fin des oraisons:* Amen.

*Après que le Prêtre aura lu l'épître, celui qui sert, dira:* Deo gratias.

*Sitôt après,* Alleluia. *Celui qui sert prendra le Missel; et pendant que le Prêtre dira la bénédiction au milieu de l'autel, il le portera du côté gauche, afin qu'il lise l'Evangile.*

*Après, le Prêtre dira:* Dominus vobiscum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.
*Le Prêtre fait le signe de la croix sur le livre et sur lui, disant:* Sequentia sancti Evangelii, etc.

*Celui qui sert fera aussi le signe de la croix sur lui, disant:* Gloria tibi, Domine.

*On présentera derechef l'encensoir au Prêtre, comme dessus. Celui qui sert dira à la fin de l'Evangile:* Laus tibi, Christe.

*Après, le Prêtre dira le* Credo, *s'il le faut dire.*
*Le Prêtre.* Dominus vobiscum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.

*Celui qui sert, présentera au Prêtre le vin et l'eau: ensuite on fait l'offertoire: après l'offertoire, celui qui sert donnera l'eau seule au Prêtre pour se laver les extrémités des doigts, puis se mettra à genoux.*

*Le Prêtre.* Orate, Fratres.
*Celui qui sert étant à genoux derrière le Prêtre, répondra:* Suscipiat Dominus hoc Sacrificium de manibus tuis, ad laudem et gloriam nominis sui, ad utilitatem quoque nostram, totiusque Ecclesiæ suæ sanctæ.

*Le Prêtre.* Amen.
*Le Prêtre.* Per omnia secula seculorum.
*Celui qui sert.* Amen.
*Le Prêtre.* Dominus vobiscum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.

*Le Prêtre* Sursum corda.
*Celui qui sert.* Habemus ad Dominum.
*Le Prêtre.* Gratias agamus Domino Deo nostro.
*Celui qui sert.* Dignum et justum est.

*Celui qui sert prendra la clochette ; et lorsque le Prêtre dira ,* Sanctus , sanctus , etc. *il sonnera avec ladite clochette par trois diverses fois ; après il éclairera le cierge qui sera au candelabre ; et lorsque le Prêtre montrera le Corps et le Sang de Notre-Seigneur Jesus-Christ , étant à genoux , il lèvera un peu haut le derrière de sa chasuble , et sonnera avec ladite clochette.*

*Et pendant que l'on élève le Saint Sacrement, deux Sacristains avec leurs encensoirs , encenseront le plus modestement qu'il sera possible.*

*Le Prêtre , après la bénédiction du Calice avec le Corps de Jésus-Christ.* Per omnia secula seculorum.
*Celui qui sert.* Amen.

*Le Prêtre , à la fin du* Pater noster. Et ne nos inducas in tentationem. *Celui qui sert.* Sed libera nos à malo.

*Le Prêtre ayant rompu la sainte Hostie.* Per omnia secula seculorum. *Celui qui sert.* Amen.
*Le Prêtre.* Pax Domini sit semper vobiscum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.
*Le Prêtre ayant pris le baiser de paix.* Pax tecum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.

*Le Prêtre , après avoir communié , présente le Calice à celui qui sert , afin qu'il y verse un peu de vin. Puis celui qui sert , après avoir mis la nappe pour ceux qui veulent communier , se mettra à genoux ; et s'inclinant , dira le* Confiteor *tout au long.*

*Le Prêtre ayant communié les confrères , lave le bout de ses doigts sur le calice ; et celui qui sert lui verse par-dessus du vin et de l'eau.*

*Celui qui sert remettra ensuite le Missel du côté où on dit l'Epître.*

*Le Prêtre ayant dit les versets ordinaires après la Communion , dit :* Dominus vobiscum.
*Celui qui sert.* Et cum Spiritu tuo.

*Le Prêtre , à la fin des Oraisons.* Per omnia secula seculorum. *Celui qui sert.* Amen.

*Le Prêtre.* Ite, Missa est; *ou bien*, Benedicamus Domino.

*Celui qui sert.* Deo gratias.

*Ou bien le Prêtre dit aux Messes des Morts* : Requiescant in pace.

*Et alors celui qui sert répondra* : Amen.

*Celui qui sert ayant dit :* Deo gratias ; *ou bien*, Amen, *portera de nouveau le livre du côté de l'Evangile, si le Prêtre le laisse ouvert, et puis se mettra à genoux pour recevoir la dernière Bénédiction de la Messe. Après l'Evangile de S. Jean, ou celui qui se dira selon le temps, celui qui sert dira toujours à haute voix :* Deo gratias.

## EVANGILE SELON SAINT JEAN.

IN principio erat verbum, et verbum erat apud Deum, et Deus erat verbum. Hoc erat in principio apud Deum : Omnia per ipsum facta sunt, et sine ipso factum est nihil, quod factum est. In ipso vita erat, et vita erat lux hominum : et lux in tenebris lucet, et tenebræ eum non comprehenderunt. Fuit homo missus à Deo, cui nomen erat Joannes. Hic venit in testimonium, ut testimonium perhiberet de lumine, ut omnes crederent per illum. Non erat ille lux, sed ut testimonium perhiberet de lumine. Erat lux vera quæ illuminat omnem hominem venientem in hunc mundum. In mundo erat, et mundus per ipsum factus est, et mundus eum non cognovit. In propria venit, et sui eum non receperunt. Quotquot autem receperunt eum, dedit eis potestatem filios Dei fieri, his qui credunt in nomine ejus : Qui non ex sanguinibus, neque ex voluntate carnis, neque ex voluntate viri, sed ex Deo nati sunt. Et Verbum caro factum est, et habitavit in nobis, et vidimus gloriam ejus, gloriam quasi Unigeniti à Patre plenum gratiæ et veritatis. ℟. Deo gratias.

*Oraison pour se préparer à la Confession Sacramentale.*

SOuverain Maître du ciel et de la terre, Roi des Rois et Seigneur des Seigneurs, qui m'avez racheté par votre propre Sang, Jésus, qu'un misérable pécheur comme moi n'est digne ni de nommer, ni d'invoquer, je vous supplie humblement et affectueusement de regarder de votre œil de clémence votre pauvre et misérable serviteur, et d'avoir pitié de moi. O Jésus! qui avez eu compassion de la Chananéenne et de la Pécheresse, qui avez pardonné au Publicain et au Larron pendu en croix, je confesse devant vous mes péchés, je les déteste, j'avoue mon ingratitude; pardonnez-moi, Seigneur Jésus. Misérable que je suis, je vous ai beaucoup offensé en pensées, en paroles et en œuvres, par ma faute, par ma faute, par ma très-grande faute: j'implore donc votre clémence et votre bonté, Seigneur, qui êtes descendu du ciel pour mon salut, qui avez fait grâce à tant d'autres pécheurs. Qu'il vous plaise me pardonner, mon Seigneur et mon Sauveur, vous qui avez daigné pardonner à saint Pierre, qui vous avoit renié. Vous êtes mon Créateur et mon Rédempteur, mon Seigneur et mon Sauveur, mon Roi et mon Dieu. Vous êtes mon espérance et ma confiance, mon guide et mon secours, ma consolation et ma force, ma défense, ma délivrance, ma vie, mon salut et ma résurrection, ma lumière et mon désir: aidez-moi, et je serai en sûreté; gouvernez-moi, encouragez-moi, consolez-moi, et fortifiez-moi. Visitez, ressuscitez, vivifiez l'ouvrage de vos mains. O Seigneur! ne me rejetez pas, je suis tout à vous; quoique méchant, indigne pécheur, je suis à vous par toutes sortes de titres. A qui aurai-je recours, sinon à vous? si vous me repoussez, si vous me rejetez, qui me recevra? si vous me méprisez, qui me regardera? Recevez-moi donc, ô mon Dieu! vous êtes seul mon asile et mon refuge; si je suis immonde et souillé, vous pouvez me purifier; si je suis aveugle, vous pouvez m'éclairer; si je suis infirme et malade, vous pouvez me guérir; si je suis mort et au sépulchre, vous pouvez me ressusciter, car votre miséricorde est

plus grande que mon iniquité; votre compassion est plus grande que mon impiété; vous pouvez plus remettre que je ne puis commettre, et plus pardonner que moi misérable pécheur ne puis pécher. Ne me dédaignez donc point, Seigneur, et n'ayez point égard à la multitude de mes iniquités; mais selon l'étendue immense de votre bonté, ayez pitié de moi; soyez-moi propice; faites grâce à un grand pécheur. Dites à mon ame, Je suis ton salut; vous qui avez dit, Je ne veux point la mort du pécheur, mais qu'il se convertisse, et qu'il vive. Convertissez-moi à vous, Seigneur, et ne me regardez point dans votre fureur. Je vous en supplie derechef, ô Père très-clément, à cause de votre miséricorde! menez-moi, conduisez-moi à bonne fin, à une vraie pénitence, à une confession sincère, et à une digne satisfaction de tous mes péchés. Ainsi soit-il.

### *Oraison avant la Confession.*

O Seigneur, Père de miséricorde! je vous prie par les mérites de tous les Anges, par les oraisons, les intercessions, les souffrances des Saints Patriarches, des Saints Prophètes, des Apôtres, des Martyrs, des Confesseurs, des Vierges, et principalement par celles de la bienheureuse Marie leur Reine, et Mère de votre Fils unique, de répandre dans mon cœur la grâce du Saint-Esprit, d'y exciter une componction très-vive, et de donner à mes yeux une fontaine de larmes, afin que connoissant parfaitement mes fautes, je les confesse entièrement, que j'en fasse une pénitence salutaire, et que j'en reçoive le pardon par votre miséricorde, et par les mérites de la passion et de la mort de votre fils bien-aimé Jésus-Christ. Ainsi soit-il.

### *Oraison après la Confession.*

FAites-moi la grâce, Seigneur, par les mérites de la très-pure et immaculée Vierge Marie, votre Mère, et de tous les Saints, d'accepter pour l'expiation de mes péchés l'humble confession que je viens d'en faire. Augmentez mon repentir, mon Dieu; affermissez la résolution que j'ai prise de ne plus vous offenser, et d'éviter

les occasions dangereuses, qui jusqu'à présent ont causé toutes mes chûtes. Si par ma fragilité ordinaire j'ai manqué à quelque chose en recevant ce Sacrement, j'espère que votre miséricorde suppléera à ma foiblesse, et que vous me confirmerez dans le ciel l'absolution que j'ai reçue sur la terre.

### *Oraison avant la Sainte Communion.*

CE n'est pas assez au Père débonnaire d'aller au-devant de son enfant prodigue, de tomber sur son col, de l'embrasser et de le baiser; il lui donne encore les ornemens convenables à sa première condition; il fait tuer le veau gras; il assemble tous ses voisins, et il se réjouit avec eux pour le retour de son fils. Votre clémence, ô Père! est inexprimable; c'est moi qui avois dissipé les biens que je tenois de vous, perdu vos dons surnaturels, et abusé de ceux de nature, quand il vous a plu m'ouvrir les yeux pour me faire connoître la misère où j'étois. Non content d'être venu au-devant de moi par votre grâce prévenante, de m'avoir embrassé par la concomitante, de m'avoir rendu l'anneau de la charité, et la première robe d'innocence par la justifiante, vous daignez encore me convier à votre table, pour me repaître de la chair immaculée de votre propre Fils. O libéralité! ô miséricorde! ô amour d'un Dieu! Que vous rendront vos créatures en échange d'une telle bonté! Vous pouvez seul vous rendre à vous-même de justes actions de grâces; nulle reconnoissance de la part des hommes ne sauroit égaler de tels bienfaits. J'irai à votre table, et me trouverai au festin que vous avez daigné préparer pour moi. Je vous recevrai, Seigneur, et en vous recevant je me donnerai à vous; vous serez à mon égard le bienfaiteur, le bienfait, et l'action de grâces; je sortirai de moi-même, pour demeurer en vous; puisque pour demeurer en moi, il semble que vous sortiez de vous-même; je serai tout à vous, comme vous êtes tout à moi; je m'unirai à votre divinité par le moyen de votre humanité; et comme vous vous donnez à moi sans réserve, aussi n'y aura-t-il jamais rien en moi qui ne soit désormais entièrement et irrévocablement à vous. Oui, mon Sauveur, tout est à vous, le cœur, le corps, l'entendement, la volonté, les sens et la mémoire, l'honneur

et les biens, le présent et l'avenir, le ciel et la terre, le temps et l'éternité. Ainsi soit-il.

*Autre Oraison avant la Sainte Communion.*

FAlloit-il donc, mon Redempteur ! qu'après avoir versé pour moi votre sang précieux, vous me fassiez encore de votre propre chair un antidote pour me guérir et me préserver de tous les maux : ô amour inventif ! ô industrieuse charité ! par un morceau j'avois été perdu, par un morceau je serai réparé : une viande m'avoit causé la mort, une autre viande me redonnera la vie ; une chair m'avoit infecté, une autre chair va me purifier. Je cours, mon doux Jésus, je cours à votre table : vous daignez m'inviter vous-même à votre festin : quelle grâce ! aliment divin, rendez-moi digne de vous ; sanctifiez mon corps, sanctifiez mon ame. O Jésus ! qui vous unissez à mon cœur, prenez-le, et me donnez le vôtre ; vous serez tout à moi par miséricorde et par grâce, et je serai tout à vous par justice : sans vous je serai encore dans le néant et dans le péché ; je ne subsiste que par vous ; vous êtes seul mon Sauveur et mon Roi, et je n'attends que de vous l'heureuse éternité.

*Autre Oraison avant la Sainte Communion.*

DIeu éternel et tout puissant, Fils unique du Père, mon Seigneur Jésus-Christ, me voici sur le point d'approcher de votre Sacrement, comme celui qui est malade à mort : je viens à vous, médecin céleste, et auteur de la vie ; comme celui qui est souillé, je cours à la fontaine de miséricorde ; comme aveugle, je viens à la lumière de la clarté éternelle ; comme pauvre, au Seigneur des cieux et de la terre ; et comme nu, au roi de gloire, qui seul peut me couvrir de l'habit nuptial. Je supplie donc, mon Seigneur, votre divine bonté et miséricorde infinie, qu'il vous plaise guérir mes maladies, nettoyer l'ordure de mes péchés, soulager ma nécessité, enrichir ma pauvreté, et couvrir ma nudité ; afin que, par ce moyen, je puisse recevoir dignement le pain des Anges, le Roi des Rois, le Seigneur des Seigneurs ; que je puisse le recevoir avec tant de respect et de crainte,

avec un amour si ardent, avec une foi si pure, avec une humilité si profonde, que ce don précieux soit pour moi un gage de salut. Faites-moi la grâce, Seigneur, que je reçoive non seulement le Sacrement, mais aussi toutes les grâces qui y sont attachées. Octroyez-moi, je vous prie, ô très-aimable Père! qu'après avoir reçu votre Fils unique, ainsi voilé et couvert en cette vie, je puisse le contempler dans toute la splendeur de sa majesté dans l'éternité bienheureuse, en laquelle il vit et règne aux siècles des siècles. Ainsi soit-il.

### *Autre Oraison devant le Saint Sacrement.*

TRès-doux JÉSUS, vrai époux de mon ame, je vous adore en toute humilité en ce saint Sacrement, et je crois que vraiment vous m'y donnez votre divinité incompréhensible, votre ame remplie de toute grâce et de toute bénédiction, votre corps et votre sang très-purs et très-saints. Je vous supplie très-humblement de recevoir en sacrifice et en odeur de suavité, mon entendement, ma volonté, ma mémoire, mon âme et mon corps, avec toutes mes actions. Je vous les offre, et je m'offre à vous tout entier, comme vous vous donnez tout à moi. Ah! très-miséricordieux JÉSUS, changez-moi parfaitement en vous, et me possédez sans réserve : vivez en moi, et que dorénavant je vive en vous. Joignez mon cœur au vôtre : cachez-le dans le sainte ouverture de votre précieux côté, afin qu'étant bien lavé et purifié en votre sang, il puisse perpétuellement reposer en vous, mon Dieu et Seigneur, et être embelli d'une foi simple, d'une espérance droite, et d'une charité très-ardente, pour vous parfaitement connoître, servir et honorer, pour vous aimer sur toutes choses, et aimer toutes choses en vous. Ainsi soit-il.

*Actions de grâces après la Sainte Communion.*

MOn Dieu, mon Père et mon Sauveur, quelles grâces pourrai-je vous rendre de tant de biens que vous m'avez faits, et principalement de ce qu'il vous a plu aujourd'hui me visiter et me consoler, m'honorer même de votre présence, et m'admettre à la participation de vous-même, et de tous les mérites de votre douloureuse passion. Certes, il m'est impossible de vous en remercier dignement, et de vous aimer comme je dois, si vous-même ne me mettez les paroles en la bouche, et les affections dans le cœur, et que vous ne m'éclairiez l'esprit pour reconnoître cette nouvelle miséricorde, par laquelle il vous plaît d'abaisser la gloire de votre majesté jusqu'à la pauvre maison de mon ame.

O grande merveille que celui qui est assis sur les Chérubins, et qui de là regarde jusqu'aux abîmes de la terre, ait daigné arrêter ses yeux sur moi ! O Dieu, mon salut et mon tout ! qui non content de m'avoir créé à votre image, et racheté par votre précieux sang, avez encore bien voulu venir à moi, demeurer en moi, m'unir à vous, et me transformer tout en vous-même. Ce grand bonheur m'est-il arrivé par mes mérites, ou vous en revient-il quelque avantage ? Hélas ! non, Seigneur, car le ciel et la terre ne sauroient mériter une si précieuse union ; seulement votre miséricorde infinie m'élève à cette hauteur incompréhensible, et votre seule grâce me rend digne d'un si grand bien. Puisque donc sans elle aucune créature ne peut en être digne, qu'elle seule me favorise, me soit propice en votre endroit, qu'elle supplée à mes défauts, qu'elle enrichisse ma pauvreté, qu'elle couvre toutes les taches de ma vie ; afin qu'après, étant pure et nette, je vous la puisse offrir et consacrer en sacrifice de perpétuelle louange : car à qui pourrai-je mieux la donner qu'à celui qui s'est tout donné pour moi ? Aussi, Seigneur, je renonce dès-à-présent à toutes affections terrestres pour votre amour ; qu'il n'y ait plus de monde pour moi, et que tous ses biens faux et mensongers s'effacent de ma mémoire. Celui qui mange le pain des Anges, ne sauroit aimer les viandes mortelles ; et le cœur

qui a logé le Seigneur du Ciel, ne peut estimer les choses de la terre. Mais, ô Dieu de toute consolation, puisque vous m'avez honoré jusqu'à un tel point par une visite si chère et si douce, faites-moi la grâce que j'en puisse bien user, et que je ne ressemble point à Judas, qui vous trahit après avoir participé à votre sainte table, ou comme les Juifs qui vous crucifièrent après vous avoir reçu en triomphe; mais que je continue toute ma vie en votre service avec un esprit d'obéissance, de respect, d'amour et de confiance; que je demeure toujours ferme en votre amour; que je vous désire tout seul; que je vous possède tout seul; que je ne sache, ni ne connoisse autre chose, sinon Jésus-Christ crucifié, qui vit et règne avec le Père et le Saint-Esprit, par tous les siècles des siècles. Ainsi soit-il.

## *Autre Oraison après la Sainte Communion.*

SEigneur Jésus-Christ, Roi des Rois, et Seigneur des Seigneurs, je rends grâces à votre divine, admirable et immense majesté, de ce que vous avez bien voulu me faire aujourd'hui participant de votre corps et de votre sang précieux dans l'hostie consacrée que j'ai reçue, bien que je fusse indigne d'un si grand bienfait, et que je n'eusse aucun mérite. Je vous en glorifie, Seigneur, je vous loue, je vous remercie autant que je le puis, ne pouvant vous remercier autant que je le dois; je désire que toutes les créatures du monde vous rendent grâce de cette faveur, et de toutes les autres que j'espère recevoir de vous en cette vie et en l'autre. Faites, Seigneur, que le Très-Saint Sacrement que j'ai reçu, soit la rémission de mes péchés et la purification de mon ame, et qu'il produise en moi toutes les vertus. Qu'il soit mon remède et mon asile contre tous les périls de la vie, la défense de ma foiblesse, et mon secours contre toutes les tentations. Je veux me mettre à l'abri de vos ailes, non seulement à cette heure, mais pour tout le temps de ma vie, jusqu'à l'article de la mort. Je vous supplie donc, par ce que vous êtes, et par votre infinie bonté et miséricorde, de me donner la force d'accomplir parfaitement vos saints Commandemens. Ah! Seigneur, conservez-moi tous les jours de ma vie en votre sainte grâce. Ainsi soit-il.

## *Autre Oraison après la Sainte Communion.*

JE vous rends grâces, Seigneur, Père saint, Dieu tout-puissant et éternel, qui par votre seule miséricorde, avez daigné repaître et rassasier votre indigne serviteur du précieux corps et du précieux sang de votre Fils Notre-Seigneur Jésus-Christ. Je vous demande humblement, que cette sainte Communion ne soit pas pour moi une occasion de châtiment et de punition, mais une douce assurance du pardon de mes péchés; qu'elle soit pour moi une armure de foi, un bouclier de bonne volonté; que j'y trouve la mort de tous mes vices, l'anéantissement de tous mes désirs charnels, un accroissement de charité et de patience; qu'elle soit pour moi la source d'une obéissance exacte, et de toutes les autres vertus; qu'elle soit une joie parfaite à mon esprit, une ferme défense et protection contre tous mes ennemis visibles ou invisibles, et perpétuelle union avec vous seul, vrai Dieu et Seigneur. Conduisez-moi, ô Agneau sans tache, au festin céleste de la Jérusalem d'en haut, dont vous êtes la vraie lumière, et où vos amis jouissent avec vous d'une tranquillité et d'une joie qui n'aura jamais de fin. Ainsi soit-il.

## *Oraison à la Sainte Vierge Marie, pour dire après la Sainte Communion.*

O Glorieuse Vierge Marie, Saint N., mon patron, Anges, Archanges, Esprits célestes, je vous supplie, prosternez-vous avec moi devant mon Dieu, et le prions qu'en faveur de son cher Fils mon Sauveur et Rédempteur Jésus-Christ, il lui plaise me pardonner l'indignité et l'indévotion que j'ai apportées à la réception du Saint Sacrement, et qu'il ne permette pas que ma fragilité me prive de ce précieux et auguste Sacrement; que ce fruit soit communiqué à toute l'Eglise; répandez sur moi et sur tous les Fidèles les effets de votre divine miséricorde. Que je reçoive aujourd'hui une pleine et entière rémission de tous mes péchés; que je connoisse le prix de la grâce de Jésus-Christ, et que ma volonté agisse conformément à une lumière si salutaire. Ah! Seigneur, rendez-moi tel qu'il faut être pour vous plaire; augmentez ma foi, mon espé-

rance ; remplissez-moi de charité ; accordez-moi l'humilité, la chasteté, la patience, la dévotion, toutes les autres vertus et tous les dons du Saint-Esprit, afin que désormais je travaille et au salut de mon ame, et à vous procurer la gloire qui vous est due. Honneur et gloire à la Sainte Trinité, le Père, le Fils, et le Saint-Esprit.

### *Acte de Contrition abrégé, par forme d'Oraison jaculatoire.*

MOn doux Jésus, vrai Dieu et vrai Homme, je vous aime de tout mon cœur ; et parce que vous êtes infiniment bon, je déteste mes péchés pardessus toutes choses, avec un ferme propos de ne jamais plus vous offenser, moyennant votre sainte grâce, et aidé des mérites de votre Mort et Passion, en union desquels mérites je vous offre toutes mes actions. Ainsi soit-il.

*On doit faire usage de cet acte, ou d'un autre pareil, principalement dans la Confession, et sur-tout immédiatement avant l'absolution, et se souvenir que la grâce qui se communique au Sacrement, est proportionnée à la contrition du pécheur, et que Jésus-Christ pardonne beaucoup à celui qui l'aime beaucoup.*

### *Pratique de la Communion spirituelle, en forme de Méditation.*

MOn Seigneur Jésus-Christ, vrai Dieu et vrai Homme, hélas ! que vous êtes bon de vous être voulu donner aux hommes au saint Sacrement de l'Autel ! Je crois, mon Dieu, que vous y êtes réellement, et tel que les Anges et les Saints vous adorent à la droite de votre Père ; c'est pourquoi je vous adore de tout mon cœur dans cet auguste Sacrement. Que ne m'est-il permis maintenant de m'approcher de vous pour vous recevoir, vous qui êtes le céleste aliment de mon ame ! Téméraire que je suis ! ah ! j'avoue que je suis indigne de ce bonheur. Mais s'il ne m'est pas permis d'en jouir à présent, ni de vous recevoir par une communion réelle, faites-moi au moins la grâce de participer aux admirables effets de ce Sacrement, tel que sont la fuite et l'horreur du péché, la victoire de mes passions, la haine de moi-même, l'amour de la vertu, l'union spirituelle avec vous. Ainsi soit-il.

## BÉNÉDICTION DES VETEMENS,

### *Qui doit être faite par le Prêtre.*

ADjutorium nostrum in nomine Domini.
℟. Qui fecit cœlum et terram.
℣. Dominus vobiscum.
℟. Et cum Spiritu tuo.

### OREMUS.

DEus omnipotens, bonarum virtutum dator, et omnium benedictionum largus infusor, supplices te rogamus, ut manibus nostris opem tuæ benedictionis infundas, et hanc vestem bene✝dicere digneris, omnibusque eâ utentibus, benedictionis tuæ gratiam benignus concedas : ut in conspectu tuo devoti et irreprehensibiles appareant, cunctorum indulgentiam delictorum percipiant, et omnium acquirant incrementa virtutum : Qui tecum vivit et regnat in unitate Spiritûs sancti Deus. Per omnia secula seculorum. Amen.

*Après il faut asperser d'Eau bénite.*

### *Oraisons après la réception de l'Habit.*

DEus misericors, Deus clemens, cui cuncta bona placent; sine quo nihil sanctum inchoatur, nihil bonum perficitur; gratias humiliter tibi referimus pro hoc benedicto habitu, in tuo nomine assumpto : et præsta, ut in eo nos ad te pœnitentia reducat perpetuo famulatu tuæ voluntati mancipatos, tibique devotissimè servientes perseverantia perducat, et charitas uniat; sicque tandem ad ea quæ perseverantibus in te dignatus es promittere, feliciter pertingamus. Per Dominum, etc.

# LA MANIÈRE D'OUIR LA SAINTE MESSE.

## A L'INTROÏT.

### Le Psaume *Judica*, jusqu'au *Confiteor.*

*Ce Psaume a été composé par David, dans le temps que la persécution de Saül l'avoit chassé de son pays. Il représente à Dieu son innocence, et il s'anime par l'espérance que son exil finissant, il pourroit encore se présenter à Dieu devant son Autel, et lui offrir un sacrifice de louange dans son tabernacle.*

*Dans le rapport si naturel qu'a cette Prière au commencement de la Messe, qui est commune entre le Prêtre et le Peuple, qui se dit alternativement par l'un et par l'autre, il faut se regarder comme exilé du Ciel, et indigne d'approcher de l'Autel qui en est la figure; et dans cet esprit, dire à Dieu:*

CE sont mes péchés, Seigneur, qui m'ont exilé du Ciel, et qui me rendent indigne d'approcher de l'Autel; mais je me sens animé à la vue de votre miséricorde, qui veut bien que je me prosterne devant vous dans votre temple, pour vous demander que ce soit la lumière de votre vérité qui me conduise dans votre tabernacle, pour vous offrir ce Sacrifice qui doit me réconcilier avec vous.

## AU *CONFITEOR.*

*Le* Confiteor *est aussi commun, et se dit par le Prêtre et par les Assistans, durant lequel on peut dire:*

SEigneur, je confesse mes péchés avec un cœur contrit et humilié; je déteste en moi tout ce qui peut vous déplaire, pour obtenir de votre miséricorde la grâce et le pardon que le Prêtre vous demande pour moi, pour assister dignement à la célébration de ces grands et redoutables mystères.

### *Deus tu conversus*, jusqu'au *Kyrie eleison.*

*Les trois ou quatre Versets qui suivent le* Confiteor *et l'absolution, se disent encore alternativement par le Prêtre et par les Assistans. Le Prêtre montant à l'Autel, demande qu'il purifie les taches de toute l'assemblée, afin qu'ils puissent tous entrer, avec un cœur pur, dans son sanctuaire; et dans cet esprit, l'on peut dire à Dieu:*

Seigneur,

SEigneur, la grandeur et le nombre de mes péchés me tiennent éloigné de votre autel, mais je me sens animé d'une sainte confiance en votre bonté, qui m'y fait monter en esprit avec le prêtre, pour demander par l'intercession des Saints dont nous honorons les reliques sur cet autel, la pureté de cœur que demande un si saint et si auguste sacrifice.

## AU *KYRIE ELEISON.*

*Cette prière se dit alternativement par le prêtre et par les assistans, et se répète souvent pour implorer la miséricorde de Dieu.*

JE sens, Seigneur, le poids de ma misère ; ce n'est qu'à force de prières que je veux obtenir le secours dont j'ai besoin, qui me fait dire et répéter souvent : Seigneur, ayez pitié de moi, ayez pitié de moi.

## AU *GLORIA IN EXCELSIS.*

*Cette prière, par laquelle on honore, on glorifie et on adore profondément la souveraine majesté de Dieu, est aussi commune entre le prêtre et les assistans qui la chantent ; et on ne peut mieux se préparer à cet auguste Sacrifice, que par des prières accompagnées de louanges et d'actions de grâces.*

C'Est dans un esprit d'adoration et de louange que j'adore, Seigneur, votre grandeur, et que j'honore votre infinie majesté, qui a bien voulu être la victime et l'agneau du Sacrifice dont on va renouveler la mémoire. Excitez dans mon cœur l'amour et la reconnoissance que je vous dois, par la mort que vous avez soufferte pour expier mes péchés.

## COLLECTE.

*Ce sont les prières que dit le prêtre avant le* Kyrie eleison, *ou le* Gloria in excelsis, *quand il se dit jusqu'à l'Epître, qui se diversifient suivant le temps, dans lesquelles il demande la grâce de bien penser, de bien vivre, de connoître ses devoirs, de les accomplir, et de persévérer dans la vertu, durant lesquelles on peut dire :*

SEigneur, je m'unis aux prières de votre Eglise, sans lesquelles je reconnois avec une profonde humilité, que je ne saurois obtenir de vous les grâces qui me sont nécessaires pour connoître et remplir mes obligations, et persévérer dans la vertu.

## A L'EPÎTRE.

*L'Epître contient les instructions que les Prophètes et les Apôtres donnent de la part de Dieu.*

J'Ecoute avec une attention pleine de respect, mon Dieu, les grandes instructions que vous nous donnez par la bouche de vos Prophètes et de vos Apôtres : je m'applique les vérités que j'y entends, et je vous élève mon cœur, Seigneur, pour obtenir de vous la grâce de les pratiquer.

## PENDANT LES PRIÈRES ENTRE L'EPÎTRE ET L'EVANGILE.

*L'Eglise se prépare à la lecture de l'Evangile, par les prières et par les louanges.*

J'Unis, Seigneur, mes prières à celles de l'Eglise, et mes dispositions aux siennes, pour vous écouter avec application, après vous avoir adoré avec respect, comme mon Dieu : rendez, s'il vous plaît, mon cœur susceptible de ces grandes vérités.

## A L'EVANGILE.

*Donner toute son attention à un Dieu qui parle, non par le ministère des Anges, mais par lui-même ; écouter avec respect, avec joie, avec dévotion, avec reconnoissance les instructions d'un Dieu qui nous enseigne le chemin de la vie éternelle, et l'écouter debout, pour marquer que l'on est toujours prêt à faire ce que Jésus-Christ ordonne.*

## AU CREDO.

*C'est ici la confession de tous les Fidèles qui confessent hautement de bouche ce qu'ils croient dans le cœur.*

SEigneur, je renouvelle au pied de votre autel ma profession de foi, avec une ferme disposition de soutenir publiquement dans les occasions les vérités que vous avez révélées à votre Eglise, et mourir, s'il le faut, pour la confession de ces mêmes vérités.

## DEPUIS L'OFFERTOIRE JUSQU'À LA PRÉFACE.

*Dans cet intervalle, le Prêtre reçoit premièrement les oblations du peuple, qui présentoit autrefois le pain et le vin qui devoient servir au Sacrifice, au lieu desquels l'un des assistans présente un pain-bénit pour toute l'assemblée.*

*Il élève ensuite l'Hostie sur la patène, et l'offre à Dieu en l'élevant devant lui comme un pain saint qui ne doit servir qu'à des choses saintes, et le préparer ainsi par degrés à ce changement ineffable qui le doit faire devenir par-là le Corps même de Jésus-Christ.*

*Il fait après l'oblation du Calice, pour son salut et pour celui de tout le monde, et il demande ensuite, en s'inclinant profondément devant Dieu, qu'il lui plaise de recevoir favorablement nos prières, que nous lui présentons dans un esprit d'humilité et un cœur contrit, et que notre sacrifice soit tel qu'il puisse lui être agréable. Dans les Grand' Messes il encense ensuite les oblations, disant :* Que cet encens monte jusqu'à vous, Seigneur, et que votre miséricorde descende sur nous.

*Il lave ensuite le bout de ses doigts qui doivent toucher le corps de son Rédempteur, pour marquer qu'il veut se purifier devant Dieu des moindres taches du péché, et de tout ce qu'il peut y avoir de déréglé dans ses affections, afin de ne pas profaner les mystères qu'il va célébrer.*

*Depuis le* Lavabo *jusqu'à la Préface, le Prêtre demande qu'il plaise à Dieu de recevoir les oblations de toute l'assemblée, et de faire sentir à tous les effets de sa miséricorde.*

*Durant toutes ces cérémonies qui se font depuis l'Offertoire jusqu'à la Préface, l'on doit y être attentif, unir son esprit et ses prières à celles du Prêtre, disant :*

## OFFERTOIRE.

SEigneur, je vous offre tous mes biens, et je m'offre moi-même à votre souveraine majesté, avec une résolution sincère de n'user de ce que j'ai que selon votre volonté, mon Dieu, de qui je tiens tout.

## OBLATION DU PAIN.

JE vous offre, mon Dieu, par les mains du Prêtre, ce Pain qui doit être changé au corps de mon divin Sauveur ; je vous l'offre pour mes péchés et pour le salut des vivans et des morts.

## OBLATION DU CALICE.

UNissez-vous à moi, mon adorable Rédempteur, aussi étroitement que par ce mélange l'eau s'unit avec le vin, pour ne faire plus qu'une même liqueur, que je vous présente avec le Prêtre pour mon salut, et pour celui de tout le monde.

Donnez-moi, Seigneur, cet esprit contrit et humilié, sans lequel je vous offrirois indignement et inutilement un sacrifice si saint et si efficace. Esprit-Saint, descendez sur ces oblations, pour les bénir ; et sur ceux qui les offrent.

## ENCENSEMENS.

JE vous élève mon cœur, Seigneur, afin que la prière que je vous offre, monte jusqu'au trône de votre divine majesté, comme la fumée de l'encens s'élève en haut, et que mon cœur reçoive l'infusion de vos grâces.

## AU LAVEMENT DES DOIGTS.

MOn Dieu, dégagez mon cœur de toutes les affections de la terre, purifiez-le des moindres taches du péché. Je déteste pour cet effet, Seigneur, tout ce qui vous déplaît, pour m'élèver vers vous avec des mains pures et un cœur droit qui vous rende ce sacrifice agréable.

## *Depuis le* Lavabo *jusqu'à la Préface.*

JE vous offre de nouveau, Seigneur, le pain et le vin qui vient de vous être présenté, et je vous l'offre en mémoire de la mort de Jésus-Christ votre très-cher Fils, mon Rédempteur, dont ce Sacrifice est la mémoire : je joins mes prières à celles du prêtre, afin que ce sacrifice me soit utile et à tous ceux qui vous l'offrent. Je m'offre moi-même, Seigneur, pour être spirituellement changé en Jésus-Christ, comme le pain et le vin doivent être changés réellement en son Corps et en son Sang.

## A LA PRÉFACE.

*C'est une prière d'actions de grâces, et d'élévation de son cœur à Dieu, et d'une profonde reconnoissance de sa majesté infinie.*

J'Elève mon cœur, Seigneur, jusqu'au pied du tribunal de votre Majesté. Je reconnois que les plus hautes louanges sont infiniment au-dessous de vous. Je me transporte en esprit dans le ciel, pour y adorer votre Majesté infinie. Je joins ma voix à celle des Anges, pour rendre gloire avec eux à votre sainteté, et bénir avec les enfans d'Israël, votre Fils, qui va bientôt paroître sur cet Autel, afin de s'offrir pour nous en sacrifice, pour l'expiation de nos péchés.

## Depuis le Canon jusqu'à la Consécration.

*Dans les Oraisons qui précèdent la Consécration, le prêtre demande à Dieu qu'il lui plaise de recevoir et bénir ce sacrifice, qu'il offre pour toute l'Église.*

*En second lieu, il prie pour les personnes vivantes qu'il doit recommander à Dieu, et pour tous les assistans.*

*En troisième lieu, le prêtre et les assistans entrent dans la communion des Saints, et ils prennent part à leur gloire, pour mériter les secours de leur protection.*

*Et dans la quatrième prière qu'il fait, tenant les mains étendues sur le pain et sur le vin, il demande à Dieu qu'il lui plaise de recevoir cette oblation de servitude, de nous délivrer de la damnation éternelle, et de nous mettre au nombre de ses élus.*

*Bénissant ensuite le pain et le vin par divers signes de croix, il annonce par avance la mort du Seigneur. Il signifie que l'immolation qu'il va faire, n'est qu'une continuation de celle qui a été faite sur la croix; et il demande à Dieu, au nom de tous, de bénir et d'agréer ces dons, et qu'ils soient faits pour nous le Corps et le Sang de Jésus-Christ.*

SEigneur, je m'unis en esprit au prêtre, et je vous demande avec lui l'union et la paix de l'Église, votre Esprit pour tous ceux qui sont chargés du gouvernement spirituel et temporel des peuples, et le salut des fidèles.

Je vous recommande N. et N. (*rappeler ceux pour qui on a une plus particulière obligation de prier*), et je vous demande particulièrement le salut de leurs ames.

Je m'unis à tous ceux qui assistent à ce sacrifice; donnez-nous, s'il vous plaît, la piété qui doit vous rendre agréables les vœux qui vous sont offerts.

J'entre en esprit, Seigneur, dans la communion des Saints qui sont dans le Ciel: j'implore le secours de la très-Sainte Vierge et de tous les Saints, pour pouvoir recevoir en toutes choses par leurs mérites et par leurs prières, la force et le secours de votre protection.

Je m'offre à vous, Seigneur, dans un esprit d'adoration; je reconnois ma servitude, et je m'abîme en votre présence dans la vue de mon néant. Agréez, Seigneur, dans ce moment, que le pain et le vin vont être détruits, que je m'immole spirituellement pour obtenir de vous la destruction du vieil homme, pour être revêtu du nouveau.

## Consécration et Élévation.

*Le prêtre fait ce que Jésus-Christ fit lui-même dans la Cène ; et il est le Ministre de Jésus-Christ pour la consécration, comme il est le député du peuple pour l'oblation. De sorte que comme c'est le peuple qui offre par le prêtre, c'est par le prêtre que Jésus-Christ consacre, et qu'il fait ce changement ineffable du pain et du vin au corps et au sang de Jésus-Christ.*

*Il fait ensuite l'élévation pour faire adorer Jésus-Christ par le peuple, pour représenter son élévation sur la croix.*

*Il faut pendant tout ce temps de la Consécration et de l'Elévation, être dans un grand recueillement, et dans un profond abaissement, le corps prosterné contre terre, et dire :*

MOn Dieu, changez-moi, s'il vous plaît, en Jésus-Christ, comme le pain et le vin sont changés en son corps et en son sang. J'adore sa puissance et sa bonté dans ce sacrement adorable : je soumets ma foi à sa divine parole ; j'assiste avec tremblement à un si redoutable mystère.

Je crois d'une foi vive ce que mes yeux ne peuvent découvrir, savoir, le corps et le sang de Jésus-Christ sous les espèces du pain et du vin : j'adore et rends mes respects à ce divin Agneau, qui vient renouveler tous les jours pour mon salut l'oblation qu'il a faite lui-même sur la croix, et qui m'a purifié par son sang, et racheté par sa mort.

## Suite du Canon jusqu'au *Pater*.

*Les prières que fait le prêtre, sont communes à tous les assistans ; il offre pour tous ce sacrifice en mémoire de la Passion, de la Résurrection et de l'Ascension de Jésus-Christ : il demande à Dieu, au nom de tous, qu'il reçoive ce sacrifice, comme il reçut autrefois le sacrifice d'Abel, d'Abraham et de Melchisedech, qui n'étoit que la figure de celui de Jésus-Christ. Le prêtre prie ensuite pour les vivans, et il recommande ceux pour lesquels il doit faire un moment mention particulière. Il faut pendant ce temps s'entretenir de la mort de Jésus-Christ, puisque c'est une des fins pour laquelle il a institué ce Sacrement, et lui en demander le fruit pour la guérison de notre âme.*

SEigneur, je vous offre par les mains du prêtre cette victime sainte qui se donne à nous pour être offerte par nous, pour nous et avec nous. Je vous supplie, mon adorable Sauveur, de porter mes vœux au Ciel, et de répandre dans mon cœur toutes les bénédictions du Ciel.

Je vous recommande, mon Dieu, les ames de N. et N. (*Nommer ceux pour qui l'on doit prier plus particulièrement*) : je vous demande le repos pour tous mes parens et amis, et pour tous ceux qui sont morts dans la foi et dans la communion de l'Eglise.

Je reconnois, Seigneur, que je suis un très-grand pécheur ; et que pour mériter votre miséricorde, j'ai besoin d'un Sacrifice aussi excellent que celui-ci. Appliquez-m'en, s'il vous plaît, le mérite par l'intercession de..... et de tous vos Saints.

## AU *PATER*.

*Il faut réciter avec attention chaque demande qu'on fait à Dieu, afin d'exciter dans son cœur le désir qui fait l'essence de la prière, et lui demander la délivrance de ce qui peut nous empêcher d'être à lui, et d'être rempli de son esprit.*

## *PAX DOMINI.*

*Le prêtre baise la paix, et autrefois les chrétiens s'entre-baisoient avant la communion ; et ce baiser doit être le témoignage sensible de la paix que chaque fidèle doit garder dans le cœur, et de la charité qui doit l'unir intérieurement avec tous ses frères. Cette cérémonie précède immédiatement la communion, pour marquer que l'Eucharistie ne doit être reçue que dans un esprit de paix, et que quiconque se sépare des membres de Jésus-Christ, ne peut devenir lui-même par la communion un même corps avec Jésus-Christ.*

*Durant cette cérémonie, il faut s'unir à l'esprit de l'Eglise, se réconcilier intérieurement avec tous ses ennemis, et entrer dans une disposition de conserver la paix avec tous.*

## *AGNUS DEI.*

*Dans cette prière qui précède la communion, le prêtre, et avec lui tous les assistans, adore Jésus-Christ avant que de le recevoir ; il l'adore comme l'agneau qui a été égorgé réellement sur la croix, qui est immolé d'une manière non sanglante sur l'Autel pour notre salut.*

MOn divin Sauveur, je m'attache à vous avec amour, puisque vous vous êtes chargé volontairement de mes péchés pour en porter la peine ; faites-moi, s'il vous plaît, miséricorde par l'application de votre mort.

## A LA COMMUNION.

*C'est ici la consommation du Sacrifice qui se fait par la manducation de l'Hostie que fait le prêtre, ou seul, ou avec les assistans qui s'y sont préparés.*

MOn Dieu, à la vue de mon néant, et dans un sentiment profond de mon indignité et de ma misère, je m'écrie : Seigneur, je ne suis pas digne que vous entriez dans ma maison; mais dites une seule parole, et mon ame sera guérie.

*Si l'on communie, il faut demander à Jésus-Christ la grâce de recevoir son esprit en recevant son corps.*

*Si l'on ne communie pas, il faut du moins participer à ce Sacrement par une communion spirituelle, disant :*

SEigneur, je me joins en esprit au prêtre qui communie, comme je me suis uni dans l'Oblation et dans toutes les autres parties de ce sacrifice. Je m'unis aussi à ceux qui vous reçoivent : Seigneur, je gémis de n'être pas en état de le faire : je déteste mes péchés qui me privent de cette grâce; je vous demande très-humblement, mon divin Sauveur, que si je ne reçois pas votre corps par la participation sacramentelle de ce sacrifice, je reçoive au moins votre esprit par la participation de votre grâce.

## PENDANT LES ORAISONS APRÈS LA COMMUNION.

*Dans ces oraisons l'Eglise rend grâce à Dieu pour le Sacrement qu'elle vient de recevoir.*

SEigneur, je m'unis à l'Eglise, et je vous demande avec elle, par la bouche du prêtre, la rémission de mes péchés, la grâce d'une sainte vie, et le mérite de la vie éternelle.

## *ITE MISSA EST.*

SEigneur, je vous rends grâce d'avoir eu le bonheur de vous offrir Jésus-Christ votre Fils notre Rédempteur; accordez-moi, s'il vous plaît, cette bénédiction éternelle, figurée par cette bénédiction du prêtre.

## APRÈS LA BÉNÉDICTION.
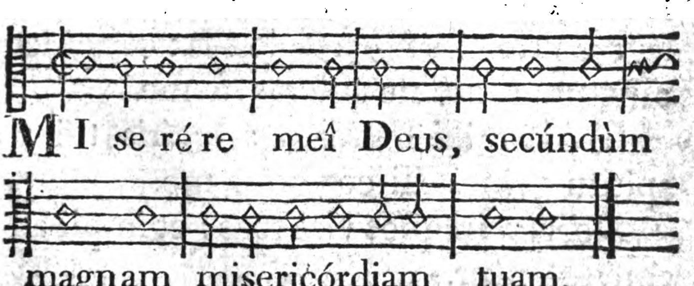
*Se recueillir pour penser à ce qu'on vient de faire; se représenter les fins pour lesquelles l'on a dû assister à la sainte Messe, qui sont pour obtenir la grâce de nos péchés, la grâce d'une vie chrétienne, et de mériter par les fruits d'une pénitence salutaire, l'application du mérite de la passion et de la mort de Jésus-Christ, et de la vie éternelle. Se proposer les choses qu'il faut faire pour remplir les devoirs et les obligations de son état, afin qu'il paroisse par la conduite qu'on gardera le reste de la journée, que ce n'est pas inutilement qu'on a offert le sacrifice du corps et du sang de Jésus-Christ.*

LA MANIÈRE

# LA MANIÈRE
## DE RECEVOIR
# LES NOVICES.

## POUR REVÊTIR UN NOVICE.

*Les principaux conduiront à l'Autel celui qui doit être reçu; et s'étant mis à genoux, le Recteur commencera le Psaume* Miserere meî, Deus: *et le premier Chœur achevera le reste du Verset; et ensuite l'autre Chœur suivant dira le second Verset; et ainsi alternativement jusqu'à la fin du Psaume.*



Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum : dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea : et à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco : et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi et malum coram te feci : ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus conceptus sum : et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti : incerta et occúlta sapientiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me, Domine, hyssópo, et mundábor : lavabis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam : et exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis : et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus : et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projicias me à fácie tua : et Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui : et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas : et ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ : et exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine lábia mea apéries : et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium dedíssem utíque : holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spiritus contribulatus : cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion : ut ædificentur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justitiæ, oblatiónes et holocáusta : tunc impónent super altáre tuum vítulos.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto.

Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in secula seculórum. Amen.

℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison. Kyrie eléison. *Le Rect.* Pater noster. *à voix basse.*

*Le Rect.* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Le Rect.* ℣. Ostende nobis, Dómine, misericórdiam tuam.

*Le Chœur.* ℟. Et salutáre tuum da nobis.

*Le Rect.* ℣. Salvos fac servos tuos, Dómine.

*Le Chœur.* ℟. Deus meus, sperántes in te.

*Le Rect.* ℣. Esto eis, Dómine, turris fortitúdinis. *Le Chœur.* ℟. A fácie inímici.

*Le Rect* ℣. Mitte ei, Dómine, auxílium de sancto.

*Le Chœur.* ℟. Et de Sion tuére eum.

*Le Rect.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Chœur.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Recteur dira :*

Orémus, dilectíssimi Fratres, Dóminum nostrum Jesum Christum, pro hoc fámulo suo, qui ad deponéndam vanitátem seculi, pro ejus amóre festínat, ut donet ei Spíritum sanctum, qui in observántia Mandatórum Dei, et Capitulórum nostrórum, ei contínuò desidérium accéndat : Et à mundi impediméntis vel vano desidério, cor ejus custódiat, ut sicut mutátus est in introítu Fraternitátis hujus, ita manu déxteræ suæ in eo virtútem boni óperis perfectióne confírmet ; et ab omni cæcitáte cor ejus apériat, ac lumen æternitátis suæ gratiæ dono concédat. Qui vivit et regnat cum Deo Patre, in unitáte Spíritûs sancti Deus. Per ómnia secula seculórum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Puis le Recteur s'adressant à celui qui doit être vêtu, lui dira :*

Mon Frère, que demandez-vous ?

*Le Novice répondra :* la miséricorde de Dieu et la paix de cette Compagnie.

*Le Recteur lui repartira :* Nous vous prions de garder et d'observer les Commandemens de Dieu et les Statuts de notre Congrégation, et vous y recevrez une grande consolation.

*Les Confrères répondront :* Dieu lui en donne la grâce.

℣. Dóminus custódiat introítum tuum et éxitum tuum.

*Le Chœur répond :* Ex hoc nunc et usque in seculum.

*Le Recteur.* OREMUS.

FRatres charíssimi, ut quod Frater iste ore quæsívit, opere felíciter acquírat, auxiliánte Dómino nostro Jesu Christo : Qui cum Patre et Spíritu sancto vivit et regnat. Per ómnia secula seculórum.

*Le Chœur répond :* Amen.

*Le Recteur continuera, disant :* OREMUS.

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris : et hunc fámulum tuum benedícere dignáre : cui in tuo sancto nómine

vestem sánctæ puritátis impónimus, ut te largiénte vitam mereátur accípere. Per Christum, etc. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Puis se retournant vers le Novice, et lui donnant l'Habit, il dira :*

INduat te Dóminus novum hominem : qui secúndùm Deum creatus est.

*Le Chœur.* ℟. In justítia et sanctitáte veritátis. Amen.

*Le couvrant du Capuce.*

POne, Dómine, Capútium salutis in capite ejus ad expugnándas diabólicas fraudes. Per Christum Dóminum nostrum.

*Le Chœur* ℟. Amen.

*En donnant la Corde ou la Ceinture.*

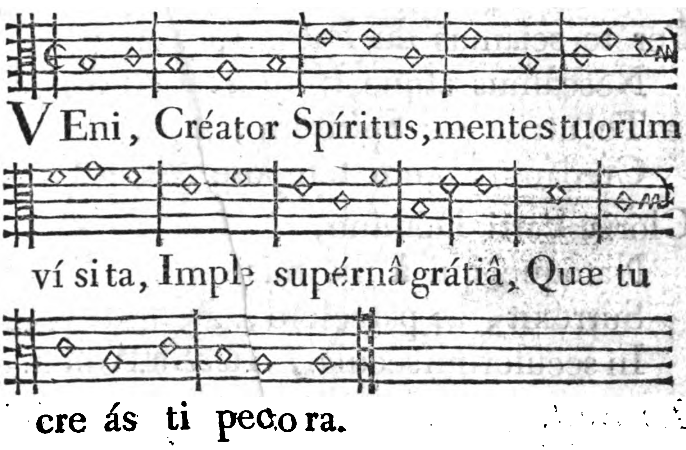
PRæcíngat te Dóminus cíngulo puritátis, et extínguat in lumbis tuis humórem libídinis : ut máneat in te virtus contínentiæ et castitátis. Per Christum Dóminum nostrum. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Etant ainsi vêtu, le Recteur lui mettra un cierge allumé à la main, disant :*

ACcipe, Frater charíssime, lumen Christi, in signum immortalitátis tuæ, ut mórtuus mundo, Deo vivas. Exúrge à mórtuis, et illuminábit te Christus.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Après, le Recteur se mettra à genoux devant l'autel pour commencer le* Veni Créator, *que les Confrères chanteront alternativement.*




Qui Paraclétus díceris,
Donum Dei altíssimi:
Fons vivus, ignis, cháritas,
Et spiritális únctio.

Tu septifórmis múnere,
Dextræ Dei tu dígitus,
Tu ritè promíssum Patris,
Sermóne ditans gúttura.

Accénde lumen sénsibus,
Infúnde amórem córdibus:
Infírma nostri córporis,
Virtúte firmans perpétim.

Hostem repéllas lóngiùs,
Pacémque dones prótinùs:
Duetóre sic te prævio,
Vitémus omne nóxium.

Per te sciámus du Patrem,
Noscàmus atque Fílium:
Te utríusque Spíritum,
Credámus omni témpore.

Glória Patri Dómino,
Natóque qui à mórtuis
Surréxit, ac paracléto,
In seculorum secula. *Le Rect.* ℟. Amen.

*Le Rect.* ℣. Emitte Spíritum tuum, et creabúntur.

*Le Chœur.* ℟. Et renovábis fáciem terræ.

OREMUS.

DEus, qui corda fidélium sancti Spiritûs illustratióne docuisti: da nobis in eódem Spíritu recta ápere, et de ejus semper consolatióne gaudére. Per Dóminum nóstrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitàte ejúsdem Spíritûs sancti Deus. Per ómnia secula seculórum. *Le Chœur.* ℟. Amen.

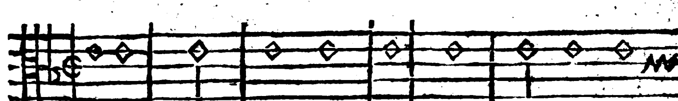
*Cette oraison étant finie, le Recteur se retournera vers le nouveau vêtu, lequel ayant*

*rendu le cierge à l'un des Confrères, et demeurant à genoux, écoutera dévotement une brève remontrance que lui fera le Recteur sur le contentement que la Compagnie reçoit de sa venue; l'exhortant de garder et d'observer les Statuts et Réglemens de la Compagnie, et de venir souvent à la Chapelle.*

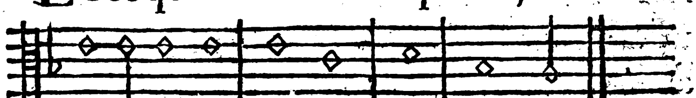
*Ce discours fini, deux des Principaux conduiront le nouveau Confrère, premièrement au Recteur, devant lequel il se mettra à genoux, en signe de l'obéissance qu'il veut rendre aux Supérieurs. Et le Recteur le faisant lever, l'embrassera; et en lui donnant le baiser de paix, il lui dira:* Pax tibi, Frater.

*Et de là il sera conduit à tous les Confrères, qui lui diront et feront la même chose; et pendant que cette cérémonie se fera, les confrères chanteront le Psaume suivant, comme s'ensuit:*

*Le Recteur.* *Psaume* 132.



ECce quàm bonum et quàm jucundum



ha bi tá re Fratres in unum.

*Le Chœur répétera.* Ecce quàm bonum, et quàm jucúndum habitàre Fratres in unum.

*Le Recteur.* Sicut unguéntum in cápite, quod descéndit in barbam: barbam Aáron.

*Le Chœur.* Ecce quàm bonum et quàm jucúndum habitáre Fratres in unum.

*Le Recteur.* Quod descendit in oram vestiménti ejus, sicut ros Hermon, qui descéndit in montem Sion.

*Le Chœur.* Ecce quàm bonum et quàm jucúndum habitáre Fratres in unum.

*Le Recteur.* Quóniam illic mandávit Dóminus benedictiónem, et vitam usque in seculum.

*Le Chœur.* Ecce quàm bonum et quàm jucúndum habitáre Fratres in unum.

*Le Recteur.* ℣. Confírma hoc, Deus, quod operatus es in nobis.

*Le Chœur.* ℟. A Templo sancto tuo, quod est in Jerúsalem.

*Le Recteur.* OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine, perseverántem in tua voluntáte famulátum: ut mérito et número pópulus tibi sérviens augeátur. Per Christum Dóminum nostr.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Quand il y en a plusieurs, le Recteur dit:*

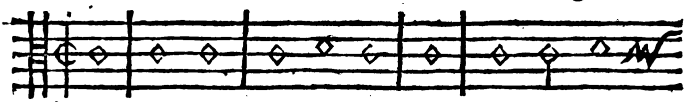
OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine, perseverántes in tua voluntáte famulátos : ut mérito et número pópulus tibi sérviens augeátur. Per Christum Dóminum nostrum.

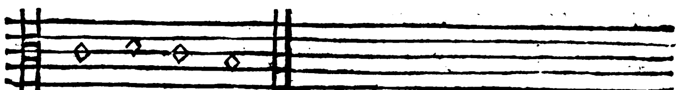
*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Après cela, le Novice sera mené en sa place par les Principaux; et tous étant debout en leurs barres, le Recteur entonnera :* Te Deum laudámus, etc. *chaque Chœur disant son verset.*

*HYMNE de S. Ambroise et de S. Augustin.*



TE Deum laudámus : Te Dóminum



confi témur.

Te ætérnum Patrem omnis terra venerátur.

Tibi omnes Angeli, tibi Cœli et univérsæ Potestátes.

Tibi Chérubim et Séraphim, incessábili voce proclámant.

Sanctus, Sanctus, Sanctus Dóminus Deus Sabáoth.

Pleni sunt cœli et terra majestátis glóriæ tuæ.
Te gloriósus Apostólorum Chorus.
Te Prophetárum laudábilis númerus.
Te Mártyrum candidátus laudat exércitus.
Te per orbem terrárum, sancta confitétur Ecclésia.
Patrem imménsæ majestátis.
Venerándum tuum verum et únicum Fílium.
Sanctum quoque paraclétum Spíritum.
Tu Rex glóriæ Christe.
Tu Patris sempitérnus es Fílius.
Tu ad liberándum susceptúrus hóminem, non horruísti Vírginis úterum.
Tu devícto mortis acúleo, aperuísti credéntibus regna Cœlórum.
Tu ad déxteram Dei sedes, in glória Patris.
Judex créderis esse ventúrus.

*Les Pénitens se mettront tous à genoux; et le Recteur sortant de sa place pour se mettre au milieu du Chœur, entonnera:*

Te ergo quæsumus fámulis tuis súbveni, quos pretióso sánguine tuo redemísti.
Ætérna fac cum Sanctis tuis, in glória numerári.
Salvum fac pópulum tuum, Dómine; et bénedic hæreditáti tuæ.

Et rege eos, et extólle illos usque in ætérnum.
Per síngulos dies benedícimus te.
Et laudámus nomen tuum in seculum, et in seculum seculi.
Dignáre, Dómine, die isto, sine peccáto nos custodíre.
Miserére nostrî, Dómine; miserére nostrî.
Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, quemádmodùm sperávimus in te.
In te, Dómine sperávi; non confúndar in ætérnùm.

*Le Recteur dira:* OREMUS.

ACtiónes nostras, quæsumus, Dómine, aspirándo præveni, et adjuvándo prosequére, ut cuncta nostra orátio et operátio à te semper incípiat, et per te cœpta finiatur. Per Christum Dóminum nostrum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

---

*Pour revêtir plusieurs Novices, on observera les mêmes cérémonies que ci-devant. On dira le* Miserére; *et à la fin du Psaume, le Recteur dira:* Kyrie eléison.

*Le Ch.* ℟. Christe eléison. Kyrie eléison.
*Le Recteur.* ℣. Pater noster, *à voix basse.*
℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Le Recteur.* ℣. Ostende nobis, Dómine, misericórdiam tuam.

*Le Chœur.* ℟. Et salutáre tuum da nobis.

*Le Recteur.* ℣. Salvos fac servos tuos.

*Le Chœur.* ℣. Deus meus, sperántes in te.

*Le Recteur.* ℣. Esto eis, Dómine, turris fortitùdinis.

*Le Chœur.* ℣. A fácie inimíci.

*Le Recteur.* ℣. Mitte eis, Dómine, auxílium de Sancto.

*Le Chœur.* ℣. Et de Sion tuére eos.

*Le Recteur.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Chœur.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Recteur.*

ORémus, dilectíssimi Fratres, Dóminum nostrum Jesum Christum, pro his fámulis suis, qui ad deponéndam vanitátem seculi pro ejus amóre festínant : ut donet eis Spíritum sanctum qui observántiæ Mandatórum Dei, et Capitulórum nostrórum, eis continuò desidérium accéndat, et à mundi impediméntis, et vanis desidériis corda eórum custódiat, ut sicut mutáti sunt in intróitu Fraternitátis hujus ita manus divínæ déxteræ in eis virtútem hujúsmodi óperis perfectióne confírmet, et ab omni cæcitáte cor-

da eórum líberet, ac lumen æternitátis suæ dono concédat. Qui vivit et regnat cum Deo Patre in unitáte Spíritûs sancti Deus. Per ómnia secula seculórum. *Le Ch.* ℟. Amen.

*Le Recteur se tournant vers eux, dira:* Mes Frères, que demandez-vous? *Les Novices répondront:* La miséricorde de Dieu et la paix de cette Compagnie. *Le Recteur suivra disant:* Nous vous prions de garder et d'observer les Commandemens de Dieu et les Statuts de notre Congrégation, et vous en recevrez une grande consolation. *Tous les Frères répondront.* Dieu leur en fasse la grâce.

*Le Rect. suivra, disant:* Dóminus custódiat introitum tuum et éxitum vestrum.

*Le Ch.* ℟. Ex hoc nunc, et usque in seculum.

*Le Recteur.*

ORémus, dilectíssimi Fratres, ut quod Fratres isti ore quæsiérunt, opere feliciter acquírant, auxiliánte Dómino nostro Jesu Christo, Qui cum Patre et Spíritu sancto vivit et regnat in secula seculórum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur continuera, disant:* OREMUS.

ADésto supplicatiónibus nostris, et hos fámulos tuos benedícere dignáre: qui-

bus in tuo sancto nómine vestem sanctæ puritátis impónimus, ut te largiénte vitam mereántur accípere. Per Christum Dóminum nostrum. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Après cela, le Recteur leur donnera l'Habit, et dira à chacun en le lui donnant :*

INduat te Deus novum hóminem, qui secúndùm Deum creátus est.

*Le Chœur.* ℟. In justítia et sanctitáte veritatis. Amen. *Et ainsi des autres cérémonies suivantes.*

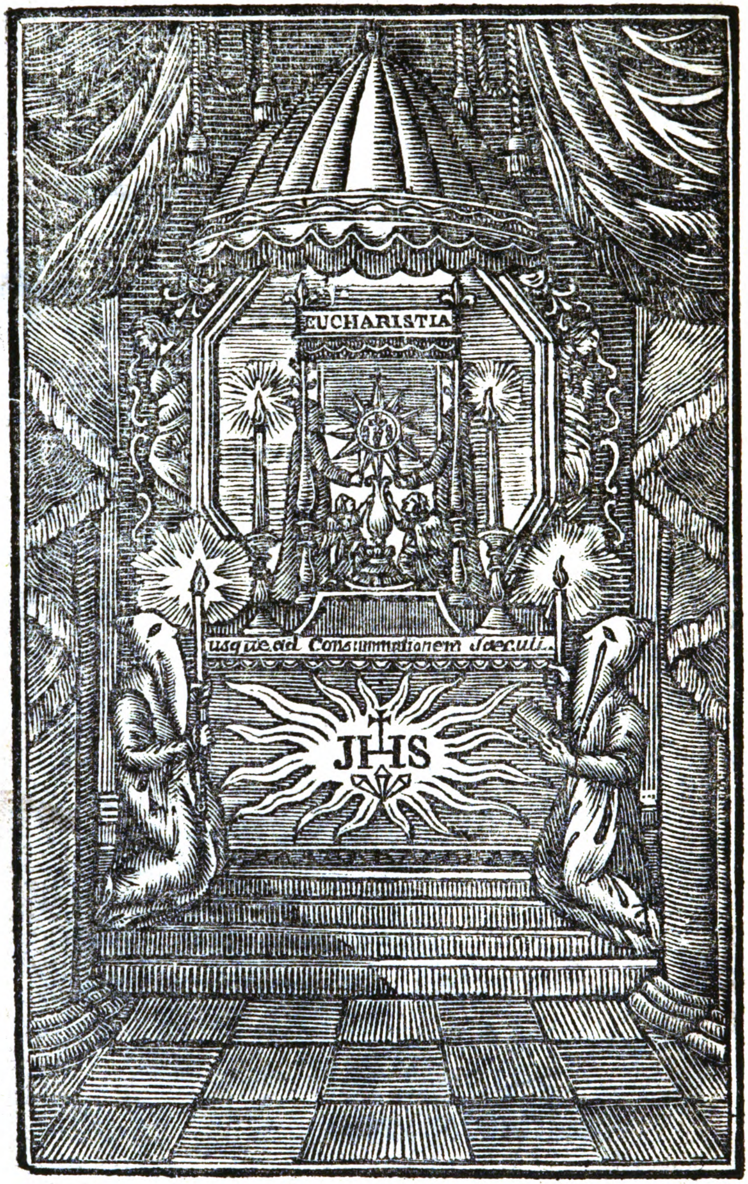
*Les Novices étant revêtus, le Recteur entonnera l'Hymne* Veni, Creátor, *et suivra, comme il a été dit ci-dessus en la manière de donner l'Habit à un seul,* page 7.

### *Oraison pour dire avant l'Office.*

APeri, Dómine, os meum ad benedicéndum nomen sanctum tuum : munda quoque cor meum ab ómnibus vanis, pervérsis et aliénis cogitatiónibus ; intelléctum illúmina, afféctum inflámma, ut dignè, atténtè, ac devótè hoc Officium recitáre váleam, et exaudíri mérear antè conspéctum divinæ majestátis tuæ. Qui vivis et regnas, Deus, in secula, seculórum.

℟. Amen.

LES


EUCHARISTIA
usque ad Consummationem Saeculi
JHS

LES

# PREMIÈRES VÊPRES

## DU S. SACREMENT DE L'AUTEL.

*Tous les Pénitens étant à genoux, le Recteur dira à voix basse :* Pater noster. Ave, María, etc. *Ensuite se levant, et faisant le Signe de la Croix, il commencera le Verset*

Deus, in adjutórium meum intende.

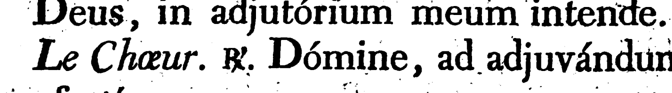
*Le Chœur.* ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto.

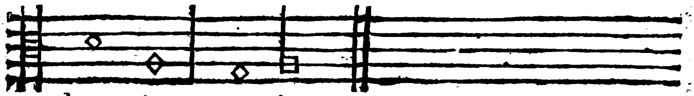
Sicut erat, etc. Allelúia.

*Le Rect. Antienne.* Sacerdos in ætername Christus Dóminus, secúndùm órdinem Melchísedech, panem et vinum óbtulit.

*Les* CHORISTES. *PSAUME* 109.



DIxit Dóminus Dómino meo : sede à




Donec ponam inimícos tuos : scabellum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emittet Dóminus ex Sion : domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ, in splendóribus Sanctórum : ex útero antè Lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, et non pœnitébit eum: tu es Sacérdos in æternum, secundùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis : confrégit in die iræ suæ Reges.
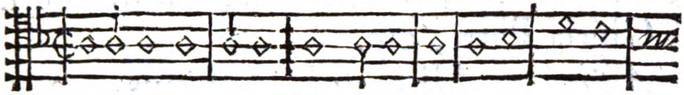
Judicábit in natiónibus, implébit ruínas; conquassábit cápita in terra multórum.

De torrénte in via bibet : proptéreà exaltábit caput. Glória Patri, etc.

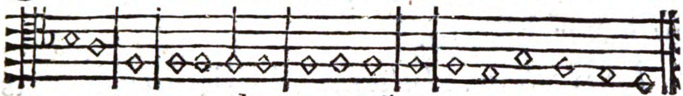
*Celui qui aura charge, dira l'Ant.* Sacérdos in æternum Christus Dóminus, secundùm órdinem Melchísedech, panem et vinum óbtulit. *Et ainsi des autres suivantes.*

*Le Recteur. Antienne.* Miserátor Dóminus escam dedit timéntibus se, in memóriam suórum mirabílium.

## Psaume 110.



COnfitebor tibi Dómine in toto corde



meo in concílio justórũ et congregatióne.

Magna ópera Dómini : exquisíta in omnes voluntátes ejus.

Confèssio et magnificéntia opus ejus : et justítia ejus manet in seculum seculi.

Memóriam fecit mirabílium suórum miséricors et miserátor Dóminus : escam dedit timéntibus se.

Memor erit in seculum testaménti sui : virtútem óperum suórum annuntiábit pópulo suo.

Ut det illis hæreditatem géntium : ópera mánuum ejus véritas et judícium.

Fdélia ómnia mandáta ejus, confirmáta in seculum seculi : facta in veritáte et æquitate.

Redemptiónem misit Dóminus pópulo suo : mandávit in ætérnum testaméntum suum.

Sanctum et terríbile nomen ejus : inítium sapiéntiæ timor Dómini.
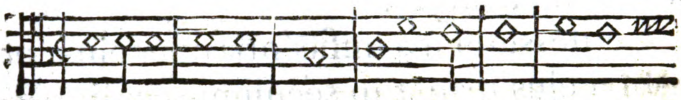
Intelléctus bonus ómnibus faciéntibus eum : laudátio ejus manet in seculum seculi.

Glória Patri, etc.
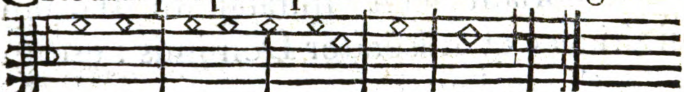
*Antienne.* Miserátor Dóminus escam dedit timéntibus se, in memóriam suórum mirabílium.

*Le Recteur. Antienne.* Cálicem salutáris accípiam, et sacrificábo hóstiam laudis.

## *Psaume* 115.



CRédidi propter quod locútus sum ego



autem humili-átus sum nimis.

Ego dixi in excéssu meo : omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino : pro ómnibus quæ retríbuit mihi?

Cálicem salutáris accípiam : et nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram omni pópulo ejus : pretiósa in conspectu Dómini mors Sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus : ego servus tuus, et fílius ancillæ tuæ.

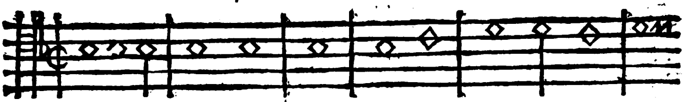
Dirupísti víncula mea : tibi sacrificábo hóstiam laudis, et nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspéctu omnis pópuli ejus : in átriis domûs Dómini, in médio tuî, Jerúsalem. Glória Patri, etc.
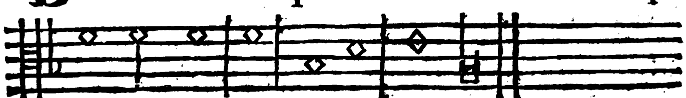
*Antienne.* Cálicem salutáris accípiam, et sacrificábo hóstiam laudis.

*Le Recteur. Ant.* Sicut novellæ olivárum, Ecclésiæ fílii sint in circúitu mensæ Dómini.

## *Psaume 127.*



BEáti omnes qui timent Dóminum : qui



ámbu-lant in vi-is ejus.

Labóres mánuum tuárum quia manducábis : beátus es, et benè tibi erit.

Uxor tua sicut vitis abúndans : in latéribus domûs tuæ.

Fílii tui sicut novéllæ olivárum : in circúitu mensæ tuæ.

Ecce sic benedicétur homo : qui timet Dóminum.

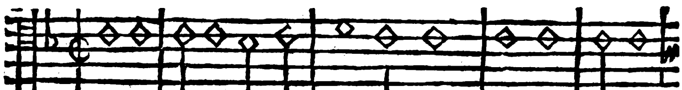
Benedícat tibi Dóminus ex Sion : et vídeas bona Jerúsalem ómnibus diébus vitæ tuæ.

Et vídeas fílios filiórum tuórum : pacem super Israel. Glória Patri, etc.

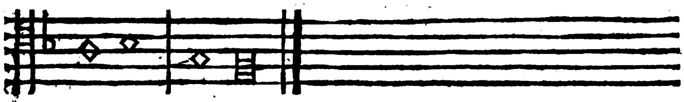
*Ant.* Sicut novéllæ olivárum, Ecclésiæ fílii sint in circúitu mensæ Dómini.

*Le Rect. Ant.* Qui pacem ponit fines Ecclésiæ, fruménti ádipe sátiat nos Dóminus.

## *Psaume 147.*



LAuda Jerúsalem Dóminum: lauda Deum



tuum Sion.

Quóniam confortávit seras portárum tuárum : benedíxit fíliis tuis in te.

Qui pósuit fines tuos pacem : et ádipe fruménti sátiat te.

Qui emíttit elóquium suum terræ : velóciter currit sermo ejus.

Qui dat nivem sicut lanam : nébulam sicut cínerem spargit.

Mittit crystállum suam sicut bucéllas : antè fáciem frigóris ejus quis sustinébit ?

Emíttet vérbum suum, et liquefáciet ea : flabit spíritus ejus, et fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob : justítias et judícia sua Israel.

Non fecit táliter omni natióni : et judícia sua non manifestávit eis.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Qui pacem ponit fines Ecclésiæ, fruménti ádipe sátiat nos Dóminus.

*Le Recteur dira le Chapitre* 1. Corinth. 11.

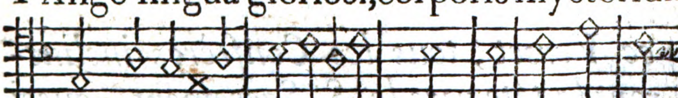
FRatres, ego enim accépi à Dómino quod et trádidi vobis : quóniam Dóminus Jesus in qua nocte tradebátur, accépit pánem; et grátias agens, fregit, et dixit : Accípite et manducáte : hoc est Corpus meum, quod pro vobis tradétur : hoc fácite in meam commemoratiónem.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

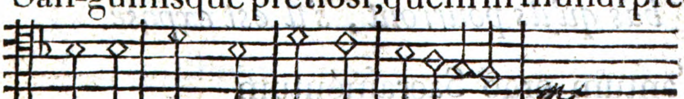
*Les Choristes.* *Hymne.*



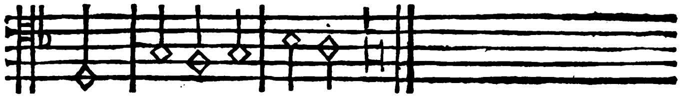
PAnge lingua gloriósi, córporis mystérium



San-guinísque pretiósi, quem in mundi pré-



ti-um Fructus ventris generósi,



Rex effúdit géntium.

Nobis datus nobis natus
Ex intácta Vírgine,
Et in mundo conversátus,
Sparso verbi sémine,
Sui moras incolátûs
Miro clausit órdine.

In suprémæ nocte cœnæ
Recúmbens cum frátribus,
Observátâ lege plenè,
Cibis in legálibus,
Cibum turbæ duodénæ
Se dat suis mánibus.

Verbum caro, Panem verum,
Verbo carnem éfficit,
Fitque Sanguis Christi merum:
Et si sensus déficit,
Ad firmándum cor sincérum,
Sola fides sufficit.

*A ce Verset, tous les Confrères inclineront la tête vers le S. Sacrement, aussi bas qu'ils pourront, s'il est exposé.*

Tantum ergo Sacraméntum
Venerémur cérnui,

Et antíquum documéntum
Novo cedat rítui;
Præstet fides suppleméntum,
Sénsuum deféctui.

Genitóri, Genitóque
Laus et jubilátio,
Salus, honor, virtus quoque,
Sit et benedíctio,
Procedénti ab utróque,
Compar sit laudátio. Amen.
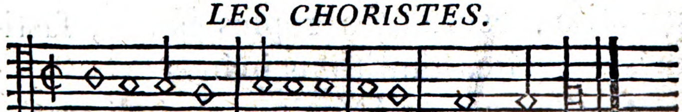
*Les Choristes.* ℣. Panem de Cœlo præstitísti eis, Allelúia.

*Le Chœur.* ℟. Omne delectaméntum in se habéntem, Allelúia.

*Le Rect. Ant.* O quàm suávis est, Dómine, Spíritus tuus, qui ut dulcédinem tuam in fílios demonstráres, Pane suavíssimo de Cœlo præstito esuriéntes reples bonis, fastidiósos dívites dimíttens inánes!

CANTIQUE DE LA VIERGE MARIE.

*LES CHORISTES.*



MAgníficat: ánima mea Dóminum.

Et exultávit spíritus meus: in Deo salutári meo.

Quia respexit humilitátem ancillæ suæ: ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna qui potens est: et sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies : timéntibus eum.

Fecit poténtiam in bráchio suo: dispersit supérbos mente cordis sui.

Depósuit potentes de sede: et exaltávit húmiles.

Esuriéntes implévit bonis : et dívites dimísit inánes.

Suscépit Israel púerum suum : recordátus misericórdiæ suæ.

Sicut locútus est ad patres nostros: Abraham, et sémini ejus in sécula.

Glória Patri, etc.

*Ant.* O quàm suávis est, Dómine, Spíritus tuus, qui ut dulcédinem tuam in fílios demonstràres, Pane suavíssimo de Cœlo præstito, esuriéntes reples bonis, fastidiósos dívites dimittens inánes!

*Le Recteur.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Chœur.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Recteur.* OREMUS.

DEus, qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquísti : tríbue, quæsumus, ita nos Córporis et Sánguinis tui sacra Mystéria venerári; ut redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in secula seculórum. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Ici on fait la commémoraison du Dimanche ou de la Fête qui échoit ce jour,*

*Le Recteur.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Ch.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Recteur.* ℣. Benedicámus Dómino.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Le Recteur.* ℣. Fdélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

---

## POUR LES COMPLIES.

*Un des Choristes commencera :* ℣. Jube, Domne, benedícere.

*Le Rect. Bénédiction.* Noctem quiétam et finem perféctum concédat nobis Dóminus omnípotens. *Le Ch.* ℟. Amen.

*Les Choristes. Brève Leçon.* 1. Pet. 5.

FRatres, sóbrii estóte et vigiláte, quia adversárius vester diábolus, tanquam leo rúgiens, círcuit, quærens quem dévoret: cui resístite fortes in fide. Tu autem, Dómine, miserére nobis. *Le Ch.* ℟. Deo grátias.

*Le Rect.* ℣. Adjutórium nostrum in nómine Dómini. *Le Ch.* ℟. Qui fecit cœlum et terram.

*Le Rect.* Pater noster, Ave, María. Credo in Deum. *à voix basse; lequel étant fini, le Recteur fera la confession, disant:*

COnfíteor Deo omnipóténti, beátæ Maríæ semper Vírgini, beáto Michaéli Archángelo, beáto Joánni Baptístæ, sanctis Apóstolis Petro et Paulo, ómnibus Sanctis, et vobis, Fratres, quia peccávi nimis cogitatióne, verbo et ópere: meâ culpâ, meâ culpâ, meâ maximâ culpâ. Ideò precor beátam Maríam semper Vírginem, beátum Michaélem Archángelum, beátum Joannem Baptístam, sanctos Apóstolos Petrum et Paulum, omnes Sanctos, et vos, Fratres, oráre pro me ad Dóminum Deum nostrum.

*Les Confrères répondront.*

MIsereátur tuî omnípotens Deus, et dimíssis peccátis tuis, perdúcat te ad vitam æternam. *Le Recteur,* ℟. Amen.

*Puis les Confrères poursuivent la confession, disant* Confíteor Deo, *tout au long ; laquelle achevée, le Recteur dira :*

MIsereátur vestrî omnípotens Deus, et dimíssis peccátis vestris, perdúcat vos ad vitam æternam. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur continuera, disant :*

INdulgéntiam, absolutiónem et remissiónem ómnium peccatórum nostrórum tríbuat nobis omnípotens et miséricors Dóminus. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Puis, tous étant debout ; le Rect. entonne :*

Convérte nos, Deus salutáris noster.

*Le Ch.* ℟. Et avérte iram tuam à nobis.

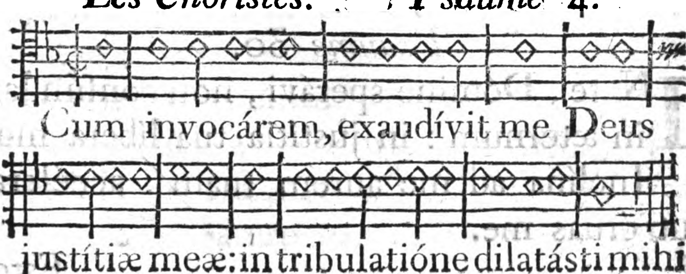
*Le Recteur.* ℣. Deus in adjutórium meum intende.

*Le Chœur.* ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.

℣. Glória Patri, et Fílio, etc.

*Le Rect. Antienne.* Miserére. *Au temps de Pâques, il dit :* Allelúia.

*Les Choristes.* *Psaume* 4.



Miserére meî : et exáudi oratiónem meam.

Fílii hóminum úsquequò gravi corde : ut quid dilígitis vanitàtem, et quæritis mendácium ?

Et scitóte quóniam mirificávit Dóminus Sanctum suum : Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini, et nolíte peccáre : quæ dícitis in córdibus vestris, in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte sacrifícium justítiæ, et speráte in Dómino : multi dicunt, quis osténdit nobis bona ?

Signatum est super nos lumen vultûs tui, Dómine : dedisti lætítiam in corde meo.

A fructu frumenti, vini et ólei sui : multiplicáti sunt.

In pace in idípsum : dórmiam et requiéscam.

Quóniam tu, Dómine, singuláriter in spe : constituísti me.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 30.

IN te, Dómine sperávi, non confúndar in æternum : in justítia tua líbera me.

Inclína ad me aurem tuam : accélera ut éruas me.

Esto

Esto mihi in Deum protectórem, et in domum refúgii : ut salvum me fácias.

Quóniam fortitúdo mea, et refúgium meum es tu : et propter nomen tuum dedúces me, et enútries me.

Edúces me de láqueo hoc, quem abcondérunt mihi : quóniam tu es protéctor meus.

In manus tuas commméndo spíritum meum: redemísti me, Dómine Deus veritátis.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 90.

QUi hábitat in adjutório Altíssimi : in protectióne Dei cœli commorábitur.

Dicet Dómino, Suscéptor meus es tu, et refúgium meum : Deus meus, sperábo in eum.

Quóniam ipse liberávit me de láqueo venántium : et à verbo áspero.

Scápulis suis obumbrábit tibi : et sub pennis ejus sperábis.

Scuto circumdábit te véritas ejus : non timébis à timóre noctúrno.

A sagitta volánte in die, à negótio perambulánte in ténebris : ab incúrsu et dæmónio meridiáno.

Cadent à látere tuo mille, et decem

millia à dextris tuis : ad te autem non appropinquábit.

Verúmtamen óculis tuis considerábis : et retributiónem peccatórum vidébis.

Quóniam tu es, Dómine, spes mea : altíssimum posuísti refúgium tuum.

Non accédet ad te malum : et flagéllum non appropinquábit tabernáculo tuo.

Quóniam Angelis suis mandávit de te : ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

In mánibus portábunt te : ne fortè offendas ad lápidem pedem tuum.

Super áspidem et basilíscum ambulábis : et conculcábis leónem et dracónem.

Quóniam in me sperávit, liberábo eum : prótegam eum, quóniam cognóvit nomen meum.

Clamábit ad me, et ego exáudiam eum : cum ipso sum in tribulatióne ; eripiam eum, et glorificábo eum.

Longitúdine diérum replébo eum : et osténdam illi salutáre meum. Glória Patri, etc.

*Psaume* 123.

ECce nunc benedícite Dóminum : omnes servi Dómini.

Qui statis in domo Dómini : in atriis domûs Dei nostri.
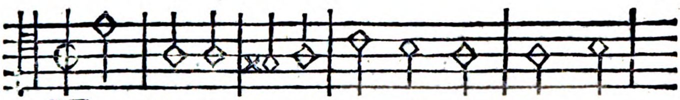
In nóctibus extóllite manus vestras in sancta : et benedícite Dóminum.

Benedícat te Dóminus ex Sion : qui fecit cœlum et terram. Glória Patri, etc.

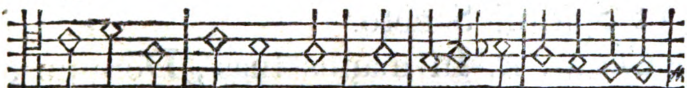
*Ant.* Miserére meî, Dómine, et exáudi oratiónem meam.

*Antienne pour le temps de* **Pâques.** Allelúia, Allelúia, Allelúia.

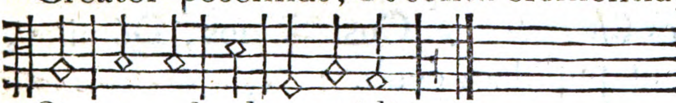
## *HYMNE.*



TE lucis antè terminum, Rerum



Creátor póscimus, Ut sólitâ clémentiâ,



Sis præsul ad custódiam.

Procul recédant sómnia,
Et nóctium phantásmata;
Hostémque nostrum cómprime,
Ne polluántur córpora.

Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna secula. Amen.

*Le Recteur et les Confrères debout.* CHAP.

TU autem in nobis es, Dómine, et nomen sanctum tuum invocátum est super nos: ne derelínquas nos, Dómine Deus noster.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℣. In manus tuas, Dómine, comméndo spíritum meum.

*Le Chœur.* ℟. In manus tuas, Dómine, comméndo spíritum meum.

*Les Choristes.* ℣. Redemísti nos, Dómine, Deus veritátis.

*Le Chœur.* ℟. Comméndo spíritum meum.

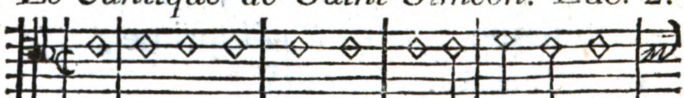
*Les Choristes.* ℣. Glória Patri et Fílio, et Spíritui Sancto.

*Le Chœur.* ℟. In manus tuas, Dómine, comméndo spíritum meum.

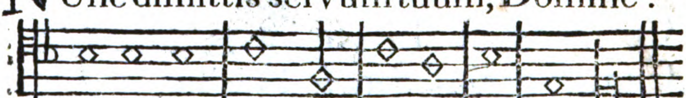
*Les Choristes.* ℣. Custódi nos, Dómine, ut pupíllam óculi.

*Le Chœur.* ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege nos. *Le Rect. Ant.* Salva nos.

*Le Cantique de Saint Siméon.* Luc. 2.



NUnc dimíttis servum tuum, Dómine:



secúndùm verbum tuum in pace.

Quia vidérunt óculi mei : salutáre tuum.

Quod parásti : antè faciem ómnium populórum.

Lumen ad revelatiónem géntium : et glóriam plebis tuæ Israël. Glória Patri, etc.

*Ant.* Salva nos, Dómine, vigilántes ; custódi nos dormiéntes : ut vigilémus cum Christo, et requiescámus in pace.

*Après l'Antienne* Salva nos, Dómine, *le Recteur, et tous les Pénitens à genoux jusqu'à la fin, dira tous les Versets, et le Chœur tous les Répons.*

℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison. Kyrie eléison. *Le Rect.* Pater noster, *jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℟. Sed libera nos à malo.

*Le Rect.* ℣. Credo in Deum, etc. *Ensuite à haute voix.* ℣. Carnis resurrectionem. ℟. Vitam æternam. Amen. ℣. Benedíctus es, Dómine Deus Patrum nostrórum. ℟. Et laudábilis et gloriósus in secula. ℣. Benedicámus Patrem et Fílium cum Sancto Spíritu. ℟. Laudémus et superexaltémus eum in secula. ℣. Benedíctus es, Dómine, in firmaménto cœli. ℟. Et laudábilis, et gloriósus, et superexaltátus in secula.

℣. Benedícat et custódiat nos omnípo-

tens et miséricors Dóminus. ℟. Amen.
℣. Dignáre, Dómine, nocte istâ,
℟. Sine peccáto nos custodíre.
℣. Miserére nostrî, Dómine.
℟. Miserére nostrî.
℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos.
℟. Quemádmodum sperávimus in te.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

VIsita, quæsumus, Dómine, habitatiónem istam, et omnes insídias inimíci ab ea longè repélle : Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant : et benedíctio tua sit super nos semper. Per Dóminum, etc. *Le Ch.* ℟. Amen.

*Le Rect.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Ch.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Rect.* ℣. Benedicámus Dómino.

*Le Ch.* ℟. Deo grátias.

*Le Rect.* ℣. Benedícat et custódiat nos omnípotens et miséricors Dóminus, Pater, et Fílius, et Spíritus Sanctus.

*Le Ch.* ℟. Amen.

*Tous les Confrères à genoux, diront une des Antiennes selon la saison.*

*Dès les Vêpres du Samedi devant le premier Dimanche de l'Avent, jusqu'à la Purification inclusivement, on dit l'Antienne suivante.*

ALma Redemptóris Mater, quæ pérvia Cœli porta manes, et stella maris, succúrre cadénti, súrgere qui curat pópulo; tu quæ genuísti, natúrâ mirante, tuum sanctum Genitórem. Virgo priùs ac postériùs, Gabriélis ab ore sumens illud Ave, peccatórum miserére.

*En l'Avent.* ℣. Angelus Dómini nuntiávit Maríæ. ℟. Et concépit de Spíritu Sancto.

*Le Recteur.* OREMUS.

GRàtiam tuam, quæsumus, Dómine, méntibus nostris infúnde; ut qui, Angelo nuntiánte, Christi Fílii tui Incarnatiónem cognóvimus, per Passiónem ejus et Crucem, ad Resurrectiónis glóriam perducámur. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Le Rect.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nóbiscum. *Le Ch.* ℟. Amen.

*Dès les premières Vêpres de la Nativité jusqu'à Complies de la Purification, on dit le* ℣. Post partum Virgo invioláta permansisti. ℟. Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

*Le* RECTEUR. OREMUS.

DEus qui salutis ætérnæ, Beátæ Mariæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti : tribue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum. ℟. Amen.

*Le Rect.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum.

*Le Ch.* ℟. Amen.

*Après la Purification, c'est-à-dire, à la fin des Complies de ce jour-là jusqu'à la Férie cinquième de la Cène de Notre-Seigneur, exclusivement.*

*ANTIENNE.*

AVe, Regína Cœlórum,
Ave, Dómina Angelórum ;
Salve, radix ; salve, porta,
Ex qua mundo lux est orta.
Gaude, Virgo gloriósa,
Super omnes speciósa.
Vale, ô valdè decóra !
Et pro nobis Christum exóra.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.
℟. Da mihi virtútem contrà hostes tuos.

OREMUS.

CONcede, misericors Deus, fragilitáti nostræ præsídium; ut qui sanctæ Dei Genitrícis memóriam ágimus, intercessiónis ejus auxílio, à nostris iniquitátibus resurgámus. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. *Le Ch.* ℟. Amen.

*Dès les Complies du Samedi-Saint, jusqu'à None du Samedi après la Pentecôte inclusivement.* ANTIENNE.

REgína cœli, lætáre, Allelúia.
Quia quem meruísti portáre, Allelúia.
Resurréxit sicut dixit, Allelúia.
Ora pro nobis Deum, Allelúia.
℣. Gaude et lætáre, Virgo Maria, Allelúia.
℟. Quia surréxit Dóminus verè, Allelúia.

*LE RECTEUR.* OREMUS.

DEus, qui per Resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi mundum lætificáre dignátus es: præsta, quæsumus, ut per ejus Genitrícem Vírginem Maríam, perpétuæ capiámus gáudia vitæ. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Le Rect.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. *Le Ch.* ℟. Amen.

*Dès les premières Vêpres de la Fête de la Très-Sainte Trinité, jusqu'à None du Samedi de l'Avent.*

ANTIENNE.

SAlve, Regína, Mater misericórdiæ, vita, dulcédo, et spes nostra, salve. Ad te clamámus, éxules, fílii Evæ. Ad te suspirámus geméntes et flentes in hac lacrymarum valle. Eía ergo, Advocáta nostra, illos tuos misericórdes óculos ad nos convérte. Et Jesum benedíctum fructum ventris tui, nobis post hoc exílium osténde. O clemens! ô pia! ô dulcis Virgo Maria!

℣. Ora pro nobis, sancta Dei Génitrix.

℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

*Le* RECTEUR. OREMUS.

OMnipotens sempitérne Deus, qui gloriósæ Vírginis Matris Maríæ corpus et ánimam, ut dignum Fílii tui habitáculum éffici mererétur, Spíritu sancto cooperánte præparásti; da, ut cujus commemoratióne lætámur, ejus piâ intercessióne ab instántibus malis, et à morte perpétua liberémur. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum.

*Le Ch.* ℟. Amen.

Pater noster, Ave, María. Credo in Deum.

*L'Office parachevé, le Recteur dira le* Miserére meî, Deus, *comme ci-devant, pag.* 1, *avec l'Oraison suivante :*

SUscipe, clementíssime Deus, précibus et méritis Beátæ Maríæ semper Vírginis et ómnium Sanctórum et Sanctárum, Officium servitútis nostræ; et si quid dignum laude égimus, propítius réspice; quod negligénter actum est, cleménter ignósce. Qui in Trinitáte perfécta vivis et regnas, Deus. Per ómnia sécula seculórum.

℟. Amen.

*On observera la même chose à la fin de tous les Offices et Processions.*

# L'OFFICE DU S. SACREMENT, *A MATINES.*

*Le Recteur, et tous les Pénitens à genoux, dira* Pater noster. Ave Maria. Credo in Deum. *Ensuite se levant, et faisant le signe de la croix, entonnera :*

Domine lábia mea apéries.

*Tous se lèveront, et répondront :*

Et os meum annuntiábit laudem tuam.

*Le Recteur faisant derechef le signe de la croix, dira le Verset :*

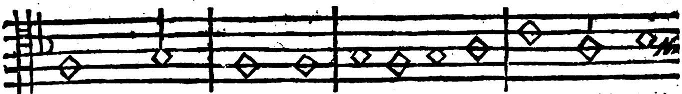
Deus, in adjutórium meum inténde.

℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.

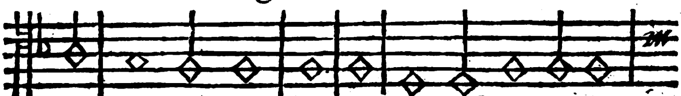
Glória Patri, et Fílio, etc. Allelúia.

*Depuis Pâques jusqu'au Dimanche de la Septuagésime, à toutes les heures on dit* Allelúia; *mais depuis le Dimanche de la Septuagésime jusqu'à Pâques, on dit :* Laus tibi, Dómine, Rex ætérnæ glóriæ.

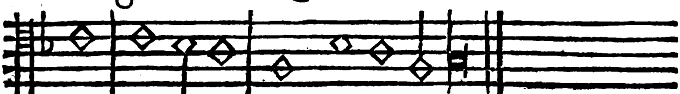
*Les Choristes commenceront l'Invitatoire.*



CHristum Regem adorémus dominán-



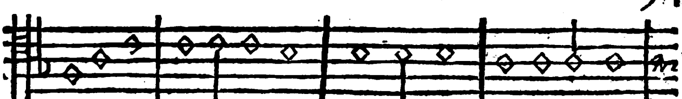
tem géntibus: Qui se manducántibus



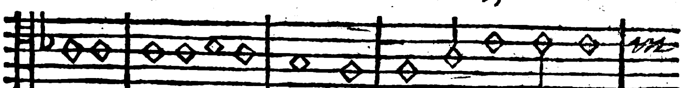
dat spíritûs pinguédinem.

*Tous répètent le même* Christum Regem adorémus dominántem géntibus : Qui se manducántibus dat spíritûs pinguédinem.

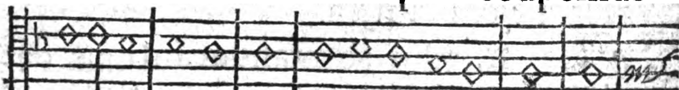
*Les deux Choristes suivront : Psaume 94.*
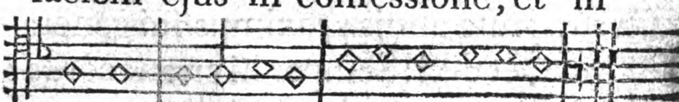


VEníte, exultémus Dómino, jubilémus



Deo salutári nostro : præoccupémus



fáciem ejus in confessióne, et in



psalmis jubilémus ei.

*Le Ch.* ℟. Christum Regem adorémus dominántem géntibus.

Quóniam Deus magnus Dóminus, et Rex magnus super omnes Deos : quóniam non repéllet Dóminus plebem suam, quia in manu èjus sunt omnes fines terræ, et altitúdines móntium ipse cónspicit.

*Le Ch.* ℟. Qui se manducántibus dat spíritûs pinguédinem.

Quóniam ipsíus est mare, et ipse fecit illud, et áridam fundavérunt manus ejus : Veníte adorémus, et procidámus antè Deum : plorémus coram Dómino qui fecit nos, quia ipse est Dóminus Deus noster : nos autem pópulus ejus, et oves páscuæ ejus.

*Le Ch.* ℟. Christum Regem adorémus dominántem géntibus.

Hódie si vocem ejus audiéritis, nolíte obduráre corda vestra, sicut in exacerbatióne secúndùm diem tentatiónis in desérto : ubi tentavérunt me patres vestri, probavérunt et vidérunt ópera mea.

*Le Ch.* ℟. Qui se manducántibus dat spíritûs pinguédinem.

Quadragínta annis proximus fui generatióni huic, et dixi : Semper hi errant corde : ipsi verò non cognovérunt vias meas, qui-

bus jurávi in ira mea, si introíbunt in requiem meam.

*Le Ch.* ℟. Christum Regem adorémus dominántem géntibus.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto.
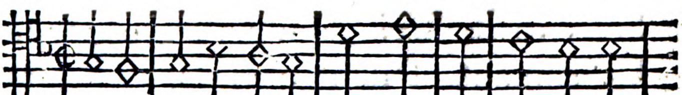
Sicut erat in princípio, etc.

*Le Ch.* ℟. Qui se manducántibus dat spíritûs pinguédinem.

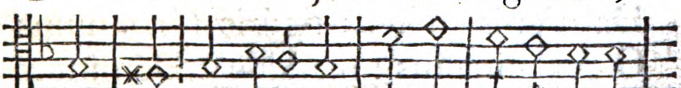
*Les Choristes.* ℣. Christum regem adorémus dominántem géntibus.

*Le Ch.* ℟. Qui se manducántibus dat spíritûs pinguédinem.

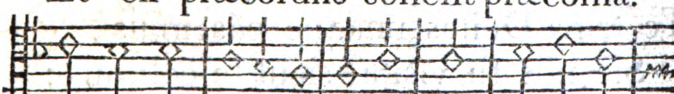
*Les* CHORISTES. HYMNE.



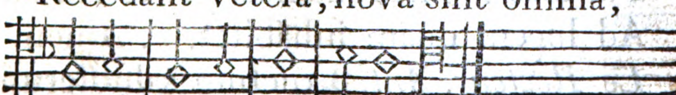
SAcris solémniis juncta sint gáudia,



Et ex præcórdiis sonent præcónia.



Recédant vétera, nova sint ómnia,



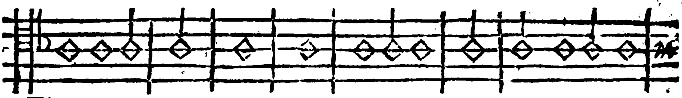
Corda, voces et ópera.

Noctis recólitur cœna novíssima,
Quâ Christus créditur agnum et ázyma
Dedísse Frátribus, juxtà legítima
Priscis indúlta Pátribus.
Post agnum typicum, explétis épulis,
Corpus domínicum datum discípulis,
Sic totum ómnibus, quod totum síngulis,
Ejus fatémur mánibus.
Dedit fragílibus córporis férculum,
Dedit et trístibus sánguinis póculum,
Dicens : Accípite quod trado vásculum,
Omnes ex eo bíbite.
Sic sacrifícium istud instítuit,
Cujus offícium commítti voluit
Solis Presbyteris, quibus sic cóngruit,
Ut sumant et dent cæteris.
Panis Angélicus fit pánis hominum;
Dat Panis cœlicus figúris términum :
O res mirábilis ! mandúcat Dóminum
Pauper servus et húmilis.
Te trina Déitas unáque póscimus,
Sic nos tu vísita, sicut te cólimus :
Per tuas sémitas duc nos quò téndimus,
Ad lucem quam inhábitas. ℟. Amen.

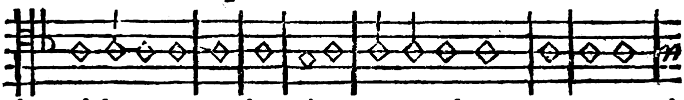
*Le Recteur. Ant.* Fructum salutíferum gustándum dedit Dóminus, mortis suæ témpore.

Les

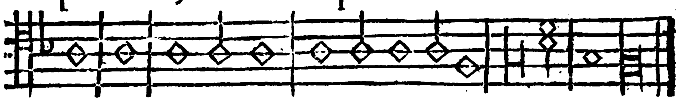
*Les Choristes commenceront le Pseaume* I.



BEátus vir qui non ábiit in consílio



impiórum, et in via peccatórum non stetit,



et in cáthedra pestiléntiæ non sedit.

Sed in lege Dómini volúntas ejus : et in lege ejus meditábitur die ac nocte.

Et erit tanquàm lignum, quod plantátum est secùs decúrsus aquárum : quod fructum suum dabit in tempore suo.

Et fólium ejus non défluet : et ómnia quæcúmque fáciet, prosperabúntur.

Non sic ímpii, non sic : sed tanquàm pulvis, quem prójicit ventus à fácie terræ.

Ideò non resúrgent ímpii judício : neque peccatóres in consílio justórum.

Quóniam novit Dóminus viam justórum: et iter impiórum péribit. Glória Patri, etc.

*Ant.* Fructum salutíferum gustándum dedit Dóminus, mortis suæ témpore.

*Le Recteur. Ant.* A fructu fruménti et

vini multiplicáti fidéles, in pace Christi requiéscunt.

*Psaume* 4.

CUm invocárem, exaudívit me Deus justítiæ meæ : in tribulatióne dilatásti mihi.

Miserére meî : et exáudi oratiónem meam.

Fílii hóminum úsquequò gravi corde : ut quid dilígitis vanitátem, et quæritis mendácium ?

Et scitóte, quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum : Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini, et nolíte peccáre : quæ dícitis in córdibus vestris ; in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte sacrifícium justítiæ, et speráte in Dómino : multi dicunt, Quis osténdit nobis bona ?

Signátum est super nos lumen vultûs tui, Dómine : dedísti lætítiam in corde meo.

A fructu fruménti, vini, et ólei sui : multiplicáti sunt.

In pace in idípsum : dórmiam et requiéscam.

Quóniam tu, Dómine, singuláriter in spe : constituísti me. Glória Patri, etc.

*Ant.* A fructu frúmenti et vini multi-

plicáti fidéles, in pace Christi requiéscunt.

*Le Recteur. Ant.* Communióne cálicis, quo Deus ipse súmitur, non vitulórum sánguine congregávit nos Dóminus.

*Psaume* 15.

CONsérva me, Dómine, quóniam sperávi in te: dixi Dómino, Deus meus es tu, quóniam bonórum meórum non eges.

Sanctis, qui sunt in terra ejus: mirificávit ómnes volúntates meas in eis.

Multiplicátæ sunt infirmitátes eórum: pósteà acceleravérunt.

Non congregábo conventícula eórum de sanguínibus: nec memor ero nóminum eórum per lábia mea.

Dóminus pars hæreditátis meæ, et cálicis mei: tu es qui restítues hæreditátem meam mihi.

Funes cecidérunt mihi in præclaris: étenim hæréditas mea præclára est mihi.

Benedícam Dóminum, qui tríbuit mihi intelléctum: ínsuper et usque ad noctem increpuérunt me renes mei.

Providébam Dóminum in conspéctu meo semper: quóniam à dextris est mihi, ne commóvear.

Propter hoc lætátum est cor meum, et

exultávit lingua mea : ínsuper et caro mea requiéscet in spe.

Quóniam non derelínques ánimam meam in inférno : nec dabis sanctum tuum vidére corruptiónem.

Notas mihi fecísti vias vitæ, adimplébis me lætítiâ cum vultu tuo : delectatiónes in déxtera tua usque in finem.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Communióne cálicis, quo Deus ipse súmitur, non vitulórum sánguine, congregávit nos Dóminus.

*Les Choristes.* ℣. Panem cœli dedit eis, Allelúia.

*Le Chœur.* ℟ Panem Angelórum manducávit homo, Allelúia.

*Le Recteur.* Pater noster. *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Le Recteur dira l'Absolution.*

A Vínculis peccatórum nostrórum absólvat nos omnípotens et miséricors Dóminus. *Le Chœur.* ℟. Amen

*Celui qui aura charge de dire la Leçon, s'en ira droit au Pupitre, et dira :*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Rect. Bénédict.* Ille nos benedícat, qui sine fine vivit et regnat. *Le Ch.* ℟. Amen.

SERMO S. Thomæ Aquinátis. *In Opusc.* 57.

LEÇON I.

Imménsa divínæ largitátis benefícia, exhíbita Pópulo Christiáno, inæstimàbilem ei conférunt dignitátem. Neque enim est, aut fuit aliquándo tam grandis nátio, quæ hábeat Deos appropinquántes sibi, sicut adest nobis Deus noster. Unigénitus síquidem Dei Fílius, suæ Divinitátis volens nos esse partícipes, nostram natúram assúmpsit: ut hómines Deos fáceret factus homo. Et hoc ínsuper, quod de nostro assúmpsit, totum nobis cóntulit ad salútem. Corpus namque suum pro nostra reconciliatióne in ara Crucis hóstiam óbtulit Deo Patri: Sánguinem suum fudit in prétium simul et lavácrum: ut redémpti à miserábili servitúte, à peccátis ómnibus mundarémur. Ut autem tanti benefícii jugis in nobis manéret memória, Corpus suum in cibum, et Sánguinem suum in potum, sub spécie panis et vini suméndum, Fidélibus derelíquit. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Immolábit hœdum multitúdo filiórum Israël ad vésperam Paschæ:

Et edent carnes, et ázymos panes.

*Celui qui a dit la Leçon.*

℣. Pascha nostrum immolátus est Christus : ítaque epulémur in ázymis sinceritátis et veritátis. *Les Choristes.* ℟. Et edent carnes, et ázymos panes. *Le même ordre s'observera à toutes les autres Leçons suivantes.*

*L'autre Confrère qui aura charge, dira :*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur. Bénédiction.* Divínum auxílium máneat semper nobíscum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

## LEÇON II.

O Pretiósum et admirándum convívium, salutíferum, et omni suavitáte replétum ! Quid enim hoc convívio pretiósius esse potest ? in quo non carnes vitulórum et hircórum, ut olim in lege, sed nobis Christus suméndus propónitur verus Deus. Quid hoc Sacraménto mirabílius ? in ipso namque panis et vinum in Corpus et Sánguinem Christi substantiáliter convertúntur : ideóque Christus Deus, et homo perféctus sub módici panis et vini spécie continétur. Manducátur ítaque à fidélibus, sed mínimè lacerátur : quin imò, divíso Sacraménto sub quálibet divisiónis partícula ín-

teger persévérat. Accidéntia autem sine sub-jécto in eódem subsístunt, ut fides locum hábeat, dum visíbile invisibíliter súmitur sub aliéna spécie occultátum : et sensus à deceptióne immúnes reddántur, qui de accidéntibus júdicant sibi notis. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Comedétis carnes, et saturabímini pánibus : iste est panis, quem dedit vobis Dóminus ad vescéndum.

℣. Non Moyses dedit vobis panem de cœlo; sed Pater meus dat vobis panem de cœlo verum.

℟. Iste est panis, quem dedit vobis Dóminus ad vescéndum. Glória Patri, etc.

℟. Iste est panis, quem dedit vobis Dóminus ad vescéndum.

*Celui qui doit dire la Leçon.*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur. Bénédict.* Ad societátem civium supernórum perdúcat nos Rex Angelórum. *Le Chœur.* ℟. Amen.

## LEÇON. III.

NUllum étiam Sacraméntum est isto salúbrius, quo purgántur peccáta, virtútes augéntur, et mens ómnium spirituálium charísmatum abundántiâ impinguátur. Of-

fértur in Ecclésia pro vivis et mórtuis : ut ómnibus prosit, quod est pro salúte ómnium institútum. Suavitátem dénique hujus Sacraménti nullus dignè exprímere suffícit, per quod spirituális dulcédo in suo fonte gustátur : et recólitur memória illíus, quam in sua passióne Christus monstrávit, excellentíssimæ charitátis. Undè ut árctiùs hujus charitátis immensítas fidélium córdibus infigerétur, in última cœna, quando Paschâ cum Discípulis celebráto transitúrus erat de hoc mundo ad Patrem, hoc Sacraméntum instítuit, tanquàm Passiónis suæ memoriále perénne, figurárum véterum impletívum, miraculórum ab ipso factórum máximum ; et de sua contristátis absséntia solátium singuláre réliquit. Tu autem, Dómine, miserére nobis. *Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Hymne qui se dit tous étant debout.*

TE Deum laudámus : te Dóminum confitémur.

Te ætérnum Patrem : omnis terra venerátur.

Tibi omnes Angeli : tibi Cœli et univérsæ Potestátes.

Tibi Cherubim et Seràphim, incessábili voce proclámant.

Sanctus, Sanctus, Sanctus Dóminus Deus Sabáoth.

Pleni sunt cœli et terra majestátis glóriæ tuæ.

Te gloriósus Apostólorum Chorus.

Te Prophetárum laudábilis númerus.

Te Mártyrum candidátus laudat exércitus.

Te per orbem terrárum, sancta confitétur Ecclésia.

Patrem imménsæ majestátis.

Venerándum tuum verum et únicum Fílium.

Sanctum quoque paraclétum Spíritum.

Tu Rex glóriæ Christe.

Tu Patris sempitérnus es Fílius.

Tu ad liberándum susceptúrus hóminem: non horruísti Vírginis úterum.

Tu devícto mortis acúleo: aperuísti credéntibus regna Cœlórum.

Tu ad déxteram Dei sedes: in glória Patris.

Judex créderis esse ventúrus.

*A ce verset les confrères se mettront à genoux.*

Te ergo, quæsumus, fámulis tuis súbveni: quos pretióso sánguine redemísti.

Ætérna fac cum Sanctis tuis: in glória numerári.

Salvum fac pópulum tuum, Dómine: et bénedic hæreditáti tuæ.

Et rege eos, et extólle illos usque in ætérnum.
Per síngulos dies, benedícimus te.
Et laudámus nomen tuum in seculum : et in seculum seculi.
Dignáre, Dómine, die isto : sine peccáto nos custodíre.
Miserére nostrî, Dómine : miserére nostrî.
Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos : quemádmodùm sperávimus in te.
In te, Dómine sperávi : non confúndar in ætérnum.

*Les Leçons suivantes seront pour l'Octave du Saint Sacrement, ou pour changer par fois, ainsi que l'on trouvera à propos.*

# AUTRES LEÇONS
## POUR LA SIXIÈME FÉRIE.

De Sermóne Sancti Thomæ Aquinátis.

*In eodem Opusculo 57.*

### LEÇON I.

COnvénit ítaque devotióni Fidélium solémniter recólere institutiónem tam salutíferi, tamque mirábilis Sacraménti : ut ineffábilem modum divínæ præséntiæ in

Sacraménto visíbili venerémur: et laudétur Dei poténtia, quæ in Sacraménto eódem tot mirabília operátur; necnon et de tam sálubri, tamque suávi benefício exsolvántur Deo gratiárum débitæ actiónes. Verum etsi in die Cœnæ, quando Sacraméntum prædíctum nóscitur institútum, inter Missárum solémnia de institutióne ipsíus speciális méntio habeátur, totum tamen resíduum ejúsdem diéi officium ad Christi Passiónem pértinet, circa cujus veneratiónem Ecclésia illo témpore occupátur. Tu autem, Dómine, miserére nobis. *Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Respéxit Elías ad caput suum subcinerícium panem: qui surgens comédit et bibit: Et ambulávit in fortitúdine cibi illíus usque ad montem Dei.

℣. Si quis manducáverit ex hoc pane, vivet in ætérnum.

℟. Et ambulávit in fortitúdine cibi illíus usque ad montem Dei.

## LEÇON II.

Ut autem íntegro celebritátis officio institutiónem tanti Sacraménti recóleret plebs fidélium: Románus Póntifex Urbánus quartus, hujus Sacraménti devotióne affféctus, piè státuit præfátæ institutiónis memó-

riam primâ quintâ fériâ post octávam Pentecóstes, à cunctis fidélibus celebrári : ut qui per totum anni círculum hoc Sacraménto útimur ad salútem, ejus institutiónem illo témpore speciáliter recolámus, quo Spíritus sanctus corda Discipulórum edócuit ad plenè cognoscénda hujus Mystéria Sacraménti; nam et in eódem témpore cœpit hoc Sacraméntum à fidélibus frequentári. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℣. Cœnántibus illis accépit Jesus panem, et benedíxit, ac fregit, dedítque Discípulis suis, et ait : Accípite et comédite, hoc est Corpus meum.

℣. Dixérunt viri tabernáculi mei : Quis det de cárnibus ejus, ut saturémur ?

℟. Accípite et comédite, hoc est Corpus meum. ℣. Glória Patri, etc.

℟. Accípite et comédite, hoc est Corpus meum.

## LEÇON III.

UT autem prædíctâ quintâ fériâ, et per Octávas sequéntes ejúsdem salutáris institutiónis honorificéntiùs agátur memória, et solémnitas de hoc celébrior habeátur : loco distributiónum materiálium,

quæ in Ecclésiis Cathedrálibus largiúntur, existéntibus. Horis canónicis noctúrnis, pari térque diúrnis præfátus Románus Póntifex eis qui hujúsmodi Horis in hac solemnitáte personáliter in Ecclésiis interfuérint, stipéndia spirituália, apostólicâ largitióne concéssit: quátenùs per hæc fidéles ad tanti Festi celebritátem avídiùs et copiósiùs convenírent. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Ensuite on dit l'Hymne* Te Deum laudámus, etc. *page 56.*

# AUTRES LEÇONS
## POUR LE SAMEDI.

SERMO Sancti Joánnis Chrysóstomi.

*Homil. 63. ad Popul. Antioch.*

### LEÇON I.

NEcessárium est, Dilectíssimi, mysteriórum díscere miráculum, quodnam sit, et quarè sit datum, et quæ ejus rei utílitas. Unum corpus effícimur: membra, inquit, ex carne ejus, et ex óssibus ejus: sequámur autem initiáti, quæ dicúntur. Ut ítaque non tantùm per charitátem hoc fiámus, ve-

rum étiam ispâ re, in illam misceámur carnem : hoc namque per escam efficitur, quam largítus est nobis, volens osténdere desidérium quod erga nos habet. Proptéreà semetípsum nobis immíscuit, et corpus suum in nos contemperávit, ut unum quid simus tanquam corpus cápiti coaptátum : ardénter enim amántium hoc est. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes*. ℣. Accépit Jesus cálicem, postquam cœnávit, dicens : Hic Calix novum Testaméntum est in meo Sánguine : Hoc fácite in meam commemoratiónem.

℣. Memóriâ memor ero, et tabéscet in me ánima mea.

℟. Hoc fácite in meam commemoratiónem.

## LEÇON II.

TAnquam leónes ígitur ignem spirántes, ab illa mensa recedámus, facti diábolo terríbiles, et caput nostrum mente revolvéntes, et charitátem quam erga nos osténdit. Tam paréntes quidem aliis sæpè fílios tradunt aléndos : ego autem, inquit, non ita, sed cárnibus meis alo, et meípsum vobis appóno, vos omnes generósos esse volens, et spem bonam de futúris vobis præbens : quippe qui

vobis hîc meípsum trádidi, multò magis id in futúro fáciam. Vólui frater vester fíeri, carni propter vos et sánguini communicávi: vobis vicíssim ipsam carnem et sánguinem, per quæ cognátus vester factus sum, trado. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Ego sum Panis vitæ: Patres vestri manducavérunt manna in desérto, et mórtui sunt: Hic est Panis de cœlo descéndens, ut si quis ex ipso mandúcet, non moriátur.

℣. Ego sum Panis vivus, qui de cœlo descéndi: si quis manducáverit ex hoc Pane, vivet in ætérnum.

℟. Hic est Panis de cœlo descéndens, ut si quis ex ipso mandúcet, non moriátur.

℣. Glória Patri, et Filio, etc.

℟. Hic est panis de cœlo descéndens, ut si quis ex ipso mandúcet, non moriátur.

## LEÇON III.

ATtendámus ítaque nobis ipsis, Dilectíssimi, tálibus fruéntes bonis: et cùm áliquid turpe dícere voluérimus, vel nos ab ira córripi vidérimus, vel álio quópiam hujúsmodi vítio, considerémus quibus facti sumus digni: talísque cogitátio nobis irratio-

nabílium mótuum sit corréctio. Quotquot ígitur hujus partícipes córporis effícimur, quotquot sánguinem degustámus : cogitémus quòd illum sursum sedéntem, qui ab Angélis adorátur, incorruptíbili vicínus virtúti, hunc degustámus. Hei mihi quot ad salútem nobis viæ ! Nos corpus suum éfficit, nobis suum communicávit corpus : et horum nos nihil à malis avértit. Tu autem, Dómine, miserére nobis. *Le Chœur*. ℟. Deo grátias.

*Ensuite on dit l'Hymne* Te Deum, etc. *page* 56.

---

# AUTRES LEÇONS
## POUR LE DIMANCHE.

SERMO Sancti Joánnis Chrysóstomi.

*Ex Homil. 60. ad Popul. Antioch.*

### LEÇON I.

QUóniam Verbum dicit : Hoc est Corpus meum : Et assentiámur et credámus, et intellectuálibus ipsum óculis intueámur. Nihil enim sensíbile nobis Christus trádidit : sed sensibílibus quidem rebus, at ómnia intelligibília. Itidem et in Baptismáte : per rem sensíbilem, nempè aquam, donum

confértur ; intelligíbile verò quod perfícitur, generátio et renovátio. Si enim incorpóreus esses, nuda et incorpórea tibi dedísset ipse dona : sed quóniam ánima córpori consérta est, in sensibílibus intelligibília tibi præbet. Quot nunc dicunt : Vellem ipsíus formam aspícere, figúram, vestiménta, calceaménta: Ecce eum vides, ipsum tangis, ipsum mandúcas. Et tu quidem vestiménta cupis vidére : Ipse verò tibi concédit non tantùm vidére, verùm et mandúcare et tángere, et intrà te súmere. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

℟. Qui mandúcat meam carnem, et bibit meum Sánguinem, in me manet, et ego in eo.

℣. Non est ália nátio tam grandis, quæ hábeat Deos appropinquántes sibi, sicut Deus noster adest nobis.

℟. In me manet, et ego in eo.

## LEÇON II.

IGitur accédat nemo cum náusea, nemo resolútus, omnes accénsi, omnes fervéntes et excitáti. Nam si Judæi stantes, et calceaménta in pédibus habéntes, et báculos in mánibus gestántes, agnum cúm festina-

tióne comedébant : te multò magis opórtet esse solértem. Nam illi quidem in Palæstinam erant profectúri, et proptéreà viatórum figúram habébant ; tu verò debes in cœlum migráre. Quaprópter in ómnibus opórtet te vigiláre ; nec enim parva pœna propónitur indígnè suméntibus. Cógita quantùm advérsùs proditórem indignáris, et contrà eos qui illum crucifixérunt : ítaque consídera, ne tu quoque sis reus Córporis et Sánguinis Christi. Illi sanctíssimum Corpus occidérunt, tu verò pollútâ súscipis animâ, post tot benefícia. Neque enim illi satis fuit, hóminem fíeri, cólaphis cædi, et crucifígi : verùm et semetípsum nobis commíscet ; et non fide tantùm, verùm et ipsâ re nos suum éfficit corpus. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

℟. Misit me vivens Pater, et ego vivo propter Patrem : Et qui mandúcat me, vivet propter me.

℣. Cibávit illum Dóminus pane vitæ et intelléctûs.

℟. Et qui mandúcat me, vivet propter me. ℣ Glória Patri, etc.

℟. Et qui mandúcat me, vivet propter me.

## LEÇON III.

QUo non opórtet ígitur esse puriórem, tali fruéntem sacrifício? quo solári rádio non splendidiórem manum càrnem hanc dividéntem? os quod igne spiritáli replétur, linguam quæ treméndo nimis sánguine rubéscit? Cógita quali sis insignítus hónore, quali mensâ fruáris? Quod Angeli vidéntes horréscunt, neque líberè audent intuéri propter emicántem indè splendórem: hoc nos pascímur, huic nos unímur, et facti sumus unum Christi corpus et una caro. Quis loquétur poténtias Dómini, audítas faciet omnes laudes ejus? Quis pastor oves próprio pascit cruóre? Et quid dico Pastor? Matres multæ sunt, quæ post partûs dolóres, fílios aliis tradunt nutrícibus. Hoc autem ipse non est passus: sed ipse nos próprio sánguine pascit, et per ómnia nos sibi coagméntat.

Tu autem, Dómine, miserére nobis.
℟. Deo grátias.

*Ensuite on dit l'Hymme* Te Deum laudámus, etc. *page* 56.

# AUTRES LEÇONS
## POUR LA FÉRIE SECONDE.

De Homília Sancti Augustíni, Epíscopi.
*Tract. 27. in Joan. antè medium.*

### LEÇON I.

DIximus, Fratres, hoc Dóminum commendásse in manducatióne carnis suæ, et potatióne Sánguinis sui, ut in illo maneámus, et ipse in nobis. Manémus autem in illo, cùm sumus membra ejus : manet autem ipse in nobis, cùm sumus templum ejus. Ut autem simus membra ejus, únitas nos compáginat: ut compáginet únitas, quæ facit nisi cháritas? Et cháritas Dei undè? Apóstolum intérroga. Cháritas, inquit, Dei diffúsa est in córdibus nostris per Spíritum sanctum, qui datus est nobis. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Immolábit hœdum multitúdo filiórum Israël ad vésperam Paschæ: Et edent carnes, et ázymos panes.

℣. Pascha nostrum immolátus est Christus: itaque epulémur in ázymis sinceritátis et veritátis.

℟. Et edent carnes, et ázymos panes.

## LEÇON II.

ERgo spíritus est qui vivíficat : spíritus enim facit viva membra : nec viva membra spíritus facit, nisi quæ in córpore, quod vegetat ipse spíritus invénerit. Nam spíritus qui est in te, ô homo, quo constas ut homo sis, numquid vivíficat membrum quod separátum invénerit à carne tua ? Spíritum tuum dico ánimam tuam. Anima tua non vivíficat, nisi membra quæ sunt in carne tua : unum si tollas, jam non vivificátur ex ánima tua, quia unitáti córporis tui non copulátur. Tu autem Dómine miserére nobis. ℟. Deo grátias.

℟. Comedétis carnes, et saturabímini pánibus : Iste est panis, quem dedit vobis Dóminus ad vescéndum.

℣. Non Moyses dedit vobis panem de cœlo ; sed Pater meus dat vobis panem de cœlo verum.

℟. Iste est panis, quem dedit vobis Dóminus ad vescéndum. ℣. Glória Patri, etc.

℟. Iste est panis, quem dedit vobis Dóminus ad vescéndum.

## LEÇON III.

HÆc dicúntur, ut amémus unitátem, et timeámus separatiónem. Nihil enim

sic debet formidáre Christiánus, quàm separári à córpore Christi. Si enim separátur à córpore Christi, non est membrum ejus : si non est membrum ejus, non vegetátur spíritus ejus. Quisquis autem, inquit Apóstolus, spíritum Christi non habet, hic non est ejus. Spíritus ergo est qui vivíficat ; caro autem non prodest quidquam. Verba quæ ego locútus sum vobis, spíritus et vita sunt ? Quid est : Spíritus et vita sunt ? Spiritáliter intelligénda sunt. Intellexísti spiritáliter ? Spíritus et vita sunt. Intellexísti carnáliter ? Etiam sic illa spíritus et vita sunt, sed tibi non sunt. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

℟. Deo grátias.

*Hymne* Te Deum laudámus, etc. *page* 56.

---

## AUTRES LEÇONS POUR LA FÉRIE TROISIÈME.

De Homília Sancti Augustíni, Epíscopi.

*Tract. in Joann. post medium.*

### LEÇON I.

HIc est panis, qui de Cœlo descéndit. Hunc panem significávit manna, hunc panem significávit altáre Dei. Sacraménta illa fuérunt : in signis divérsa

sunt: sed in re, quæ significátur, pária sunt. Apóstolum audi: Nolo enim vos, inquit, ignoráre, Fratres, quia patres nostri omnes sub nube fuérunt, et omnes mare transiérunt, et omnes per Moysen baptizáti sunt in nube et in mari; et omnes eámdem escam spiritálem manducavérunt. Spiritálem utíque eámdem: nam corporálem álteram, quia illi manna, nos áliud: spiritálem verò, quam nos, sed patres nostri, non patres illórum, quibus nos símiles sumus, non quibus illis símiles fuérunt. Et adjúngit. Et omnes eúmdem potum spiritálem bibérunt. Aliud illi, áliud nos, sed spécie visíbili quidem, tamen hoc idem significánte virtúte spiritáli. Quómodò enim eúmdem potum? Bibébant, inquit, de spiritáli sequénte petrâ: petra autem erat Christus. Indè panis, indè potùs. Petra Christus in signo, verus Christus et in verbo et in carne. Et quómodò bibérunt? Percússa est petra de virga bis. Gémina percússio, duo ligna Crucis signíficat. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes*. ℟. Respéxit Elías ad caput suum subcinerícium panem, qui surgens cómedit et bibit: Et ambulávit in fortitúdine cibi illíus usque ad montem Dei.

℣. Si quis manducáverit ex hoc pane, vivet in ætérnum.

℟. Et ambulávit in fortitúdine cibi illíus usque ad montem Dei.

LEÇON II.

NOrunt Fidéles corpus Christi, si corpus Christi, non négligant esse. Fiant Corpus Christi, si volunt vívere de spíritu Christi. De spíritu Christi non vivit, nisi Corpus Christi. Intellígite, Fratres mei, quid díxerim. Homo es, et spíritum habes, et corpus habes. Spíritum dico qui ánima vocátur, quâ constas quòd homo es : constas enim ex ánimâ et córpore. Habes enim spíritum invisíbilem, corpus visíbile. Dic mihi quid ex quo vivat ? Spíritus tuus vivit ex córpore tuo, an corpus tuum ex spíritu tuo ? Respóndet omnis qui vivit : qui autem hoc non potest respondére, néscio si vivit. Quid respóndet omnis qui vivit ? Corpus utíque meum vivit de spíritu meo. Vis ergo et tu vívere de spíritu Christi ? In córpore esto Christi. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

℟. Deo grátias.

℟. Cœnántibus illis, accépit Jesus panem, et benedíxit, ac fregit, dedítque Discípulis suis, et ait : Accípite et comédite, hoc est Corpus meum.

℣. Dixérunt viri tabernáculi mei : Quis det de cárnibus ejus, ut saturémur?

℟. Accípite et comédite, hoc est Corpus meum. ℣. Glória Patri, etc.

℟. Accípite et comédite, hoc est Corpus meum.

## LEÇON III.

NUmquid enim corpus meum vivit de spíritu tuo. Meum vivit de spíritu meo, et tuum de spíritu tuo. Non potest vívere Corpus Christi, nisi de spíritu Christi. Indè est quòd expónens nobis Apóstolus hunc panem : Unus panis, inquit, unum corpus multi sumus. O Sacraméntum pietátis ! ô signum unitátis ! ô vínculum charitátis ! Qui vult vívere, habet ubi vivat : habet undè vivat : accédat, credat, incorporétur, ut vivificétur : non abhorreát à compáge membrórum, non fit putre membrum, quod resecari mereátur, non sit distórtum, de quo erubescátur. Sit pulchrum, sit aptum, sit sanum : hæreat córpori, vivat Deo de Deo : nunc labóret in terrâ, ut pósteà regnet in cœlo. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

℟. Deo grátias.

*Ensuite on dit l'Hymne* Te Deum, etc. *page* 56.

# AUTRES LEÇONS POUR LA FÉRIE QUATRIÈME.

## Homília Sancti Gregórii Papæ.

### *Homil.* 39. *In Evangelia.*

### LEÇON I.

HOc distáre, Fratres charíssimi, inter delícias córporis et cordis solet: quòd corporáles delíciæ, cùm non habéntur, grave in se desidérium accéndunt: cùm verò ávidè edúntur, comedéntem prótinùs in fastídium per satietátem vertunt. At contrà, spiritáles delíciæ, cùm non habéntur, in fastídio sunt; cùm verò habéntur, in desidério: tantòque à comedénte ámpliùs esuriúntur, quantò et ab esuriénte ámpliùs comedúntur. In illis appetítus placet, expeririéntia dísplicet: in istis appetítus vilis est, et experiéntia magis placet. In illis appetítus saturitátem, satúritas fastídium génerat: in istis autem appetítus saturitátem, satúritas appetítum parit. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Accépit Jesus Cálicem, postquam cœnávit, dicens: Hic Calix no-

vum Testaméntum est in meo Sánguine: Hoc fácite in meam commemoratiónem.

℣. Memóriâ memor ero, et tabéscet in me ánima mea.

℟. Hoc fácite in meam commemoratiónem.

## LEÇON II.

AUgent enim spiritáles delíciæ desidérium in mente, dum sátiant: quia quantó magis eárum sapor percípitur, eò ampliùs cognóscitur quò avídiùs amétur, et idcírcò non hábitæ amári non possunt, quia eárum sapor ignorátur. Quis enim amáre váleat quod ignórat? Proínde Psalmísta nos admónet, dicens: Gustáte, et vidéte, quóniam suávis est Dóminus. Ac si apértè dicat: Suavitátem ejus non cognóscitis, si hanc minimè gustátis; sed cibum vitæ ex paláto cordis tángite, ut probántes ejus dulcédinem amáre valeátis. Has autem homo delícias tunc amísit, cum in Paradíso peccávit: extra exiit, cùm os à cibo intérnæ dulcédinis clausit. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

℟. Deo grátias.

℟. Ego sum Panis vitæ: patres vestri manducavérunt manna in desérto, et mórtui sunt: Hic est panis de cœlo descéndens, ut si quis ex ipso mandúcet, non moriátur.

℣. Ego sum Panis vivus, qui de cœlo descéndi : si quis manducáverit ex hoc Pane, vivet in ætérnum.

℟. Hic est Panis de cœlo descéndens, ut si quis ex ipso mandúcet, non moriátur.

℣. Glória Patri, etc.

℟. Hic est Panis de cœlo descéndens, ut si quis ex ipso mandúcet, non moriátur.

## LEÇON III.

UNde nos quoque nati in hujus peregrinatiónis ærúmna huc fastidiósi jam vénimus ; néscimus quid desideráre debeámus. Tantòque se ampliùs fastídii nostri morbus exággerat, quantò se magis ab esu illíus dulcédinis ánimus elóngat. Et eò jam intérnas delícias non áppetit, quò eas comédere diù longèque desuévit. Fastídio ergo nostro tabéscimus, et longâ inédiæ peste fatigámur. Et quia gustáre intùs nólumus parátam dulcédinem, amámus foris miséri famem nostram. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Ensuite on dit l'Hymne* Tè Deum laudámus, etc. *page 56.*

# AUTRES LEÇONS POUR LA FÉRIE CINQUIÈME.

## Octave du Saint Sacrement.

## Ex Libro Sancti Ambrósii, Epíscopi.

*De Sacraméntis, lib. 4. cap. 4.*

### LEÇON I.

AUctor Sacramentórum qui est, nisi Dóminus Jesus? De cœlo ista Sacraménta venérunt. Consílium enim omne de cœlo est. Verè autem magnum est et divínum miráculum, quòd pópulo pluit Deus manna de cœlo: et non laborábat pópulus, et manducábat. Tu fortè dicis: Meus panis est usitátus: sed panis iste, panis est antè verba Sacramentórum: ubi accésserit consecrátio, de pane fit caro Christi. Hoc ígitur astruámus. Quómodò potest, qui panis est, corpus esse Christi? Consecratióne. Consecrátio ígitur quibus verbis est, et cujus sermónibus? Dómini JESU. Nam per réliqua ómnia quæ dicúntur, laus Deo defértur, orátio præmíttitur pro pópulo, pro regibus, pro cæteris: ubi venítur, ut conficiátur venerábile Sacraméntum: jam non suis sermónibus Sacérdos, sed útitur sermónibus Christi.

Tu autem, Dómine, miserére nobis.

℟. Deo grátias.

℟. Qui mandúcat meam Carnem, et bibit meum Sánguinem, in me manet, et ego in eo.

℣. Non est ália nátio tam grandis, quæ hábeat deos appropinquántes sibi, sicut Deus noster adest nobis.

℟. In me manet, et ego in eo.

## Leçon II.

Ergo sermo Christi hoc cónficit Sacraméntum. Quis sermo Christi? Nempè is quo facta sunt ómnia. Jussit Dóminus, et factum est cœlum: jussit Dóminus, et facta est terra: jussit Dóminus, et facta sunt mária: jussit Dóminus, et omnis creátura generáta est. Vides ergo quám operatórius sit sermo Christi. Si ergo tanta vis est in sermóne Dómini Jesu, ut incíperent esse quæ non erant, quantò magis operatórius est ut quæ erant in áliud commuténtur? Cœlum non erat, mare non erat, terra non erat. Sed audi dicéntem: ipse dixit, et facta sunt: ipse mandávit et créata sunt. Ergo tibi ut respóndeam, non erat Corpus Christi antè consecratiónem: sed post consecratiónem dico tibi quòd jam corpus est Christi. Ipse dixit, et factum est: ipse mandávit, et creá-

tum est. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

℟. Deo grátias.

℟. Misit me vivens Pater, et ego vivo propter Patrem : Et qui mandúcat me, vivet propter me.

℣. Cibávit illum Dóminus pane vitæ et intelléctûs.

℟. Et qui mandúcat me, vivet propter me. ℣. Glória Patri, etc.

℟. Et qui mandúcat me, vivet propter me.

## LEÇON III.

JAm redi mecum ad propositiónem meam. Magnum quidem et venerábile, quòd manna Judæis pluit è cœlo : sed intéllige quid est ámpliùs, manna de cœlo, an Corpus Christi? Corpus Christi utíque, qui Auctor est cœli. Deinde, manna qui manducávit, mórtuus est : qui manducáverit hoc Corpus, fiet ei remíssio peccatórum, et non moriétur in ætérnum. Ergo non otiósè, cùm áccipis, tu dicis : Amen ; jam in spíritu cónfitens quòd accípias corpus Christi. Dicit tibi Sacérdos, Corpus Christi, et tu dicis : Amen, hoc est verum. Quod confitétur lingua, téneat affectus. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

*Hymne.* Te Deum Laudámus, etc. *pag.* 56.

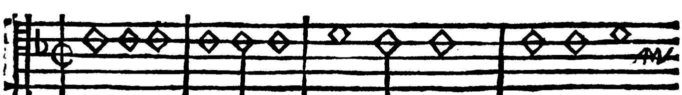
# L'OFFICE
## DU
# S. SACREMENT,
## *A LAUDES.*

*Le Recteur, et tous étant debout, faisant le signe de la croix, entonnera le Verset.*

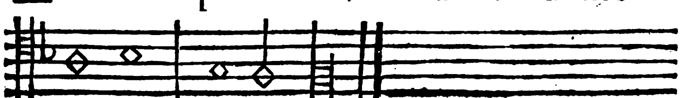
DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, et Fílio, etc.

*Le Recteur. Ant.* Sapiéntia ædificávit sibi domum, míscuit vinum, et pósuit mensam. Allelúia.

*Psaume* 112.



LAudáte púeri Dóminum: laudáte



nomen Dómini.

*A ce Verset, tous inclineront la tête.*

Sit nomen Dómini benedíctum : ex hoc nunc et usque in seculum.

A solis ortu usque ad occásum, laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes gentes Dóminus : et super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat : et humília réspicit in cœlo et in terra ?

Súscitans à terra ínopem : et de stércore érigens páuperem.

Ut cóllocet eum cum princípibus : cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo : matrem filiórum lætántem. Glória Patri, etc.

*Ant.* Sapiéntia ædificávit sibi domum ; míscuit vinum, et pósuit mensam, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Angelórum escâ nutrivísti pópulum tuum, et panem de cœlo præstitísti eis, Allelúia.

*Psaume* 134.

LAudáte nomen Dómini : laudáte, servi, Dóminum.

Qui státis in domo Dómini : in átriis domûs Dei nostri.

Laudáte Dóminum, quia bonus Dómi-

nus : psállite nómini ejus, quóniam suáve.

Quóniam Jacob elégit sibi Dóminus : Israël in possessiónem sibi.

Quia ego cognóvi quòd magnus est Dóminus : et Deus noster præ ómnibus diis.

Omnia quæcúmque vóluit Dóminus, fecit in cœlo et in terra : in mari, et in ómnibus abyssis.

Edúcens nubes ab extrémo terræ : fulgura in plúviam fecit.

Qui prodúxit ventos de thesáuris suis : qui percússit primogénita Ægypti, ab hómine usque ad pecus.

Et misit signa et prodígia in médio tuî, Ægypte : in Pharaónem, et in omnes servos ejus.

Qui percússit gentes multas : et occídit Reges fortes.

Sehon Regem Amorrhæórum, et Og Regem Basa : et ómnia Regna Chánaan.

Et dedit terram eórum hæreditátem : hæreditátem Israël pópulo suo.

Dómine, nomen tuum in ætérnum : Dómine, memoriále tuum in generatiónem et generatiónem.

Quia judicábit Dóminus pópulum suum : et in servis suis deprecábitur.

Simuláchra Géntium argéntum et aurum : ópera mánuum hóminum.

Os habent, et non loquéntur : óculos hábent, et non vidébunt.

Aures habent, et non áudient : neque enim est spíritus in ore ipsórum.

Símiles illis fiant qui fáciunt ea : et omnes qui confídunt in eis.

Domus Israël, benedícite Dómino : domus Aaron, benedícite Dómino.

Domus Levi, benedícite Dómino : qui timétis Dóminum, benedícite Dómino.

Benedíctus Dóminus ex Sion : qui hábitat in Jerúsalem. Glória Patri, etc.

*Ant.* Angelórum escâ nutrivísti pópulum tuum, et panem de cœlo præstitísti eis, Allelúia.

*Le Rect. Ant.* Pinguis est panis Christi, et præbébit delícias Régibus, Allelúia.

*Psaume* 146.

LAudáte Dóminum, quóniam bonus est psalmus : Deo nostro sit jucúnda, decoráque laudátio.

Ædíficans Jerúsalem Dóminus : dispersiónes Israëlis congregábit.

Qui sanat contrítos corde : et álligat contritiónes eórum.

Qui númerat multitúdinem stellárum : et ómnibus eis nómina vocat.

Magnus Dóminus noster, et magna virtus ejus : et sapientiæ ejus non est númerus.

Suscípiens mansuétos Dóminus : humílians autem peccatóres usque ad terram.

Præcínite Dómino in confessióne : psállite Deo nostro in cíthara.

Qui opérit cœlum núbibus : et parat terræ plúviam.

Qui próducit in móntibus fœnum : et herbam servitúti hominum.

Qui dat juméntis escam ipsórum : et pullis corvórum invocántibus eum.

Non in fortitúdine equi voluntátem habébit : nec in tíbiis viri beneplácitum erit ei.

Beneplácitum est Dómino super timéntes eum : et in eis qui sperant super misericórdia ejus. Glória Patri, etc.

*Ant.* Pinguis est panis Christi, et præbébit delícias régibus, Allelúia.

*Le Recteur.- Ant.* Sacerdótes sancti incénsum, et panes ófferunt Deo, Allelúia.

*Psaume* 148.

LAudáte Dóminum de cœlis : laudáte eum in excélsis.

Laudáte eum, omnes Angeli ejus : laudáte eum, omnes virtútes ejus.

Laudáte eum, sol et luna : laudáte eum, omnes stellæ et lumen.

Laudáte eum, cœli cœlórum : et aquæ omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini.

Quia ipse dixit, et facta sunt : ipse mandávit, et creáta sunt.

Státuit ea in ætérnum, et in seculum seculi : præcéptum pósuit, et non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra : dracónes et omnes abyssi.

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum : quæ fáciunt verbum ejus.

Montes et omnes colles : ligna fructífera et omnes cedri.

Béstiæ et univérsa pécora : serpentes et vólucres pennátæ.

Reges terræ, et omnes pópuli : príncipes, et omnes júdices terræ.

Júvenes et vírgines, senes cum junióribus, laudent nomen Dómini : quia exaltátum est nomen ejus solíus.

Conféssio ejus super cœlum et terram : et exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus omnibus sanctis ejus : filiis Israël, pópulo appropinquánti sibi.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Sacerdótes sancti incénsum, et panes offérunt Deo, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Vincénti dabo manna abscónditum, et nomen novum, Allelúia.

## *Psaume* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus : laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus : laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ : laudáte eum in psaltério et cíthara.

Laudáte eum in tympano et choro : laudáte eum in chordis et órgano.

Laudáte eum in cymbalis benesonántibus, laudáte eum in cymbalis jubilatiónis : omnis spíritus laudet Dóminum.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Vincénti dabo manna abscónditum, et nomen novum, Allelúia.

## *Le Rect. dira le Chapitre* 1. Corinth. 11.

FRatres, ego enim accépi à Dómino quod et trádidi vobis; quóniam Dóminus Jesus, in qua nocte tradebátur, accépit panem; et grátias agens, fregit, et dixit:

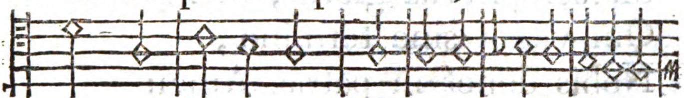
Accípite, et manducáte : hoc est Corpus meum, quod pro vobis tradétur : hoc fácite in meam commemoratiónem.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

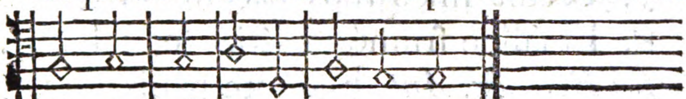
LES CHORISTES. HYMNE.



VErbum supérnum pródiens, Nec Patris



linquens déxteram Ad opus suum éxiens,



Venit ad vitæ vésperam.

In mortem à Discípulo
Suis tradéndus æmulis,
Priùs in vitæ férculo
Se trádidit Discípulis.

Quibus sub bina spécie
Carnem dedit et sánguinem,
Ut dúplicis substántiæ
Totum cibáret hóminem.

Se nascens dedit sócium,
Convéscens in edúlium,
Se móriens in prétium,
Se regnans dat in præmium.

*Il faut baisser la tête vers le Saint Sacrement, s'il est exposé.*
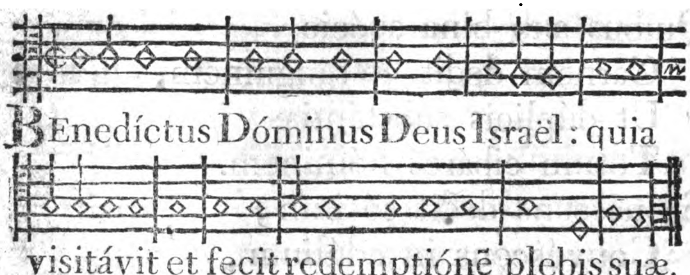
O salutáris Hóstia,
Quæ cœli pandis óstium,
Bella præmunt hostília:
Da robur, fer auxílium!
Uni trinóque Dómino,
Sit sempitérna glória;
Qui vitam sine término,
Nobis donet in pátria. Amen.

℣. Pósuit fines tuos pacem, Allelúia.
℟. Et ádipe fruménti sátiat te, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Ego sum panis vivus, qui de cœlo descéndi: si quis manducáverit ex hoc pane, vivet in ætérnum, Allelúia.

## CANTIQUE DE ZACHARIE. Luc. I.

*Les Choristes.*




Et eréxit cornu salútis nobis: in domo David púeri sui.

Sicut locútus est per os Sanctorum : qui à seculo sunt Prophetárum ejus.

Salútem ex inimícis nostris : et de manu ómnium qui odérunt nos.

Ad faciéndam misericórdiam cum pátribus nostris : et memorári testaménti sui sancti.

Jusjurándum quod jurávit ad Abraham patrem nostrum : datúrum se nobis.

Ut sine timóre de manu inimicórum nostrórum liberáti : serviámus illi.

In sanctitáte et justítia coram ipso : ómnibus diébus nostris.

Et tu, puer, prophéta Altíssimi vocáberis : præíbis enim ante fáciem Dómini paráre vias ejus.

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus : in remissiónem peccatórum eórum.

Per víscera misericórdiæ Dei nostri : in quibus visitávit nos oriens ex alto.

Illumináre his qui in tenebris et in umbra mortis sedent : ad dirigéndos pedes nostros in viam pacis.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Ego sum panis vivus, qui de cœlo descéndi ; si quis manducáverit ex hoc pane, vivet in ætérnum. Allelúia.

*Etant à genoux, le Recteur dira :* Kyrie eléison.

*Le Chœur.* ℟. Christe eléison. Kyrie eléison.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquísti : tribue, quæsumus, ita nos córporis et sánguinis tui sacra mystéria venerári ; ut redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in secula seculórum. ℟. Amen.

*Ici l'on fait commémoraison de la Dominicale et des Fêtes qui ont été sur semaine.*

*Commémoraison de la Paix qui se fait quand le Recteur le trouve à propos.*

*Ant.* Da pacem, Dómine, in diébus nostris : quia non est álius qui pugnet pro nobis, nisi tu Deus noster.

*Les Choristes.* ℣. Fiat pax in virtúte tua.
*Le Ch.* ℟. Et abundántia in túrribus tuis.

*Le Recteur.* OREMUS.

DEus, à quo sancta desidéria, recta consília, et justa sunt ópera : da servis

tuis illam, quam mundus dare non potest pacem; ut et corda nostra mandátis tuis dédita, et hóstium sublátâ formídine, tempora sint tuâ protectióne tranquílla. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Chœur.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Rect.* ℣. Benedicámus Dómino.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Le Recteur.* ℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen.

*Si l'on fait ici l'Office, le Recteur dira:* Pater noster, *à voix basse.*

*Le Recteur.* ℣. Dóminus det nobis suam pacem.

℟. Et post mortem vitam ætérnam. Amen.

*Ensuite on dit une des Antiennes qui courent, selon la saison, ainsi qu'elles sont ci-devant,* pages 39, 40, 41, 42 et 43, *avec leur Verset et Oraison.*

---

# L'OFFICE DU S. SACREMENT.

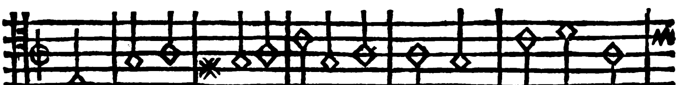
## *A PRIME.*

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira à voix basse :* Pater. Ave. Credo.
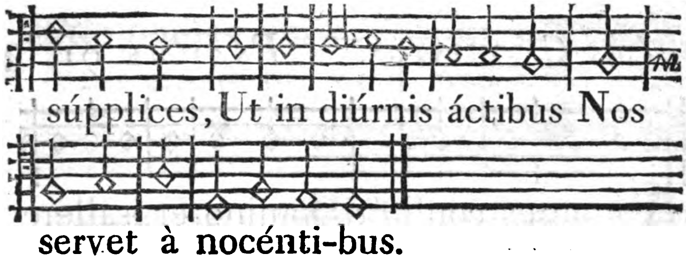
*Ensuite l'on se lève ; et le Recteur faisant le signe de la Croix, entonne.*

DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, et Fílio, et Spíritui Sancto. Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in secula seculórum. Amen.

*Etant tous à genoux, les deux Choristes commenceront l'Hymne suivante :*
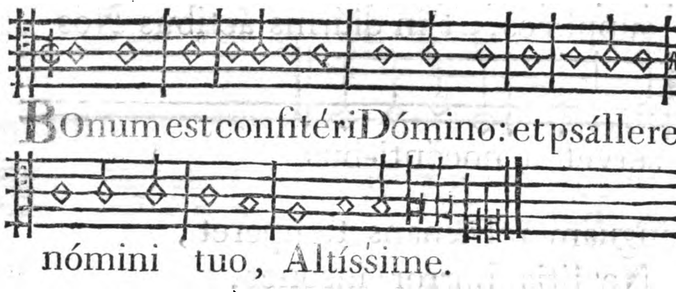


JAm lucis orto sídere, Deum precémur




Linguam refrænans témperet,
  Ne litis horror ínsonet,
  Visum fovéndo cóntegat,
  Ne vanitátes háuriat.
Sint pura cordis íntima,
  Absístat et vecórdia:
  Carnis terat supérbiam,
  Potûs cibíque párcitas.
Ut cùm dies abscésserit,
  Noctémque sors redúxerit,
  Mundi per abstinéntiam,
  Ipsi canámus glóriam.
Glória tibi, Dómine,
  Qui natus es de Vírgine,
  Cum Patre et Sancto Spíritu,
  In sempitérna secula. Amen.

*Le Recteur. Ant.* Sapiéntia ædificávit sibi domum, míscuit vinum, et pósuit mensam, Allelúia.

LES CHORISTES. PSAUME 91.




Ad annuntiándum manè misericórdiam tuam : et veritátem tuam per noctem.

In decachórdo psaltério, cum cántico in cíthara.

Quia delectásti me, Dómine, in factúra tua : et in opéribus mánuum tuárum exultábo.

Quàm magnificáta sunt ópera tua, Dómine ! nimis profúndæ factæ sunt cogitatiónes tuæ.

Vir insípiens non cognóscet : et stultus non intélliget hæc.

Cùm exórti fuérint peccatóres sicut fœnum : et apparuérint omnes qui operántur iniquitátem.

Ut intéreant in seculum seculi : tu autem Altíssimus in ætérnum, Dómine.

Quóniam ecce inimíci tui, Dómine, quóniam ecce inimíci tui períbunt : et disper-

géntur ómnes qui operántur iniquitátem.

Et exaltábitur sicut unicórnis cornu meum : et senéctus mea in misericórdia úberi.

Et despéxit óculus meus inimícos meos : et in insurgéntibus in me malignántibus áudiet auris mea.

Justus ut palma florébit : sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

Plantáti in domo Dómini : in átriis domûs Dei nostri florébunt.

Adhuc multiplicabúntur in senécta úberi : et benè patiéntes erunt, ut annúntient.

Quóniam rectus Dóminus Deus noster : et non est iníquitas in eo. Glória Patri, etc.

## *Psaume* 21.

DOminus regit me, et nihil mihi déerit : in loco páscuæ ibi me collocávit.

Super aquam refectiónis educávit me : ánimam meam convértit.

Dedúxit me super sémitas justítiæ : propter nomen suum.

Nam etsi ambulávero in médio umbræ mortis, non timébo mala : quóniam tu mecum es.

Virga tua, et báculus tuus : ipsa me consoláta sunt.

Parásti in conspéctu meo mensam : adversùs eos qui tríbulant me.

Impinguásti in óleo caput meum : et calix meus inébrians quàm præclárus est!

Et misericórdia tua subsequétur me : ómnibus diébus vitæ meæ.

Et ut inhábitem in domo Dómini : in longitúdinem diérum. Glória Patri, etc.

*Psaume* 116.

LAudáte Dóminum omnes gentes : laudáte eum omnes pópuli.

Quoniam confirmáta est super nos misericórdia ejus : et véritas Dómini manet in ætérnum. Glória Patri, etc.

*Ant.* Sapiéntia ædificávit sibi domum, míscuit vinum, et pósuit mensam, Allelúia.

*Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, dira le Chapitre* 1. Timoth. 1.

REgi seculórum immortáli et invisíbili soli Deo honor et glória, in secula seculórum. Amen. ℟. Deo grátias.

*Les Choristes disent les Versets, et le Chœur les Répons.*

℣. Christe Fili Dei vivi, miserére nobis.
℟. Christe Fili Dei vivi, miserére nobis.
℣. Qui natus es de María Vírgine.
℟. Miserére nobis.

℣. Glória Patri, et Fílio, et Spíritui Sancto.
℟. Christe, Fili Dei vivi, miserére nobis.
℣. Exúrge, Christe, ádjuva nos.
℟. Et líbera nos propter nomen tuum.

*Les prières suivantes ne se diront que les Dimanches courans de l'année.*

*Le Recteur dit tous les Versets, et le Chœur tous les Répons.*

℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison. Kyrie eléison. *Le Rect.* Pater noster, *à voix basse.*
℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
℟. Sed líbera nos à malo.
*Le Rect.* Credo in Deum, etc. *à voix basse.*
℣. Carnis resurrectiónem.
℟. Vitam ætérnam. Amen.
℣. Et ego ad te, Dómine, clamávi.
℟. Et manè orátio mea prævéniet te.
℣. Repleátur os meum laude.
℟. Ut cantem glóriam tuam, totâ die magnitúdinem tuam.
℣. Dómine, avérte fáciem tuam à peccátis meis. ℟. Et omnes iniquitátes meas dele.
℣. Cor mundum crea in me, Deus.
℟. Et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.
℣. Ne projícias me à fácie tua.
℟. Et Spíritum sanctum tuum ne auferas à me.

℣. Redde mihi lætítiam salutáris tui.
℟. Et spíritu principáli confírma me.
℣. Adjutórium nostrum in nómine Dómini.
℟. Qui fecit cœlum et terram.
*Le Rect.* Confitéor. *comme ci-dessus, p.* 30.
*Les Confrères.* Misereátur, etc. *p.* 30.
*Le Rect.* Misereátur vestrî omnípotens, etc.
*Le Rect.* Indulgéntiam, absolutiónem. etc.
℣. Dignáre, Dómine, die isto.
℟. Sine peccáto nos custodíre.
℣. Miserére nostrî, Dómine.
℟. Miserére nostrî.
℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos.
℟. Quemádmodum sperávimus in te.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

O R E M U S.

Domine, Deus omnípotens, qui ad princípium hujus diéi nos perveníre fecísti: tuâ nos hódie salva virtúte, ut in hac die ad nullum declinémus peccátum, sed semper ad tuam justítiam faciéndam nostra procédant elóquia, dirigántur cogitatiónes et ópera. Per Dóminum nostrúm Jesum Christum Fílium tuum: Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs Sancti Deus: Per ómnia secula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.
℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.
℣. Pretiósa in conspéctu Dómini.
℟. Mors Sanctórum ejus.

*LE RECTEUR.* OREMUS.

SAncta María et omnes Sancti intercédant pro nobis ad Dóminum; ut nos mereámur ab eo adjuvári et salvári : Qui vivit et regnat in secula seculórum. ℟. Amen.

℣. Deus, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
℣. Deus, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
℣. Deus, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
℣. Glória Patri, etc.
℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison. Kyrie eléison. Pater noster, *à voix basse.*
℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
℟. Sed líbera nos à malo.
℣. Réspice in servos tuos, Dómine, et in ópera tua, et dírige fílios eórum.
℟. Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos : et ópera mánuum nostrárum dírige super nos : et opus mánuum nostrárum dírige. ℣. Glória Patri, etc.

OREMUS.

DIrígere et sanctificáre, régere et gubernáre, dignáre, Dómine Deus Rex cœli et terræ, hódie corda et córpora nostra, sensus, sermónes et actus nostros in lege tua, et in opéribus mandatórum tuórum, ut hîc et in ætérnum, te auxiliánte, salvi et líberi esse mereámur, Salvátor mundi : Qui vivis et regnas in secula seculórum. ℟. Amen.

*Les Choristes.* ℣. Jube, domne, benedícere.

*Le Recteur. Bénédiction.* Dies et actus nostros in sua pace dispónat Dóminus omnipotens. ℟. Amen.

*La petite Leçon* 1. Corinth. 11.

QUicúmque manducáverit panem hunc, et bíberit cálicem Dómini indígnè, reus erit córporis et sánguinis Dómini. Tu autem, Dómine, miserére nobis. ℟. Deo grátias.

℣. Adjutórium nostrum in nomine Dómini.

℟. Qui fecit cœlum et terram.

℣. Benedícite. ℟. Deus.

*Le Recteur. Bénédiction.* Dóminus nos benedícat, et ab omni malo deféndat, et ad vitam perdúcat ætérnam. Et fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

# L'OFFICE
## DU
# S. SACREMENT,
## *A TIERCE.*

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira à voix basse :* Pater, Ave Maria.

*Ensuite l'on se lève ; et le Recteur faisant le signe de la Croix, entonne :*

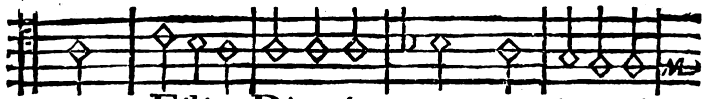
DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, et Fílio, et Spíritui Sancto.

Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in secula seculórum. Amen.

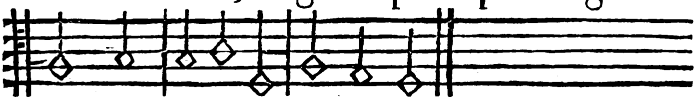
*Etant tous à genoux, les deux Choristes commenceront l'Hymne suivante :*



NUnc Sancte nobis Spíritus Unum Patri



cum Fílio, Dignáre promptus íngeri

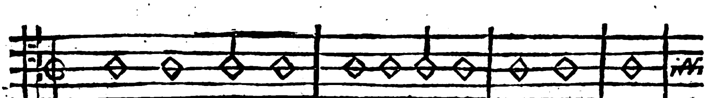


Nostro refúsus péctori.

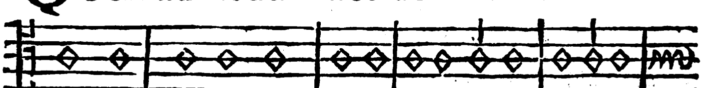
Os, lingua, mens, sensus, vigor,
Confessiónem persónent,
Flaméscat igne cháritas,
Accéndat ardor próximos.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna secula. Amen.

*Le Recteur. Ant.* Angelórum escâ nutrivísti pópulum tuum, et panem de cœlo præstitísti eis, Allelúia.
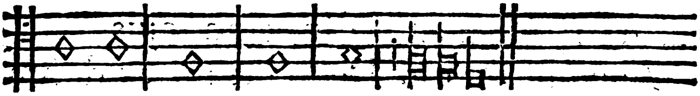
### *Psaume* 41.



QUemádmodum desíderat cervus ad



fontes aquárum: ita desíderat ánima



mea ad te De-us.

Sítivit ánima mea ad Deum fontem vivum : quando véniam, et apparébo ante fáciem Dei ?

Fuérunt mihi lácrymæ meæ panes die ac nocte : dum dícitur mihi quotídie, ubi est Deus tuus ?

Hæc recordátus sum, et effúdi in me ánimam meam : quóniam tránsibo in locum tabernáculi admirábilis, usque ad domum Dei.

In voce exultatiónis et confessiónis : sonus epulántis.

Quare tristis es ánima mea : et quare contúrbas me ?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi : salutáre vultûs mei, et Deus meus.

Ad meípsum ánima mea conturbáta est : proptérea memor ero tuî de terra Jordánis, et Hermóniim à monte módico.

Abyssus abyssum ínvocat : in vóce cataractárum tuárum.

Omnia excélsa tua, et fluctus tui : super me transiérunt.

In die mandávit Dóminus misericórdiam

suam : et nocte cánticum ejus.

Apud me óratio Deo vitæ meæ : dicam Deo, Suscéptor meus es.

Quare oblítus es meî ; et quare contristátus incédo, dum affligit me inimícus ?

Dum confringúntur ossa mea : exprobravérunt mihi, qui tríbulant me inimíci mei.

Dum dicunt mihi per síngulos dies ; Ubi est Deus tuus : quare tristis es ánima mea ; et quare contúrbas me.

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi : salutáre vultûs mei, et Deus meus.

Glória Patri, etc.

## *Psaume* 42.

JUdica me Deus, et discérne causam de gente non sancta : ab hómine iníquo et dolóso érue me.

Quia tu es Deus fortitudo mea : quare me repulísti, et quare tristis incédo, dum afflígit me inimícus.

Emítte lucem tuam et veritátem tuam : ipsa me deduxérunt, et adduxérunt in montem sanctum suum, et in tabernácula tua.

Et introíbo ad altáre Dei : ad Deum qui lætíficat juventútem meam.

Confitébor tibi in cíthara Deus, Deus

meus : quare tristis es ánima mea, et quare contúrbas me?

Spera in Deo quóniam adhuc confitébor illi : salutáre vultûs mei, et Deus meus.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 132.

ECce quàm bonum, et quàm jucúndum : habitáre fratres in unum.

Sicut unguéntum in cápite : quod descéndit in barbam, barbam Aaron.

Quod descéndit in oram vestímenti ejus: sicut ros Hermon qui descéndit in montem Sion.

Quóniam illic mandávit Dóminus benedictiónem : et vitam usque in seculum.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Angelórum escâ nutrivísti pópulum tuum, et panem de cœlo præstitísti eis, Allelúia.

*Tous étant debout, le Rect. dira le Chap.* 1. Corinth. 2.

FRatres, ego enim accépi à Dómino quod et trádidi vobis : quóniam Dóminus JESUS, in qua nocte tradebátur, accépit panem; et grátias agens, fregit, et dixit : Accípite et manducáte : hoc est Corpus meum, quod pro vobis tradétur :

hoc fácite in meam commemoratiónem.

℟. Deo grátias.

*Les Choristes disent les Versets, et le Chœur les Répons.*

℣. Panem cœli dedit eis, Allelúia, Allelúia.
℟. Panem cœli dedit eis, Allelúia, Allelúia.
℣. Panem Angelórum manducávit homo.
℟. Allelúia, Allelúia.
℣. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui Sancto.
℟. Panem cœli dedit eis, Allelúia, Allelúia.
℣. Cibávit illos ex ádipe fruménti, Allelúia.
℟. Et de petra, melle saturávit eos, Allelúia.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquisti : tríbue, quæsumus, ita nos córporis et sánguinis tui sacra mystéria venerári, ut redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in secula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.
℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.
℣. Fidélium animæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

# L'OFFICE
## DU
# S. SACREMENT,
## *A SEXTE.*
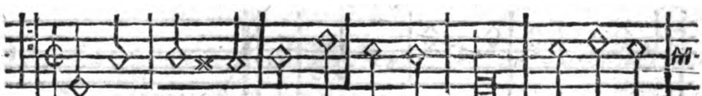
*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira à voix basse :* Pater. Ave.

*Ensuite l'on se lève ; et le Recteur faisant le signe de la Croix, entonne :*

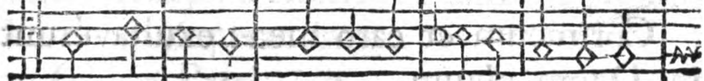
DEUS, in adjutórium meum inténde.

℟. Dómine, ad adjuvándum me festína. Glória Patri, etc.

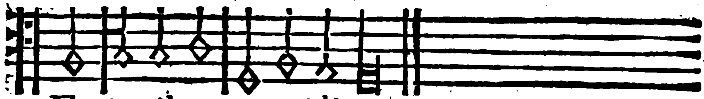
*Etant tous à genoux, les deux Choristes commenceront l'Hymne suivante :*



REctor potens verax Deus, Qui témperas



rerum vices, Splendóre manè instruis,

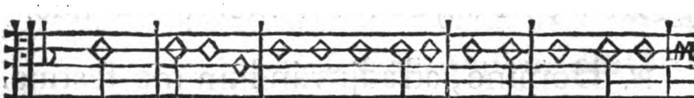


Et ígnibus merídiem.

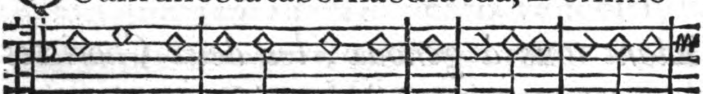
Extingue flammas lítium,
Aufer calórem nóxium.
Confer salútem corpórum,
Verámque pacem córdium.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna secula. Amen.

*Le Rect. Ant.* Pinguis est panis Christi, et præbébit delícias régibus, Allelúia.
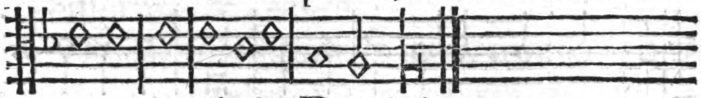
## *Psaume* 83.



Quàm diléctà tabernácula tua, Dómine



virtútum! concupíscit, et déficit ánima



mea in átria Dómini.

Cor meum et caro mea : exultavérunt in Deum vivum.

Etenim passer invénit sibi domum : et turtur nidum sibi, ubi ponat pullos suos.

Altária tua, Dómine virtútum : rex meus et Deus meus.

Beáti qui hábitant in domo tua, Dómine : in secula seculórum laudábunt te.

Beátus vir cujus est auxílium abs te : ascensiónes in corde suo dispósuit in valle lacrymarum, in loco quem pósuit.

Etenim benedictiónem dabit Legislátor, ibunt de virtúte in virtútem : vidébitur Deus Deórum in Sion.

Dómine Deus virtútum, exáudi oratiónem meam : áuribus pércipe, Deus Jacob.

Protéctor noster, áspice, Deus : et réspice in fáciem Christi tui.

Quia melior est dies una in átriis tuis : super míllia.

Elégi abjéctus esse in domo Dei mei : magis quàm habitáre in tabernáculis peccatórum.

Quia misericórdiam et veritátem diligit Deus : grátiam et glóriam dabit Dóminus.

Non privábit bonis eos qui ámbulant in innocéntia : Dómine virtútum, béatus homo qui sperat in te.

Glória Patri, etc.

### Psaume 14.

DOmine, quis habitábit in tabernáculo tuo : aut quis requiéscet in monte sancto tuo?

Qui ingréditur sine mácula : et operátur justítiam.

Qui lóquitur veritátem in corde suo : qui non egit dolum in lingua sua.

Nec fecit próximo suo malum : et oppróbrium non accépit advérsùs próximos suos.

Ad níhilum dedúctus est in conspéctu ejus malígnus : timéntes autem Dóminum gloríficat.

Qui jurat próximo suo, et non décipit : qui pecúniam suam non dedit ad usúram, et múnera super innocéntem non accépit.

Qui facit hæc : non movébitur in ætérnum.

Glória Patri, etc.

### Psaume 92.

DOminus regnávit, decórem indútus est : indútus est Dóminus fortitúdinem, et præcínxit se.

Etenim firmávit orbem terræ ; qui non commovébitur.

Paráta sedes tua ex tunc : à seculo tu es.

Elevavérunt flúmina, Dómine : elevavérunt flúmina vocem suam.

Elevavérunt flúmina fluctus suos : à vócibus aquárum multárum.

Mirabiles elatiónes maris : mirábilis in altis Dóminus.

Testimónia tua credibília facta sunt nimis : domum tuam decet sanctitúdo, Dómine, in longitúdinem diérum.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Pinguis est panis Christi, et præbébit delícias régibus.

*Tous les Pénitens étant debout, le Recteur dira le Chapitre* I. Corinth. II.

QUotiescúmque enim manducábitis panem hunc, et cálicem bibétis, mortem Dómini annuntiábitis, donec véniat.

℟. Deo grátias.

*Les Choristes disent tous les Versets, et le Chœur tous les Répons.*

℣. Cibávit illos ex ádipe fruménti, Allelúia, Allelúia.

℟. Cibávit illos ex ádipe fruménti, Allelúia.

℣. Et de petra melle saturávit eos.

℟. Allelúia, Allelúia.

℣. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui Sancto.

℟. Cibávit illos ex ádipe fruménti, Allelúia, Allelúia.

℣. Edúcas panem de terra, Allelúia.

℟. Et vinum lætíficet cor hóminis, Allel.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Recteur.* OREMUS.

DEus, qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquísti : tríbue, quæsumus, ita nos córporis et sánguinis tui sacra mystéria venerári, ut Redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in secula seculórum. ℟ Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen.

---

L'OFFICE

# L'OFFICE
## DU
# S. SACREMENT,
## *A NONE.*
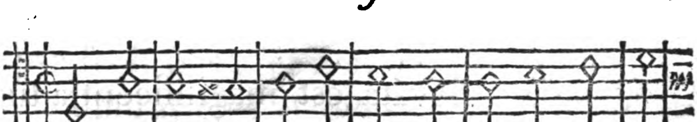
*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira à voix basse :* Pater noster. Ave, Maria.

*Ensuite l'on se lève ; et le Recteur faisant le signe de la Croix, entonne :*

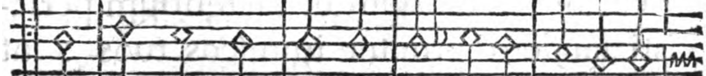
DEUS, in adjutórium meum inténde.

℟. Dómine, ad adjuvándum me festína
Glória Patri, et Fílio, etc.

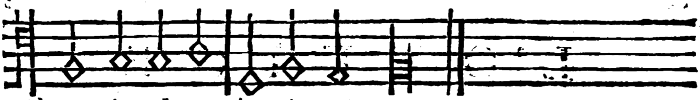
*Etant tous à genoux, les deux Choristes commenceront l'Hymne suivante :*



REm-rum Deus tenax vigor, Immótus in



te pérmanens, Lucis diúrnæ témpora
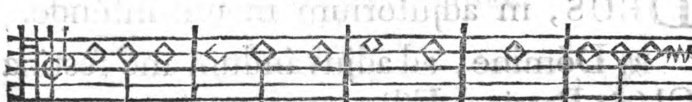


Succéssibus detérminans.

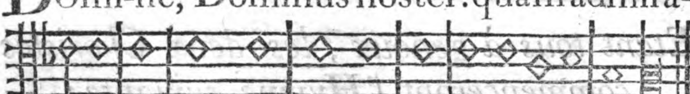
Largíre clarum véspere,
Quo vita nusquam décidat :
Sed præmium mortis sacræ
Perénnis instet glória.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu
In sempitérna secula. Amen.

*Le Recteur. Ant.* Vincénti dabo manna abscónditum, et nomen novum, Allelúia.

## *Psaume* 8.



DOmi-ne, Dóminus noster: quàm admirá-



bi-le est nomen tuum in universa terra !

Quóniam eleváta est magnificéntia tua super cœlos.

Ex ore infántium et lacténtium perfecísti laudem propter inimícos tuos : ut déstruas inimícum et ultórem.

Quóniam vidébo cœlos tuos, ópera digitórum tuórum : lunam et stellas quæ tu fundásti.

Quid est homo quòd memor es ejus : aut fílius hóminis, quóniam vísitas eum?

Minuísti eum paulò minùs ab Angelis, glóriâ et honóre coronásti eum : et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

Omnia subjecísti sub pédibus ejus : oves et boves univérsas, ínsuper et pécora campi.

Vólucres cœli, et pisces maris : qui perámbulant sémitas maris.

Dómine, Dóminus noster : quàm admirábile est nomen tuum in univérsa terra?

Glória Patri, etc.

## *Psaume* 99.

JUbiláte Deo, omnis terra : servíte Dómino in lætítia.

Introíte in conspéctu ejus : in exultatióne.

Scitóte quóniam Dóminus ipse est Deus : ipse fecit nos, et non ipsi nos.

Pópulus ejus et oves páscuæ ejus : introíte portas ejus in confessióne, átria ejus in hymnis confitémini illi.

Laudáte nomen ejus, quóniam suávis est Dóminus, in ætérnum misericórdia ejus : et

usque in generatiónem, et generatiónem véritas ejus. Glória Patri, etc.

## *Psaume* 10.

IN Dómino confído, quómodò dícitis ánimæ meæ: Transmígra in montem sicut passer.

Quóniam ecce peccatóres intendérunt arcum, paravérunt sagíttas suas in pharétra: ut sagíttent in obscúro rectos corde.

Quóniam quæ perfecísti, destruxérunt: justus autem quid fecit?

Dóminus in templo sancto suo: Dóminus in cœlo sedes ejus.

Oculi ejus in páuperem respíciunt: palpébræ ejus intérrogant fílios hóminum.

Dóminus intérrogat justum et ímpium: qui autem díligit iniquitátem, odit ánimam suam.

Pluet super peccatóres láqueos: ignis, et sulphur, et spíritus procellárum, pars cálicis eórum.

Quóniam justus Dóminus, et justítias diléxit: æquitátem vidit vultus ejus.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Vincénti dabo manna abscónditum, et nomen novum. Allelúia.

*Le Recteur dira le Chapitre* 1. Corinth. 2.

QUicúmque manducáverit panem hunc, vel bíberit cálicem Dómini indignè, reus erit córporis et sánguinis Dómini.

℟. Deo grátias.

*Les Choristes disent tous les Versets, et le Chœur tous les Répons.*

℣. Edúcas panem de terra, Allelúia, Allel.
℟. Edúcas panem de terra, Allelúia, Allel.
℣. Et vinum lætíficet cor hóminis.
℟. Allelúia, Allelúia.
℣. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui Sancto.
℟. Edúcas panem de terra, Allelúia, Allel.
℣. Pósuit fines tuos pacem, Allelúia.
℟. Et ádipe fruménti sátiat te, Allelúia.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquísti: tríbue, quæsumus, ita nos córporis et sánguinis tui sacra mystéria venerári; ut redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in secula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen.

¶ *Si l'on finit ici l'Office, on dira une des Antiennes qui courent selon la saison, comme ci-devant aux premières Vêpres, pages 39, 40 et suiv. Sinon, on commencera les secondes Vêpres, lesquelles on peut dire comme les premières, excepté que l'on dit* O sacrum convívium, etc. *devant et après le* Magníficat, *si mieux on n'aime dire Vêpres comme s'ensuivent.*

# LES
# SECONDES VÊPRES
## DU
## S. SACREMENT DE L'AUTEL.
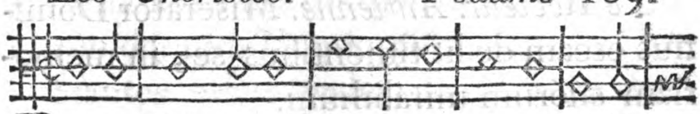
*Tous les Pénitens étant à genoux, le Recteur dira à voix basse :* Pater nost. Ave, Maria.

*Ensuite se levant, et faisant le signe de la Croix, il commencera le Verset :*

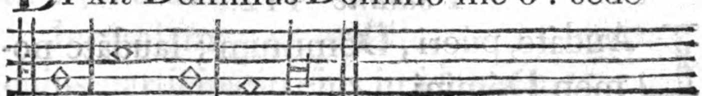
DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, etc. Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Sacérdos in ætérnum Christus Dóminus, secúndùm órdinem Melchísedech, panem et vinum óbtulit.

*Les Choristes.* *Psaume* 109.



DI-xit Dóminus Dómino me-o : sede



à dextris meis.

Donec ponam inimícos tuos : scabéllum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emíttet Dóminus ex Sion : domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ, in splendóribus Sanctórum : ex útero antè Lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, et non pœnitébit eum : tu es Sacérdos in ætérnum secúndùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis : confrégit in die iræ suæ Reges.

Judicábit in natiónibus, implébit ruínas : conquassábit cápita in terra multórum.

De torrénte in via bibet : proptéreà exaltábit caput. Glória Patri, etc.

*Celui qui aura charge, dira l'Ant.* Sacérdos in ætérnum Christus Dóminus secúndum órdinem Melchísedech, panem et vinum óbtulit. *Et ainsi des autres suivantes.*

*Le Recteur. Antienne.* Miserátor Dóminus escam dedit timéntibus se, in memóriam suórum mirábilium.

*Psaume* 112.

LAudáte, púeri, Dóminum : laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedíctum : ex hoc, nunc et usque in seculum.

A solis ortu usque ad occásum : laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes géntes Dóminus: et super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat : et humília réspicit in cœlo et in terra?

Súscitans à terra ínopem : et de stércore érigens páuperem.

Ut cóllocet eum cum princípibus : cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo : matrem filíorum lætántem. Glória Patri, etc.

*Ant.* Miserátor Dóminus escam dedit timéntibus se, in memóriam suórum mirabílium.

*Le Recteur. Ant.* Cálicem salutáris accípiam, et sacrificábo hóstiam laudis.

*Psaume* 121.

LÆtátus sum in his quæ dicta sunt mihi : in domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri : in átriis tuis, Jerúsalem.

Jerúsalem quæ ædificátur ut cívitas : cujus participátio ejus in idípsum.

Illuc enim ascendérunt tribus, tribus Dómini : testimónium Israel ad confiténdum nómini Dómini.

Quia illic sedérunt sedes in judício : sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem : et abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua : et abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos et próximos meos : loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri : quæsívi bona tibi. Glória Patri, etc.

*Ant.* Cálicem salutáris accípiam, et sacrificábo hóstiam laudis.

*Le Recteur. Ant.* Sicut novellæ olivárum, Ecclésiæ fílii sint in circúitu mensæ Dómini.

*Psaume* 122.

NIsi Dóminus ædificáverit domum : in vanum laboravérunt qui ædíficant eam.

Nisi Dóminus custodíerit civítatem : frustrà vígilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere : súrgite postquàm sedéritis, qui manducátis panem dolóris.

Cùm déderit diléctis suis somnum : ecce hæréditas Dómini, fílii merces, fructus ventris.

Sicut sagíttæ in manu pótentis : ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis : non confundétur, cùm loquétur inimícis suis in porta.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Sicut novéllæ olivárum, Ecclésiæ fílii sint in circúitu mensæ Dómini.

*Le Rect. Ant.* Qui pacem ponit fines ecclésiæ, fruménti ádipe sátiat nos Dóminus.

*Psaume* 147.

LAuda, Jerúsalem, Dóminum : lauda Deum tuum, Sion.

Quóniam confortávit seras portárum tuárum : benedíxit fíliis tuis in te.

Qui pósuit fines tuos pacem : et ádipe fruménti sátiat te.

Qui emíttit elóquium suum terræ : velóciter currit sermo ejus.

Qui dat nivem sicut lanam : nébulam sicut cínerem spargit.

Mittit crystállum suam sicut buccéllas : ante fáciem frígoris ejus quis sustinébit?

Emíttet verbum suum, et liquefáciet ea : flabit spíritus ejus, et fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob : justítias et judícia sua Israel.

Non fecit táliter omni natióni : et judícia sua non manifestávit eis. Glória Patri, etc.

*Ant.* Qui pacem ponit fines Ecclésiæ, fruménti ádipe sátiat nos Dóminus.

*Le Recteur dira le Chapitre* 1. Corinth. 11.

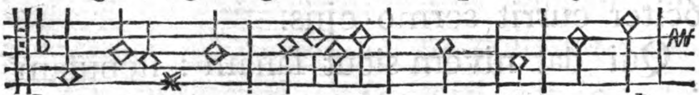
FRatres, ego enim accépi à Dómino quod et trádidi vobis : quóniam Dóminus Jesus in qua nocte tradebátur, accépit panem ; et grátias agens, fregit et dixit : Accípite et manducáte : hoc est Corpus meum, quod pro vobis tradétur : hoc fácite in meam commemoratiónem.

℟. Deo grátias.

*Les Choristes à genoux.* *Hymne.*



PAnge, lingua, glorióſi, Corporis mystériũ,



Sanguinísque pretiósi, quem in mundi



prétium, Fructus ventris generósi, Rex



effúdit géntium.

Nobis datus, nobis natus,
Ex intácta Vírgine,
Et in mundo conversátus,
Sparso verbi sémine,
Sui moras incolátûs
Miro clausit órdine.

In suprémæ nocte cœnæ
Recúmbens cum frátribus,
Observátâ lege plenè,
Cibis in legálibus,
Cibum turbæ duodénæ
Se dat suis mánibus.

Verbum-caro, Panem verum,
Verbo carnem éfficit,
Fitque Sanguis Christi merum:
Et si sensus déficit,
Ad firmándum cor sincérum,
Sola fides sufficit.

*A ce Verset, tous les Confrères inclineront la tête vers le S. Sacrement aussi bas qu'ils pourront, s'il est exposé.*

Tantum ergo Sacraméntum
Venerémur cérnui,
Et antíquum documéntum
Novo cedat rítui;
Præstet fides suppleméntum,
Sénsuum deféctui.

Genitóri Genitóque
Laus et jubilátio,
Salus, honor, virtus quoque,
Sit et benedíctio,
Procedénti ab utróque,
Compar sit laudátio. Amen.

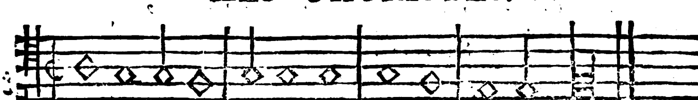
*Les Choristes.* ℣. Panem de cœlo præstitísti eis, Allelúia.

*Le Chœur.* ℟. Omne delectaméntum in se habéntem, Allelúia.

*Le Rect. Ant.* O sacrum convívium, in quo Christus súmitur; recólitur memória passiónis ejus; mens implétur grátiâ; et futúræ glóriæ nobis pignus datur, Allelúia.

## CANTIQUE DE LA VIERGE MARIE.

### *Les Choristes.*



MAg-níficat: ánima mea Dóminum.

Et exultávit spíritus meus: in Deo salutári meo.

Quia respéxit humilitátem ancillæ suæ: ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna qui potens est: et sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies : timéntibus eum.

Fecit poténtiam in bráchio suo : dispersit supérbos mente cordis sui.

Depósuit potentes de sede : et exaltávit húmiles.

Esuriéntes implévit bonis : et dívites dimísit inánes.

Suscépit Israel púerum suum : recordátus misericórdiæ suæ.

Sicut locútus est ad patres nostros : Abraham, et sémini ejus in secula.

Glória Patri, etc.

*Ant.* O sacrum convívium, in quo Christus súmitur ; recólitur memória Passiónis ejus ; mens implétur grátiâ ; et futuræ glóriæ nobís pignus datur, Allelúia.

*Etant tous à genoux, le Recteur dira :*

Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Le Recteur.* OREMUS.

DEus qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquísti : tríbue, quæsumus, ita nos córporis

et sánguinis tui sacra Mystéria venerári; ut redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in secula seculórum. ℟. Amen.

¶ *Ici l'on fait commémoraison du Dimanche et du saint jour, ensemble de la Paix, comme ci-devant, page 90.*

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.
℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

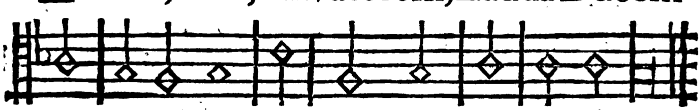
*Ensuite on commence les Complies, comme ci-devant, pages 29, 30 et suiv.*

---

*PROSE du Saint Sacrement de l'Autel.*



LAuda, Sion, Salvatórem, Lauda Ducem



et Pastórem In hymnis et canticis.

Ecce Panis Angelórum,
Factus cibus viatórum,
Non mitténdus cánibus.

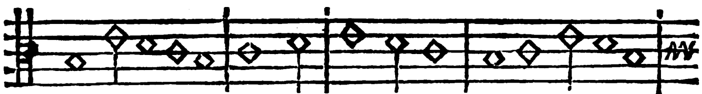
Quantùm

Quantùm potes, tantùm aude;
  Quia major omni laude,
  Nec laudáre súfficis.
Laudis thema speciális,
  Panis vivus et vitális
  Hódie propónitur.
Quem in sacræ mensa cœnæ
  Turbæ fratrum duodénæ
  Datum non ambígitur.
Sit laus plena, sit sonóra,
  Sit jucúnda, sit decóra,
  Mentis jubilátio.
Dies enim solémnis ágitur,
  In qua mensæ prima recólitur
  Hujus institútio.
In hac mensa novi Regis,
  Novum Pascha novæ Legis
  Phase vetus términat.
Vetustátem nóvitas,
  Umbram fugat véritas;
  Noctem lux elíminat.
Quod in cœna Christus gessit,
  Faciéndum hoc expréssit
  In suî memóriam.
Docti sacris institútis,
  Panem, vinum, in salútis
  Consecrámus hóstiam.

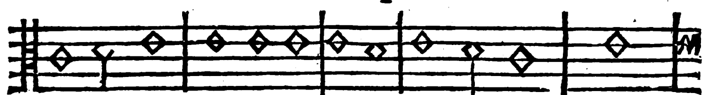
Dogma datur Christiánis
 Quòd in carnem transit panis,
 Et vinum in sánguinem.
Quod non capis, quod non vides,
 Animósa firmat fides,
 Præter rerum órdinem.
Sub divérsis speciébus,
 Signis tantùm et non rebus,
 Latent res exímiæ.
Caro cibus, sanguis potus,
 Manet tamen Christus totus
 Sub utráque spécie.
A suménte non concísus,
 Non confráctus, non divísus,
 Integer accípitur.
Sumit unus, sumunt mille;
 Quantùm isti, tantùm ille,
 Nec sumptus consúmitur.
Sumunt boni, sumunt mali;
 Sorte tamen inæquáli,
 Vitæ vel intéritûs.
Mors est malis, vita bonis:
 Vide paris sumptiónis
 Quàm sit dispar éxitus!
Fracto demùm Sacraménto,
 Ne vacilles, sed meménto
 Tantùm esse sub fragménto,

Quantùm toto tégitur.
Nulla rei fit scissúra ;
Signi tantùm fit fractúra ,
Quâ nec status , nec statùra
Signáti minúitur.
Ecce Panis Angelórum
Factus cibus viatórum ;
Vere panis filiórum ,
Non mitténdus cánibus.
In figuris præsignátur ,
Cùm Isaac immolátur ;
Agnus Paschæ deputátur;
Datur manna pátribus.
Bone Pastor, panis vere,
JESU , nostrî miserére :
Tu nos pasce , nos tuére :
Tu nos bona fac vidére
In terra vivéntium.
Tu qui cuncta scis et vales ,
Qui nos pascis hîc mortáles :
Tuos ibi commensáles
Cohæredes et sodáles
Fac Sanctórum cívium.
Amen.

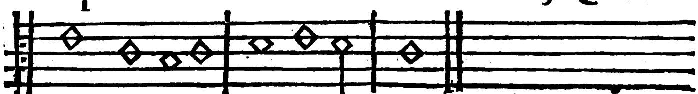
*A l'Elévation du Saint Sacrement, l'on dit par trois diverses fois :*



DE-fén-sor noster áspice: Insidiántes



repélle: Gubérna tuos fámulos, Quos



Sánguine mercátus es.

**F***in de l'Office du Saint Sacrement de l'Autel.*

---

# LITANIES

## DU

## S. SACREMENT DE L'AUTEL,

*Que l'on pourra dire devant le S. Sacrement, ou quand on le porte en procession.*

Litaniæ Sanctissimi Sacramenti Eucharistiæ, ab Ignatio Martino Societatis JESU, Sacerdote, primùm collectæ, nunc verò auctæ, et in ordinem redactæ.

*Les Choristes commencent; le Chœur répond.*

KYrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Christe eléison. ℟. Christe eléison.
℣. Christe, audi nos. ℟. Christe, exáudi nos.
Pater de cœlis Deus, miserére nobis.
Fili Redemptor mundi Deus, miserére nobis.
Spíritus Sancte Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas unus Deus, miserére nobis.
Agnus absque mácula, miserére nobis.
Manna abscónditum, miserére nobis.
Favus cum melle, miserére nobis.

Hóstia pacificórum, miserére nobis.
Hóstia sancta, miserére nobis.
Hóstia salutáris, miserére nobis.
Oblátio munda, miserére nobis.
Juge Sacrifícium miserére nobis.
Sacrifícium laudis incruéntum, miserére.
Sacrifícium Melchisedécis, miserére nobis.
Sacrifícium ómnium sanctíssimum, mis.
Sacrifícium rationále et acceptábile, miserére nobis.
Víctima sancta, quâ delétur peccáti chirógraphum, miserére nobis.
Corpus oblátum pro ómnibus sacrifíciis vetéribus, miserére nobis.
Mensa propositiónis, miserére nobis.
Mensa puríssima, miserére nobis.
Mensa poténtis, miserére nobis.
Mensa nobis adversùs tribulántes paráta, miserére nobis.
Scabellum pedum Dómini supplíciter adorándum, miserére nobis.
Angelórum esca, miserére nobis.
Fruméntum Electórum, miserére nobis.
Panis vive, qui de cœlo descendísti, mis.
Panis pinguis, et delíciæ Regum, miserére.
Panis supersubstantiális, miserére nobis.
Panis quem mandúcant et adórant omnes

pingues terræ, miserére nobis.
Panis non effígie, sed naturâ mutáte, mis.
Panis Omnipoténtis Verbi caro facte, mis.
Panis absque ulla humána ope bis paráte, miserére nobis.
Panis vitæ ætérnæ, miserére nobis.
Vínum gérminans vírgines, miserére nobis.
Calix novi et ætérni Testaménti, miserére.
Calix salútis perpétuæ, miserére.
Calix inébrians et præcláre, miserére nobis.
Calix benedictiónis, miserére nobis.
Fructus frumenti et vini, miserére nobis.
Fructus dulcis ánimæ gútturi, miserére.
Convívium sacrum, in quo Christus súmitur, miserére nobis.
Convívium pínguium medullatórum, mis.
Convívium vindémiæ defæcátæ, miserére.
Convívium dulcíssimum, cui assistunt Angeli ministrántes, miserére nobis.
Incorrúptum épulum miserére nobis.
Reféctio animárum sanctárum, miserére.
Spirituális dulcédo in próprio fonte degustáta, miserére nobis.
Antidótum cœleste, quo à peccátis præservámur, miserére nobis.
Pharmácum immortalitátis, miserére nobis.
Convíva et convívium, miserére nobis.

Pastor et páscua, miserére nobis.
Póntifex et sacrifícium, miserére nobis.
Offerens et oblátio, miserére nobis.
Mystérium fídei, miserére nobis.
Mystérium sacrosánctum, miserére nobis.
Mystérium Christianórum, miserére nobis.
Sacraméntum præcélsum et venerábile, mis.
Sacraméntum treméndum et vivíficum, mis.
Sacraméntum pietátis, miserére nobis.
Miráculum super ómnia stupéndum, mis.
Mirabílium Dei memória, miserére nobis.
Commemorátio Passiónis Dómini, miser.
Memoriále præcípuum divíni amóris, mis.
Donum transcéndens omnem plenitúdinem, miserére nobis.
Divitiárum divíni amóris effúsio, miserére.
Affluéntia divínæ largitátis, miserére nobis.
Vínculum charitátis, miserére nobis.
Cópula nuptiárum sponsi et sponsæ, miser.
Viáticum in Dómino moriéntium, miserére.
Tutaméntum et præservátio ad resurrectiónem vitæ, miserére nobis.
Caro et Sanguis, cujus communióne resurgunt immortália córpora nostra, miser.
Causa vitæ nostræ, miserére nobis.
Propitiatórium verum pro vivis et defúnctis, miserére nobis.

Pignus futúræ glóriæ, miserére nobis.
Propítius esto, líbera nos, Dómine.
Ab indigna córporis et sánguinis tui susceptióne, líbera nos, Dómine.
A concupiscéntia carnis, líbera nos, Dómine.
A concupiscéntia oculórum, líbera nos Dóm.
A supérbia vitæ, líbera nos, Dómine.
Ab omni peccándi occásione, líbera nos D.
Per desidérium illud quo hoc Pascha cum Discípulis tuis manducáre desiderásti, líbera nos, Dómine.
Per summam humilitátem quâ Discipulórum pedes lavásti, líbera nos, Dómine.
Per ardentíssimam charitátem quâ hoc divínum Sacraméntum instituísti, líbera nos.
Per sánguinem tuum pretiósum, quem nobis in altáre reliquísti, líbera nos, Dómine.
Per quinque vúlnera hujus tui córporis sacratíssimi, quæ pro nobis suscepísti, lib.
Peccatóres, te rogámus audi nos.
Ut in nobis fidem, et reveréntiam, et devotiónem hujus admirábilis Sacraménti augére et conserváre dignéris, te rogam.
Ut ad frequéntem usum Eucharístiæ per veram peccatórum confessiónem nos perdúcere dignéris, te rogámus audi nos.
Ut nos ab omni hærésis perfídia, et cordis

cæcitáte liberáre dignéris, te rogámus.

Ut sanctíssimi hujus Sacraménti pretiósos et cœléstes fructus nobis impartíri dignéris, te rogámus audi nos.

Ut in hora mortis nostræ hoc cœlésti Viático nos confortáre et muníre dignéris, te rogamus audi nos.

Agnus Dei qui tollis peccáta mundi, parce nobis, Dómine.

Agnus Dei qui tollis peccáta mundi, exáudi nos, Dómine.

Agnus Dei qui tollis peccáta mundi, miserére nobis.

℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Panem de cœlo præstitísti eis, Allelúia.

℟. Omne delectaméntum in se habéntem, Allelúia.

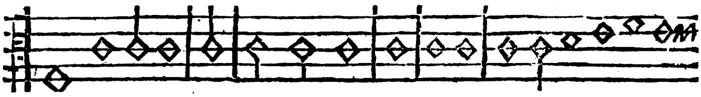
OREMUS.

DEus, qui nobis sub Sacraménto mirábili, Passiónis tuæ memóriam reliquísti: tríbue, quæsumus, ita nos córporis et sánguinis tui sacra Mystéria venerári, ut Redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis et regnas in unitate Spíritûs Sancti. Per ómnia secula seculórum. ℟. Amen.
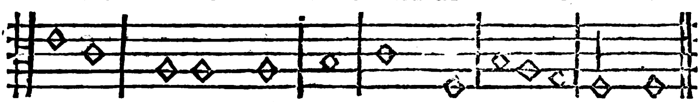
# PRIÈRE

## POUR LE ROI,

*Que l'on dit tous les matins après la Messe.*



EXáudiat te Dóminus in die tribulati-o-



- nis : próte-gat te nomen Dei Ja-cob.

Mittat tibi auxílium de Sancto : et de Sion tueátur te.

Memor sit omnis sacrifícii tui : et holocáustum tuum pingue fiat.

Tríbuat tibi secúndùm cor tuum : et omne consílium tuum confírmet.

Lætábimur in salutári tuo : et in nómine Dómini Dei nostri magnificábimur.

Impléat Dóminus omnes petitiónes tuas : nunc cognóvi quóniam salvum fecit Dóminus Christum suum.

Exáudiet illum de cœlo sancto suo : in potentátibus salus déxteræ ejus.

Hi in cúrribus, et hi in æquis : nos autem in nómine Dómini Dei nostri invocábimus.

Ipsi obligáti sunt, et cecidérunt : nos autem surréximus, et eréci sumus.

Dómine, salvum fac Regem : et exáudi nos in die quâ invocavérimus te.

Glória Patri et Fílio, etc.

*Le Recteur.* ℣. Dómine, salvum fac Regem nostrum Ludovicum.

℟. Et exáudi nos in die quâ invocavérimus te.

*Le Recteur.* OREMUS.

DEus, regnórum omnium, et Christiáni maxime protéctor Regni : da servo tuo Regi nostro Ludovico triúmphum virtútis tuæ scienter excólere : ut, qui tuâ institutióne est princeps, tuo sit semper múnere potens. Per Dóminum nostrum, etc.

## *ORAISON à la glorieuse Vierge Marie, au temps de la contagion.*

STella Cœli extirpávit, quæ lactávit Dóminum,
Mortis pestem, quam plantávit primus parens hóminum.
Ipsa Stella nunc dignétur sydera compéscere,
Quorum bella plebem cædunt, diro mortis vúlnere.
O gloriósa Stella maris, à peste succúrre nobis!
O gloriósa Stella maris, à peste succúrre nobis!
O gloriósa Stella maris, à peste succúrre nobis!
Audi nos, María, nam te Fílius, nihil negans, honórat.
Salva nos Messía Jesu, pro quibus Virgo Mater te orat. ℟. Amen

℣. Ora pro nobis, piíssima Dei Génitrix.
℟. Quæ contrivísti caput serpéntis, auxiliáre nobis.

*Le Recteur.* OREMUS.

DEus misericórdiæ, Deus pietátis, Deus indulgéntiæ, qui misértus es super afflictiónem pópuli tui, et dixísti Angelo

percutiénti pópulum tuum : Cóntine manum tuam, ob amórem illíus Stellæ gloriósæ cujus úbera pretiósa contra venénum nostrórum delictórum dúlciter suxísti ; præsta nobis auxílium grátiæ tuæ, ut ab omni peste et improvísa morte secúre liberémur, et à tótius perditiónis incúrsu misericórditer salvémur. Per te Jesu Christe, Rex glóriæ, qui cum Patre et Spíritu Sancto vivis et regnas, etc.

### *Hymne de Saint Roch.*

AVe, Roche sanctíssime,
Nóbili natus sánguine,
Crucis signátus schémate
Sinístro tuo látere.
Roche péregrè proféctus,
Pestíferos curas tactu,
Ægros sanas mirífice,
Tangéndo salutíferè.
Vale, Roche, Angélicæ
Vocis citátus flámine,
Qui potens es deíficè
A cunctis pestem péllere. ℟. Amen.

*Ant.* Rochum Christi Confessórem exorátum fácimus, et preces ad Patrem nostrum dirígimus ; ut suâ intercessióne à languóribus epidímiæ, ac peste salvémur, atque áëris tempérie potiámur.

℣. Ora pro nobis, beáte Roche.
℟. Ut mereámur præservári à peste.

OREMUS.

DEus, qui beáto Rocho per Angelum tuum tábulam eídem afferéntem, promisísti; ut qui piè ipsum invocáverit, à nullo cruciátu pestis læderétur: præsta, quæsumus, ut qui ejus memóriam ágimus, méritis ipsíus, à mortífera peste córporis et ánimæ liberémur. Per Christum Dóminum nostrum.
℟. Amen.

*Antienne de Saint Sébastien.*

O quàm mirâ refúlsit grátiâ Sebastiánus Martyr ínclytus, qui mílitis portans insígnia, sed de manu fratrum palma sollícitus confortávit colla palléntia, verbo sibi colláto cœlitùs.
℣. Ora pro nobis, beáte Martyr Sebastiáne.
℟. Ut mereámur pestem epidímiæ illæsi pertransíre, et promissiónem Christi obtinére.

OREMUS.

DEus qui beátum Sebastiánum Mártyrem tuum in tua fide et dilectióne tam ardénter solidásti: ut nullis carnálibus blandiméntis, nullis tyrannórum minis, nullis carníficum gládiis et sagittis à tuo cultu potúerit revocári: da nobis míseris peccatóri-

bus dignis ejus méritis et intercessiónibus in tribulatióne auxílium, in persecutióne solátium, et in omni témpore, contra pestem epidímiæ remédium, quátenùs possímus contra omnes diabólicas insídias viríliter dimicáre, mundum et ea quæ in eo sunt despícere, et nulla ejus advérsa formidáre; ut ea quæ, te inspiránte, desiderámus, valeámus felíciter obtinére. Per Dóminum, etc.

---

*LITANIES DE NOTRE-DAME, qu'on dit selon qu'il semble bon au Recteur et au Conseil, aux Fêtes de N. D. ou bien quand quelque occasion extraordinaire se présente ; mais on les dit presque toujours en faux-bourdon.*

*Les Choristes chantent, et le Chœur répond.*

SAncta María, Ora pro nobis.
Sancta Dei génitrix,
Sancta Virgo Vírginum,
Sancta Mater Christi,
Sancta Mater puríssima,
Sancta Mater castíssima,
Sancta Mater invioláta,
Sancta Mater sanctíssima,
Sancta Mater intemeráta,

Ora pro nobis.

Sancta

Sancta Mater amábilis, Ora pro nobis.
Sancta Mater admirábilis,
Sancta Mater prudentíssima,
Sancta Mater veneránda,
Sancta Mater prædicánda,
Sancta Mater misericórdiæ,
Sancta Mater divínæ grátiæ,
Sancta Mater Creatóris,
Sancta Mater Salvatóris,
Sancta Mater humilitátis,
Sancta Mater grátiæ et sanctitátis,
Sancta Mater obediéntiæ,
Sancta Mater puritátis,
Sancta Mater innocéntiæ,
Sancta grátiâ Dei plena,
Sancta ætérni Regis Fília,
Sancta Angelórum Dómina,
Sancta Fília sempitérni Patris,
Sancta Sponsa Spíritûs Sancti,
Sancta Promíssio Prophetárum,
Sancta Confortátrix Mártyrum,
Sanctum Decus Viduárum,
Sancta Virgo clementíssima,
Sancta Virgo potens,
Sancta Virgo Vírginum,
Sancta Virgo prudens,
Sancta Virgo præserváta,

Ora pro nobis.

Ora pro nobis.

Sancta Virgo pulchérrima, Ora pro nobis.
Sancta Virgo veneránda,
Sancta Virgo sanctíssima,
Sancta Virgo speciósa,
Sancta Virgo ab Æterno elécta,
Sanctum Spéculum justítiæ,
Sanctum Vas insígne devotiónis,
Sancta Virgo benedícta,
Sancta Sedes Sapiéntiæ,
Sanctus Thronus Salomónis,
Sancta Causa nostræ lætítiæ,
Sanctum Vas spirituále,
Sancta Virga Aáron fructífera,
Sanctum Vas tótius sanctitátis,
Sancta Rosa sine spina,
Sancta Turris ebúrnea,
Sancta pudóris Arca,
Sancta Jánua cœli,
Sancta Stella matutína,
Sanctum Lílium convállium,
Sancta credéntium via,
Sancta Victrix hæreticórum,
Sanctus Clypeus fídei,
Sancta Lux meridiána,
Sancta peccatórum Advocáta,
Sancta Via errántium,
Sancta salus in te sperántium,

Ora pro nobis.

Ora pro nobis.

Sanctum Ostium Paradísi, ora pro nobis.
Sancta púlchrior lunâ,
Sanctus Sol qui nescit occásum,
Sanctum Hospítium Deitátis,
Sanctum Spíritûs Sancti Sacrárium,
Sancta Lucérna castitátis,
Sanctum Spíritûs Sancti Domicílium,
Sanctus Flos virginitátis,
Sancta Salus infirmórum,
Sanctus Portus navigántium,
Sancta Forma sanctitátis,
Sanctum Refúgium peccatórum,
Sancta Consolátrix afflictórum,
Sanctum Auxílium Christianórum,
Sancta Regína cœlórum,
Sancta Regína Angelórum,
Sancta Regína Patriarchárum,
Sancta Regína Apostolórum,
Sancta Regína Mártyrum,
Sancta Regína Confessórum,
Sancta Regína Vírginum,
Sancta Regína Sanctórum ómnium,
Sancta Regína per infiníta secula.

Ora pro nobis.

Ora pro nobis.

℣. Ora pro nobis, sancta Dei Génitrix.

℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

*Le Recteur.* OREMUS.

COncéde nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis et córporis sanitáte gaudére, et gloriósâ beátæ Maríæ semper Vírginis intercessióne, à præsénti liberári tristítiâ, et ætérnâ pérfrui lætítiâ.

IN hac hora hujus diéi, tuâ nos, Dómine, reple misericórdia; ut per totum diem exultántes, divínis láudibus júgiter delectémur, et nos fámulos tuos ab omni adversitáte custódi.

OMnípotens clementíssime, Deus, qui hodiernâ die hanc Congregatiónem in loco isto, ad glorificándum nomen sanctum tuum adunári fecísti; te supplíciter obsecrámus, ut nos fratrésque nostros fácias tuis obtemperáre mandátis: et intercedénte gloriósâ semper Vírgine Maríâ cum ómnibus Sanctis nos fámulos tuos, atque loca nostra ab omni adversitáte custódi. Qui vivis, etc.

*Hymne de Notre Dame.*

AVe, maris Stella,
Dei Mater alma,
Atque semper Virgo,
Fœlix cœli Porta.

Sumens illud ave,
Gabriélis ore,
Funda nos in pace,
Mutans Evæ nomen.

Solve vincla reis,
Profer lumen cæcis,
Mala nostra pelle,
Bona cuncta posce.

Monstra te esse
Matrem ;
Sumat per te preces,
Qui pro nobis natus,
Tulit esse tuus.
Virgo singuláris,
Inter omnes mitis,
Nos culpis solútos,
Mites fac et castos.

Vitam præsta puram,
Iter para tutum,
Ut vidéntes Jesum,
Semper collætémur.
Sit laus Deo Patri,
Sũmo Christo decus,
Spirítui Sancte,
Trinus honor unus.
Amen.

*Autre Hymne de la Vierge Marie, qui se dit sur-le-champ :* Jam lucis orto sidere. *pag.* 92.

O Gloriósa Dómina,
Excélsa super sidera,
Qui te creávit, próvidè
Lactásti sacro úbere.
Quod Eva tristis ábstulit,
Tu reddis almo gérmine :
Intrent ut astra, flébiles,
Cœli fenéstra facta es.
Tu Régis alti jánua,
Et porta lucis fúlgida :
Vitam datam per Vírginem,
Gentes redémptæ pláudite.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna secula. Amen.

## *Autre Hymne de Notre-Dame.*

QUem terra, pontus, æthera,
Colunt, adórant, prædicant,
Trinam regéntem máchinam,
Claustrum Maríæ bájulat.

Cui luna, sol, et ómnia
Desérviunt per témpora,
Perfúsa cœli grátiâ
Gestant puéllæ víscera.

Beáta Mater múnere,
Cujus supérnus Artifex,
Mundo pugíllo cóntinens,
Ventris sub arca clausus est.

Beáta cœli núntio,
Fœcúnda Sancto Spíritu,
Desiderátus géntibus
Cujus per alvum fusus est.

Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna secula. Amen.

# COMMÉMORAISONS
## DES
## DIMANCHES, FÊTES MOBILES,
## ET JOURS FÉRIÉS DE TOUTE L'ANNÉE.

---

*Pour le premier Dimanche de l'Avent.*
*Antienne.*

NE tímeas, María; invenísti enim grátiam apud Dóminum : ecce concípies et páries fílium, Allelúia.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

*Verset des Matines.* Vox clamántis in desérto, paráte viam Dómini.

℟. Rectas fácite sémitas ejus.

O R E M U S.

EXcita, quæsumus, Dómine, poténtiam tuam, et veni; ut ab imminéntibus peccatórum nostrórum perículis, te mereámur protegénte éripi, te liberánte salvári : Qui vivis et regnas cum Deo Patre, in unitáte Spíritûs sancti Deus : per ómnia secula seculórum. ℟. Amen.

### *Pour le second Dimanche de l'Avent.*

*Ant.* Tu es qui ventúrus es ; an álium expectámus ? Dícite Joánni quæ vidístis. Ad lumen rédeunt cœci, mórtui resúrgunt, pauperes evangelizántur, Allelúia.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

OREMUS.

EXcita, Dómine, corda nostra ad præparándas Unigéniti tui vias : ut per ejus advéntum, purificátis tibi méntibus servíre mereámur. Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spirítûs Sancti Deus. Per ómnia secula seculórum. ℟. Amen.

### *Pour le troisième Dimanche de l'Avent.*

*Ant.* Beáta es, María, quæ credidísti Dómino : perficiéntur in te, quæ dicta sunt tibi à Dómino, Allelúia.

*On laisse cette Antienne, si ce Dimanche tombe le 17 Décembre, et l'on dit l'une des suivantes :*

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

OREMUS.

AUrem tuam, quæsumus, Dómine, précibus nostris accómmoda; et mentis nostræ ténebras, grátiâ tuæ visitatiónis illústra. Qui vivís et regnas cum Deo Patre, in unitáte ejúsdem, etc.

*Les Antiennes suivantes se commencent le 17 Décembre, et on en dit une tous les jours, jusqu'à l'avant-veille de Noël; et quant aux Verset et Oraison, on dit ceux du Dimanche précédent.*

*Ant.* O sapiéntia, quæ ex ore Altíssimi prodiísti, attíngens à fine usque ad finem fórtiter, suavíterque dispónens ómnia; veni ad docéndum nos viam prudéntiæ.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

*Ant.* O Adónaï, et Dux domûs Israël, qui Móysi in igne flammæ rubi apparuísti, et ei in Sina legem dedísti; veni ad rediméndum nos in bráchio exténto.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

*Ant.* O Radix Jesse, qui stas in signum populórum, super quem continébunt reges

os suum, quem gentes deprecabúntur; veni ad liberándum nos, jam noli tardáre.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

*Ant.* O Clavis David, et Sceptrum domûs Israël; qui áperis, et nemo claudit; claudis, et nemo áperit; veni, et educ vinctum de domo cárceris, sedéntem in ténebris et umbrâ mortis.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

*Ant.* O Oriens, splendor lucis ætérnæ, et Sol justítiæ; veni, et illúmina sedéntes in ténebris et umbrâ mortis.

*Ant.* O Rex géntium, et desiderátus eárum, lapisque anguláris, qui facis útraque unum; veni, et salva hóminem, quem de limo formásti.

*Ant.* O Emmánuel, Rex et Légifer noster, expectátio géntium et Salvátor eárum; veni ad salvándum nos, Dómine Deus noster.

*Pour le Mercredi des Quatre-Temps de l'Avent, si c'est avant le 17 Décembre.*

*Ant.* Ecca Ancílla Dómini : fiat mihi secúndùm verbum tuum.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut redemptiónis nostræ ventúra solémnitas, et præséntis nobis vitæ subsídia cónferat, et ætérnæ beatitúdinis præmia largiátur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi des Quatre-Temps, si c'est avant le 17 Décembre.*

*Ant.* Hoc est testimónium, quod perhíbuit Joánnes : Qui post me venit, antè me factus est.

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

OREMUS.

EXcita, quæsumus, Dómine, poténtiam tuam, et veni; ut hi, qui in tua pietáte

confídunt, ab omni cítiùs adversitáte liberéntur. Qui vivis, etc.

*Pour le Samedi des Quatre-Temps, on dit l'Antienne du jour, selon l'ordre que dessus.*

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

OREMUS.

DEus, qui cónspicis, quia ex nostra pravitáte afflígimur; concéde propítiùs, ut ex tua visitatióne consolémur. Qui vivis, etc.

*Pour le quatrième Dimanche de l'Avent, on dit l'Antienne du jour, selon l'ordre que dessus.*

℣. Roráte cœli désuper, et nubes pluant Justum.

℟. Aperiátur terra, et gérminet Salvatórem.

OREMUS.

EXcita, quæsumus, Dómine, poténtiam tuam, et veni, et magnâ nobis virtúte succúrre; et per auxílium grátiæ tuæ, quod nostra peccáta præpédiunt, indulgéntia tuæ propitiatiónis accéleret. Qui vivis, etc.

### *Pour la veille de Noël.*

*Ant.* Cùm ortus fuérit sol de cœlo, vidébitis Regem regum procedéntem à Patre, tanquam sponsum de thálamo suo.

℣. Crástinâ die delébitur iníquitas terræ.

℟. Et regnábit super nos Salvátor mundi.

OREMUS.

DEus, qui nos redemptiónis nostræ ánnuâ expectatióne lætíficas; præsta, ut Unigénitum tuum, quem Redemptórem læti suscípimus, veniéntem quoque Júdicem, secúri videámus, Dóminum nostrum Jesum Christum, etc.

### *Pour le jour de Noël.*

*Ant.* Hódie Christus natus est : hódie Salvátor appáruit : hódie in terra canunt Angeli, lætántur Archángeli : hódie exúltant Justi, dicéntes : Glória in excélsis Deo, Allelúia.

℣. Notum fecit Dóminus, Allelúia.

℟. Salutáre suum, Allelúia.

OREMUS.

COncéde, quæsumus, omnípotens Deus, ut nos Unigéniti tui nova per carnem Natívitas líberet, quos sub peccáti jugo vetústa servítus tenet. Per eúmdem Dóminum nostrum, etc.

### *Pour le Dimanche qui est entre le jour de Noël et l'Octave.*

*Ant.* Puer Jesu proficiébat ætáte et sapiéntiâ coram Deo et homínibus.

℣. Verbum caro factum est, Allelúia.

℟. Et habitávit in nobis, Allelúia.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, dírige actus nostros in beneplácito tuo; ut in nómine dilécti Fílii tui mereámur bonis opéribus abundáre. Qui tecum vivit, etc.

### *Pour le jour de l'Epiphanie.*

*Ant.* Tribus miráculis ornátum diem sanctum cólimus: Hódie Stella Magos duxit ad præsépium: hódie vinum ex aqua factum est ad núptias: hódie in Jordáne à Joánne Christus baptizári vóluit, ut salváret nos, Allelúia.

℣. Reges Tharsis et ínsulæ múnera ófferent.

℟. Reges Arabum et Saba dona addúcent.

OREMUS.

DEus qui hodiérnâ die Unigénitum tuum géntibus, stellâ duce, revelásti: concéde propítiùs, ut qui jam te ex fide cognóvimus, usque ad contemplándam spéciem tuæ celsitúdinis perducámur. Per eúmdem Dóminum nostrum, etc.

### *Pour le Dimanche qui est entre le jour de l'Epiphanie et l'Octave.*

*Ant.* Fili, quid fecísti nobis sic ? ego et pater tuus doléntes quærebámus te. Quid est quòd me quærebátis ? nesciebátis quia in iis quæ Patris mei sunt, opórtet me esse ?

℣. Reges Tharsis et ínsulæ múnera offerent,

℟. Reges Arabum et Saba dona addúcent.

OREMUS.

VOta, quæsumus, Dómine, supplicántis pópuli cœlésti pietáte proséquere ; ut et quæ agénda sunt, vídeant, et adimplénda quæ víderint, convaléscant. Per Dóminum, etc.

### *Pour le second Dimanche après l'Epiphanie.*

*Ant.* Deficiénte vino, jussit Jesus impléri hydrias aquâ, quæ in vinum convérsa est, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui cœléstia simul et terréna moderáris : supplicatiónes pópuli tui cleménter exáudi, et pacem tuam nostris concéde tempóribus. Per Dóminum, etc.

*Pour le troisième Dimanche après l'Epiphanie.*

*Ant.* Dómine, si vis, potes me mundáre : et ait Jesus : Volo, mundáre.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS

OMnípotens sempitérne Deus, infirmitátem nostram propítiùs réspice, atque ad protegéndum nos, déxteram tuæ Majestátis exténde. Per Dóminum nostrum Jesum Christum, etc.

*Pour le quatrième Dimanche après l'Epiphanie.*

*Ant.* Dómine, salva nos, perímus; impera, et fac Deus tranquillitátem.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

DEus, qui nos in tantis perículis constitútos, pro humána scis fragilitáte non posse subsístere : da nobis salútem mentis et eórporis; ut ea, quæ pro peccátis nostris pátimur, te adjuvánte vincámus. Per Dóminum, etc.

*Pour*

*Pour le cinquième Dimanche après l'Epiphanie.*

*Ant.* Collígite primùm zizánia, et alligáte ea in fascículos ad comburéndum: tríticum autem congregáte in hórreum meum, dicit Dóminus.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

FAmíliam tuam, quæsumus, Dómine, contínuâ pietáte custódi; ut quæ in sola spe grátiæ cœléstis innítitur, tuâ semper protectióne muniátur. Per Dóminum, etc.

*Pour le sixième Dimanche après l'Epiphanie.*

*Ant.* Símile est regnum cœlórum ferménto, quod accéptum mulier abscóndit in farínæ satis tríbus, donec fermentátum est totum.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut semper rationabília meditántes, quæ tibi sunt plácita, et dictis exequámur, et factis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Dimanche de la Septuagésime.*

*Ant.* Dixit paterfamílias operáriis suis:

Quid hîc statis totâ die otiósi? At illi respondéntes dixérunt : Quia nemo nos condúxit. Ite et vos in víneam meam, et quod justum fuérit, dabo vobis.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

O R E M U S.

PReces pópuli tui, quæsumus, Dómine, cleménter exáudi; ut qui justè pro peccátis nostris afflígimur, pro tui nóminis glória misericórditer liberémur. Per Dñum, etc.

*Pour le Dimanche de la Sexagésime.*

*Ant.* Vobis datum esse nosse mystérium regni Dei; cæteris autem in parábolis, dixit Jesus Discípulis suis.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

O R E M U S.

DEus, qui cónspicis quia ex nulla nostra actióne confídimus, concéde propítius, ut contrà advérsa ómnia, Doctóris géntium protectióne muniámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Dimanche de la Quinguagésime.*

*Ant.* Stans autem Jesus, jussit cæcum adduci ad se, et ait illi : Quid vis ut fáciam tibi? Dómine, ut vídeam. Et Jesus ait illi :

Réspice, fides tua te salvum fecit. Et conféstim vidit, et sequebátur illum, magníficans Deum.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

PReces nostras, quæsumus, Dómine, cleménter exáudi : atque peccatórum vínculis absolútos, ab omni nos adversitáte custodi. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des Cendres, c'est-à-dire, pour le premier jour de Carême.*

*Ant.* Thesaurizáte vobis thesáuros in çœlo, ubi nec ærúgo, nec tínea demolítur.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

PRæsta, Dómine, fidélibus tuis, ut jejuniórum veneránda solémnia, et cóngruâ pietáte suscípiant, et secúrâ devotióne percúrrant. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Jeudi après les Cendres.*

*Ant.* Dómine, non sum dignus ut intres sub tectum meum; sed tantùm dic verbo, et sanábitur puer meus.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui culpâ offénderis, pœniténtiâ placáris; preces pópuli tui supplicántis propítius réspice; et flagélla tuæ iracúndiæ, quæ pro peccátis nostris merémur, avérte. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Vendredi après les Cendres.*

*Ant.* Tu autem cùm oráveris, intra in cubículum tuum; et clauso ostio, ora Patrem tuum.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

INchoáta jejúnia, quæsumus, Dómine, benígno favóre proséquere; ut observántiam, quam corporáliter exhibémus, méntibus étiam sincéris exercére valeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi après les Cendres.*

*Ant.* Tunc invocábis, et Dóminus exáudiet; clamábis, et dicet: Ecce adsum.

℣. Dirigátur, Dómine, *comme dessus.*

OREMUS.

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris, et concéde; ut hoc solémne jejúnium, quod animábus corporibúsque curán-

dis salúbriter institútum est, devóto servítio celebrémus. Per Dóminum nostr. etc.

*Pour le premier Dimanche de Carême.*

*Ant.* Ecce nunc tempus acceptábile, ecce nunc dies salútis : in his ergo diébus exhibeámus nosmetípsos, sicut Dei minístros, in multa patiéntia, in jejúniis, in vigíliis, et in charitáte non ficta.

℣. Angelis suis mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

DEus, qui Ecclésiam tuam ánnuâ quadragesimáli observatióne puríficas, præsta famíliæ tuæ, ut quod à te obtinére abstinéndo nítitur, hoc bonis opéribus exequátur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Lundi.*

*Ant.* Quod uni ex mínimis meis fecístis, mihi fecístis, dicit Dóminus.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

COnvérte nos, Deus salutáris noster; et ut nobis jejúnium quadragesimále profíciat, mentes nostras cœléstibus ínstrue disciplínis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Mardi.*

*Ant.* Scriptum est enim : Quia domus mea, domus oratiónis est cunctis géntibus: vos autem fecístis illam spelúncam latrónum. Et erat quotídie docens in templo.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

O R E M U S.

REspice, Dómine, famíliam tuam, et præsta, ut apud te mens nostra tuo desidério fúlgeat, quæ se carnis maceratióne castígat. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi.*

*Ant.* Sicut fuit Jonas in ventre ceti tribus diébus et tribus noctibus, ita erit Fílius hóminis in corde terræ.

℣. Angelis suis, *comme dessus.*

O R E M U S.

PReces nostras, quæsumus, Dómine, cleménter exáudi, et contra cuncta nobis adversántia, déxteram tuæ majestátis exténde. Per Dóminum, etc.

*Pour le Jeudi.*

*Ant.* O múlier, magna est fides tua: fiat sicut petísti.

℣. Angelis suis, *comme dessus.*

OREMUS.

DEvotiónem pópuli tui, quæsumus, Dómine, benígnus inténde; ut qui per abstinéntiam macerántur in córpore, per fructum boni óperis reficiántur in mente. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi.*

*Ant.* Qui me sanum fecit, ille mihi præcépit: Tolle grabátum tuum, et ámbula in pace.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

ESto, Dómine, propítius plebi tuæ: et quam tibi facis esse devótam, benígno refóve miserátus auxílio. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi.*

*Ant.* Visiónem quam vidístis, némini dixéritis, donec à mórtuis resúrgat Fílius hóminis.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

POpulum tuum, quæsumus, Dómine, propítius réspice, atque ab eo flagélla tuæ iracúndiæ clementer avérte. Per, etc.

*Pour le second Dimanche de Carême.*

*Ant.* Visiónem quam vidístis, némini

dixéritis, donec á mórtuis resúrgat Fílius hóminis.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tnis.

OREMUS.

DEus, qui cónspicis nos omni virtúte destítui, intériùs extériùsque custódi, ut ab ómnibus adversitátibus muniámur in córpore, et à pravis cogitatiónibus mundémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Lundi.*

*Ant.* Qui me misit mecum est, et non relíquit me solum; quia quæ plácita sunt ei, fácio semper.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut família tua, quæ se affligéndo carnem, ab aliméntis ábstinet sectándo justítiam, à culpa jejúnet. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mardi.*

*Ant.* Omnes autem vos fratres estis; et Patrem nolíte vocáre vobis super terram: unus est enim Pater vester, qui in cœlis est; nec vocémini magístri, quia magíster vester unus est Christus.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

ORREMUS.

PErfice, quæsumus, Dómine, benígnus in nobis observántiæ sanctæ subsídium; ut, quæ te auctóre faciénda cognóvimus, te operánte impleámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi.*

*Ant.* Tradétur enim géntibus ad illudéndum, et flagellándum, et crucifigéndum.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

POpulum tuum, quæsumus, Dómine, propítiùs réspice; et quos ab escis carnálibus præcipis abstinére, à nóxiis quoque vítiis cessáre concéde. Per Dóminum, etc.

*Pour le Jeudi.*

*Ant.* Dives ille guttam aquæ pétiit, qui micas panis Lázaro negávit.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

PRæsta nobis, quæsumus, Dómine, auxílium grátiæ tuæ: ut jejúniis et oratiónibus conveniénter inténti, liberémur ab hóstibus mentis et córporis. Per Dñm, etc.

*Pour le Vendredi.*

*Ant.* Quærentes eum tenere, timuérunt

turbam, quia sicut Prophétam eum habébant.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut sacro nos purificánte jejúnio, sincéris méntibus ad sancta ventúra fácias perveníre. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi.*

*Ant.* Dixit autem Pater ad servos suos: Citò proférte stolam primam, et induíte illum, et date ánnulum in manu ejus, et calceaménta in pédibus ejus.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DA, quæsumus, Dómine, nostris effféctum jejúniis salutárem; ut castigátio carnis assúmpta ad nostrárum vegetatiónem tránseat animárum. Per Dóminum, etc.

*Pour le troisième Dimanche de Carême.*

*Ant.* Extóllens vocem quædam múlier de turba, dixit: Beátus venter qui te portávit, et úbera quæ suxísti. At Jesus ait illi: Quínimò, beáti qui áudiunt verbum Dei, et custódiunt illud.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

QUæsumus, omnípotens Deus, vota humílium réspice; atque ad defensiónem nostram, déxteram tuæ Majestátis exténde. Per Dóminum, etc.

*Pour le Lundi.*

*Ant.* Jesus autem tránsiens per médium illórum ibat.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

COrdibus nostris, quæsumus, Dómine, grátiam tuam benígnus infúnde, ut sicut ab escis carnálibus abstinémus, ita sensus quoque nostros à nóxiis retrahámus excéssibus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mardi.*

*Ant.* Ubi duo, vel tres congregáti fúerint in nómine meo, in médio eórum sum, dicit Dóminus.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

EXáudi nos, omnípotens et misericors Deus; et continéntiæ salutáris propítius nobis dona concéde. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi.*

*Ant.* Non lotis mánibus manducáre, non coínquinat hóminem.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

PRæsta nobis, quæsumus, Dómine, ut salutáribus jejúniis erudíti, à nóxiis quoque vítiis abstinéntes, propitiatiónem tuam facíliùs impetrémus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Jeudi après le troisième Dimanche de Carême.*

*Ant.* Omnes qui habébant infírmos, ducébant illos ad Jesum, et sanabántur.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

MAgníficet te, Dómine, Sanctórum tuórum Cósmæ et Damiáni beáta solémnitas; quâ et illis glóriam sempitérnam, et opem nobis ineffábili providéntiâ contulísti. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Vendredi.*

*Ant.* Dómine, ut vidéo, Prophéta es tu: patres nostri in monte hoc adoravérunt.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

JEjúnia nostra, quæsumus, Dómine, benigno favóre proséquere; ut, sicut abstinémus in córpore, ita à vítiis jejunémus in mente. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Samedi.*

*Ant.* Nemo te condemnávit múlier? Nemo, Dómine. Nec ego te condemnábo; jam ámplius noli peccáre.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus; ut qui se, affligéndo carnem, ab aliméntis ábstinent, sectándo justítiam, à culpa jejúnent. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le quatrième Dimanche de Carême.*

*Ant.* Súbiit ergo in montem Jesus, et ibi sedébat cum Discípulis suis.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

COncéde, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui ex mérito nostræ actiónis afflígimur, tuæ grátiæ consolatióne respirémus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Lundi.*

*Ant.* Sólvite templum hoc, dicit Dóminus; et post tríduum reædificábo illud: hoc autem dicébat de templo córporis sui.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut observatiónes sacras annuâ devotióne recoléntes, et córpore tibi placeámus, et mente. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mardi.*

*Ant.* Nemo in eo misit manum: quia nondum vénerat hora ejus.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

SAcræ nobis, quæsumus, Dómine, observatiónis jejúnia, et piæ conversatiónis augméntum, et tuæ propitiatiónis contínuum præstent auxílium. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi.*

*Ant.* Ille homo qui dícitur Jesus, lutum fecit ex sputo, et linívit óculos meos, et modò vídeo.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus qui, et justis præmia meritórum, et peccatóribus per jejúnium véniam præbes, miserére supplícibus tuis; ut reátûs nostri conféssio, indulgéntiam váleat percípere delictórum. Per Dóminum, etc.

*Pour le Jeudi.*

*Ant.* Prophéta magnus surréxit in nobis, et quia Deus visitávit plebem suam.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te.

℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut quos jejúnia votíva castígant, ipsa quoque devótio sancta lætíficet; ut terrénis afféctibus mitigátis, facíliùs cœléstia capiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi.*

*Ant.* Dómine, si fuísses hîc, Lázarus non esset mórtuus : ecce jam fœtet quatriduánus in monuménto.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui ineffabílibus mundum renóvas Sacraméntis; præsta, quæsumus, ut Ecclésia tua et æternis profíciat institútis, et temporálibus non destituátur auxíliis. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi.*

*Ant.* Ego sum qui testimónium perhíbeo de meipso : et testimónium perhíbet de me, qui misit me Pater.

℣. Angelis suis, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

FIat, Dómine, quæsumus, per grátiam tuam fructuósus nostræ devotiónis afféctus, quia tunc nobis próderunt suscépta jejúnia, si tuæ sint plácita pietáti. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Dimanche de la Passion.*

*Ant.* Abraham pater vester exultávit, ut vidéret diem meum : vidit et gavísus est.

℣. Eripe me, Dómine, ab hómine malo.

℟. A viro iníquo éripe me.

OREMUS.

QUæsumus, omnípotens Deus, famíliam tuam propítius réspice; ut te largiénte, regátur in córpore, et te servánte, custodiátur in mente. Per Dóminum, etc.

*Pour le Lundi.*

*Ant.* Si quis sitit, véniat ad me, et bibat; et de ventre ejus fluent aquæ vivæ, dicit Dóminus.

℣. Eripe me, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

SAnctífica, quæsumus, Dómine, nostra jejúnia; et cunctárum nobis indulgéntiam propítius largíre culpárum. Per Dóminum, etc.

*Pour*

*Pour le Mardi.*

*Ant.* Vos ascéndite ad diem festum hunc; ego autem non ascéndam, quia tempus meum nondum advénit.

℣. Eripe me, Dómine, ab hómine malo.

℟. A viro iníquo éripe me.

OREMUS.

NOstra, tibi, Dómine, quæsumus, sint accépta jejúnia : quæ nos et expíando, grátiâ tuâ dignos effíciant, et ad remédia perdúcant ætérna. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi.*

*Ant.* Multa bona ópera operátus sum in vobis : propter quod opus vultis me occídere?

℣. Eripe me, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

SAnctificáto hoc jejúnio, Deus, tuórum corda fidélium miserátor illústra; et quibus devotiónis præstas affectum, præbe supplicántibus pium benígnus audítum. Per Dóminum, etc.

*Pour le Jeudi.*

*Ant.* Desidério desiderávi hoc Pascha manducáre vobíscum, ántequam pátiar.

℣. Eripe me, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

PRræsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut dígnitas conditiónis humánæ per immoderántiam sauciáta, medicinális parcimóniæ stúdio reformétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi.*

*Ant.* Príncipes Sacerdótum consílium fecérunt ut Jesum occíderent; dicébant autem: Non in die festo, ne fortè tumultus fíeret in pópulo.

℣. Eripe me, Dómine, ab hómine malo.

℟. A viro iníquo éripe me.

OREMUS.

COrdibus nostris, quæsumus, Dómine, grátiam tuam benígnus infúnde; ut peccáta nostrâ castigatióne voluntáriâ cohibentes, temporáliter pótiùs macerémur, quàm supplíciis deputémur ætérnis. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi.*

*Ant.* Pater juste, mundus te non cognóvit; ego autem novi te, quia tu me misísti.

℣. Eripe me, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

PRofíciat, quæsumus, Dómine, plebs tibi dicáta piæ devotiónis affectu, ut sacris actiónibus erudíta, quando majestáti tuæ fit

grátior, tantò donis potióribus augeátur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Dimanche des Rameaux.*

*Ant.* Scriptum est enim : Percútiam Pastórem, et disperséntur oves gregis : postquam autem resurréxero, præcédam vos in Galílæam : ibi me vidébitis, dicit Dóminus.

℣. Eripe me, Dómine, ab hómine malo.

℟. A viro iníquo éripe me.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui humáno géneri ad imitándum humilitátis exemplum, Salvatórem nostrum carnem súmere, et crucem subíre fecísti : concéde propítius, ut et patiéntiæ ipsíus habére documénta, et resurrectiónis consórtia mereámur. Per eundem Dóminum, etc.

*Pour le Lundi Saint.*

*Ant.* Non habéres in me potestátem, nisi désuper tibi datum fuisset.

℣. Eripe me, etc. *comme ci-dessus.*

OREMUS.

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui in tot advérsis ex nostra infirmitáte defícimus, intercedénte Unigéniti Fílii tui passióne respirémus. Qui tecum vivit et regnat, etc.

*Pour le Mardi Saint.*

*Ant.* Potestátem hábeo ponéndi ánimam meam, et íterùm suméndi eam.

℣. Eripe me, Dómine, ab hómine malo.

℟. A viro iníquo éripe me.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, da nobis ita domínicæ passiónis sacraménta perágere; ut intelligéntiam percípere mereámur. Per eúndem Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Mercredi Saint.*

*Ant.* Ancílla dixit Petro : Verè tu ex illis es; nam et loquéla tua maniféstum te facit.

℣. Eripe me, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus; ut qui nostris excéssibus incessánter afflígimur, per Unigéniti Fílii tui Passiónem liberémur. Qui tecum vivit, etc.

*Pour le Jeudi Saint.*

*Ant.* Cœnántibus autem illis, accépit Jesus panem et benedíxit, ac frégit, deditque Discípulis suis.

℣. Christus factus est pro nobis obédiens.

℟. Usque ad mortem.

OREMUS.

RESpice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre torméntum, etc.

*Pour le Vendredi Saint.*

*Ant.* Cùm accepísset acétum, dixit: Consummátum est; et inclináto cápite, emísit spíritum.

℣. Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem.

℟. Mortem autem crucis.

OREMUS.

RESpice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, etc.

*Pour le Samedi Saint.*

*Ant.* Muliéres sedéntes ad monuméntum lamentabántur, flentes Dóminum.

℣. Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis.

℟. Propter quod et Deus exaltávit illum, et dedit illi nomen, quod est super omne nomen.

OREMUS.

Respice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus trádi nocéntium, et crucis subíre torméntum. Qui tecum vivit, etc.

*Pour le jour de Pâques.*

*Ant.* Et respiciéntes, vidérunt revolútum lápidem: erat quippe magnus valdè, Allel.

*Au lieu du Verset, on dit l'Antienne.*

℣. Hæc dies quam fecit Dóminus, Allel.
℟. Exultémus, et lætémur in ea, Allel.

OREMUS.

Deus, qui hodiérna die per Unigénitum tuum, æternitátis nobis áditum devictâ morte reserásti; vota nostra quæ præveniéndo aspíras, étiam adjuvándo proséquere. Per eúndem, etc.

*Pour le Lundi de Pâques.*

*Ant.* Qui sunt hi sermónes quos confertis ad ínvicem ambulántes, et estis tristes? Allelúia.

℣. Hæc dies quam fecit Dóminus, Allel.
℟. Exultémus et lætémur in ea, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui solemnitáte paschâli, mundo remédia contulísti : pópulum tuum, quæsumus, cœlésti dono proséquere ; ut et perféctam libertátem cónsequi mereátur, et ad vitam profíciat sempitérnam. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le Mardi de Pâques.*

*Ant.* Vidéte manus meas et pedes meos : quia ego ipse sum, Allelúia.

℣. Hæc dies quam fecit Dóminus, Allel.

℟. Exultémus et lætémur in ea, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui Ecclésiam tuam novo semper fœtu multíplicas : concéde fámulis tuis, ut Sacraméntum vivéndo téneant, quod fide percepérunt. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi.*

*Ant.* Dixit Jesus Discípulis suis : Afférte de píscibus, quæ préndidistis nunc. Ascéndit autem Simon Petrus, et traxit rete in terram plenum magnis píscibus, Allelúia.

℣. Hæc dies quam, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui nos resurrectiónis Domínicæ ánnuâ solemnitáte lætíficas ; concéde propítius, ut per temporália festa quæ ági-

mus, perveníre ad gáudia ætérna mereámur. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le Jeudi.*

*Ant.* Tulérunt Dóminum meum, et nescio ubi posuérunt eum : si tu sustulísti eum, díscito mihi, Allelúia : et ego eum tollam, Allelúia.

℣. Hæc dies quam fecit Dóminus, Allel.

℟. Exultémus, et lætémur in ea, Allel.

OREMUS.

DEus, qui diversitátem géntium in confessióne tui nóminis adunásti ; da, ut renátis fonte Baptismátis, una sit fides méntium, et píetas actiónum. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi.*

*Ant.* Data est mihi omnis potéstas in cœlo et in terra, Allelúia.

℣. Hæc dies, *comme dessus.*

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui Paschále Sacraméntum in reconciliatiónis humánæ fœdere contulísti : da méntibus nostris, ut quod professióne celebrámus, imitémur efféctu. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi.*

*Ant.* Currébant ergo duo simul, et ille álius Discípulus præcucúrrit cítiùs Petro, et venit prior ad monuméntum.

℣. Hæc dies quam fecit Dóminus, Al.

℟. Exultémus, et lætémur in ea, Allel.

OREMUS.

COncéde, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui Festa Paschália venerándo égimus : per hæc contíngere ad gáudia ætérna mereámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Dimanche de Quasimodo, c'est-à-dire, le Samedi de devant; ce qu'il faut entendre de tous les Dimanches suivans.*

*Ant.* Post dies octo, jánuis clausis, ingréssus Dóminus, dixit eis : Pax vobis : Allelúia, Allelúia.

℣. Mane nobíscum, Dómine, Allelúia.

℟. Quóniam advesperáscit, Allelúia.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, qui Paschália Festa perégimus; hæc te largiénte, móribus, et vitâ teneámus. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le second Dimanche après Pâques.*

*Ant.* Ego sum pastor bonus, qui pasco

oves meas, et pro óvibus meis pono ánimam meam, Allelúia.

℣. Mane nobíscum, Dómine, Allelúia.

℟. Quóniam advesperáscit, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui in Fílii tui humilitáte jacéntem mundum erexísti; fidélibus tuis perpétuam concéde lætítiam, ut quos perpétuæ mortis eripuísti cásibus, gáudiis fácias perfrui sempitérnis. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le troisième Dimanche après Pâques.*

*Ant.* Amen dico vobis, quia plorábitis et flébitis vos, mundus autem gaudébit: vos verò contristabímini; sed tristítia vestra vertétur in gáudium, Allelúia.

℣. Mane nobíscum, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui errántibus, ut in viam possint redíre justítiæ, veritátis tuæ lumen osténdis; da cunctis qui christiánâ professióne censéntur, et illa respúere, quæ huic inimíca sunt nómini, et ea quæ sunt apta, sectári. Per Dóminum, etc.

*Pour le quatrième Dimanche après Pâques.*

*Ant.* Vado ad eum qui misit me; sed

quia hæc locútus sum vobis, tristítia implévit cor vestrum, Allelúia.

℣. Mane nobíscum, Dómine, Allelúia.

℟. Quóniam advesperáscit, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui fidélium mentes unius éfficis voluntátis; da pópulis tuis id amáre quod præcipis, id desideráre quod promíttis; ut inter mundánas varietátes, ibi nostra fixa sint corda, ubi vera sunt gáudia. Per Dóminum, etc.

*Pour le cinquième Dimanche après Pâques.*

*Ant.* Pétite, et accipiétis; ut gáudium vestrum sit plenum: ipse enim Pater amat vos, quia vos me amástis et credidístis. Al.

℣. Mane nobíscum, Dómine, Allelúia.

℟. Quóniam advesperáscit, Allelúia.

OREMUS.

DEus, à quo bona cuncta procédunt, largíre supplícibus tuis; ut cogitémus te inspiránte, quæ recta sunt, et te gubernánte, eádem faciámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Lundi des Rogations.*

*Ant.* Pétite, et accipiétis; quærite, et inveniétis; pulsáte, et aperiétur vobis, Allel.

℣. Mane nobíscum, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus; ut qui in afflictióne nostra de tua pietáte confídimus, contra advérsa ómnia, tuâ semper protectióne muniámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mardi des Rogations.*

*Ant.* Exívi à Patre, et veni in mundum: íterùm relínquo mundum, et vado ad Patrem, Allelúia.

℣. Mane nobíscum, Dómine, Allelúia.

℟. Quóniam advesperáscit, Allelúia.

OREMUS.

DEus, à quo bona cuncta procédunt, largíre supplícibus tuis; ut cogitémus, te inspiránte, quæ recta sunt, et te gubernánte, eádem faciámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi des Rogations.*

*Ant.* Pater, venit hora, clarífica Fílium tuum claritáte, quam hábui priúsquam mundus esset apud te, Allelúia.

℣. Mane nobíscum, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, à quo bona cuncta procédunt, largíre supplícibus tuis; ut cogitémus, te inspiránte, quæ recta sunt, et te gubernánte, eádem faciámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi de l'Ascension.*

*Ant.* O Rex glóriæ, Dómine virtútum, qui triumphátor hódie super omnes cœlos ascendísti, ne derelínquas nos orphános; sed mitte promíssum Patris in nos, Spíritum veritátis, Allelúia.

℣. Dóminus in cœlo, Allelúia.

℟. Parávit sedem suam, Allelúia.

OREMUS.

COncéde, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui hodiérnâ die Unigénitum tuum Redemptórem nostrum ad cœlos ascendisse crédimus: ipsi quoque mente in cœléstibus habitémus. Per eúndem, etc.

*Pour le Dimanche après l'Ascension.*

*Ant.* Hæc locútus sum vobis, ut cùm vénerit hora éorum, reminiscámini quia ego dixi vobis, Allelúia.

℣. Dóminus in cœlo, Allelúia.

℟. Parávit sedem suam, Allelúia.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, fac nos tibi semper et devótam gérere voluntátem, et majestáti tuæ sincéro corde servíre. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Pentecôte.*

*Ant.* Hódie compléti sunt dies Pente-

cóstes, Allelúia : hódie Spíritus Sanctus in igne Discípulis appáruit, et tríbuit eis charísmatum dona ; misit eos in univérsum mundum prædicáre, et testificári : qui credíderit, et baptizátus fúerit, salvus erit, Allel.

℣. Loquebántur váriis linguis Apóstoli, Allelúia.

℟. Magnália Dei, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui hodiérnâ die corda Fidélium Sancti Spíritûs illustratióne docuisti ; da nobis in eódem Spíritu recta sápere, et de ejus semper consolatióne gaudére. Per Dóminum, etc.

*Pour le Lundi de la Pentecôte.*

*Ant.* Si quis díligit me, sermónem meum servábit ; et Pater meus dilíget eum, et ad eum veniémus, et mansiónem apud eum faciémus, Allelúia.

℣. Loquebántur, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui Apóstolis tuis Sanctum dedísti Spíritum ; concéde plebi tuæ piæ petitiónis effectum, ut quibus dedísti fidem, largiáris et pacem. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mardi de la Pentecôte.*

*Ant.* Pacem relínquo vobis, pacem meam do vobis; non quómodo mundus dat, ego do vobis, Allelúia.

℣. Loquebántur váriis linguis Apóstóli, Allelúia.

℟. Magnália Dei, Allelúia.

OREMUS.

ADsit nobis, quæsumus, Dómine, virtus Spíritûs Sancti; quæ et corda nostra cleménter expúrget, et ab ómnibus tueátur advérsis. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi des Quatre-temps de la Pentecôte.*

*Ant.* Ego sum panis vivus, qui de cœlo descéndi: si quis manducáverit ex hoc pane, vivet in ætérnum: et panis quem ego dabo, caro mea est pro mundi vita, Allelúia.

℣. Loquébantur, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

MEntes nostras, quæsumus, Dómine, Paráclitus qui à te procédit, illúminet: et indúcat in omnem, sicut tuus promisit Fílius, veritátem. Qui tecum vivit, etc.

*Pour le Jeudi de la Pentecôte.*

*Ant.* Spíritus qui à Patre procédit, Allelúia: ille me clarificábit, Allelúia, Allelúia.

℣. Loquebántur váriis linguis Apóstoli, Al.

℟. Magnália Dei, Allelúia.

O R E M U S.

DEus, qui hodiérnâ die corda fidélium Sancti Spíritûs illustratióne docúisti: da nobis in eódem Spíritu recta sápere, et de ejus semper consolatióne gaudére. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi des Quatre-Temps de la Pentecôte.*

*Ant.* Paráclitus autem Spíritus Sanctus, quem mittet Pater in nómine meo, ille vos docébit, et súggeret vobis ómnia quæcúmque díxero vobis, Allelúia.

℣. Loquebántur, etc. *comme dessus.*

O R E M U S.

DA, quæsumus, Ecclésiæ tuæ miséricors Deus; ut Sancto Spíritu congregáta, hostili nullátenùs incursióne turbétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi de la Pentecôte.*

*Ant.* Cháritas Dei diffúsa est in córdibus nostris, per inhabitántem Spíritum ejus in nobis, Allelúia.

℣. Loquebántur, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

OREMUS.

MEntibus nostris, quæsumus, Dómine, Spíritum Sanctum benígnus infúnde; cujus et sapiéntiâ cónditi sumus, et providéntiâ gubernámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Trinité.*

*Ant.* Te Deum Patrem ingénitum, te Fílium unigénitum, te Spíritum Sanctum Paráclitum, Sanctam et indivíduam Trinitátem toto corde et ore confitémur, laudámus atque benedícimus: tibi glória in secula.

℣. Benedíctus es, Dómine, in firmaménto cœli.

℟. Et laudábilis et gloriósus in secula.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui dedísti fámulis tuis in confessióne veræ fídei, ætérnæ Trinitátis glóriam agnóscere, et in poténtia majestátis adoráre Unitátem; quæsumus, ut ejus fídei firmitáte, ab ómnibus semper muniámur advérsis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Ce même jour on fait commémoraison du premier Dimanche d'après la Pentecôte, comme s'ensuit.*

*Ant.* Nólite judicáre, ut non judicámini,

in quo enim judício judicavéritis, judicabímini, dicit Dóminus.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

DEus, in te sperántium fortitúdo, adésto propítius invocatiónibus nostris : et quia sine te nihil potest mortális infírmitas, præsta auxílium grátiæ tuæ; ut in exequéndis mandátis tuis, et voluntáte tibi et actióne placeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour du Corps-de-Dieu.*

*Ant.* O sacrum Convívium, in quo Christus súmitur : recólitur memória passiónis ejus : mens implétur grátiâ : et futúræ glóriæ nobis pignus datur, Allelúia.

℣. Panem de cœlo præstítisti eis, Allel.

℟. Omne delectaméntum in se habéntem, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui nóbis sub Sacraménto mirábili, passiónis tuæ memóriam reliquísti : tríbue, quæsumus, ita nos Córporis et Sánguinis tui sacra mystéria venerári, ut redemptiónis tuæ fructum in nobis júgiter sentiámus. Qui vivis, etc.

*Pour le Dimanche après le Corps-de-Dieu, qui est le second après la Pentecôte.*

*Ant.* Exi citò in pláteas et vicos civitátis : et páuperes ac débiles, et cæcos et claudos compélle intráre ; ut impleátur domus mea, Allelúia.

℣. Cibávit illos ex ádipe fruménti, Allel.

℟. Et de petra, melle saturávit eos, Allelúia.

OREMUS.

SAncti nóminis tui, Dómine, timórem páriter et amórem fac nos habére perpétuum : quia nunquam tuâ gubernatióne destítuis, quos in soliditáte tuæ dilectiónis instítuis. Per Dóminum, etc.

*Pour le troisième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Quæ múlier habens drachmas decem, et si perdíderit drachmam unam, nonne accéndit lucérnam, et evértit domum et quærit diligénter donec inveniat ?

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

PRotéctor in te sperántium Deus, sine quo nihil est válidum, nihil sanctum ; multíplica super nos misericórdiam tuam:

ut te rectóre, te duce, sic transeámus per bona temporália, ut non amittámus ætérna. Per Dóminum, etc.

*Pour le quatrième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Præcéptor, per totam noctem laborántes nihil cépimus : in verbo autem tuo laxábo rete.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.
℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine, ut et mundi cursus pacíficè nobis tuo órdine dirigátur, et Ecclésia tua tranquillâ devotióne lætétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le cinquième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Si óffers munus tuum ad altáre, et recordátus fúeris quia frater tuus habet áliquid advérsùs te, relínque ibi munus tuum ante altáre, et vade priùs reconciliári fratri tuo : tunc véniens ófferes munus tuum, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui diligéntibus te bona invisibília præparásti : infúnde córdibus nostris tui amóris affébtum ; ut te in ómnibus, et super ómnia diligéntes promissiónes tuas, quæ omne desidérium súperant, consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le sixième Dim. après la Pentecôte.*

*Ant.* Miséreor super turbam : quia ecce jam tríduo sústinent me, nec habent quod mandúcent : et si dimísero eos jéjunos, defícient in via, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

DEus virtútum, cujus est totum quod est óptimum : ínsere pectóribus nostris amórem tui nóminis, et præsta in nobis religiónis augméntum : ut quæ sunt bona, nútrias ; ac pietátis stúdio, quæ sunt nutríta, custódias. Per Dóminum, etc.

*Pour le septième Dim. après la Pentecôte.*

*Ant.* Non potest arbor bona fructus malos fácere, nec arbor mala fructus bonos fácere : omnis arbor quæ non facit fructum bonum, excidétur, et in ignem mittétur, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, cujus providéntia in suî dispositióne non fállitur : te supplíces exorámus; ut nóxia cuncta submóveas, et ómnia nobis profutúra concédas. Per Dñm, etc.

*Pour le huitième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Quid fáciam, quia Dóminus meus aufert à me villicatiónem? fódere non valeo, mendicáre erubésco. Scio quid fáciam, ut cùm amótus fúero à villicatióne, recípiant me in domos suas.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.
℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

LArgíre nobis, quæsumus, Dómine, semper spíritum cogitándi quæ recta sunt, propítius et agendi : ut qui sine te esse non póssumus, secúndùm te vívere valeámus. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le neuvième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Scriptum est enim : Quia domus méa domus oratiónis est cunctis géntibus : vos autem fecístis illam spelúncam latrónum : et erat quotídie docens in templo.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

PAteant aures misericórdiæ tuæ, Dómine, précibus supplicántium; et ut peténtibus desideráta concédas, fac eos, quæ tibi sunt plácita, postuláre. Per Dóminum, etc.

*Pour le dixième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Descéndit hîc justificátus in domum suam ab illo : quia omnis qui se exáltat, humiliábitur; et qui se humíliat, exaltábitur.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus, qui omnipoténtiam tuam, parcendo máximè et miserándo manifestas : multíplica super nos misericórdiam tuam; ut ad tua promíssa curréntes, cœléstium bonórum fácias esse consórtes. Per Dóminum, etc.

*Pour le onzième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Benè ómnia fecit, et surdos fecit audíre, et mutos loqui.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui abundántia pietátis tuæ, et mérita súpplicum excédis, et vota : effúnde super nos misericórdiam tuam ; ut dimíttas quæ consciéntia métuit, et adjícias quod orátio non præsúmit. Per Dóminum, etc.

*Pour le douzième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Homo quidam descendébat ab Jerúsalem in Jérico, et íncidit in latrónes, qui étiam despoliavérunt eum ; et plagis impósítis abiérunt, semivívo relícto.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

OMnípotens et misérícors Deus, de cujus múnere venit, ut tibi à fidélibus tuis dignè et laudabíliter serviátur : tríbue, quæsumus, nobis, ut ad promissiónes tuas sine offensióne currámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le treizième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Unus autem ex illis, ut vidit quòd mundátus est, regressus est cum magna voce magníficans Deum, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, da nobis fídei, spéi et charitátis augméntum : et ut mereámur ássequi quod promíttis, fac nos amáre quod præcipis. Per Dóminum, etc.

*Pour le quatorzième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Quærite primùm regnum Dei, et justítiam ejus; et hæc ómnia adjiciéntur vobis, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

CUstódi, Dómine, quæsumus, Ecclésiam tuam propitiatióne perpétua : et quia sine te lábitur humana mortálitas, tuis semper auxíliis, et abstrahátur à nóxiis, et ad salutária dirigátur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Mercredi des Quatre-Temps de Septembre.*

*Ant.* Hoc genus dæmoniórum in nullo potest exíre, nisi in oratióne et jejúnio.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

MIsericórdiæ tuæ, remédiis, quæsumus, Dómine, fragílitas nostra subsístat :

ut quæ suâ conditióne attéritur, tuâ clementiâ reparétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le Vendredi des Quatre-Temps de Septembre.*

*Ant.* Múlier, quæ erat in civitáte peccátrix, stans retrò secùs pedes Dómini, lacrymis cœpit rigáre pedes ejus, et capíllis cápitis sui tergébat, et deosculabátur pedes ejus, et unguénto ungébat.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut observatiónes sacras ánnuâ devotióne recoléntes, et córpore tibi placeámus, et mente. Per Dóminum, etc.

*Pour le Samedi des Quatre-Temps de Septembre.*

*Ant.* Illumináre, Dómine, iis qui in ténebris sedent, et dírige pedes nostros in viam pacis, Deus Israel.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui per continéntiam salutárem, corpóribus medéris et méntibus: majestátem tuam supplíciter exorámus; ut pia jejunántium depre-

catióne placátus, et præséntia nobis subsídia tríbuas, et futúra. Per Dóminum, etc.

*Pour le quinzième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Prophéta magnus surréxit in nobis, et quia Deus visitávit plebem suam.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

ECclésiam tuam, Dómine, miserátio continuáta mundet et múniat: et quia sine te non potest salva consístere, tuo semper múnere gubernétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le seizième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Cùm vocátus fúeris ad núptias, recúmbe in novíssimo loco; ut dicat tibi qui te invitávit: Amice, ascénde supériùs; et erit tibi glória coram simul discumbéntibus, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

TUa nos, quæsumus, Dómine, grátia semper et prævéniat et sequátur: ac bonis opéribus júgiter præstet esse inténtos. Per Dóminum, etc.

*Pour le dix-septième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Quid vobis vidétur de Christo? cujus fílius est? Dicunt ei omnes: David. Dicit eis Jesus: Quómodo David in spíritu vocat eum Dóminum, dicens: Dixit Dóminus Dómino meo, sede à dextris meis.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

DA, quæsumus, Dómine, pópulo tuo diabólica vitáre contágia; et te solum Deum purâ mente sectári. Per Dóminum, etc.

*Pour le dix-huitième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Tulit ergo Paralyticus lectum suum, in quo jacébat, magnifícans Déum: et omnis plebs, ut vidit, dedit laudem Deo.

℣. Dirigátur, Dómine, *comme dessus.*

OREMUS.

DIrigat corda nostra, quæsumus, Dómine, tuæ miseratiónis operátio: quia tibi sine te placére non possumus. Per Dóminum, etc.

*Pour le dix-neuvième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Intrávit autem Rex, ut vidéret

discumbéntes : et vidit ibi hóminem non vestítum veste nuptiáli, et ait illi : Amíce : quómodò huc intrásti, non habens vestem nuptiálem ?

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

OMnípotens et miséricors Deus, universa nobis adversántia propitiátus exclúde : ut mente et córpore páriter expedíti, quæ tua sunt, líberis méntibus exequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le vingtième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Cognóvit autem Pater, quia illâ hora erat, in qua dixit Jesus : Fílius tuus vivit ; et crédidit ipse, et domus ejus tota.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

LArgíre, quæsumus, Dómine, fidélibus tuis indulgéntiam placátus et pacem : ut páriter ab ómnibus mundéntur offénsis, et secúrâ tibi mente desérviant. Per Dóminum, etc.

*Pour le vingt-unième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Serve nequam, omne débitum di-

mísi tibi, quóniam rogásti me; nonne ergo opórtuit, et te miseréri consérvi tui, sicut et ego tuî misertus sum? Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

FAmíliam tuam, quæsumus, Dómine, contínuâ pietáte custódi: ut à cunctis adversitátibus, te protegénte, sit líbera, et in bonis áctibus tuo nómini sit devóta. Per Dóminum, etc.

*Pour le vingt-deuxième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Réddite ergo quæ sunt Cæsaris, Cæsari: et quæ sunt Dei, Deo.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

DEus refúgium nostrum et virtus: adésto piis Ecclésiæ tuæ précibus, auctor ipse pietátis, et præsta; ut quod fidéliter pétimus, efficáciter consequámur. Per Dóminum, etc.

¶ *Encore que le nombre des dimanches depuis la Pentecôte jusqu'à l'Avent, est quelquefois moindre, et d'autres fois plus grand, toutefois ils ne peuvent être moins de 23, ni plus de 28.*

¶ *Quand il n' y en a que 23, alors le 23e dim. on dit l'oraison du 24e; et celle du 23e on la dit le samedi précédent, pourvu qu'il ne soit pas fête: et s'il est fête, on la dira le vendredi, pourvu aussi qu'il ne soit pas fête; que s'il est fête, on la dira le jour le plus prochain dudit dimanche 23e.*

¶ *Quand il y en aura 24, on dira chaque dimanche la sienne par ordre.*

¶ *Lorsqu'il y en aura 25, le 24e dim. on dira l'oraison du 6e dim. après les Rois,* p. 161; *et le 25e on dira celle du 24e parce que l'oraison du 24e se doit toujours garder pour le dernier.*

¶ *Quand il y en a 26, on dit le 24e dim. l'oraison du 5e dim. après les Rois,* pag. 161; *et le 25e dim. l'oraison du 6e dim. après les Rois, pag. 161; et le 26e celle du 24e, laquelle on garde toujours pour le dernier.*

¶ *Quand il y en a 27, on dit le 24e l'oraison du 4e dim. après les Rois,* pag. 160; *et le 25e l'oraison du 5e dim. après les Rois, et le 26e celle du 6e, et le 27e celle du 24e gardée pour le dernier* comme dessus.

¶ *Quand il y en a 28, on dit le 24e dim. l'oraison du 3e dim. après les Rois,* pag 160; *le 25e celle du 4e dim., le 26e celle du 5e dim., le 27e celle du 6e dim., et le 28e celle du 24e dim., gardée pour le dernier.*

*Pour le vingt-troisième Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* At Jesus convérsus, et videns eam, dixit : Confíde, fília, fides tua te salvam fecit, Allelúia.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea.

℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo.

OREMUS.

ABsólve, quæsumus, Dómine, tuórum delícta populórum : ut à peccatórum nostrórum néxibus, quæ pro nostra fragilitáte contráximus, tuâ benignitáte liberémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le vingt-quatrième et dernier Dimanche après la Pentecôte.*

*Ant.* Amen dico vobis, quia non præteríbit generátio hæc, donec ómnia fiant : cœlum et terra transíbunt, verba autem mea non transíbunt, dicit Dóminus.

℣. Dirigátur, Dómine, etc. *comme dessus.*

OREMUS.

EXcita, quæsumus, Dómine, tuórum fidélium voluntátes : ut divíni óperis fructum propénsiùs exequéntes, pietátis tuæ remédia majóra percípiant. Per Dóminum nostrum, etc.

# COMMÉMORAISONS
# PROPRES
# DES SAINTS

*Desquels les Fêtes sont commandées pendant toute l'année, avec leurs Antiennes, Versets et Oraisons.*

---

*Pour le jour de S. André, le 30 Novembre.*

*Antienne.*

CUm pervenísset Beátus Andreas ad locum ubi Crux paráta erat, exclamávit, et dixit : O bona Crux, diù desideráta, et jam concupiscénti ánimo præparáta ! secúrus et gaudens vénio ad te, ita et tu exúltans suscípias me discípulum ejus qui pepéndit in te.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

MAjestátem tuam, Dómine, supplíciter exorámus : ut sicut Ecclésiæ tuæ beátus Andreas Apóstolus éxtitit prædicátor

et rector, ita apud te sit pro nobis perpétuus intercéssor. Per Dóminum, etc.

## FÊTES DE DÉCEMBRE.

*Pour le jour de Sainte Bibiane, Vierge et Martyre, le 2 Décembre.*

*Ant.* Veni, sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ, et pulchritúdine tuâ.

℣. Inténde, próspere procéde, et regna.

OREMUS.

Deus, ómnium largítor bonórum, qui in famula tua Bibiána cum virginitátis flore martyrii palmam conjunxísti: mentes nostras, ejus intercessióne, tibi charitáte conjúnge, ut amótis perículis, præmia consequámur ætérna. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint François-Xavier, le 3 Décembre.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui Indiárum gentes beáti Francísci prædicatióne, et miráculis Ecclésiæ tuæ aggregáre voluísti : concéde propítius, ut cujus gloriósa mérita venerámur, virtútum quoque imitémur exémpla. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Nicolas, le 6 Décembre.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et virtútum ópifex, Pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

DEus, qui beátum Nicólaum Pontíficem innúmeris decorásti miráculis: tríbue, quæsumus, ut ejus méritis et précibus, à gehénnæ incéndiis liberémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Ambroise, Evêque et Docteur de l'Eglise, le 7 Décembre.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Ambrósi, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas, Allelúia.

℟. Et osténdit illi regnum Dei, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui pópulo tuo ætérnæ salútis beátum Ambrósium minístrum tribuísti : præsta, quæsumus, ut quem Doctórem vitæ hábuimus in terris, intercessórem habére mereámur in cœlis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de la Conception de Notre-Dame, le 8 Décembre.*

*Ant.* Concéptio tua, Dei génitrix Virgo, gáudium annuntiávit univérso mundo : ex te enim ortus est Sol justítiæ, Christus Deus noster : qui solvens maledictiónem, dedit benedictiónem : et confúndens mortem, donávit nobis vitam sempitérnam.

℣. Concéptio est hódie sanctæ Máriæ Vírginis.

℟. Cujus vita ínclyta cunctas illústrat Ecclésias.

OREMUS.

FAmulis tuis, quæsumus, Dómine, cœléstis grátiæ munus impertíre : ut, quibus beátæ Vírginis partus éxtitit salútis exórdium, Conceptiónis ejus votíva solémnitas,

pacis tríbuat increméntum. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint Damase, Pape, le* 11 *Décembre.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, terréna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

EXáudi, Dómine, preces nostras : et interveniénte beáto Damáso Confessóre tuo atque Pontífice, indulgéntiam nobis tríbue placátus, et pacem. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Sainte Luce, Vierge et Martyre, le* 13 *Décembre.*

*Ant.* In tua patiéntia possedísti ánimam tuam, Lúcia sponsa Christi ; odísti quæ in mundo sunt, et corúscas cum Angelis : sánguine próprio inimícum vicísti.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

Proptérea benedíxit te Deus in ætérnum.

OREMUS.

EXáudi nos, Deus salutáris noster, ut sicut de beátæ Lúciæ Vírginis et Mártyris tuæ festivitáte gaudémus, ita piæ devotiónis erudiámur affféctu. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint Thomas, Apôtre, le 21 Décembre.*

*Ant.* Quia vidísti me, Thoma, credidísti : beáti qui non vidérunt, et credidérunt, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine, beáti Apóstoli tui Thomæ sólemnitátibus gloriári : ut ejus semper et patrocíniis sublevémur, et fidem cóngruâ devotióne sectémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Noël, le 25 Décembre.*

*Ant.* Hódie Christus natus est : hódie Salvátor appáruit : hódie in terra canunt Angeli, lætántur Archángeli : hódie exúltant Justi, dicéntes : Glória in excélsis Deo, Allelúia.

℣. Notum fecit Dóminus, Allelúia.

℟. Salutáre suum, Allelúia.

OREMUS.

CONcéde, quæsumus, omnípotens Deus : ut nos Unigéniti tui nova per carnem natívitas líberet, quos sub peccáti jugo vetústa servítus tenet. Per eúmdem Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Etienne, premier Martyr, le 26 Décembre.*

*Ant.* Sepeliérunt Stephánum viri timoráti, et fecérunt planctum magnum super eum.

℣. Stéphanus vidit cœlos apértos.

℟. Vidit et introívit : beátus homo, cui cœli patébant.

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine, imitári quod cólimus, ut discámus et inimícos dilígere; quia ejus natalítia celebrámus, qui novit étiam pro persecutóribus exoráre Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Jean l'Evangéliste, le 26 Décembre.*

*Ant.* Iste est Joánnes, qui supra pectus Dómini in cœna recúbuit : beátus Apóstolus, cui reveláta sunt secréta cœléstia.

℣. Valdè honorándus est beátus Joánnes.

℟. Qui supra pectus Dómini in cœna recúbuit.

OREMUS.

ECclésiam tuam, Dómine, benígnus illústra: ut beáti Joánnis Apóstoli tui et Evangelístæ illumináta doctrínis, ad dona pervéniat sempitérna. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour des Innocens, le 28 Décembre.*

*Ant.* Innocéntes pro Christo infántes occísi sunt; ab iníquo rege lacténtes interfécti sunt: ipsum sequúntur agnum sine mácula, et dicunt semper: Glória tibi, Dómine.

℣. Sub throno Dei omnes Sancti clamant.

℟. Víndica sánguinem nostrum, Deus noster.

OREMUS.

DEus, cujus hodiérnâ die præcónium, Innocéntes Martyres non loquéndo, sed moriéndo confléssi sunt, ómnia in nobis vitiórum mala mortífica; ut fidem tuam, quam lingua nostra lóquitur, étiam móribus vita fateátur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Thomas, Evêque de Cantorbéry, et Martyr, le 29 Décembre.*

*Ant.* Iste sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit: fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glóriâ et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

OREMUS.

DEus, pro cujus Ecclésia gloriósus Póntifex Thomas gládiis impiórum occúbuit; præsta, quæsumus, ut omnes qui ejus implórant auxílium, petitiónis suæ salutárem consequántur efféctum. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint Sylvestre, Pape et Confesseur, le 31 Décembre.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, terréna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut beáti Sylvéstri Confessóris tui atque Pontíficis, veneránda solémnitas, et devotiónem nobis áugeat et salútem. Per Dóminum nostrum, etc.

# FÊTES DE JANVIER.

*Pour le jour de la Circoncision, le premier jour de Janvier.*

*Ant.* Magnum hæreditátis mystérium : templum Dei factus est úterus néscientis virum : non est pollútus ex ea carnem assúmens : omnes gentes vénient, dicéntes : Glória tibi, Dómine.

℣. Notum fecit Dóminus, Allelùia.

℟. Salutáre suum, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Máriæ virginitáte fœcúnda, humáno géneri præmia præstitísti ; tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus auctórem vitæ suscípere, Dóminum nostrum Jesum, etc.

*Pour le jour de l'Epiphanie, le 6 Janvier.*

*Ant.* Tribus miráculis ornátum diem sanctum cólimus : Hódie stella Magos duxit ad præsépium : hódie vinum ex aqua facctum est ad núptias : hódie in Jordáne à Joánne Christus baptizári vóluit, ut salváret nos, Allelúia.

℣. Reges Tharsis et ínsulæ múnera ófferent.
℟. Reges Arabum et Saba dona addúcent.

OREMUS.

DEus, qui hodiérnâ die Unigénitum tuum géntibus, stellâ duce, revelásti: concéde propítius, ut qui jam te ex fide cognóvimus, usque ad contemplándam spéciem tuæ celsitúdinis perducámur. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Hilaire, Evêque et Confesseur, le 14 Janvier.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Hilári, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.
℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.
℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui pópulo tuo ætérnæ salútis beátum Hilárium minístrum tribuísti: præsta, quæsumus, ut quem Doctórem vitæ habuímus in terris, intercessórem habére mereámur in cœlis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Paul, premier Hermite, le 15 Janvier.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.
℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Pauli Confessóris tui annuâ solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, étiam actiónes imitémur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint Marcel, Pape et Martyr, le 16 Janvier.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, abnéget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.
℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

PReces pópuli tui, quæsumus, Dómine, cleménter exáudi : ut beáti Marcelli Mártyris tui atque Pontíficis méritis adjuvémur, cujus passióne lætámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Antoine, Abbé, le 17 Janvier.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum, et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.
℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

INtercéssio nos, quæsumus, Dómine, beáti Antónii Abbátis comméndet; ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Chaire S. Pierre, qui fut le premier qui tint le siége à Rome, le 18 Janvier.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, terréna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Elégit eum Dóminus Sacerdótem sibi.
℟. Ad sacrificándum ei hóstiam laudis.

OREMUS.

DEus, qui beáto Petro Apóstolo tuo, collátis clávibus regni cœléstis, ligándi, atque solvéndi pontifícium tradidísti, concéde, ut intercessiónis ejus auxílio, à peccatórum nostrórum néxibus liberémur. Qui vivis et regnas Deus. Per ómnia, etc.

*Le même jour on fait Commémoraison de Saint Paul.*

*Ant.* Sancte Paule, Apóstole, Prædicátor veritátis et Doctor géntium, intercéde pro nobis ad Deum, qui te elégit.

℣. Tu es vas electiónis, sancte Paule Apóstole.

℟. Prædicátor veritátis in univérso mundo.

OREMUS.

DEus, qui multitúdinem géntium beáti Pauli Apóstoli tui prædicatióne docuísti : da nobis, quæsumus, ut cujus commemoratiónem cólimus, ejus apud te patrocínia sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des Saints Martyrs Marius, Marthe, Audifax et Abacum, le 19 Janvier.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

EXáudi, Dómine, pópulum tuum, cum Sanctórum tuórum patrocínio supplicántem; ut et temporális vitæ nobis tríbuas pace gaudére, et ætérnæ reperíre subsídium. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Canut, Martyr, le 19 Janvier.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, ábneget

semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui ad illustrándam Ecclésiam tuam, beátum Canútum Danórum Regem, Martyrii palmâ et gloriósis miráculis decoráre dignátus es : concéde propítius, ut sicut ipsæ Domínicæ passiónis imitátor fuit, ita nos, per ejus vestígia gradiéntes, ad gáudia sempitérna perveníre mereámur. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour les jours des SS. Fabien et Sébastien, Martyrs, le 20 Janvier.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

INfirmitátem nostram réspice, omnípotens Deus; et quia pondus própriæ actiónis gravat, beatórum Mártyrum tuórum Fabiáni et Sebastiáni intercéssio gloriósa nos protégat. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Agnès, Vierge et Martyre, le 21 Janvier.*

*Aut.* Stans beáta Agnes in médio flammæ, expánsis mánibus, orábat ad Dóminum: Omnípotens, adoránde, colénde, treménde, benedíco te, et glorífico nomen tuum in ætérnum.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

℟. Proptérea benedíxit te Deus in ætérnum.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui infírma mundi éligis, ut fórtia quæque confúndas, concéde propítius, ut qui beátæ Agnétis Vírginis et Mártyris tuæ solémnia cólimus, ejus apud te patrocínia sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des SS. Vincent et Anastase, Martyrs, le 22 Janvier.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti: et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeo cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

OREMUS.

ADesto, Dómine, supplicatiónibus nostris : ut qui ex iniquitáte nostra reos nos esse cognóscimus, beatórum Mártyrum tuórum Vincéntii et Anastásii intercessióne liberémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Raymond de Pennafort, le 23 Janvier.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum, et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui beátum Raymúndum pœniténtiæ Sacraménti insígnem minístrum elegísti, et per maris undas mirabíliter traduxísti : concéde, ut ejus intercessióne dignos pœniténtiæ fructus facére, et ad ætérnæ salútis portum perveníre valeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Timothée, Evêque et Martyr, le 24 Janvier.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, abnéget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

INfirmitátem nostram réspice, omnípotens Deus; et quia pondus própriæ actiónis gravat, beáti Timóthei Mártyris tui atque Pontíficis intercéssio gloriósa nos prótegat. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Conversion de Saint Paul, le 25 Janvier.*

*Ant.* Sancte Paule, Apóstole, Prædicátor veritátis, et Doctor Géntium, intercéde pro nobis ad Deum qui te elégit.

℣. Tu es vas electiónis, Sancte Paule, Apóstole.

℟. Prædicátor veritátis in univérso mundo.

OREMUS.

DEus, qui universum mundum beáti Pauli, Apóstoli, prædicatióne docuísti: da nobis, quæsumus, ut qui ejus hódie Conversiónem cólimus, per ejus ad te exémpla gradiámur. Per Dóminum, etc.

*Le même jour on fait Commémoraison de Saint Pierre.*

*Ant.* Tu es Pastor óvium, Princeps Apostolórum; tibi tráditæ sunt claves regni cœlórum.

℣. Tu es Petrus.

℟. Et super hanc Petram ædificábo Ecclésiam meam.

OREMUS.

DEus, qui beáto Petro Apóstolo tuo, collátis clávibus regni cœléstis, ligándi, atque solvéndi pontifícium tradídisti : concéde, ut intercessiónis ejus auxílio, à peccatórum nostrórum néxibus liberémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Polycarpe, Evêque et Martyr, le 26 Janvier.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, ábneget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Polycarpi, Mártyris tui atque Pontíficis ánnuâ solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, de ejúsdem étiam protectióne gaudeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Jean-Chrysostome, Evêque et Confesseur. le 27 Janvier,*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Joánnes Chrysóstome, divínæ

legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

Ecclésiam tuam, quæsumus, Dómine, grátia cœléstis amplíficet: quam beáti Joánnis Chrisóstomi Confessóris tui atque Pontíficis illustráre voluísti, gloriósis méritis et doctrínis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. François de Sales, Evêque et Confesseur, le 29 Janvier.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et vírtutum ópifex, Pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

Deus, qui ad animárum salútem beátum Franciscum Confessórem tuum atque Pontíficem, ómnibus ómnia factum esse voluísti: concéde propítius, ut charitátis tuæ dulcédine perfúsi, ejus dirigéntibus mónitis, ac suffragántibus méritis, ætérna gáudia consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Martine, Vierge et Martyre, le 30 Janvier.*

*Ant.* Veni sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

OREMUS.

DEus, qui inter cætera poténtiæ tuæ mirácula, étiam in sexu frágili victóriam martyrii contulísti: concéde propítiùs, ut qui beátæ Martínæ, Vírginis et Mártyris tuæ natalítia cólimus, per ejus ad te exémpla gradiámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Pierre Nolasque, Confesseur, le 31 Janvier.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triumphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui in tuæ charitátis exémplum ad fidélium redemptiónem, sanctum Petrum Noláscum, Ecclésiam tuam novâ prole fœcundáre divínitùs docuísti; ípsius nobis intercessióne concéde, à peccáti servitúte solútis, in cœlésti Pátria perpétuâ libertáte gaudére. Qui vivis, etc.

# FÊTES DE FÉVRIER.

## *Pour le jour de S. Ignace, Evêque et Martyr, le 1 Février.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, abnéget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

INfirmitátem nostram réspice, omnípotens Deus; et quia pondus própriæ actiónis gravat, beáti Ignátii Mártyris tui atque Pontíficis, intercéssio gloriósa nos protégat. Per Dóminum, etc.

## *Pour le jour de la Purification de Notre-Dame, le 2 Février.*

*Ant.* Hódie beáta Vírgo María puérum Jesum præsentávit in Templo; et Símeon replétus Spíritu Sancto, accépit eum in ulnas suas, et benedíxit Deum in ætérnum.

℣. Respónsum accépit Símeon à Spíritu Sancto.

℟. Non visúrum se mortem, donec vidéret Christum Dómini.

OREMUS.

OMnípotens, sempitérne Deus, Majestátem tuam súpplices exorámus, ut sicut unigénitus Fílius tuus hodiérnâ die cum nostræ carnis substántiâ in templo est præsentátus; ita nos fácias purificátis tibi méntibus præsentári. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. André Corsin, Evêque et Confesseur, le 4 Février.*

*Ant.* Amávit eum Dóminus, et ornávit eum, stolam glóriæ índuit eum, et ad portas paradísi coronávit eum.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas, Allelúia.

℟. Et osténdit illi regnum Dei, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui in Ecclésia tua nova semper instáuras exémpla virtútum: da pópulo tuo beáti Andreæ Confessóris atque Pontíficis, ita sequi vestígia, ut assequátur et præmia. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Agathe, Vierge et Martyre, le 5 Février.*

*Ant.* Stans beáta Agatha in médio cárceris, expánsis mánibus, orábat ad Dóminum: Dómine Jesu Christe, Magíster

bone, grátias tibi ago, qui me fecísti víncere torménta carníficum : jube me, Dómine, ad tuam immarcessíbilem glóriam felíciter perveníre.

℣. Spécie tuâ, et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prospéré procéde, et regna.

ORÉMUS.

DEus, qui inter cætera poténtiæ tuæ mirácula étiam in sexu frágili, victóriam martyrii contulísti : concéde propítius, ut qui beátæ Agathæ, Vírginis et Martyris tuæ, natalítia cólimus, per ejus ad te exémpla gradiámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Romuald, Abbé, le 7 Février.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

ORÉMUS.

INtercéssio nos, quæsumus, Dómine, beáti Rómuáldi Abbatis comméndet : ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Conrad, Confesseur, le 22 Février.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dómiuus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Conrádi Confessóris tui ánnuâ solemnitáte lætíficas: concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, étiam actiónes imitémur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de la Chaire de S. Pierre à Antioche, le 22 Février.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, terréna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Elégit te Dóminus Sacerdótem sibi.

℟. Ad sacrificándum ei hóstiam laudis.

OREMUS.

DEus, qui beáto Petro Apóstolo tuo, collátis clávibus regni cœléstis, ligandi, atque solvéndi pontifícium tradidísti: concéde, ut intercessiónis ejus auxílio, à peccatórum nostrórum néxibus liberémur. Qui vivis et regnas Deus. Per ómnia, etc.

*Le même jour, on fait commémoraison de S. Paul.*

*Ant.* Sancte Paule, Apóstole, Prædicátor veritátis et Doctor géntium, intercéde pro nobis ad Deum, qui te elégit.

℣. Tu es vas electiónis, sancte Paule Apóstole.

℟. Prædicátor veritátis in univérso mundo.

OREMUS.

DEus, qui multitúdinem géntium beáti Pauli Apóstoli prædicatióne docuísti : da nobis, quæsumus, ut cujus commemoratiónem cólimus, ejus apud te patrocínia sentiámus. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Mathias, Apôtre, le 24 Février, et en Bissextile, le 25.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte cum antíquo serpénte : et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

DEus, qui beátum Mathiam Apostolórum tuórum collégio sociásti : tríbue, quæsumus, ut ejus interventióne, tuæ circa nos pietátis semper víscera sentiámus. Per Dóminum nostrum, etc.

# FÊTES DE MARS.

*Pour le jour de S. Casimir, Confesseur, le 4 Mars.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

ORE MUS.

DEus, qui inter regáles delícias, et mundi illécebras, sanctum Casimírum virtúte constántiæ roborásti : quæsumus, ut ejus intercessióne fidéles, tui terréna despíciant, et ad cœléstia semper aspírent. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint Thomas d'Aquin, le 7 Mars.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Thoma, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui Ecclésiam tuam, beáti Thomæ Confessóris tui mirâ erudi-

tióne claríficas, et sanctâ operatióne fœcúndas: da nobis, quæsumus, et quæ dócuit, intelléctu conspícere, et quæ egit, imitatióne complére. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des Quarante Martyrs, le 10 Mars.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti: et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui glorиósos Mártyres fortes in sua confessióne cognóvimus, pios apud te in nostra intercessióne sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Grégoire, Pape et Docteur de l'Eglise, le 12 Mars.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Gregóri, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas,

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui ánimæ fámuli tui Gregórii ætérnæ beatitúdinis præmia contulísti:

concéde propítius, ut qui peccatórum nostrórum póndere prémimur, ejus apud te précibus sublevémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Joseph, Confesseur, le 19 Mars.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

SAnctíssimæ genitrícis tuæ sponsi, quæsumus, Dómine, méritis adjuvémur; ut quod possibílitas nostra non óbtinet, ejus nobis intercessióne donétur. Qui vivis et regnas, etc.

*Pour le jour de S. Joachim, Confesseur, père de la glorieuse Vierge Marie, le 20 Mars.*

*Ant.* Laudémus virum gloriósum in generatióne sua, quia benedictiónem ómnium géntium dedit illi Dóminus, et testaméntum suum confirmávit super caput ejus.

℣. Potens in terra erit semen ejus.

℟. Generátio rectórum benedicétur.

OREMUS.

DEus, qui præ ómnibus Sanctis tuis beátum Jóachim Genítricis Fílii tui patrem esse voluísti : concéde, quæsumus, ut cujus festa venerámur, ejus quoque perpétua patrocínia sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Bénoît, Abbé, le 21 Mars.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

INtercéssio nos, quæsumus, Dómine, beáti Benedícti Abbatis comméndet : ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de l'Annonciation de Notre-Dame, le 25 Mars.*

*Ant.* Gábriel Angelus locútus est Máriæ, dicens : Ave, grátiâ plena, Dóminus tecum : benedícta tu in muliéribus.

*Si cette Fête se rencontre après Pâques, l'on ajoute à la fin de l'Antienne et du Verset,* Allel. *comme il se fait de même en toutes*

*les autres Fêtes, depuis l'Octave de Pâques jusqu'à la Pentecôte.*

℣. Angelus Dómini nuntiávit Máriæ.

℟. Et concépit de Spíritu Sancto.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Máriæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Genítricem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Dóminum, etc.

## FÊTES D'AVRIL.

### *Pour le jour de Saint François de Paule, Confesseur, le 2 Avril.*

*Ant.* Similábo eum viro sapiénti, qui ædificávit domum suam supra petram.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

DEus humílium celsitúdo, qui beátum Francíscum Confessórem, Sanctórum tuórum glóriâ sublimásti : tríbue, quæsu-

mus, ut ejus méritis et imitatióne promíssa humílibus præmia felíciter consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Léon, Pape et Confesseur, le 11 Avril.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, terréna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

EXaúdi, quæsumus, Dómine, preces nostras, quas in beáti Leónis Confessóris tui atque Pontíficis solemnitáte deférimus: et qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercedéntibus méritis ab ómnibus nos absolve peccátis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Herménégilde, Martyr, le 13 Avril.*

*Ant.* Iste sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit: fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glóriâ et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super opéra mánuum tuárum.

OREMUS

OREMUS.

DEus, qui beátum Hermenegíldum Mártyrem tuum cœlésti regno terrénum postpónere docuísti : da, quæsumus, nobis ejus exémplo cadúca despícere atque ætérna sectári. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des Saints Martyrs et Evêques Soter et Caïus, le 12 Avril.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt sécuti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætábuntur in cubílibus suis.

OREMUS.

BEatórum Mártyrum paritérque Pontíficum Sotéris et Cáii, nos, quæsumus, Dómine, festa tueántur, et eórum comméndet orátio veneránda. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint George, Martyr, le 23 Avril.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, abnéget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sícut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Géorgii Mártyris tui méritis et intercessióne lætíficas : concéde propítius, ut qui tua per eum benefícia póscimus, dono tuæ grátiæ consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Marc, Evangéliste, le 25 Avril.*

*Ant.* Sancti et Justi, in Dómino gaudéte, Allelúia : Vos elégit Deus in hæreditátem sibi, Allelúia.

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, Allel.

℟. Mors Sanctórum ejus, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui beátum Marcum Evangelístam tuum, Evangélicæ prædicatiónis grátiâ sublimásti : tríbue, quæsumus, ejus nos semper et eruditióne profícere, et oratióne deféndi. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des SS. Clet et Marcellin, Papes et Martyrs, le 26 Avril.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória, Allel.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis, Allel.

OREMUS.

BEatórum Mártyrum, paritérque Pontíficum Cleti et Marcellíni, nos, Dómine, fóveat pretiósa conféssio, et pia júgiter intercéssio tueátur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Pierre, Martyr, le 29 Avril.*

*Ant.* Sancti et Justi, in Dómino gaudéte, Allelúia : vos elégit Deus in hæreditátem sibi, Allelúia.

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, Allel.

℟. Mors Sanctórum ejus, Allelúia.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut beáti Petri Mártyris tui fidem cóngruâ devotióne sectémur, qui pro ejúsdem fídei dilatatióne martyrii palmam méruit obtinére. Per Dóminum, etc.

---

## FÊTES DE MAI.

*Pour le jour de S. Jacques et de S. Philippe, Apôtres, le premier de Mai.*

*Ant.* Si manséritis in me, et verba mea in vobis mánserint, quodcúnque petiéritis, fiet vobis, Allelúia, Allelúia.

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, Allel.

℟. Mors Sanctórum ejus, Allelúia.

O R E M U S.

DEus, qui nos ánnuâ Apostolórum tuórum Philíppi et Jacóbi solemnitáte lætíficas : præsta, quæsumus, ut quorum gaudémus méritis, instruámur exémplis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Athanase, Evêque et Confesseur, le 2 Mai.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Athanási, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas, Allelúia.

℟. Et osténdit illi regnum Dei, Allelúia.

O R E M U S.

EXáudi, quæsumus, Dómine, preces nostras, quas in beáti Athanásii Confessóris tui atque Pontíficis solemnitáte deférimus : et qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercedéntibus méritis ab ómnibus nos absólve peccátis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Sainte-Croix, le 3 Mai.*

*Ant.* Crucem sanctam súbiit, qui inférnum confrégit ; accínctus est poténtiâ, surrexit die tértiâ, Allelúia.

℣. Hoc signum Crucis erit in cœlo, Al.

℟. Cùm Dóminus ad judicándum vénerit, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui in præclára satutíferæ Crucis inventióne, passiónis tuæ mirácula suscitásti : concéde, ut vitális ligni prétio ætérnæ vitæ suffrágia consequámur. Qui vivis et régnas, etc.

*Pour le jour de S. Pie V, Pape, de l'Ordre de S. Dominique, le 5 Mai.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et virtútum ópifex, pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum, Allelúia.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum, Allelúia.

℟. Stólam glóriæ índuit eum, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui ad conteréndos Ecclésiæ tuæ hóstes, et ad divínum cultum reparándum, sanctum Pium Quintum Pontíficem máximum elígere dignátus es; fac nos ípsius défendi præsídiis, et ita tuis inhærére obséquiis, ut ómnium hóstium superátis insídiis, perpétuâ pace lætémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Jean Porte-Latine le 6 Mai.*

*Ant.* In fervéntis ólei dólium missus beátus Joánnes Apóstolus, divínâ se protegénte grátiâ, illæsus exívit, Allelúia.

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, Allel.

℟. Mors Sanctórum ejus, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui cónspicis, quia nos úndique mala nostra pertúrbant: præsta, quæsumus, ut beáti Joánnis Apóstoli tui et Evangelístæ intercessio gloriósa nos protégat. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Stanislas, Evêque et Martyr, le 7 Mai.*

*Ant.* Sancti et justi, in Dómino gaudéte, Allelúia: Vos elégit Deus in hæreditátem sibi, Allelúia.

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, Allel.

℟. Mors Sanctórum ejus, Allelúia.

OREMUS.

DEus, pro cujus honóre gloriósus Póntífex Stanisláus gládiis impiórum occúbuit: præsta, quæsumus, ut omnes qui ejus implórant auxílium, petitiónis suæ salutárem consequántur effectum. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de l'apparition de S. Michel Archange, le 8 Mai.*

*Ant.* Princeps gloriosíssime, Michaël Archángele, esto memor nostrî : hic et ubique semper precáre pro nobis Fílium Dei, Allelúia.

℣. In conspéctu Angelórum psallam tibi, Deus meus, Allelúia.

℟. Adorábo ad templum sanctum tuum, et confitébor nómini tuo, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui miro órdine, Angelórum ministéria, hominúmque dispénsas: concéde propítius, ut quibus tibi ministrántibus in cœlo semper assístitur, ab his in terra vita nostra muniátur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Grégoire de Nazianze, Evêque et Confesseur, le 9 Mai.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Gregóri, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui pópulo tuo ætérnæ salútis beátum Gregórium minístrum tri-

buísti : præsta, quæsumus, ut quem Doctórem vitæ habuímus in terris, intercessórem habére mereámur in cœlis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour des Saints Martyrs Nérée, Achille, Domitille et Pancrace, le 12 Mai.*

*Ant.* Lux perpétua lucébit Sanctis suis, Dómine, et ætérnitas témporum, Allelúia.

℣. Sancti et justi in Dómino gaudéte, Allelúia.

℟. Vos elégit Deus in hæreditátem sibi, Allelúia,

OREMUS.

SEmper nos, Dómine, Mártyrum tuórum Nérei, Achíllei, Domitíllæ, atque Pancrátii, fóveat, quæsumus, beáta solémnitas, et tuo dignos reddat obséquio. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Venant, Martyr, le 18 Mai.*

*Ant.* Iste Sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit : fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glória et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

OREMUS.

DEus, qui hunc diem beáti Venántii Mártyris tui triúmpho consecrásti : exáudi preces pópuli tui, et præsta, ut qui ejus mérita venerámur, fídei constántiam imitémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Magdeleine de Pazzis, Vierge, le 25 Mai.*

*Ant.* Veni, sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

OREMUS.

DEus virginitátis amátor, qui beátam Maríam Magdalénam Vírginem, tuo amóre succénsam, cœléstibus donis decorásti : da, ut quam festíva celebritáte venerámur, puritáte et charitáte imitémur. Per Dóminum nostrum, etc.

## FÊTES DE JUIN.

*Pour le jour de S. Norbert, Evêque et Confesseur, le 6 Juin.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et virtútum ópifex, pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

DEus, qui beátum Norbértum Confessórem tuum atque Pontíficem, verbi tui præcónem exímium effecísti, et per eum Ecclésiam tuam novâ próle fœcundásti : præsta, quæsumus, ut ejusdem suffragántibus méritis, quod ore simul et ópere dócuit, te adjuvánte exercére valéamus. Per Dóminum, etc.

*Ce même jour on fait commémoraison de Saint Claude*, double *à Lyon.*

*Ant.* O desolatórum consolátor, captivórum liberátor, resurréctio mortuórum, lumen cæcórum, audítus surdórum, mutórum elóquium, tutor naufragántium, impo-

téntium et languidórum sanátor, medicínæ refúgium, via errántium. Beáte Claudi, benígne Confessor Dei, ora Deum pro nobis, qui te tot et tantis illustrávit miráculis : nam pro tua sanctíssima vita, quam tam piè ac devótè gessísti in hac valle misériæ, vana hujus seculi spernéndo, et cœléstia sectándo, pro tuis méritis ad supérna polórum gáudia teípsum collocávit, et innúmeris decorávit miráculis. Beáte Claudi, glorióse Conféssor Dei, implora apud Deum pro nobis auxílium.

℣. Ora pro nobis, beáte Claudi,

℟. Ut digni effieiámur promissiónibus Christi.

OREMUS.

DEus, qui beáto Cláudio, glorióso Confessóri tuo atque Pontífici, tantam grátiam et beatitudínem conférre dignátus es, quòd per illam ferè totus orbis Christianórum pro suis necessitátibus ad ipsum áffluit, et quicúnque eum piè ac devótè quæsíerit, desolátus non remanébit : da nobis, quæsumus, Dómine, justa desidéria postuláre; ut quæ justè postulavérimus, suis méritis et intercessióne apud te júgiter valeámus obtinére. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Barnabé, Apôtre, le 11 Juin.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte cum antíquo serpénte : et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Barnábæ Apóstoli tui, méritis et intercessióne lætíficas: concéde propítius, ut qui tua per eum benefícia póscimus, dono tuæ grátiæ consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Antoine de Padoue, Confesseur, le 13 Mai.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

ECclésiam tuam, Deus, beáti Antónii Confessóris tui solémnitas votíva lætíficet; ut spirituálibus semper muniátur auxíliis, et gáudiis pérfrui mereátur ætérnis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Basile-le-Grand, Evêque et Confesseur, le 14 Juin.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Basíli, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

EXáudi, quæsumus, Dómine, preces nostras, quas in beáti Basílii Confessóris tui atque Pontíficis solemnitáte deférimus: et qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercessiónibus ab ómnibus nos absólve peccátis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. François Régis, le 16 Juin.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus qui, ad plúrimos pro salúte animárum perferéndos labóres sanctum Joánnem Francíscum Confessórem tuum mirábili charitáte, et invícta patiéntiâ decorásti: concede propítius, ut ejus exemplis instructi,

et intercessiónibus adjúti, ætérnæ vitæ præmia consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Nativité de S. Jean-Baptiste, le 24 Juin.*

*Ant.* Puer, qui natus est nobis, plus quàm prophéta est : hic est enim de quo Salvátor ait : Inter natos muliérum non surréxit major Joánne Baptístâ.

℣. Iste puer magnus coram Dómino.

℟. Nam et manus ejus cum ipso est.

OREMUS.

DEus, qui præséntem diem honorábilem nobis in beáti Joánnis Nativitáte fecísti : da pópulis tuis spirituálium grátiam gaudiórum, et ómnium fidélium mentes dírige in viam salútis ætérnæ. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Jean et S. Paul, Martyrs, le 26 Juin.*

*Ant.* Isti sunt duæ olívæ, et duo candelábra lucéntia antè Dóminum : habent potestátem cláudere cœlum núbibus, et aperíre portas ejus : quia linguæ eórum claves cœli factæ sunt.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

QUæsumus, omnípotens Deus, ut nos gemináta lætítia hodiérnæ festivitátis excípiàt, quæ de beatórum Joánnis et Pauli glorificatióne procédit : quos éadem fides et pássio verè fecit esse germános. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Léon Pape, le 28 Juin.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, terréna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui beátum Leónem Pontíficem, Sanctórum tuórum méritis coæquásti: concéde propítius, ut qui commemoratiónis ejus festa percólimus, vitæ quoque imitémur exémpla. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Pierre et S. Paul, Apôtres, le 29 Juin.*

*Ant.* Hódie Simon Petrus ascéndit crucis patíbulum, Allelúia : hódie claviculárius regni gaudens migrávit ad Christum : hódie Paulus Apóstolus, lumen orbis terræ, inclináto cápite pro Christi nómine Martyrio coronátus est, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

DEus, qui hodiérnam diem Apostolórum tuórum Petri et Pauli Mártyrio consecrásti : da Ecclésiæ tuæ, eórum in ómnibus sequi præcéptum, per quos religiónis sumpsit exórdium. Per Dóm. etc.

*Pour le jour de la commémoraison de S. Paul, le 30 Juin.*

*Ant.* Sancte Paule, Apóstole, prædicátor veritátis, et Doctor géntium, intercéde pro nobis ad Deum, qui te elégit.

℣. Tu es vas electiónis, Sancte Paule, Apóstole.

℟. Prædicátor veritátis in univérso mundo.

OREMUS.

DEus, qui multitúdinem géntium beáti Pauli Apóstoli, prædicatióne docuísti: da nobis, quæsumus, ut cujus natalítia cólimus, ejus apud te patrocínia sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Le même jour on fait commémoraison de Saint Pierre.*

*Ant.* Tu es Pastor óvium, Princeps Apóstolórum ; tibi tráditæ sunt claves regni cœlórum.

℣. Tu

℣. Tu es Petrus.

℟. Et super hanc petram ædificábo Ecclésiam meam.

## OREMUS.

DEus, qui beáto Petro Apóstolo tuo, collátis clávibus regni cœléstis, ligándi atque solvéndi pontifícium tradidísti : concéde, ut intercessiónis ejus auxílio, à peccatórum nostrórum néxibus liberémur. Qui vivis et regnas, etc.

*Pour les jours qui sont dans l'Octave de S. Pierre et S. Paul.*

*Ant.* Petrus Apóstolus, et Paulus Doctor Géntium, ipsi nos docuérunt legem tuam, Dómine.

℣. Constítues eos príncipes super omnem terram.

℟ Mémores erunt nóminis tui, Dómine.

## OREMUS.

DEus qui hodiérnam diem Apostolórum tuórum Petri et Pauli martyrio consecrásti : da Ecclésiæ tuæ, eórum in ómnibus sequi præcéptum, per quos religiónis sumpsit exórdium. Per Dóminum, etc.

# FÊTES DE JUILLET.

*Pour le jour de la Visitation de Notre-Dame, le 2 Juillet.*

*Ant.* Visitátio tua, Dei génitrix Virgo, gáudium annuntiávit univérso mundo : ex te enim ortus est Sol justítiæ, Christus Deus noster : qui solvens maledictiónem, dedit benedictiónem : et confúndens mortem, donávit nobis vitam sempitérnam.

℣. Visitátio est hódie sanctæ Maríæ Vírginis.

℟. Cujus vita ínclyta cunctas illústrat Ecclésias.

OREMUS.

FAmulis tuis, quæsumus, Dómine, cœléstis grátiæ munus impertíre : ut quibus beátæ Vírginis partus éxtitit salútis exórdium, Visitatiónis ejus votíva solémnitas, pacis tríbuat increméntum. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de l'Octave de S. Pierre et S. Paul, le 6 Juillet.*

*Ant.* Petrus Apóstolus, et Paulus Doctor Géntium, ipsi nos docuérunt legem tuam, Dómine.

℣. Constítues eos príncipes super omnem terram.

℟. Mémores erunt nóminis tui, Dómine.

OREMUS.

DEus, cujus déxtera beátum Petrum ambulántem in flúctibus, ne mergerétur eréxit : et coapóstolum ejus Paulum, tértiò naufragántem, de profúndo pélagi liberávit ; exáudi nos propítius, et concéde, ut ambórum méritis, æternitátis glóriam consequámur. Qui vivis et regnas, etc.

*Pour le jour des sept Frères Martyrs, de Sainte Ruffine et de Sainte Seconde, Vierges et Martyres, le* 10 *Juillet.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui gloriósos Mártyres fortes in sua confessióne cognóvimus, pios apud te in nostra intercessióne sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Anaclet, Pape et Martyr, le 13 Juillet.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, ábneget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos, beáti Anacléti Mártyris tui atque Pontíficis ánnuâ solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, de ejúsdem étiam protectióne gaudeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Bonaventure, Evêque et Confesseur, le 14 Juillet.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et virtútum ópifex, pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stólam glóriæ induit eum.

OREMUS.

EXáudi, quæsumus, Dómine, preces nostras; quas in beáti Bonaventúræ Confessóris tui atque Pontíficis solemnitáte

deférimus : et qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercedéntibus méritis ab ómnibus nos absólve peccátis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Marguerite, Vierge et Martyre, le 20 Juillet.*

*Ant.* Veni, sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

ORÉMUS.

INdulgéntiam nobis, quæsumus, Dómine, beáta Margaríta, Virgo et Martyr, implóret : quæ tibi grata semper éxtitit, et mérito castitátis, et tuæ professióne virtútis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Marie-Magdeleine, le 22 Juillet.*

*Ant.* Múlier quæ erat in civitáte peccátrix, áttulit alabástrum unguénti, et stans retrò secùs pedes Dómini, lácrymis cœpit rigáre pedes ejus, et capíllis cápitis sui tergébat.

℣. Elégit eam Deus, et præelégit eam.

℟. In tabernáculo suo habitáre facit eam.

OREMUS.

BEátæ Maríæ Magdalénæ, quæsumus, Dómine, suffrágiis adjuvémur: cujus précibus exorátus, quatriduánum fratrem Lázarum vivum ab ínferis ressuscitásti. Qui vivis et regnas, etc.

*Pour le jour de S. Apollinaire, Evêque et Martyr, le 23 Juillet.*

*Ant.* Iste Sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit: fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glória et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

OREMUS.

DEus, Fidélium remunerátor animárum, qui hunc diem beáti Apollináris, Sacerdótis tui, martyrio consecrásti: tribue nobis, quæsumus, fámulis tuis, ut cujus venerándam celebrámus festivitátem, précibus ejus indulgéntiam consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Jacques, Apôtre, le 25 Juillet.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte

cum antíquo serpénte : et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

ESto, Dómine, plebi tuæ sanctificátor et custos; ut Apóstoli tui Jacóbi munita præsídiis, et conversatióne tibi placeat, et securâ mente desérviat. Per Dóminum, etc.

*Ce même jour on fait Commémoraison de Saint Chrystophe, Martyr.*

*Ant.* Iste sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit : fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glóriâ et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut intercedénte beáto Christóphoro Mártyre tuo, et à cunctis adversitátibus liberémur in córpore, et à pravis cogitatiónibus mundémur in mente. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Anne, Mère de Notre-Dame, le 26 Juillet.*

*Ant* Veni, sponsa Christi, áccipe corónam

quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ et pulchritudine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

OREMUS.

DEus, qui beátæ Annæ tantam grátiam conférre dignátus es, et Genítricis unigéniti Fílii tui Mater éffici mererétur : concéde propítius, ut cujus solémnia celebrámus, ejus apud te patrocíniis adjuvémur. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le jour des Saints Martyrs, Nazaire, Celse, Victor, et Innocent Pape et Confesseur, le 28 Juillet.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

SAnctórum tuórum, nos, Dómine, Nazárii, Celsi, Victóris, et Innocéntii conféssio beáta commúniat, et fragilitáti nostræ subsídium dignánter exóret. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Marthe, Vierge, le 25 Juillet.*

*Ant.* Veni, sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ, et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

ORÉMUS.

EXáudi nos, Deus salutáris noster, ut sicut de beátæ Marthæ Vírginis tuæ festivitáte gaudémus, ita piæ devotiónis erudiámur affféctu. Per Dóminum, etc.

---

## FÊTES D'AOUT.

*Pour le jour de S. Pierre aux liens, le* 1 *Août.*

*Ant.* Solve jubénte Deo, terrárum, Petre, caténas; qui facis ut páteant cœléstia regna beátis.

℣. Tu es Petrus.

℟. Et super hanc petram ædificábo Ecclésiam meam.

OREMUS.

DEus, qui beátum Petrum Apóstolum à vínculis absolútum, illæsum abíre fecísti : nostrórum, quæsumus, absólve víncula peccatórum, et ómnia mala à nobis propitiátus exclúde. Per Dóminum, etc.

*Ce même jour on fait commémoraison de Saint Paul.*

*Ant.* Sancte Paule, Apóstole, prædicátor veritátis, et Doctor géntium, intercéde pro nobis ad Deum, qui te elégit.

℣. Tu es vas electiónis, Sancte Paule, Apóstole.

℟. Prædicátor veritátis in univérso mundo.

OREMUS.

DEus, qui multitúdinem géntium beáti Pauli Apóstoli, prædicatióne docuísti: da nobis, quæsumus, ut cujus commemoratiónem cólimus, ejus apud te patrocínia sentiámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour que fut trouvé le Corps de S. Etienne, le 3 Août.*

*Ant.* Stéphanus autem plenus grátiâ et fortitúdine, faciébat signa magna in pópulo.

℣. Sepeliérunt Stéphanum viri timoráti.

℟. Et fecérunt planctum magnum super eum.

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine, imitári quod cólimus, ut discámus et inimícos dilígere; quia ejus inventiónem celebrámus, qui novit étiam pro persecutóribus exoráre Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Dominique, Confesseur, le 4 Août.*

*Ant.* Similábo eum viro sapiénti, qui ædificávit domum suam supra petram.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

DEus, qui Ecclésiam tuam beáti Domínici Confessóris tui illumináre dignátus es méritis et doctrínis : concéde, ut ejus intercessióne, temporálibus non destituátur auxíliis, et spirituálibus semper profíciat increméntis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Notre-Dame des Neiges, le 5 Août.*

*Ant.* Sancta María, succúrre míseris, juva pusillánimes, refóve flébiles, ora pro pópulo, intervéni pro Clero, intercéde pro devóto fœmíneo sexu, séntiant omnes tuum juvámen, quicúmque célebrant tuam sanctam festivitátem.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

OREMUS.

COncéde nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis et córporis sanitáte gaudére : et gloriósâ beátæ

Maríæ semper Vírginis intercessióne, à præsénti liberári tristítia, et ætérnâ perfrui lætítia. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Transfiguration de Notre-Seigneur, le 6 Août.*

*Ant.* Christus Jesus, splendor Patris, et figúra substántiæ ejus, portans ómnia verbo virtútis suæ, purgatiónem peccatórum fáciens, in monte excélso gloriósus apparére hódie dignátus est.

℣. Gloriósus apparuísti in conspéctu Dómini.

℟. Proptérea decórem induit te Dóminus.

OREMUS.

DEus, qui fídei Sacraménta in Unigéniti tui gloriósa transfiguratióne Patrum testimónio roborásti: et ad optiónem filiórum perféctam, voce delápsâ in nube lúcida mirabíliter præsignásti: concéde propítius, ut ípsius Regis glóriæ nos cohærédes effícias, et ejúsdem glóriæ tríbuas esse consórtes. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le jour des Saints Martyrs Cyriaque, Large et Smaragde, le 8 Août.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti: et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudé-

runt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

DEus, qui nos ánnuâ sanctórum Mártyrum tuórum Cyriáci, Largi et Smarágdi solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut quorum natalítia cólimus, virtútem quoque passiónis imitémur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Laurent, le* 10 *Août.*

*Ant.* Beátus Lauréntius, dúm in cratícula superpósitus urerétur, ad impiíssimum tyránnum dixit : Assátum est jam, versa, et mánduca : nam facultátes Ecclésiæ quas requíris, in cœléstes thesáuros manus páuperum deportavérunt.

℣. Levíta Lauréntius bonum opus operátus est.

℟. Qui per signum crucis cœcos illumináv it.

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, omnípotens Deus, vitiórum nostrórum flammas extínguere, qui beáto Lauréntio tribuísti tormen-

tórum suórum incéndia superáre. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de l'Assomption de Notre-Dame, le 15 Août.*

*Ant.* Hódie María Virgo cœlos ascéndit: gaudéte, quia cum Christo regnat in ætérnum.

℣. Exaltáta est, sancta Dei Génitrix.

℟. Super choros Angelórum ad cœléstia regna.

OREMUS.

FAmulórum tuórum, quæsumus, Dómine, delíctis ignósce, ut, qui tibi placére de áctibus nostris non valémus, Genitrícis Fílii tui Dómini nostri intercessióne salvémur. Per eúndem, etc.

*Pour le jour de S. Hyacinthe, Confesseur, le 16 Août.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Hyacínthi Confessóris tui ánnuâ solemnitáte lætíficas: concéde propítius, ut cujus natalítia cóli-

mus, étiam actiónes imitémur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de Saint Roch, qui est le même jour.*

*Ant.* O beáte Conféssor Roche, ô quàm magna apud Deum sunt mérita tua, quibus crédimus nos à morbo epidímiæ posse liberári, et aeris nobis tempériem concédi!

℟. Rochum Christi Confessórem exorátum facimus.

℟. Et preces ad Patrem nostrum dirígimus.

ORE MUS.

OMnípotens et miséricors Deus, qui méritis et précibus beatíssimi Rochi Confessóris tui quondam pestem hóminum generálem gratiósè revocásti : præsta supplícibus tuis, ut qui pro símili peste revocánda ad tuam confúgiunt fidúciam, ipsíus gloriósi Confessóris precámine, ab ipsa infirmitáte, et ab omni perturbatióne libérentur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Bernard, Abbé, le 20 Août.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

INtercéssio nos, quæsumus, Dómine, beáti Bernárdi Abbátis comméndet: ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum, etc.

*Le jour de l'Octave de l'Assomption, qui est le 22, on dit comme le jour de la Fête.*

*Pour le jour de S. Barthelemi, Apôtre, le 24. Août, et à Rome le 25.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte cum antíquo serpénte: et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui hujus diéi venerándam sanctamque lætítiam, in beáti Apóstoli tui Bartholómæi festivitáte tribuísti: da Ecclésiæ tuæ, quæsumus, et amáre quod crédidit, et prædicáre quod dócuit. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Louis, le 25 Août.*

*Ant.* Similábo eum viro sapiénti, qui ædificávit domum suam supra petram.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

OREMUS.

DEus, qui beátum Ludovícum Confessórem tuum de terréno regno ad cœléstis regni glóriam transtulísti : ejus quæsumus méritis et intercessióne, Regis regum Jesu Christi Fílii tui fácias nos esse consórtes. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Augustin, Evêque, Confesseur et Docteur de l'Eglise, le 28 Août.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Augustíne, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

ADésto supplicatiónibus nostris, omnípotens Deus : et quibus fidúciam sperándæ pietátis indúlges, intercedénte beáto Augustíno Confessóre tuo atque Pontífice, consuétæ misericórdiæ tríbue benígnus effectum. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Décollation de S. Jean-Baptiste, le 29 Août.*

*Ant.* Misit rex incrédulus minístros detestábiles, et amputári jussit caput Joánnis Baptístæ.

℣. Justus ut palma florébit.
℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

O R E M U S.

SAncti Joánnis Baptístæ, præcursóris et Mártyris tui, quæsumus, Dómine, veneránda festívitas, salutáris auxílii nobis præstet effèctum. Qui vivis, etc.

*Pour le jour de Saint Raymond Nonnat, Confesseur, le 31 Août.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.
℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.
℟. Et osténdit illi regnum Dei.

O R E M U S.

DEus, qui in liberándis fidélibus tuis ab impiórum captivitáte, beátum Raymundum Nonnatum Confessórem tuum mirábilem effecísti, ejus nobis intercessióne concéde, ut à peccatórum vínculis absolúti, quæ tibi sunt plácita, líberis méntibus exequámur. Per Dóminum, etc.

# FÊTES DE SEPTEMBRE.

*Pour le jour de la Nativité de Notre-Dame, le 8 Septembre.*

*Ant.* Natívitas tua, Dei génitrix Virgo, gáudium annuntiávit univérso mundo : ex te enim ortus est Sol justítiæ, Christus Deus noster : qui solvens maledictiónem, dedit benedictiónem : et confúndens mortem, donávit nobis vitam sempitérnam.

℣. Natívitas est hódie sanctæ Maríæ Vírginis.

℟. Cujus vita ínclyta cunctas illustrat Ecclésias.

OREMUS.

FAmulis tuis, quæsumus, Dómine, cœléstis grátiæ munus impertíre : ut, quibus beátæ Vírginis partus éxtitit salútis exórdium, Nativitátis ejus votíva solémnitas, pacis tríbuat increméntum. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Nicolas Tolentin, Confesseur, le 10 Septembre.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.
℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris, quas in beáti Nicólai Confessóris tui solemnitáte deférimus : ut qui nostræ justítiæ fidúciam non habémus, ejus qui tibi plácuit, précibus adjuvémur. Per Dóm., etc.

*Pour le jour de l'Exaltation de la Sainte-Croix, le 14 Septembre.*

*Ant.* O Crux benedícta, quæ sola fuísti digna portáre Regem Cœlórum, et Dóminum, Allelúia.

℣. Hoc signum Crucis erit in cœlo.
℟. Cùm Dóminus ad judicándum vénerit.

OREMUS.

DEus, qui nos hodiérnâ die Exaltatiónis sanctæ Crucis ánnuâ solemnitáte lætíficas : præsta, quæsumus, ut cujus mystérium in terra cognóvimus, ejus Redemptiónis præmia in cœlo mereámur. Per eúndem, etc.

*Pour le jour des SS. Corneille et Cyprien, Martyrs, le 16 Septembre.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Et lætabúntur in cubílibus suis.

BEatórum Mártyrum, paritérque Pontíficum, Cornélii et Cypriáni, nos quæsumus, Dómine, festa tueántur: et eórum comméndet orátio veneránda. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Thomas de Villeneuve, Evêque et Confesseur, le 18 Septembre.*

*Ant.* Dispérsit, dedit paupéribus: justítia ejus manet in seculum seculi.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stólam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

DEus, qui beátum Thomam Pontíficem insígnis in páuperes misericórdiæ virtúte decorásti: quæsumus, ut ejus intercessióne in omnes, qui te deprecántur, divítias misericórdiæ tuæ benígnus effúndas. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Janvier, Evêque et Martyr, et des autres Martyrs ses Compagnons, le 19 Septembre.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti: et quia pro

ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

DEus, qui nos ánnuâ sanctórum Martyrum tuórum Januárii et sociórum ejus solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut quorum gaudémus méritis, accendámur exémplis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Eustache et ses Compagnons, Martyrs, le 20 Septembre.*

*Ant.* Gaudént in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

DEus, qui nos concédis sanctórum Mártyrum tuórum Eustáchii et sociórum ejus natalítia cólere : da nobis in ætérna beatitúdine de eórum societáte gaudére. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Mathieu, Apôtre, le 21 Septembre.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte

cum antíquo serpénte : et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

BEáti Apóstoli et Evangelístæ Matthæi, Dómine, précibus adjuvémur : ut quod possibílitas nostra non óbtinet, ejus intercessióne donétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Lin, Pape et Martyr, le 23 Septembre.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, ábneget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti Lini Mártyris tui atque Pontíficis ánnuâ solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, de ejúsdem étiam protectióne gaudeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Côme et S. Damien, Martyrs, le 27 Septembre.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum,

qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui Sanctórum Mártyrum tuórum Cosmæ et Damiáni natalítia cólimus : à cunctis malis imminéntibus, eórum intercessiónibus liberémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Venceslas, Duc et Martyr, le 28 Septembre.*

*Ant.* Iste Sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit : fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glóriâ et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

OREMUS.

DEus, qui beátum Vencéslaum per Martyrii palmam à terréno Principátu ad cœléstem glóriam transtulísti : ejus précibus nos ab omni adversitáte custódi, et ejúsdem tríbue gaudére consórtio. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Michel Archange, le 29 Septembre.*

*Ant.* Princeps gloriosíssime, Micháel Archángele, esto memor nostrî: hìc et ubìque semper precáre pro nobis Fílium Dei, Allel.

℣. In conspéctu Angelórum psallam tibi, Deus meus.

℟. Adorábo ad templum sanctum tuum, et confitébor nómini tuo, Dómine.

OREMUS.

DEus, qui miro órdine, Angelórum ministéria, hóminumque dispénsas; concéde propítius; ut à quibus tibi ministrantibus in cœlo semper assístitur, ab his in terra vita nostra muniámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Jérôme, Confesseur et Docteur, le 30 Septembre.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte Hierónime, divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui Ecclésiæ tuæ, in exponéndis sacris scriptúris beátum Hierónymum

Confessórem tuum, Doctórem máximum providére dignátus es: præsta, quæsumus, ut ejus suffragántibus méritis, quod ore simul et ópere dócuit, te adjuvánte, exercére valeámus. Per Dóminum, etc.

---

# FÊTES D'OCTOBRE.

## *Pour le jour de Saint François, Confesseur, le 4 Octobre.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

ORÉMUS.

DEus, qui Ecclésiam tuam, beáti Francisci méritis, fœtu novæ prolis amplíficas: tríbue nobis, ex ejus imitatióne terréna despícere, et cœléstium donórum semper participatióne gaudére. Per Dóminum, etc.

## *Pour le jour de S. Bruno, Confesseur, le 6 Octobre.*

*Ant.* Similábo eum viro sapiénti, qui ædificávit domum suam supra petram.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

OREMUS.

SAncti Brunónis Confessóris tui, quæsumus, Dómine, intercessiónibus adjuvémur : ut qui Majestátem tuam gráviter delinquéndo offéndimus, ejus méritis et précibus, nostrórum delictórum véniam consequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Brigitte, Veuve, le 8 Octobre.*

*Ant.* Veni sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

OREMUS.

DOmine Deus noster, qui beátæ Brigíttæ, per Fílium tuum unigénitum secréta cœléstia revelásti : ípsius piâ intercessióne da nobis fámulis tuis in revelatióne sempitérnæ glóriæ tuæ gaudére lætántes. Per eúndem Dóminum, etc.

*Pour le jour des SS. Denys, Rustique et Eleuthère, Martyrs, le 9 Octobre.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum,

qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

DEus, qui hodiérnâ die beátum Dionysium Mártyrem tuum atque Pontíficem virtúte constántiæ in passióne roborásti, quique illi ad prædicándum géntibus glóriam tuam, Rústicum et Eleuthérium sociáre dignátus es : tríbue nobis, quæsumus, eórum imitatióne, pro amóre tuo próspera mundi despícere, et nulla ejus advérsa formidáre. Per Dóminum, etc.

***Pour le jour de Saint Callixte, Pape et Martyr, le 14 Octobre.***

***Ant.*** Qui vult veníre post me, ábneget semetípsum ; et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos conspícis ex nostra infirmitáte defícere, ad amórem tuum nos misericórditer per Sanctórum tuórum exempla restáura. Per Dóminum, etc.

### *Pour le jour de Sainte Thérèse, Vierge, le 15 Octobre.*

*Ant.* Véni, Sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ, et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

OREMUS.

EXáudi nos, Deus salutáris noster, ut sicut de beátæ Therésiæ Vírginis tuæ festivitáte gaudémus; ita cœléstis ejus doctrinæ pábulo nutriámur, et piæ devotiónis erudiámur affféctu. Per Dóminum, etc.

### *Pour le jour de Saint Luc, Evangéliste, le 18 Octobre.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte cum antíquo serpénte: et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

INtervéniat pro nobis, quæsumus, Dómine, sanctus tuus Lucas Evangelísta, qui crucis mortificatiónem júgiter in suo córpore pro tui nóminis honóre portávit. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour de S. Pierre d'Alcantara, Confesseur, le 19 Octobre.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui beátum Petrum Confessórem tuum admirábilis pœniténtiæ, et altíssimæ contemplatiónis múnere illustráre dignátus es : da nobis, quæsumus, ut ejus suffragántibus méritis, carne mortificáti, facíliùs cœléstia capiámus. Per Dóm. etc.

*Pour le jour de S. Simon et S. Jude, Apôtres, le 28 Octobre.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte cum antíquo serpénte ; et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

OREMUS.

DEus, qui nos per beátos Apóstolos tuos Simónem et Judam, ad agnitiónem tui nóminis veníre tribuísti : da nobis eórum glóriam sempitérnam, et proficiéndo celebráre, et celebrándo profícere. Per Dóminum, etc.

# FÊTES DE NOVEMBRE.

## *Pour le jour de la Fête de tous les Saints, le 1 Novembre.*

*Ant.* O quàm gloriósum est regnum, in quo cum Christo gaudent omnes Sancti! amícti stolis albis sequuntur Agnum quocúmque íerit.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui nos ómnium Sanctórum tuórum mérita sub una tribuísti celebritáte venerári: quæsumus, ut desiderátam nobis tuæ propitiatiónis abundántiam multiplicátis intercessóribus largiáris. Per Dóminum, etc.

## *Pour le jour de la Dédicace de l'Eglise de Saint-Sauveur, le 9 Novembre.*

*Ant.* O quàm metuéndus est locus iste! verè non est hìc áliud, nisi domus Dei, et porta cœli.

℣. Dómum tuam, Dómine, decet sanctitúdo.

℟. In longitúdinem diérum.

OREMUS.

DEus, qui nobis per síngulos annos hujus sancti Templi tui consecratiónis réparas diem, et sacris semper mystériis repræséntas incólumes: exáudi preces pópuli tui, et præsta, ut quisquis hoc Templum benefícia petitúrus ingréditur, cuncta se impetrásse lætétur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Martin, Evêque et Confesseur, le 11 Novembre.*

*Ant.* O beatum Pontíficem, qui totis viscéribus diligébat Christum Regem, et non formidábat impérii principátum! O sanctíssima ánima, quam etsi gládius persecutóris non abstulit, palmam tamen Martyrii non amísit!

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui cónspicis, quia ex nulla nostra virtúte subsístimus: concéde propítius, ut intercessióne beáti Mártini Confessóris tui atque Pontíficis, contra ómnia advérsa muniámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Saint Martin, Pape et Martyr, le 12 Novembre.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, ábneget semetípsum,

semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos, beáti Martíni Mártyris tui atque Pontíficis, ánnuâ solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, de ejúsdem étiam protectióne gaudeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Grégoire Thaumaturge, Evêque et Confesseur, le 17 Novembre.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et virtútum ópifex, pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stólam glóriæ induit eum.

OREMUS.

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut beáti Gregórii Confessóris tui atque Pontíficis veneránda solémnitas, et devotiónem nobis áugeat, et salútem. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Dédicace de S. Pierre et S. Paul, le 18 Novembre.*

*Ant.* O quàm metuéndus est locus iste!

verè non est hìc áliud, nisi domus Dei, et porta cœli.

℣. Domum tuam, Dómine, decet sanctitúdo.

℟. In longitúdinem diérum.

OREMUS.

DEus, qui invisibíliter ómnia cóntines, et tamen pro salúte géneris humáni signa tuæ poténtiæ visibíliter osténdis: Templum hoc poténtiâ tuæ inhabitatiónis illústra, et concéde ut omnes qui huc deprecatúri convéniunt, ex quacúmque tribulatióne ad te clamáverint, consolatiónis tuæ benefícia consequántur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Présentation de la glorieuse Vierge Marie, le 21 Novembre.*

*Ant.* Beáta Dei génitrix María, Virgo perpétua, templum Dómini, sacrárium Spíritûs Sancti, sola sine exémplo placuísti Dómino nostro Jesu Christo, Allelúia.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

OREMUS.

DEus, qui beátam Máriam semper Vírginem Spíritûs Sancti habitáculum hodiérnâ die in templo præsentári voluísti: præsta, quæsumus, ut ejus intercessióne in

templo glóriæ tuæ præsentári mereámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Cécile, Vierge et Martyre, le 22 Novembre.*

*Ant.* Virgo glorióſa ſemper Evangélium Christi gerébat in péctore ſuo, et non diébus neque nóctibus, à collóquiis divínis et oratióne ceſſábat.

℣. Diffúſa eſt grátia in lábiis tuis.

℟. Proptérea benedíxit te Deus in ætérnum.

OREMUS.

DEus, qui nos ánnuâ beatæ Cæcíliæ Vírginis et Mártyris tuæ ſolemnitáte lætíficas : da, ut quam venerámur officio, étiam piæ converſatiónis ſequámur exemplo. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de S. Clément, Pape et Martyr, le 23 Novembre.*

*Ant.* Dedíſti, Dómine, habitáculum Mártyri tuo Cleménti in mari, in modum templi marmórei, Angélicis mánibus præparátum, iter præbens pópulo terræ, ut enárrent mirabília tua.

℣. Juſtus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

OREMUS.

DEus, qui nos ánnuâ beáti Cleméntis Mártyris tui atque Pontíficis solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, virtútem quoque passiónis imitémur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de Sainte Catherine, Vierge et Martyre, le 25 Novembre.*

*Ant.* Veni, Sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Diffusa est grátia in lábiis tuis.

℟. Proptérea benedíxit te Deus in ætérnum.

OREMUS.

DEus, qui dedísti legem Moysi in summitáte montis Sinái, et in eódem loco per sanctos Angelos tuos corpus beátæ Catharínæ Vírginis et Mártyris tuæ mirabíliter collocásti : præsta, quæsumus, ut ejus méritis et intercessióne, ad montem qui Christus est, perveníre valeámus. Per eúndem, etc.

*Pour le jour de S. Pierre, Evêque d'Alexandrie, et Martyr, le 26 Novembre.*

*Ant.* Iste Sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit : fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glóriâ et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

OREMUS.

INfirmitátem nostram réspice, omnípotens Deus; et quia pondus própriæ actiónis gravat, beáti Petri Mártyris tui atque Pontíficis, intercéssio gloriósa nos protégat. Per Dóminum, etc.

# ORAISONS COMMUNES DES SAINTS.

*Pour les veilles des Apôtres. Antienne.*

MAjórem charitátem nemo habet, ut ánimam suam ponat quis pro amícis suis.

℣. Constítues eos Príncipes super omnem terram.

℟. Mémores erunt nóminis tui, Dómine.

*Si c'est la veille d'un seul Apôtre, on dira l'Oraison suivante; et au lieu où est cette marque* N., *on mettra le nom de l'Apôtre duquel se fait la Fête.*

OREMUS.

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut beáti N. Apóstoli tui, quam prævénimus veneránda solémnitas, et devotiónem nobis áugeat et salútem. Per Dóminum, etc.

*Si c'est la veille de plusieurs Apôtres.*

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut nullis nos permittas perturbatiónibus cóncuti, quos in Apostólicæ confessiónis petrâ solidásti. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour des Fêtes des Apôtres.*

*Ant.* Tradent enim vos in concíliis, et in synagógis suis flagellábunt vos, et ante Reges et Præsides ducémini propter me, in testimónium illis, et géntibus.

℣. In omnem terram exívit sonus eórum.

℟. Et in fines orbis terræ verba eórum.

*Ou bien l'on dira la suivante.*

*Ant.* Estóte fortes in bello, et pugnáte cum antíquo serpénte : et accipiétis regnum ætérnum, Allelúia.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei.

℟. Et facta ejus intellexérunt.

*Depuis Pâques jusqu'à la Pentecôte, on dit :*

*Ant.* Lux perpétua lucébit Sanctis tuis, Dómine, et ætérnitas témporum, Allelúia.

℣. Sancti et Justi in Dómino, gaudéte, Allelúia.

℟. Vos elégit Deus in hæreditátem sibi, Allelúia.

*Ou bien l'on dira la suivante.*

*Ant.* Sancti et Justi, in Dómino gaudéte, Allelúia : vos elégit Deus in hæreditátem sibi, Allelúia.

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, Allel.

℟. Mors Sanctórum ejus, Allelúia.

*Les Oraisons comme dessus aux jours de leurs Fêtes.*

*Pour le jour de la Fête d'un Martyr.*

*Ant.* Iste Sanctus pro lege Dei sui certávit usque ad mortem, et à verbis impiórum non tímuit : fundátus enim erat supra firmam petram.

℣. Glória et honóre coronásti eum, Dómine.

℟. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

*Ou bien l'on dit celle-ci.*

*Ant.* Qui vult veníre post me, ábneget semetípsum, et tollat crucem suam, et sequátur me.

℣. Justus ut palma florébit.

℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

*Depuis Pâques jusqu'à la Pentecôte, on dit l'Antienne et le Verset comme dessus, au commun des Apôtres.*

*Pour le jour d'un Evêque et Martyr.*

OREMUS.

INfirmitátem nostram réspice, omnípotens Deus; et quia pondus própriæ actiónis gravat, beáti N. Mártyris tui atque Pontíficis intercéssio gloriósa nos protégat. Per Dóminum, etc.

*Ou bien cette autre.*

OREMUS.

DEus, qui nos beáti N. Mártyris tui atque Pontíficis ánnuâ solemnitáte lætíficas: concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, de ejúsdem étiam protectióne gaudeámus. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour d'un Martyr non Evêque.*

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui beáti N. Mártyris tui natalítia cólimus, intercessióne ejus in tuî nóminis amóre roborémur. Per Dóminum, etc.

*Ou bien l'on dit cette autre.*

OREMUS.

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut intercedénte beáto N. Mártyre tuo,

et à cunctis adversitátibus liberémur in córpore, et à pravis cogitatiónibus mundémur in mente. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de plusieurs Martyrs.*

*Ant.* Istórum est enim regnum cœlórum, qui contempsérunt vitam mundi, et pervenérunt ad præmia regni, et lavérunt stolas suas in sánguine Agni.

℣. Lætámini in Dómino, et exultáte Justi.

℟. Et gloriámini omnes recti corde.

*Ou bien l'on dit cette autre.*

*Ant.* Gaudent in cœlis ánimæ Sanctórum, qui Christi vestígia sunt secúti : et quia pro ejus amóre sánguinem suum fudérunt, ídeò cum Christo exúltant sine fine.

℣. Exultábunt Sancti in glória.

℟. Lætabúntur in cubílibus suis.

*Depuis Pâques jusqu'à la Pentecôte, on dit l'Antienne et le Verset comme dessus, au Commun des Apôtres.*

*Pour le jour de plusieurs Martyrs et Evêques.*

OREMUS.

BEatórum Mártyrum paritérque Pontíficum N. et N. nos, quæsúmus, Dómine, festa tueántur : et eórum commendet orátio veneránda. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour plusieurs Martyrs non Evêques.*

OREMUS.

DEus, qui nos concédis sanctórum Mártyrum tuórum N. et N. natalítia cólere: da nobis in ætérna beatitúdine de eórum societáte gaudére. Per Dóminum, etc.

*Ou bien cette autre.*

DEus, qui nos ánnuâ sanctórum Mártyrum tuórum N. et N. solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut quorum gaudémus méritis, accendámur exémplis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour d'un Evêque et Confesseur.*

*Ant.* Sacérdos et Póntifex, et virtútum ópifex, pastor bone in pópulo, ora pro nobis Dóminum.

℣. Amávit eum Dóminus, et ornávit eum.

℟. Stolam glóriæ índuit eum.

*Ou bien l'on dit cette autre.*

*Ant.* Amávit eum Dóminus, et ornávit eum; stolam glóriæ índuit eum, et ad portas paradísi coronávit eum.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

*Pour le jour d'un qui ait été Pape.*

*Ant.* Dum esset summus Póntifex, ter-

réna non métuit, sed ad cœléstia regna gloriósus migrávit.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

*Dans le temps de Pâques, on ajoute à la fin de l'Antienne, Verset et Répons*, Allelúia.

OREMUS.

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut beáti N. Confessóris tui atque Pontíficis veneránda solémnitas, et devotiónem nobis áugeat, et salútem. Per Dóminum, etc.

*Ou bien l'on dit cette autre.* OREMUS.

EXáudi, quæsumus, Dómine, preces nostras, quas in beáti N. Confessóris tui atque Pontíficis solemnitáte deférimus : et qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercedéntibus méritis, ab ómnibus nos absólve peccátis. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour le jour d'un Docteur.*

*Ant.* O Doctor óptime, Ecclésiæ sanctæ lumen, beáte N., divínæ legis amátor, deprecáre pro nobis Fílium Dei.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

OREMUS.

DEus, qui pópulo tuo ætérnæ salútis beátum N. Minístrum tribuísti : præsta,

quæsumus, ut quem Doctórem vitæ habuimus in terris, Intercessórem habére mereámur in cœlis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour d'un Confesseur non Evêque.*

*Ant.* Similábo eum viro sapiénti, qui ædificávit domum suam supra petram.

*Ou bien l'on dit cette autre.*

*Ant.* Hic vir despíciens mundum et terréna, triúmphans, divítias cœlo cóndidit ore, manu.

℣. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas.

℟. Et osténdit illi regnum Dei.

*Depuis Pâques jusqu'à la Pentecôte, on ajoute* Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui nos beáti N. Confessóris tui ánnuâ solemnitáte lætíficas : concéde propítius, ut cujus natalítia cólimus, étiam actiónes imitémur. Per Dóminum, etc.

*Ou bien cette autre.*

OREMUS.

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris, quas in beáti N. Confessóris tui solemnitáte deférimus : ut qui nostræ justítiæ fidúciam non habémus, ejus qui tibi plácuit, précibus adjuvémur. Per Dóm. etc.

*Pour un Saint qui aura été Abbé.*

OREMUS.

INtercéssio nos, quæsumus, Dómine, beáti N. Abbatis comméndet: ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour d'une Vierge.*

*Ant.* Veni, Sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in ætérnum.

℣. Spécie tuâ, et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

*Depuis Pâques jusqu'à la Pentecôte, on ajoute* Allelúia.

*Pour le jour d'une Vierge Martyre.*

OREMUS.

DEus, qui inter cætera poténtiæ tuæ mirácula, étiam in sexu frágili, victóriam martyrii contulísti: concéde propítius, ut qui beátæ N. Vírginis et Mártyris tuæ natalítia cólimus, per ejus ad te exémpla gradiámur. Per Dóminum, etc.

*Ou bien cette autre.*

OREMUS.

INdulgéntiam, nobis, quæsumus, Dómine, beáta Virgo N. et Martyr ímploret, quæ tibi grata semper éxtitit; et

mérito castitátis et tuæ professióne virtútis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour d'une Vierge non Martyre.*

OREMUS.

EXáudi nos, Deus salutáris noster, ut sicut de beátæ N. Vírginis tuæ festivitáte gaudémus, ita piæ devotiónis erudiámur affectu. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de plusieurs Vierges et Martyres.*

*Ant.* Prudéntes Vírgines, aptáte vestras lámpades : ecce Sponsus venit, exíte obviam ei.

℣. Adducéntur Regi Vírgines post eam.

℟. Próximæ ejus afferéntur tibi.

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine Deus noster, sanctárum Vírginum et Mártyrum N. et N. palmas incessábili devotióne venerári ; ut quas digna mente non possúmus celebráre, humílibus saltem frequentémus obséquiis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour d'une qui soit Martyre et non Vierge, ou bien qui ne soit Vierge ni Martyre.*

*Ant.* Veni, Sponsa Christi, áccipe corónam quam tibi Dóminus præparávit in æternum.

℣. Spécie tuâ et pulchritúdine tuâ.

℟. Inténde, prósperè procéde, et regna.

*Pour une non Vierge et Martyre.*

OREMUS.

DEus, qui inter cætera poténtiæ tuæ mirácula, étiam in sexu frágili victóriam Mártyrii contulísti: concéde propítiùs, ut qui beátæ N. Mártyris tuæ natalítia cólimus, per ejus ad te exémpla gradiámur. Per, etc.

*Pour plusieurs.*

OREMUS.

DA nobis, quæsumus, Dómine Deus noster, sanctárum Mártyrum tuárum N. et N. palmas incessábili devotióne venerári; ut quas dignâ ménte non possúmus celebráre, humílibus saltem frequentémus obséquiis. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour d'une ni Vierge ni Martyre.*

OREMUS.

EXáudi nos, Deus salutáris noster, ut sicut de beátæ N. festivitáte gaudémus, ita piæ devotiónis erudiámur affectu. Per Dóminum, etc.

*Pour le jour de la Consécration d'une Eglise.*

*Ant.* O quàm metuéndus est locus iste! verè non est hìc áliud, nisi domus Dei, et porta cœli.

℣. Domum tuam, Dómine, decet sanctitúdo.

℟. In longitúdinem diérum.

### OREMUS.

DEus, qui per síngulos annos hujus sancti Templi tui consecratiónis réparas diem, et sacris semper Mystériis repræséntas incólumes : exáudi preces pópuli tui, et præsta, ut quisquis hoc Templum benefícia petitúrus ingréditur, cuncta se impetrásse lætétur. Per Dóminum, etc.

L'OFFICE

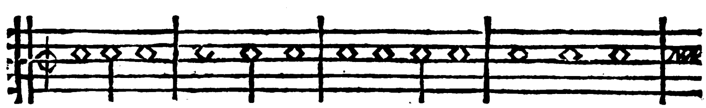
# L'OFFICE

# DES MORTS,

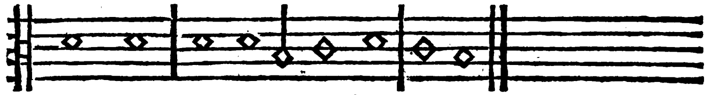
*Que l'on dit tout entier le jour des Morts, et le lendemain de l'enterrement de quelque Confrère, ou bien à la fin de l'année, avec l'Invitatoire et trois Nocturnes; mais le premier Lundi de chaque mois, on ne dit qu'un seul Nocturne, et on dit les Antiennes toutes entières devant et après les Psaumes, tant à Vêpres qu'à Matines, avec une seule Oraison de celles qui sont à la fin de l'Office, telle que l'on trouvera à propos : et à Vêpres, on laisse le Psaume* Lauda, ánima mea; *et à Laudes, le* De profúndis; *et aux autres temps, on dit l'Office à la manière suivante.*

## A VÊPRES.

*Le Recteur dira l'Ant.* Placébo Dómino.
*Les Choristes commenceront le Psaume* 115.



DIlléxi quóniam exáudiet Dóminus



vocem ora-tió-nis meæ.

Quia inclinávit aurem suam mihi : et in diébus meis invocábo.

Circumdedérunt me dolóres mortis : et perícula inférni invenérunt me.

Tribulatiónem et dolórem invéni : et nomen Dómini invocávi.

O Dómine, líbera ánimam meam : misericors Dóminus et justus, et Deus noster miserétur.

Custódiens párvulos Dóminus : humiliátus sum, et liberávit me.

Convértere, ánima mea, in réquiem tuam : quia Dóminus benefécit tibi.

Quia éripuit ánimam meam de morte : óculos meos à lácrymis, pedes meos à lapsu.

Placébo Dómino : in regióne vivórum.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine : et lux perpétua lúceat eis.

*Celui qui aura charge, dira l'Antienne.* Placébo Dómino in regióne vivórum. *Et ainsi des autres.*

*Le Recteur. Antienne.* Hei mihi.

*Psaume* 119.

AD Dóminum cùm tribulárer, clamávi : et exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis : et à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi ad linguam dolósam ?

Sagíttæ poténtis acútæ, cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est ! habitávi cum habitántibus Cédar : multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus : cùm loquébar illis, impugnábant me gratis.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Hei mihi, Dómine, quia incolátus meus prolongátus est !

*Le Recteur. Ant.* Dóminus custódit te.

*Psaume* 120.

LEvávi óculos meos in montes : unde véniet auxílium mihi.

Auxílium meum à Dómino : qui fecit cœlum et terram.

Non det in commotiónem pedem tuum : neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit, neque dórmiet : qui custódit Israël.

Dóminus custódit te, Dóminus protéctio tua : super manum déxteram tuam.

Per diem Sol non uret te : neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo : custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat introitum tuum, et éxitum tuum : ex hoc, nunc, et usque in séculum.

Réquiem ætérnam, etc.

*Ant.* Dóminus custódit te ab omni malo : custódiat ánimam tuam Dóminus.

*Le Recteur. Ant.* Si iniquitátes.

## *Psaume* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine : Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes : in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine : Dómine, quis sustinébit ?

Quia apud te propitiátio est : et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus : sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem : speret Israël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia : et copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Israël : ex ómnibus iniquitátibus ejus.

Réquiem ætérnam, etc.

*Ant.* Si iniquitátes observáveris, Dómine, Dómine, quis sustinébit?

*Le Recteur. Ant.* Opera mánuum.

*Psaume* 137.

CONfitébor tibi, Dómine, in toto corde meo : quóniam audísti verba oris mei.

In conspéctu Angelórum psallam tibi : adorábo ad templum sanctum tuum, et confitébor nómini tuo.

Super misericórdia tua et veritáte tua : quóniam magnificásti super omne, nomen sanctum tuum.

In quacúnque die invocávero te, exáudi me : multiplicábis in ánima mea virtútem.

Confiteántur tibi, Dómine, omnes reges terræ : quia audiérunt ómnia verba oris tui.

Et cantent in viis Dómini : Quóniam magna est glória Dómini.

Quóniam excélsus Dóminus, et humília réspicit : et alta à longè cognóscit.

Si ambulávero in médio tribulatiónis, vivificábis me : et super iram inimicórum meórum extendísti manum tuam, et salvum me fecit déxtera tua.

Dóminus retríbuet pro me : Dómine, misericórdia tua in seculum : ópera mánuum tuárum ne despícias.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.
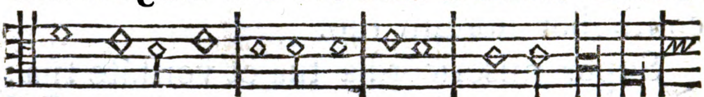
*Ant.* Opera mánuum tuárum ne despícias.

*Les Choristes.* ℣. Audívi vocem de cœlo dicéntem mihi.

*Le Chœur.* ℟. Beáti mórtui qui in Dómino moriúntur.

*Le Recteur. Ant.* Omnes.

## CANTIQUE DE NOTRE-DAME. Luc. 1.



MAgníficat : ánima mea Dóminum.



Et exultávit spíritus meus : in De-o



salutári meo.

Quia respéxit humilitátem ancíllæ suæ : ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna qui potens est : et sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies : timéntibus eum.

Fecit poténtiam in bráchio suo : dispérsit supérbos mente cordis sui.

Depósuit poténtes de sede : et exaltávit húmiles.

Esuriéntes implévit bonis : et dívites dimísit inánes.

Suscépit Israël puérum suum : recordátus misericórdiæ suæ.

Sicut locútus est ad Patres nostros : Abraham et sémini ejus in secula.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine : Et lux perpétua lúceat eis.

*Ant.* Omne quod dat mihi Pater, ad me véniet, et eum qui venit ad me, non ejíiciam forâs.

*Etant tous à genoux, le Recteur dit :*
Pater noster, *à voix basse, jusqu'au*
℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Les Choristes commencent le Psaume* 145.

LAuda, ánima mea, Dóminum, laudábo Dóminum in vita mea : psallam Deo meo quándiù fúero.

Nolíte confídere in princípibus : in fíliis hóminum, in quibus non est salus.

Exíbit spíritus ejus, et revertétur in terram

suam : in illa die períbunt omnes cogitatiónes eórum.

Beátus cujus Deus Jacob adjútor ejus, spes ejus in Dómino Deo ipsíus : qui fecit cœlum et terram, mare, et ómnia quæ in eis sunt.

Qui custódit veritátem in seculum, facit judícium injúriam patiéntibus : dat escam esuriéntibus.

Dóminus solvit compedítos : Dóminus illúminat cœcos.

Dóminus érigit elísos : Dóminus díligit justos.

Dóminus custódit advénas, pupíllum et víduam suscípiet, et vias peccatórum dispérdet.

Regnábit Dóminus in secula, Deus tuus Sion : in generatiónem et generatiónem.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine : Et lux perpétua lúceat eis.

*Le Recteur*. ℣. A porta ínferi.

*Le Ch*. ℟. Erue, Dómine, ánimas eórum.

*Le Recteur*. ℣. Requiéscant in pace.

*Le Chœur*. ℟. Amen.

*Le Recteur*. Dómine, exáudi oratiónem meam.

*Le Chœur*. ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Prière pour un Prêtre.*

OREMUS.

DEus, qui inter Apostólicos Sacerdótes, fámulum tuum Pontificáli seu Sacerdotáli fecísti dignitáte vigére: præsta, quæsumus, ut eórum quoque perpétuo aggregétur consórtio.

*Pour tous les Confrères décédés, amis, et bienfaiteurs.*

OREMUS.

DEus, véniæ largítor, et humánæ salútis amátor: quæsumus clem éntiam tuam, ut nostræ congregatiónis fratres, propínquos et benefactóres, qui ex hoc seculo transiérunt, beátâ Maríâ semper Vírgine intercedénte cum ómnibus Sanctis tuis, ad perpétuæ beatitúdinis consórtium perveníre concédas.

*Pour tous les Trépassés.*

OREMUS.

FIdélium Deus ómnium Cónditor et Redémptor, animábus famulórum, famularúmque tuárum, remissiónem cunctórum tríbue peccatórum: ut indulgéntiam, quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequántur. Qui vivis et regnas, Deus, in secula seculórum. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine.

*Le Chœur.* ℟. Et lux perpétua lúceat eis.

*Le Recteur.* ℣. Requiéscant in pace.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

---

## A MATINES.

*Quand on dit l'Office à trois Nocturnes, selon la Rubrique précédente, on commence par l'Invitatoire suivant: mais quand on ne dit qu'un Nocturne, on laisse l'Invitatoire, et l'on entonne seulement les Antiennes avec les Psaumes.*

*Les deux Choristes commenceront l'Invitatoire.*

Regem, cui ómnia vivunt: Veníte adorémus.

*Le Chœur.* ℟. Regem cui ómnia vivunt: Veníte adorémus.

*Les deux Choristes.* **Psaume 94.**

VEníte exultémus Dómino, jubilémus Deo salutári nostro: præoccupémus fáciem ejus in confessióne, et in psalmis jubilémus ei.

*Le Chœur.* Regem, cui ómnia vivunt: Veníte adorémus.

*Les Choristes.*

Quóniam Deus magnus Dóminus, et Rex magnus super omnes Deos: quóniam non repéllet Dóminus plebem suam, quia in manu ejus sunt omnes fines terræ, et altitúdines móntium ipse cónspicit.

*Le Chœur.* Veníte adorémus.

*Les Choristes.*

Quóniam ipsíus est mare, et ipse fecit illud, et áridam fundavérunt manus ejus: veníte adorémus, et procidámus ante Deum: plorémus coram Dómino qui fecit nos, quia ipse est Dóminus Deus noster: nos autem pópulus ejus, et oves páscuæ ejus.

*Le Chœur.* Regem, cui ómnia vivunt: Veníte adorémus.

*Les Choristes.*

Hódie si vocem ejus audiéritis, nolíte obduráre corda vestra, sicut in exacerbatióne secúndùm diem tentatiónis in desérto: ubi tentavérunt me patres vestri, probavérunt, et vidérunt ópera mea.

*Le Chœur.* Veníte adorémus.

*Les Choristes.*

Quadragínta annis próximus fui generatióni huic, et dixi: Semper hi errant corde: ipsi veró non cognovérunt vias meas, quibus

jurávi in ira mea, si introíbunt in réquiem meam.

*Le Chœur.* Regem cui ómnia vivunt : Veníte adorémus.

*Les Choristes.* Réquiem ætérnam dona eis, Dómine : Et lux perpétua lúceat eis.

*Le Chœur.* Veníte adorémus.

*Les Choristes.* Regem, cui ómnia vivunt,

*Le Chœur.* Veníte adorémus.

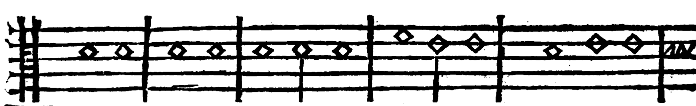
---

## *PREMIER NOCTURNE.*

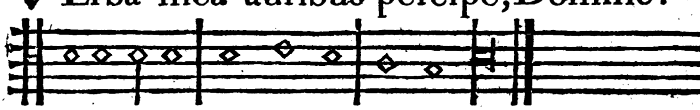
### Pour le Lundi et le Jeudi.

*Le Recteur dira à voix basse l'Ant.* Dirige.

*Les deux Choristes commenceront le Ps.* 5.



VErba mea áuribus pércipe, Dómine :



intéllige clamórem meum.

Inténde voci oratiónis meæ : Rex meus, et Deus meus.

Quóniam ad te orábo : Dómine, manè exáudies vocem meam.

Manè adstábo tibi, et vidébo : quóniam non Deus volens iniquitátem tu es.

Neque habitábit juxta te malígnus : neque permanébunt injústi ante óculos tuos.

Odísti omnes qui operántur iniquitátem: perdes omnes qui loquúntur mendácium.

Virum sánguinum et dolósum abominábitur Dóminus : ego autem in multitúdine misericórdiæ tuæ.

Introíbo in domum tuam : adorábo ad templum sanctum tuum in timóre tuo.

Dómine, deduc me in justítia tua : propter inimícos meos dírige in conspéctu tuo viam meam.

Quóniam non est in ore eórum véritas : cor eórum vanum est.

Sepúlcrum patens est guttur eórum, linguis suis dolóse agébant : júdica illos, Deus.

Décidant à cogitatiónibus suis, secúndùm multitúdinem impietátum eórum expelle eos : quóniam irritavérunt te, Dómine.

Et læténtur omnes qui sperant in te: in ætérnum exultábunt, et habitábis in eis.

Et gloriabúntur in te omnes qui díligunt nomen tuum : quóniam tu benedíces justo.

Dómine, ut scuto bonæ voluntátis tuæ : coronásti nos.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Celui qui aura charge dira l'Antienne* Dirige, Dómine, Deus meus, in conspéctu tuo viam meam : *et ainsi des autres suivantes.*

*Le Recteur. Ant.* Convertére, Dómine.

### *Psaume* 6.

Domine, ne in furóre tuo árguas me : neque in ira tua corrípias me.

Miserére meî, Dómine, quóniam infirmus sum : sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valdè : sed tu, Dómine, úsquequò ?

Convértere, Dómine, et éripe ánimam meam : salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte qui memor sit tuî : in inférno autem quis confitébitur tibi ?

Laborávi in gémitu meo, lavábo per síngulas noctes lectum meum : lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus : inveterávi inter omnes inímicos meos.

Discédite à me omnes qui operámini iniquitátem : quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exáudivit Dóminus deprecatiónem meam : Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubéscant et conturbéntur veheménter omnes inimíci mei : convertántur et erubéscant valdè velóciter.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Convértere, Dómine, et éripe ánimam meam : quóniam non est in morte, qui memor sit tuî.

*Le Recteur. Ant.* Nequándo.

*Psaume 7.*

DOmine Deus meus, in te spéravi : salvum me fac ex ómnibus persequéntibus me, et líbera me.

Nequándo rápiat ut leo ánimam meam : dum non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat.

Dómine Deus meus, si feci istud : si est iníquitas in manibus meis.

Si réddidi retribuéntibus mihi mala : décidam méritò ab inimícis meis inánis.

Persequátur inimícus ánimam meam, et comprehéndat, et concúlcet in terra vitam meam : et glóriam meam in púlverem dedúcat.

Exúrge, Dómine, in ira tua : et exaltáre in fínibus inimicórum meórum.

Et exúrge, Dómine Deus meus, in præcépto quod mandásti : et synagóga populórum circúmdabit te.

Et propter hanc in altum regrédere : Dóminus júdicat pópulos.

Júdica me, Dómine, secúndùm justítiam meam : et secúndùm innocéntiam meam super me.

Consumétur nequítia peccatórum, et díriges justum : scrutans corda et renes, Deus.

Justum adjutórium meum à Dómino : qui salvos facit rectos corde.

Deus, Judex justus, fortis et pátiens, numquid iráscitur per singulos dies?

Nisi convérsi fuéritis, gládium suum vibrábit, arcum suum teténdit, et parávit illum.

Et in eo parávit vasa mortis : sagíttas suas ardéntibus effécit.

Ecce partúriit injustítiam : concépit dolórem, et péperit iniquitátem.

Lacum apéruit, et effódit eum : et íncidit in fóveam quam fecit.

Convertétur dolor ejus in caput ejus : et in vérticem ipsíus iníquitas ejus descéndet.

Confitébor Dómino secúndùm justítiam ejus : et psallam nómini Dómini Altíssimi.

Réquiem

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Nequándo rápiat ut leo ánimam meam, dum non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat.

*Les Choristes.* ℣. A porta ínferi.

*Le Chœur.* ℟. Erue, Dómine, ánimas eórum.

*Si l'Office se fait pour un seul, on dit* ánimam ejus; *de même qu'à* Réquiem ætérnam dona, *l'on dit* ei. Et lux perpétua lúceat ei.

*Etant tous à genoux, le Recteur dit :* Pater noster, *à voix basse, jusqu'au verset* Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed libéra nos à malo.

*Celui auquel sera donnée la charge, dira la Leçon (tous les Pénitens étant assis) ainsi que s'ensuit, et on ne dira point* Jube Domne. *au commencement, ni* Tu autem. *à la fin.*

## PREMIÈRE LEÇON.

PArce mihi, Dómine : nihil enim sunt dies mei. Quid est homo, quia magníficas eum ? aut quid appónis erga eum cor tuum ? Vísitas eum dilúculo : et súbitò probas illum. Usquequò non parcis mihi, nec dimíttis me, ut glútiam salívam meam? Peccávi : quid fáciam tibi, ô custos hóminum ? quare posuísti me contrárium tibi, et

factus sum mihimetípsi gravis? Cur non tollis peccátum meum, et quare non aufers iniquitátem meam? Ecce nunc in púlvere dormiam; et si manè me quæsíeris, non subsístam.

*Les Choristes.* ℟. Credo quòd Redémptor meus vivit: et in novíssimo die de terra surrectúrus sum: et in carne mea vidébo Deum Salvatórem meum.

*Celui qui a dit la Leçon.*

℣. Quem visúrus sum ego ipse, et non álius, et óculi mei conspectúri sunt.

*Les Choristes.* ℟. Et in carne mea vidébo Deum Salvatórem meum.

*Celui qui aura charge dira la seconde Leçon.* Job. 10.

TÆdet ánimam meam vitæ meæ: dimittam advérsùm me elóquium meum: loquar in amaritúdine ánimæ meæ: dicam Deo: Noli me condemnáre. Indica mihi, cur me ita júdices. Numquid bonum tibi vidétur, si calumniéris me, et ópprimas me opus mánuum tuárum, et consílium impiórum adjúves? Numquid óculi cárnei tibi sunt: aut sicut videt homo, et tu vidébis? Numquid sicut dies hóminis dies tui, et anni tui sicut humána sunt témpora, ut quæras iniquitátem

meam, et peccátum meum scrutéris? Et scias quia nihil ímpium fécerim, cùm sit nemo, qui de manu tua possit eruére.

*Les Choristes.* ℟. Qui Lázarum resuscitásti à monuménto fœtidum: Tu eis, Dómine, dona réquiem, et locum indulgéntiæ.

*Celui qui a dit la Leçon.*

℣. Qui ventúrus es judicáre vivos et mortuos, et seculum per ignem.

*Les Choristes.* ℟. Tu eis, Dómine, dona réquiem, et locum indulgéntiæ.

*Celui qui aura charge dira la troisième Leçon.* Job. 10.

MAnus tuæ, Dómine, fecérunt me, et plasmavérunt me totum in circuítu: et sic repéntè præcípitas me? Meménto, quæso, quòd sicut lutum féceris me, et in púlverem redúces me. Nonne sicut lac mulsísti me, et sicut cáseum me coagulásti? Pelle et cárnibus vestísti me; ossibus et nervis compegísti me. Vitam et misericórdiam tribuísti mihi, et visitátio tua custodívit spíritum meum.

*Les Choristes.* ℟. Dómine, quandò véneris judicáre terram, ubi me abscóndam à vultu iræ tuæ? Quia peccávi nimis in vita mea.

*Celui qui a dit la leçon.*

℣. Commissa mea pavésco, et ante te erubésco : dum véneris judicáre, noli me condemnáre.

*Les Choristes.* ℟. Quia peccávi nimis in vita mea.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine. Et lux perpétua lúceat eis.

℟. Quia peccávi nimis in vita mea.

*Quand on dit seulement ce Nocturne, il faut incontinent dire les Laudes, qui sont ci-après, à la page 342.*

---

## *SECOND NOCTURNE.*

### Pour le Mardi et le Vendredi.

*Le Recteur. Antienne.* In loco páscuæ.

### *Psaume* 22.

DOminus regit me, et nihil mihi déerit : in loco páscuæ ibi me collocávit.

Super aquam refectiónis educávit me : ánimam meam convértit.

Dedúxit me super sémitas justítiæ ; propter nomen suum.

Nam etsi ambulávero in médio umbræ

mortis, non timébo mala : quóniam tu mecum es.

Virga tua, et báculus tuus : ipsa me consoláta sunt.

Parásti in conspéctu meo mensam : advérsus eos qui tríbulant me.

Impinguásti in oleo caput meum : et calix meus inébrians quàm præclárus est !

Et misericórdia tua subsequétur me : omnibus diébus vitæ meæ.

Et ut inhábitem in domo Dómini : in longitúdinem diérum.

Réquiem ætérnam, etc.

*Ant.* In loco páscuæ ibi me collocávit.

*Le Recteur. Ant.* Delícta.

## *Psaume* 24.

AD te, Dómine, levávi ánimam meam : Deus meus, in te confído, non erubéscam.

Neque irrídeant me inimíci mei : étenim univérsi qui sustínent te, non confundéntur.

Confundántur omnes iníqua agéntes : supervácuè.

Vias tuas, Dómine, demónstra mihi : et sémitas tuas édoce me.

Dírige me in veritáte tua, et doce me :

quia tu es Deus salvátor meus, et te sustínui totâ die.

Reminíscere miseratiónum tuárum, Dómine : et misericordiárum tuárum, quæ à seculo sunt.

Delícta juventútis meæ : et ignorántias meas ne memíneris.

Secúndum misericórdiam tuam meménto meî tu : propter bonitátem tuam, Dómine.

Dulcis et rectus Dóminus : propter hoc legem dabit delinquéntibus in via.

Díriget mansuétos in judício : docébit mites vias suas.

Univérsæ viæ Dómini, misericórdia et véritas : requiréntibus testaméntum ejus, et testimónia ejus.

Propter nomen tuum, Dómine, propitiáberis peccáto meo : multum est enim.

Quis est homo qui timet Dóminum? legem státuit ei in via quam elégit.

Anima ejus in bonis demorábitur : et semen ejus hæreditábit terram.

Firmaméntum est Dóminus timéntibus eum : et testaméntum ipsíus, ut manifestétur illis.

Oculi mei semper ad Dóminum : quóniam ipse evéllet de láqueo pedes meos.

Réspice in me, et miserére meî : quia unicus et pauper sum ego.

Tribulatiónes cordis mei multiplicátæ sunt : de necessitátibus meis érue me.

Vide humilitátem meam et labórem meum : et dimítte univérsa delícta mea.

Réspice inimícos meos, quóniam multiplicáti sunt : et ódio iníquo odérunt me.

Custódi ánimam meam, et érue me : non erubéscam, quóniam sperávi in te.

Innocéntes et recti adhæsérunt mihi : quia sustínui te.

Líbera, Deus, Israël : ex ómnibus tribulatiónibus suis.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Delícta juventútis meæ, et ignorántias meas, ne memíneris, Dómine.

*Le Recteur. Antienne.* Credo vidére.

*Psaume* 26.

DOminus illuminátio mea, et salus mea: quem timébo?

Dóminus protéctor vitæ meæ : à quo trepidábo?

Dum appropiant super me nocéntes : ut edant carnes meas.

Qui tríbulant me inimíci mei : ipsi infirmáti sunt, et cecidérunt.

Si consístant advérsùm me castra : non timébit cor meum.

Si exúrgat advérsùm me prælium : in hoc ego sperábo.

Unam pétii à Dómino, hanc requíram : ut inhábitem in domo Dómini ómnibus diébus vitæ meæ.

Ut vídeam voluntátem Dómini : et visitem templum ejus.

Quóniam abscóndit me in tabernáculo suo : in die malórum protéxit me in abscóndito tabernáculi sui.

In petra exaltávit me : et nunc exaltávit caput meum super inimícos meos.

Circuívi, et immolávi in tabernáculo ejus hostíam vociferatiónis : cantábo, et psalmum dicam Dómino.

Exáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te : miserére meî, et exáudi me.

Tibi dixit cor meum, exquisívit te fácies mea : fáciem tuam, Dómine requíram.

Ne avértas fáciem tuam à me : et ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto, ne derelínquas me : neque despícias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus et mater mea dereliquérunt me : Dóminus autem assúmpsit me.

Legem pone mihi, Dómine, in via tua: et dírige me in sémitam rectam propter inimícos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me: quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, et mentíta est iniquítas sibi.

Credo vidére bona Dómini: in terra vivéntium.

Expécta Dóminum, viríliter age: et confortétur cor tuum, et sústine Dóminum.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Credo vidére bona Dómini in terra vivéntium.

*Les Choristes.* ℣. Collócet eos Dóminus cum princípibus.

*Le Chœur.* ℟. Cum princípibus pópuli sui.

*Etant tous à genoux, le Recteur dit:*

Pater noster, *à voix basse, jusqu'au*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Celui qui aura charge, dira la quatrième Leçon.* Job. 13.

RESpónde mihi: quantas hábeo iniquitátes et peccáta, scélera mea et delícta osténde mihi. Cur fáciem tuam abscóndis, et arbitráris me inimícum tuum? Contra fólium, quod vento rápitur, osténdis po-

téntiam tuam, et stípulam siccam perséqueris. Scribis enim contra me amaritúdines, et consúmere me vis peccátis adolescéntiæ meæ. Posuísti in nervo pedem meum, et observásti omnes sémitas meas, et vestígia pedúm meórum considerásti. Qui quasi putrédo consuméndus sum, et quasi vestiméntum quod coméditur à tínea.

℟. Meménto meî, Deus, quia ventus est vita mea : Nec aspíciat me visus hóminis.

℣. De profúndis clamávi ad te, Dómine, Dómine, exáudi vocem meam.

℟. Ne aspíciat me visus hóminis.

*Celui qui aura charge dira la cinquième Leçon.* Job. 14.

HOmo natus de muliére, brevi vivens témpore, replétur multis misériis. Qui quasi flos egréditur et contéritur, et fugit velut umbra, et numquam in eódem statu pérmanet. Et dignum ducis super hujuscémodi aperíre óculos tuos, et addúcere eum tecum in judícium? Quis potest fácere mundum de immúndo concéptum sémine? Nonne tu qui solus es? Breves dies hóminis sunt, númerus ménsium ejus apud te est: constituísti términos ejus, qui prætériri non potérunt. Recéde páululùm ab eo, ut quiés-

cat, donec optáta véniat, sicut mercenárii, dies ejus.

℟. Hei mihi, Dómine, quia peccávi nimis in vita mea! Quid fáciam miser? Ubi fugiam, nisi ad te, Deus meus? Miserére meî, dum véneris in novíssimo die.

℣. Anima mea turbáta est valdè; sed tu Dómine, succúrre ei.

℟. Miserére meî, dum véneris in novíssimo die.

*Celui qui aura charge dira la sixième Leçon.* Job 14.

QUis mihi tríbuat, ut in inférno prótegas me, et abscóndas me donec pertránseat furor tuus, et constítuas mihi tempus in quo recordéris meî? Putásne mórtuus homo rursùm vivat? Cunctis diébus, quibus nunc milito, expécto donec véniat immutátio mea. Vocábis me, et ego respondébo tibi: Operi mánuum tuárum pórriges déxteram: Tu quidem gressus meos dinumerásti, sed parce peccátis meis.

℟. Ne recordéris peccáta mea, Dómine: Dum véneris judicáre seculum per ignem.

℣. Dírige, Dómine Deus meus, in conspéctu tuo viam meam.

℟. Dum véneris judicáre seculum per ignem.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine : Et lux perpétua lúceat eis.

℟. Dum veméris judicáre seculum per ignem.

*Quand on dit ce Nocturne seul, on commence incontinent Laudes, ci-après,* *pag.* 342.

---

## TROISIÈME NOCTURNE.

### Pour le Mercredi et le Samedi.

*Le Recteur. Antienne.* Compláceat.

### *Psaume* 39.

EXpéctans expectávi Dóminum : et inténdit mihi.

Et exaudívit preces meas, et edúxit me de lacu misériæ, et de luto fæcis.

Et státuit super petram pedes meos : et diréxit gressus meos.

Et immísit in os meum cánticum novum : carmen Deo nostro.

Vidébunt multi, et timébunt : et sperábunt in Dómino.

Beátus vir, cujus est nomen Dómini spes ejus : et non respéxit in vanitátes et insánias falsas.

Multa fecísti, tu Dómine Deus meus,

mirabília tua : et cogitatiónibus tuis non est qui símilis sit tibi.

Annuntiávi, et locútus sum : multiplicáti sunt super númerum.

Sacrifícium et oblatiónem noluísti : aures autem perfecísti mihi.

Holocáustum et pro peccáto non postulásti : tunc dixi, Ecce vénio.

In cápite libri scriptum est de me, ut fácerem voluntátem túam : Deus meus, vólui, et legem tuam in médio cordis mei.

Annuntiávi justítiam tuam in Ecclésia magna : ecce lábia mea non prohibébo ; Dómine, tu scisti.

Justítiam tuam non abscóndi in corde meo : veritátem tuam, et salutáre tuum dixi.

Non abscóndi misericórdiam tuam, et veritátem tuam : à concílio multo.

Tu autem, Dómine, ne longè fácias miseratiónes tuas à me : misericórdia tua et véritas tua semper suscepérunt me.

Quóniam circumdedérunt me mala, quorum non est númerus : comprehendérunt me iniquitátes meæ, et non pótui ut vidérem.

Multiplicátæ sunt super capíllos cápitis

mei : et cor meum derelíquit me.

Compláceat tibi, Dómine, ut éruas me: Dómine, ad adjuvándum me réspice.

Confundántur, et revereántur simul, qui quærunt ánimam meam : ut áuferant eam.

Convertántur, retrórsum et revereántur: qui volunt mihi mala.

Ferant conféstim confusiónem suam, qui dicunt mihi, Euge, euge!

Exúltent, et lætentur super te omnes quæréntes te : et dicant semper, Magnificétur Dóminus, qui dilígunt salutáre tuum.

Ego autem méndicus sum, et pauper : Dóminus sollícitus est meî.

Adjútor meus, et protéctor meus tu es : Deus meus ne tardáveris.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Complaceat tibi, Dómine, ut erípias me : Dómine, ad adjuvándum me réspice.

*Le Recteur. Ant.* Sana, Dómine.

### *Psaume* 40.

BEátus qui intélligit super egénum et páuperem : in die mala liberávit eum Dóminus.

Dóminus consérvet eum et vivíficet eum, et beátum fáciat eum in terra : et non tradat eum in ánimam inimicórum ejus.

Dóminus opem ferat illi super lectum dolóris ejus : univérsum stratum ejus versásti in infirmitáte ejus.

Ego dixi, Dómine, miserére meî : sana ánimam meam, quia peccávi tibi.

Inimíci mei dixérunt mala mihi : Quando moriétur, et períbit nomen ejus ?

Et si ingrediebátur ut vidéret, vana loquebátur : cor ejus congregávit iniquitátem sibi.

Egrediebátur foràs : et loquebátur in idípsum.

Advérsùm me susurrábant omnes inimíci mei : advérsùm me cogitábant mala mihi.

Verbum iníquum constituérunt advérsùm me : numquid qui dormit, non adjíciet ut resúrgat ?

Etenim homo pacis meæ, in quo sperávi : qui edébat panes meos, magnificávit super me supplantatiónem.

Tu autem, Dómine, miserére meî, et ressúscita me : et retríbuam eis.

In hoc cognóvi, quóniam voluísti me : quóniam non gaudébit inimícus meus super me.

Me autem propter innocéntiam suscepísti : et confirmásti me in conspéctu tuo in ætérnum.

Benedíctus Dóminus Deus Israël à seculo, et usque in seculum : fiat, fiat.

Réquiem ætérnam, etc.

*Ant.* Sana, Dómine, ánimam meam, quia peccávi tibi.

*Le Recteur. Antienne.* Sitívit ánima mea.

*Psaume* 41.

QUemádmodum desíderat cervus ad fontes aquárum : ita desíderat ánima mea ad te, Deus.

Sitívit ánima mea ad fontem vivum : quando véniam, et apparébo antè fáciem Dei ?

Fuérunt mihi lácrymæ meæ panes die ac nocte : dum dícitur mihi quotídie, Ubi est Deus tuus ?

Hæc recordátus sum, et effúdi in me ánimam meam : quóniam transíbo in locum tabernáculi admirábilis, usque ad domum Dei.

In voce exultatiónis et confessiónis : sonus epulántis.

Quare tristis es ánima mea : et quáre contúrbas me ?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi : salutáre vultûs mei, et Deus meus.

Ad meípsum ánima mea conturbáta est : proptereà

proptéreà memor ero tuî de terra Jordánis, et Hermóniim à monte módico.

Abyssus abyssum ínvocat : in voce cataractárum tuárum.

Omnia excélsa tua, et fluctus tui : super me transiérunt.

In die mandávit Dóminus misericórdiam suam : et nocte cánticum ejus.

Apud me orátio Deo vitæ meæ ; dicam Deo, Suscéptor meus es.

Quáre oblítus es meî : et quare contristátus incédo, dum afflígit me inimícus ?

Dum confringúntur ossa mea : exprobravérunt mihi, qui tríbulant me inimíci mei.

Dum dicunt mihi per síngulos dies, Ubi est Deus tuus : quare tristis es ánima mea, et quare contúrbas me ?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi : salutáre vultûs mei, et Deus meus.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Sitívit ánima mea ad Deum fontem vivum : quando véniam, et apparébo ante fáciem Dómini ?

*Les Choristes.* ℣. Ne tradas bestiis ánimas confiténtes tibi.

*Le Chœur.* ℟. Et ánimas páuperum tuórum ne obliviscáris in finem.

*Etant tous à genoux, le Recteur dit :* Pater noster, *à voix basse, jusqu'au verset* Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Celui qui aura charge, dira la septième Leçon. Job. 17.*

SPíritus meus attenuábitur, dies mei breviabúntur, et solum mihi súperest sepulcrum. Non peccávi, et in amaritudínibus morátur óculus meus. Líbera me, Dómine, et pone me juxta te, et cujúsvis manus pugnet contra me. Dies mei transiérunt, cogitatiónes meæ dissipátæ sunt, torquéntes cor meum. Noctem vertérunt in diem, et rursùm post ténebras spero lucem. Si sustinuéro, inférnus domus mea est, et in ténebris stravi léctulum meum. Putrédini dixi: Pater meus es, mater mea, et soror mea vérmibus. Ubi est ergo nunc præstolátio mea, ut patiéntiam meam quis consíderet ?

℟. Peccántem me quotídie, et non pœniténtem timor mortis contúrbat me. Quia in inférno nulla est redemptio, miserére meî, Deus, et salva me.

℣. Deus, in nómine tuo, salvum me fac; et in virtúte tua líbera me.

℟. Quia in inférno nulla est redémptio, miserére meî, Deus, et salva me.

*Celui qui aura charge, dira la huitiéme Leçon.* Job. 19.

PElli meæ, consúmptis cárnibus, adhæsit os meum, et derelícta sunt tantúmmodo lábia circà dentes meos. Miserémini meî, miserémini meî, saltem vos amíci mei, quia manus Dómini tétigit me. Quare persequímini me sicut Deus, et cárnibus meis saturámini ? Quis mihi tríbuat, ut scribántur sermónes mei ? Quis mihi det, ut exaréntur in libro stylo férreo, et plumbi láminâ, vel celte sculpántur in sílice ? Scio enim quod Redémptor meus vivit, et in novíssimo die de terra surrectúrus sum : et rursùm circumdábor pelle mea ; et in carne mea vidébo Deum Salvatórem meum. Quem visúrus sum ego ipse, et óculi mei conspectúri sunt, et non álius : repósita est hæc spes mea in sinu meo.

℟. Dómine, secúndùm actum meum noli me judicáre, nihil enim dignum in conspéctu tuo egi : ídeò deprécor majestátem tuam ; Ut tu, Deus, déleas iniquitátem meam.

℣. Ampliús lava me, Dómine, ab injustítia mea : et à delícto meo munda me.

℟. Ut tu, Deus, déleas iniquitátem meam.

*Celui qui aura charge dira la neuvième Leçon. Job. 10.*

QUare de vulva eduxísti me? qui utinam consúmptus essem, ne óculus me vidéret. Fuissem quasi non essem, de útero translátus ad túmulum. Numquid non paúcitas diérum meórum finiétur brevi? Dimítte me ergo, ut plangam páululùm dolórem meum: antéquam vadam et non revértar ad terram tenebrósam, et opértam mortis calígine: terram misériæ et tenebrárum, ubi umbra mortis, et nullus ordo, sed sempitérnus horror inhábitat.

*Le Répons suivant se dit seulement quand on fait l'Office à trois leçons.*

℟. Líbera me, Dómine, de viis inférni, qui portas æreas confregísti, et visitásti inférnum, et dedísti eis lúmen, ut vidérent te. Qui erant in pœnis tenebrárum.

℣. Clamántes, et dicéntes, Advenísti, Redemptor noster.

℟. Qui érant in pœnis tenebrárum.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, et lux perpétua lúceat eis.

℟. Qui erant in pœnis tenebrárum.

*Le Répons suivant se doit dire le lendemain de la Toussaint, et quand on fait l'Office à neuf Leçons.*

℟. Líbera me, Dómine, de morte ætérna in die illa treménda : Quando cœli movéndi sunt et terra : Dum véneris judicáre séculum per ignem.

℣. Tremens factus sum ego, et timéo, dum discússio vénerit, atque véntura ira.

℟. Quando cœli movéndi sunt et terra.

℟. Dies illa, dies iræ, calamitátis et misériæ, dies magna et amára valdè.

℟. Dum véneris judicáre séculum per ignem.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, et lux perpétua lúceat eis.

℟. Líbera me, Dómine, de morte ætérna, in die illa treménda : Quando cœli movéndi sunt et terra. Dum véneris judicáre séculum per ignem.

## A LAUDES.

*Le Recteur étant debout, commence l'Antienne* Exultábunt Dómino.

*Les Choristes.* *Psaume* 50.

MIserére meî, Deus : secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum : dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea : et à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco : et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci : ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus conceptus sum : et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti : incerta et occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me, Dómine, hyssópo, et mundábor : lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam : et exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis : et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus, et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua : et spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui : et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas : et ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ : et exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries : et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique : holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : cor contrítum et humiliátum, Deus non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion : ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes et holocáusta : tunc impónent super altáre tuum vítulos.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Exultábunt Dómino ossa humiliáta.

*Le Recteur. Antienne.* Exáudi, Dómine.

*Psaume* 64.

TE decet hymnus Deus in Sion : et tibi reddétur votum in Jerúsalem.

Exáudi oratiónem meam : ad te omnis caro véniet.

Verba iniquórum prævaluérunt super nos : et impietátibus nostris tu propitiáberis.

Beátus quem elegísti et assumpsísti : inhabitábit in átriis tuis.

Replébimur in bonis domûs tuæ : sanctum est templum tuum, mirábile in æquitáte.

Exáudi nos Deus, salutáris noster : spes ómnium fínium terræ, et in mari longè.

Præparans montes in virtúte tua, accínctus poténtiâ : qui contúrbas profúndum maris, sonum flúctuum ejus.

Turbabúntur gentes, et timébunt qui hábitant términos à signis tuis : éxitus matutíni, et vésperè delectábis.

Visitásti terram, et inebriásti eam : multiplicásti locupletáre eam.

Flumen Dei replétum est aquis, parásti cibum illórum : quóniam ita est præparátio ejus.

Rivos ejus inébria, multíplica genímina ejus : in stillicídiis ejus lætábitur gérminans.

Benedíces corónæ anni benignitátis tuæ: et campi tui replebúntur ubertáte.

Pinguéscent speciósa desérti : et exultatióne colles accingéntur.

Indúti sunt ariétes óvium, et valles abundábunt fruménto : clamábunt, eténim hymnum dicent.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Exáudi, Dómine, oratiónem meam, ad te omnis caro véniet.

*Le Recteur. Antienne.* Me suscépit.

*Psaume 62.*

DEus, Deus meus : ad te de luce vígilo. Sitívit in te ánima mea : quàm multiplíciter tibi caro mea.

In terra desérta et ínvia, et inaquósa, sic in sancto appárui tibi : ut vidérem virtútem tuam, et glóriam tuam.

Quóniam mélior est misericórdia tua super vitas : lábia mea laudábunt te.

Sic benedícam te in vita mea : et in nómine tuo levábo manus meas.

Sicut ádipe et pinguédine repleátur ánima mea: et lábiis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tuî super stratum meum, in matutínis meditábor in te : quia fuísti adjútor meus.

Et in velaménto alárum tuárum exultábo, adhæsit ánima mea post te : me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam meam, introíbunt in inferióra terræ : tradéntur in manus gládii, partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabúntur omnes qui jurant in eo : quia obstrúctum est os loquéntium iníqua.

*Psaume* 66.

DEus misereátur nostrî, et benedícat nobis : illúminet vultum suum super nos, et misereátur nostrî.

Ut cognoscámus in terra viam tuam : in ómnibus géntibus salutáre tuum.

Confiteántur tibi pópuli, Deus : confiteántur tibi pópuli ómnes.

Lætentur, et exúltent gentes : quóniam júdicas pópulos in æquitáte, et gentes in terra dírigis.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, confiteántur tibi pópuli omnes : terra dedit fructum suum.

Benedícat nos Deus, Deus noster, benedícat nos Deus : et métuant eum omnes fines terræ. Réquiem ætérnam, etc.

*Ant.* Me suscépit déxtera tua, Dómine.

*Le Recteur. Ant.* A porta ínferi.

CANTIQUE D'EZÉCHIAS.

EGo dixi in dimídio diérum meórum: Vadam ad portas ínferi.

Quæsívi resíduum annórum meórum: dixi, Non vidébo Dóminum Deum in terra vivéntium.

Non aspíciam hóminem ultrà: et habitatórem quiétis.

Generátio mea abláta est, et convolúta est à me: quasi tabernáculum pastórum.

Præcísa est velut à texénte, vita mea, dum adhuc ordírer, succídit me: de manè usque ad vésperam fínies me.

Sperábam usque ad manè: quasi leo sic contrívit ómnia ossa mea.

De manè usque ad vespéram fínies me: sicut pullus hirúndinis sic clamábo, meditábor ut colúmba.

Attenuáti sunt óculi mei: suspiciéntes in excélsum.

Dómine, vim pátior, respónde pro me: quid dicam, aut quid respondébit mihi, cùm ipse fécerit?

Recogitábo tibi omnes annos meos: in amaritúdine ánimæ meæ.

Dómine, si sic vívitur, et in tálibus vita

spíritûs mei, corrípies me, et vivificábis me: ecce in pace amaritúdo mea amaríssima.

Tu autem eruísti ánimam meam, ut non períret: projecísti post tergum tuum ómnia peccáta mea.

Quia non inférnus confitébitur tibi, neque mors laudábit te: non expectábunt, qui descéndunt in lacum, veritátem tuam.

Vivens, vivens ipse confitébitur tibi, sicut et ego hódie: pater fíliis notam fáciet veritátem tuam.

Dómine, salvum me fac: et psalmos nostros cantábimus cunctis diébus vitæ nostræ in domo Dómini.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* A porta ínferi érue, Dómine, ánimam meam.

*Le Recteur. Antienne.* Omnis spíritus.

*Psaume* 148.

LAudáte Dóminum de cœlis: laudáte eum in excélsis.

Laudáte eum omnes Angeli ejus: laudáte eum omnes virtútes ejus.

Laudáte eum sol et luna: laudáte eum omnes stellæ et lumen.

Laudáte eum cœli cœlórum: et aquæ

omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini.

Quia ipse dixit, et facta sunt : ipse mandávit et creáta sunt.

Státuit ea in ætérnum, et in seculum seculi : præceptum pósuit, et non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra : dracónes, et omnes abyssi.

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum : quæ fáciunt verbum ejus.

Montes et omnes colles : ligna fructífera, et omnes cedri.

Béstiæ et univérsa pécora : serpéntes, et vólucres pennátæ.

Reges terræ, et omnes pópuli : príncipes, et omnes júdices terræ.

Júvenes et vírgines, senes cum junióribus, laudent nomen Dómini : quia exaltátum est nomen ejus sólius.

Conféssio ejus super cœlum et terram : et exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus ómnibus Sanctis ejus : fíliis Israël, pópulo appropinquánti sibi.

*Psaume* 149.

CAntáte Dómino cánticum novum : laus ejus in ecclésia Sanctórum.

Lætétur Israël in eo qui fecit eum : et fílii

Sion exúltent in rege suo.

Laudent nomen ejus in choro : in tympano et psaltério psallant ei.

Quia beneplácitum est Dómino in pópulo suo : exaltábit mansuétos in salútem.

Exultábunt Sancti in glória : lætabúntur in cubílibus suis.

Exaltatiónes Dei in gútture eórum : et gládii ancípites in mánibus eórum.

Ad faciéndam vindíctam in natiónibus : increpatiónes in pópulis.

Ad alligándos reges eórum in compédibus : et nóbiles eórum in mánicis férreis.

Ut fáciant in eis judícium conscríptum : glória hæc est ómnibus Sanctis ejus.

## *Psaume* 150.

LAudáte Dóminum in Sanctis ejus : laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus : laudáte eum secúndùm multitùdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ : laudáte eum in psaltério et cíthara.

Laudáte eum in tympano et choro : laudáte eum in chordis et órgano.

Laudáte eum in cymbalis benè sonan-

tibus, laudáte eum in cymbalis jubilatiónis : omnis spíritus laudet Dóminum.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

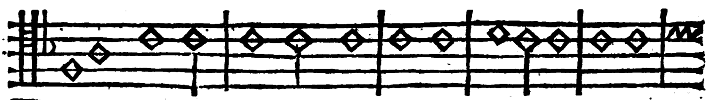
*Ant.* Omnis spíritus laudet Dóminum.

*Les Choristes.* ℣. Audívi vocem de cœlo dicéntem mihi.
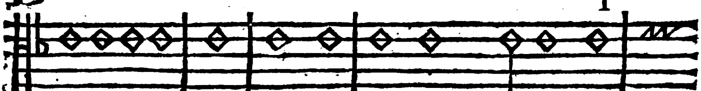
*Le Chœur.* ℟. Beáti mórtui qui in Dómino moriúntur.

*Le Chœur. Antienne.* Ego sum.

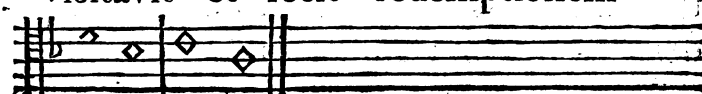
## CANTIQUE DE ZACHARIE. Luc. 2.



BEnedíctus Dóminus Deus Israël : quia



visitávit et fecit redemptiónem



plebis suæ.

Et eréxit cornu salútis nobis : in domo David puéri sui.

Sicut locútus est per os Sanctórum : qui à seculo sunt, Prophetárum ejus.

Salútem ex inimícis nostris : et de manu ómnium qui odérunt nos.

Ad faciéndam misericórdiam cum patri-

bus nostris : et memorári testaménti sui sancti.

Jusjurándum quod jurávit ad Abraham patrem nostrum : datúrum se nobis.

Ut sine timóre de manu inimicórum nostrórum liberáti : serviámus illi.

In sanctitáte et justítia coram ipso : ómnibus diébus nostris.

Et tu puer prophéta Altíssimi vocáberis : præíbis enim ante fáciem Dómini paráre vias ejus.

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus : in remissiónem peccatórum eórum.

Per víscera misericórdiæ Dei nostri : in quibus visitávit nos Oriens ex alto.

Illumináre his qui in ténebris, et in umbra mortis sedent : ad dirigéndos pedes nostros in viam pacis.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, etc.

*Ant.* Ego sum resurréctio et vita : qui credit in me, étiamsi mórtuus fuérit, vivet : et omnis qui vivit et credit in me, non moriétur in ætérnum.

*Etant tous à genoux, le Recteur dit;*

℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison. Kyrie eléison. *Le Rect.* Pater noster. *à voix basse.*

℣.

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Psaume* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine: Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes: in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine: Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est: et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus: sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem: speret Israël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia: et copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Israël: ex ómnibus iniquitátibus ejus. Réquiem ætérnam, etc.

*Les Choristes.* ℣. A porta ínferi.
*Le Chœur.* ℟. Erue, Dómine, ánimas eórum.
*Le Recteur.* ℣. Requiéscant in pace.
*Le Chœur.* ℟. Amen.
*Le Recteur.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
*Le Chœur.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Pour un Prêtre.* OREMUS.

DEus, qui inter Apostólicos Sacerdótes, fámulos tuos Pontificáli, seu Sacerdotáli fecísti dignitáte vigére : præsta, quæsumus, ut eórum quoque perpétuo aggregéntur consórtio.

*Pour tous les Confrères décédés, Amis, Bienfaiteurs.*

OREMUS.

DEus, véniæ largítor, et humánæ salútis amátor; quæsumus cleméntiam tuam, ut nostræ Congregatiónis Fratres, propínquos, et benefactóres, qui ex hoc século transiérunt, beátâ Maríâ semper Virgine intercedénte cum ómnibus Sanctis tuis, ad perpétuæ beatitúdinis consórtium perveníre concédas.

*Pour tous les Trépassés.* OREMUS.

FIdélium Deus ómnium Cónditor et Redémptor, animábus famulórum, famulárumque tuárum, remissiónem cunctórum tríbue peccatórum : ut indulgéntiam, quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequántur. Qui vivis, etc. ℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine.

*Le Chœur.* ℟. Et lux perpétua lúceat eis.

*Le Recteur.* ℣. Requiéscant in pace.
*Le Chœur.* ℟. Amen.

*On ne dit le jour des Morts que cette Oraison.*

*Oraison pour le jour ou le lendemain du trépas.*

ABsólve, quæsumus, Dómine, ánimam fámuli tui N., ut defúnctus século tibi vivat : et quæ per fragilitátem carnis humánâ conservatióne commísit, tu veniâ misericordíssimæ pietátis abstérge. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium, etc.

*Oraison pour le Père.*

DEus, qui nos patrem honoráre præcepísti : miserére cleménter ánimæ patris mei, ejúsque peccáta dimítte, meque eum in ætérnæ claritátis gáudio fac vidére. Per Dóminum, etc.

*Oraison pour la Mère.*

DEus, qui nos matrem honoráre præcepísti, miserére cleménter ánimæ matris meæ, ejúsque peccáta dimítte, meque eam in ætérnæ claritátis gáudio fac vidére. Per Dóminum, etc.

*Oraison pour un seul Trépassé.*

INclína, Dómine, aurem tuam ad preces nostras, quibus misericórdiam tuam súpplices deprecámur, ut ánimam fámuli tui, quam de hoc século migráre jussísti, in pacis

ac lucis regióne constítuas, et Sanctórum tuórum júbeas esse consórtem. Per Dñm.

*Pour une femme Trépassée.*

QUæsumus, Dómine, pro tua pietáte miserére ánimæ Fámulæ tuæ: et à contágiis mortalitátis exútam, in ætérnæ salvatiónis partem restítue. Per Dóminum, etc.

*Oraison pour nos Confrères, amis, bienfaiteurs; comme dessus,* *page 354.*

*Pour tous les Trépassés,* *page 354.*

*Oraison pour l'Anniversaire.*

DEus indulgentiárum Dómine, da animábus famulórum, famularúmque tuárum, quorum (*si c'est pour un seul, on dit* da ánimæ fámuli tui, cujus; *si c'est une femme,* fámulæ tuæ, cujus) anniversárium depositiónis diem commemorámus, refrigérii sedem, quiétis beatitúdinem, et lúminis claritátem. Per Dóminum nostrum, etc.

*Prose à Jésus-Christ et à la Vierge-Marie, pour les Trépassés, qui doit se dire étant tous à genoux.*

*Les Choristes commencent.* Sancta María.

LAnguéntibus in purgatório,
Qui purgántur ardóre nímio,
Et torquéntur gravi supplício,
Subvéniat tua compássio. Sancta María.

Jesu, fons es qui culpas ábluis,
Omnes lavas, et nullum réspuis;
Manum tuam exténde mórtuis,
Qui sub pœnis languent contínuis.
O bone Jesu.

Ad te, pia, suspírant mórtui,
Cupiéntes de pœnis érui,
Et adésse tuo conspéctui,
Et gáudiis ætérnis pérfrui. Sancta María.

Clavis David, quæ cœlum áperis;
Pie Jesu, succúrre míseris,
Qui torméntis torquéntur ásperis;
Educ eos de domo cárceris. O bone Jesu.

Rex Justórum, norma credéntium,
Consolátrix in te sperántium,
Pro defúnctis sit tibi stúdium
Assíduè oráre Fílium. Sancta María.

O Redémptor, per tua mérita,
Te rogámus, mórtuos súscita,
Et dimítte eórum débita;
Ad réquiem sis eis sémita. O bone Jesu.
Amen.

℣. Ora pro defúnctis, et pro nobis, sanctíssima Dei Génitrix.
℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DOmine Jesu Christe, salus et liberátor fidélium animárum, qui non venísti ánimas pérdere, sed salváre et dare ánimam tuam in redemptiónem pro multis: imménsam cleméntiam tuam, ac ineffábilem misericórdiam tuam humilíter implorámus, ut ánimas confrátrum nostrórum, ómniumque fidélium defunctórum in pœnis purgatórii cruciátas misericórditer respícere dignéris: ut qui justè pro peccátis affligúntur, tuâ benigníssimâ pietáte liberéntur: subveníatque illis tua misericórdia, quas pretiosíssimo sánguine tuo redemísti: et per mérita beatíssimæ, et gloriosíssimæ, sempérque Vírginis tuæ Genitrícis Maríæ, et ómnium Sanctórum, et Sanctárum, liberáre eas ab inferórum cruciátibus, et collocáre inter ágmina Sanctórum dignéris; veste quoque immortalitátis índui, et Paradísi amœnitáte convóvéri júbeas. Qui vivis et regnas, etc.

*Le* Fratres *des Morts, pris en la* 1. *aux Cor. c.* 15., *qui se dit le jour qu'on enterre les Confrères.*

FRatres, sicut portávimus imáginem terréni, portémus et imáginem cœléstis. Hoc autem dico, Fratres, quia caro et san-

guis regnum Dei possidére non possunt: neque corrúptio incorruptélam possidébit. Ecce, mystérium vobis dico : Omnes quidem resurgémus, sed non omnes immutábimur. In moménto, in ictu óculi, in novíssima tuba : canet enim tuba, et mórtui resúrgent incorrúpti, et nos immutábimur. Oportet enim corruptíbile hoc induére incorruptiónem, et mortále hoc induére immortalitátem. Cum autem mortále hoc induérit immortalitátem, tunc fiet sermo qui scriptus est : Absórpta est mors in victória. Ubi est mors victória tua ? Ubi est mors stímulus tuus ? Stímulus autem mortis peccátum est; virtus verò peccáti, lex. Deo autem grátias, qui dédit nobis victóriam. Per Dóminum, etc.

---

*Diverses Prières pour chanter pendant qu'on dit la Messe de quelque Confrère défunt.*

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine. Et lux perpétua lúceat eis.

*Psaume.*

TE decet hymnus, Deus, in Sion : et tibi reddétur votum in Jérusalem.

Exáudi oratiónem meam : ad te omnis caro véniet.

*Ensuite on répète.* ℣. Réquiem, *comme dessus.*

℣. Kyrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Kyrie eléison. ℟. Christe eléison.
℣. Christe eléison. ℟. Christe eléison.
℣. Kyrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Kyrie eléison.

*Prose des Trépassés que l'on chante après l'Epître.*

DIes iræ, dies illa,
Solvet séclum in favílla;
Teste David cum Sibílla.
Quantus tremor est futúrus,
Quando Judex est ventúrus,
Cuncta strictè discussúrus.
Tuba mirum spargens sonum,
Per sepúlcra regiónum,
Coget omnes ante thronum.
Mors stupébit et natúra,
Cùm resúrget creatúra,
Judicánti responsúra.
Liber scriptus proferétur,
In quo totum continétur,
Undè mundus judicétur.
Judex ergo cùm sedébit,
Quidquid latet apparébit;
Nil inúltum remanébit.

Quid sum miser tunc dictúrus?
Quem patrónum rogatúrus,
Cùm vix Justus sit secúrus?
Rex tremendæ majestátis,
Qui salvándos salvas gratìs;
Salva me, fons pietátis.
Recordáre, Jesu pie,
Quòd sum causa tuæ viæ;
Ne me perdas illâ die.
Quærens me, sedísti lassus:
Redemísti crucem passus:
Tantus labor non sit cassus.
Juste Judex ultiónis,
Donum fac remissiónis
Ante diem ratiónis.
Ingemísco tanquam reus:
Culpâ rubet vultus meus:
Supplicánti parce, Deus.
Qui Maríam absolvísti,
Et latrónem exaudísti:
Mihi quoque spem dedísti.
Preces meæ non sunt dignæ;
Sed tu bonus fac benígnè,
Ne perénni cremer igne.
Inter oves locum præsta,
Et ab hædis me sequéstra,
Státuens in parte dextra.

Confutátis maledíctis,
  Flammis ácribus addíctis,
  Voca me cum benedíctis.
Oro supplex et acclínis,
  Cor contrítum quasi cinis,
  Gere curam mei finis.
Lacrymósa dies illa,
  Quâ resúrget ex favílla.
  Judicándus homo reus.
Huic ergo parce, Deus;
  Pie Jesu Dómine,
  Dona eis réquiem. Amen.

*Pendant que l'on fait l'Offertoire. Antienne.*

DOmine Jesu Christe, Rex glóriæ, líbera ánimas ómnium fidélium defunctórum de pœnis inférni, et de profúndo lacu : líbera eas de ore leónis, ne absórbeat eas tártarus, ne cadant in obscúrum : sed sígnifer sanctus Míchaël repræséntet eas in lucem sanctam. Quam olim Abrahæ promisísti et sémini ejus.

℟. Hóstias et preces tibi, Dómine, laudis offérimus : tu súscipe pro animábus illis, quarum hódie memóriam fácimus : fac eas, Dómine, de morte transíre ad vitam. Quam olim Abrahæ promisísti et sémini ejus.

*Après le* Lavabo, *le Prêtre dit :*

℣. Per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum Spíritu tuo.

℣. Sursùm corda. ℟. Habémus ad Dóminum.

℣. Grátias agámus Dómino Deo nostro.

℟. Dignum et justum est.

*Le Prêtre.* ℣. Verè dignum et justum est, etc.

℟. Sanctus, Sanctus, Sanctus Dóminus Deus Sábaoth.

Pleni sunt cœli et terra glóriâ tuâ. Hosánna in excélsis.

Benedíctus qui venit in nómine Dómini. Hosánna in excélsis.

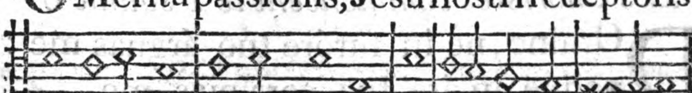
*A l'élévation du précieux Corps et Sang de Jesus-Christ. Antienne.*

O Verè Deus, Trinus et unus ;
Exáudi preces pópuli hujus :
Da nobis salútem et pacem,
Defúnctis réquiem ætérnam.
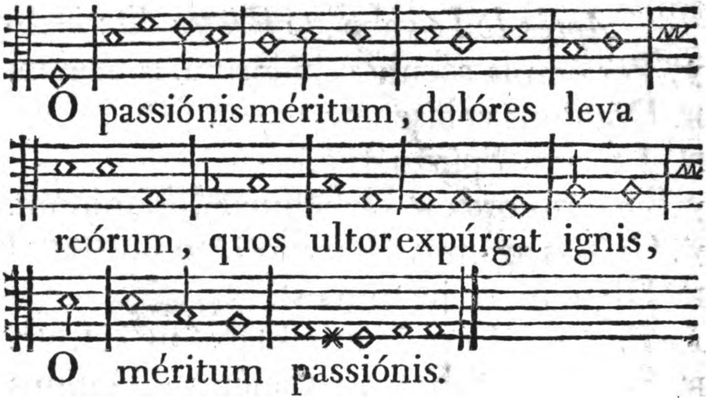
*Ou bien on dit cette autre Antienne.*



O Méritũ passiónis, Jesu nostri redẽptóris,



Medicína defunctórum. O passiónis meritũ.




*Antienne pour dire après la Communion.*

LUx ætérna lúceat eis, Dómine. Cum Sanctis tuis in ætérnum, quia pius es.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine.

℟. Et lux perpétua lúceat eis. Cum Sanctis tuis in ætérnum, quia pius es.

LES

# SEPT PSAUMES

## PÉNITENTIAUX.

*Le Recteur. Antienne.* Ne reminiscáris.

*Les Choristes commencent le Psaume* 6.

DOmine, ne in furóre tuo árguas me: neque in ira tua corrípias me.

Miserére meî, Dómine, quóniam infír-

mus sum : sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valdè : sed tu, Dómine, úsquequò ?

Convértere, Dómine, et éripe ánimam meam : salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte qui memor sit tuî : in inférno autem quis confitébitur tibi ?

Laborávi in gémitu meo, lavábo per síngulas noctes lectum meum : lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus : inveterávi inter inímicos meos.

Discédite à me omnes qui operámini iniquitátem : quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exaudívit Dóminus deprecatiónem meam : Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubéscant et conturbéntur veheménter omnes inimíci mei : convertántur et erubéscant valdè velóciter.

Glória Patri, etc.

## *Psaume* 31.

BEáti quórum remíssæ sunt iniquitátes : et quórum tecta sunt peccáta.

Beátus vir, cui non imputávit Dóminus peccátum : nec est in spíritu ejus dolus.

Quóniam tácui, inveteravérunt ossa mea : dum clamárem totâ die.

Quóniam die ac nocte graváta est super me manus tua : convérsus sum in ærúmna mea dùm confígitur spina.

Delíctum meum cógnitum tibi feci : et injustítiam meam non abscóndi.

Dixi; confitébor advérsùm me injustítiam meam Dómino : et tu remisísti impietátem peccáti mei.

Pro hac orábit ad te omnis Sanctus : in témpore opportúno.

Verúmtamen in dilúvio aquárum multárum : ad eum non approximábunt.

Tu es refúgium meum à tribulatióne, quæ circumdédit me : exultátio mea, érue me à circumdantíbus me.

Intelléctum tibi dabo, et ínstruam te in via hac quâ gradiéris : firmábo super te óculos meos.

Nolíte fieri sicut equus et mulus : quibus non est intelléctus.

In chamo et fræno maxíllas eórum constrínge : qui non appróximant ad te.

Multa flagélla peccatóris : sperántem au-

tem in Dómino misericórdia circumdábit.

Lætámini in Dómino, et exultáte justi: et gloriámini omnes recti corde.

Glória Patri, etc.

*Psaume 37.*

DOmine, ne in furóre tuo árguas me: neque in ira tua corrípias me.

Quóniam sagíttæ tuæ infíxæ sunt mihi: et confirmásti super me manum tuam.

Non est sánitas in carne mea à fácie iræ tuæ: non est pax óssibus meis à fácie peccatórum meórum.

Quóniam iniquitátes meæ supergréssæ sunt caput meum: et sicut onus grave graváæ sunt super me.

Putruérunt, et corrúptæ sunt cicatríces meæ: à fácie insipiéntiæ meæ.

Miser factus sum, et curvátus sum usque in finem: totâ die contristátus ingrediébar.

Quóniam lumbi mei impléti sunt illusiónibus: et non est sánitas in carne mea.

Afflíctus sum et humiliátus sum nimis: rugiébam à gémitu cordis mei.

Dómine, ante te omne desidérium meum: et gémitus meus à te non est abscónditus.

Cor meum conturbátum est, derelíquit

me virtus mea : et lumen oculórum meó-rum, et ipsum non est mecum.

Amíci mei, et próximi mei : advérsùm me appropinquavérunt, et stetérunt.

Et qui juxta me erant, de longè stetérunt : et vim faciébant qui quærébant ánimam meam.

Et qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes : et dolos totâ die meditabántur.

Ego autem tanquam surdus non audiébam : et sicut mutus non apériens os suum.

Et factus sum sicut homo non áudiens : et non habens in ore suo redargutiónes.

Quóniam in te, Dómine, sperávi : tu exáudies me, Dómine Deus meus.

Quia dixi, Nequándo supergáudeant mihi inimíci mei : et dum commovéntur pedes mei, super me magna locúti sunt.

Quóniam ego in flagélla parátus sum : et dolor meus in conspéctu meo semper.

Quóniam iniquitátem meam annuntiábo : et cogitábo pro peccáto meo.

Inimíci autem mei vivunt, et confirmáti sunt super me : et multiplicáti sunt qui odérunt me iníquè.

Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi : quóniam sequébar bonitátem.

Ne

Ne derelínquas me, Dómine, Deus meus, ne discésseris à me.

Inténde in adjutórium meum : Dómine, Deus salútis meæ. Glória Patri, etc.

*Psaume* 50.

MIserére mei, Deus : secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum : dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea : et à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco : et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci : ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus conceptus sum : et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti : incerta et occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me, Dómine, hyssópo, et mundábor : lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam : et exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis : et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus: et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua : et spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui : et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas : et ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ : et exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries : et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique : holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : cor contrítum et humiliátum, Deus non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion : ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes et holocáusta : tunc impónent super altáre tuum vítulos. Glória Patri, etc.

*Psaume* 101.

DOmine exáudi oratiónem meam : et clamor meus ad te véniat.

Non avértas fáciem tuam à me : in qua-

cúmque die tríbulor, inclína ad me aurem tuam.

In quacúmque die invocávero te : velóciter exáudi me.

Quia defecérunt sicut fumus dies mei : et ossa mea sicut crémium aruérunt.

Percússus sum ut fœnum, et áruit cor meum : quia oblítus sum comédere panem meum.

A voce gémitûs mei : adhæsit os meum carni meæ.

Símilis factus sum pellicáno solitúdinis : et factus sum sicut nyctícorax in domicílio.

Vigilávi, et factus sum sicut passer solitárius in tecto.

Totâ die exprobrábant mihi inimíci mei : et qui laudábant me, advérsùm me jurábant.

Quia cínerem tanquam panem mandúcabam : et potum meum cum fletu miscébam.

A fácie iræ et indignatiónis tuæ : quia élevans allisísti me.

Dies mei sicut umbra declinavérunt : et ego sicut fœnum árui.

Tu autem, Dómine, in ætérnum pérmanes : et memoriále tuum in generatiónem et generatiónem.

Tu exúrgens miseréberis Sion : quia

tempus miseréndi ejus, quia venit tempus.

Quóniam placuérunt servis tuis lápides ejus : et terræ ejus miserebúntur.

Et timébunt gentes nomen tuum, Dómine : et omnes reges terræ glóriam tuam.

Quia ædificávit Dóminus Sion : et vidébitur in glória sua.

Respéxit in oratiónem humílium : et non sprevit precem eórum.

Scribántur hæc in generatióne áltera : et pópulus qui creábitur laudábit Dóminum.

Quia prospéxit de excélso sancto suo : Dóminus de cœlo in terram aspéxit.

Ut audíret gémitus compeditórum : ut sólveret fílios interemptórum.

Ut annúntient in Sion nomen Dómini : et laudem ejus in Jerúsalem.

In conveniéndo pópulos in unum : et reges ut sérviant Dómino.

Respóndit ei in via virtútis suæ : paucitátem diérum meórum núntia mihi.

Ne révoces me in dimídio diérum meórum : in generatiónem et generatiónem anni tui.

Inítio, tu, Dómine, terram fundásti : et ópera mánuum tuárum sunt cœli.

Ipsi períbunt, tu autem pérmanes : et omnes sicut vestiméntum veteráscent.

Et sicut opertórium mutabis eos, et mutabúntur : tu autem idem ipse es, et anni tui non defícient.

Fílii servórum tuórum habitábunt : et semen eórum in séculum dirigétur.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine : Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes : in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine : Dómine, quis sustinébit ?

Quia apud te propitiátio est : et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus : sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem : speret Israël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia : et copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Israël : ex ómnibus iniquitátibus ejus. Glória Patri, etc.

*Psaume* 142.

DOmine, exáudi oratiónem meam : áuribus pércipe obsecratiónem meam in veritáte tua : exáudi me in tua justítia.

Et non intres in judícium cum servo tuo : quia non justificábitur in conspéctu tuo omnis vivens.

Quia persecútus est inimícus ánimam meam : humiliávit in terra vitam meam.

Collocávit me in obscúris sicut mortuos séculi : et anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum, meditátus sum in ómnibus opéribus tuis : et in factis mánuum tuárum meditábar.

Expándi manus meas ad te : ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exáudi me, Dómine : deffécit spíritus meus.

Non avértas fáciem tuam à me : et símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam : quia in te sperávi.

Notam fac mihi viam in qua ámbulem : quia ad te levávi ánimam meam.

Eripe me de inimícis meis, Dómine, ad te confúgi : doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam : propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam : et in misericórdia tua dispérdes inimícos meos.

Et perdes omnes qui tríbulant ánimam meam : quóniam ego servus tuus sum.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Ne reminiscáris, Dómine, delícta nostra, vel paréntum nostrórum : neque vindíctam sumas de peccátis nostris.

*Tous les Pénitens à genoux, les Choristes disent :*

KYrie eléison.
Christe eléison.
Kyrie eléison.
Christe, audi nos,
Christe, exáudi nos.
Pater de cœlis Déus, miserére nobis.
Fíli Redemptor mundi Deus, miser. nobis.
Sancta Trinítas unus Deus, miserére nobis.
Sancta María, ora pro nobis.
Sancta Dei génitrix, ora pro nobis.
Sancta Virgo Vírginum, ora pro nobis.
Sancte Michaël, ora pro nobis.
Sancte Gabriël, ora pro nobis.
Sancte Raphaël, ora pro nobis.
Omnes sancti Angeli et Archángeli, oráte pro nobis.

Omnes sancti beatórum spírituum Ordines, oráte pro nobis.
Sancte Joannes Baptista, ora pro nobis.
Sancte Joseph, Ora pro nobis
Omnes sancti Patriárchæ et Prophétæ, oráte pro nobis.
Sancte Petre, ora pro nobis.
Sancte Paule,
Sancte Andréa,
Sancte Jacóbe,
Sancte Joánnes,
Sancte Thoma,
Sancte Jacóbe,
Sancte Philíppe,
Sancte Bartholomeæ,
Sancte Matthæe,
Sancte Simon,
Sancte Thadæe,
Sancte Matthia,
Sancte Bárnaba,
Sancte Luca,
Ora pro nobis.
Sancte Marce, ora pro nobis.
Omnes sancti Apóstoli et Evangelístæ, oráte pro nobis.
Omnes sancti Discípuli Dómini, oráte.
Omnes sancti Innocéntes, oráte pro nobis.
Sancte Stéphane. ora pro nobis.

Sancte Laurénti, ora pro nobis.
Sancte Vincénti, ora pro nobis.
Sancti Fábiane et Sebastiáne, oráte.
Sancti Joánnes et Paule, oráte pro nobis.
Sancti Cosma et Damiáne, oráte.
Sancti Gervási et Protási, oráte.
Omnes sancti Mártyres, oráte pro nobis.
Sancte Sylvester, ora pro nobis.
Sancte Gregóri, ora pro nobis.
Sancte Ambrósi, ora pro nobis.
Sancte Augustíne, ora pro nobis.
Sancte Hierónyme, ora pro nobis.
Sancte Martíne, ora pro nobis.
Sancte Nicoláe, ora pro nobis.
Omnes sancti Pontífices et Confessóres, oráte pro nobis.
Omnes sancti Doctóres, oráte pro nobis.
Sancte Antóni, ora pro nobis.
Sancte Benedícte, ora pro nobis.
Sancte Bernárde, ora pro nobis.
Sancte Dóminice, ora pro nobis.
Sancte Francísce, ora pro nobis.
Omnes sancti Sacerdótes et Levítæ, oráte.
Omnes sancti Mónachi et Eremitæ, oráte.
Sancta María Magdaléna, ora pro nobis.
Sancta Agatha, ora pro nobis.
Sancta Lúcia, ora pro nobis.

Sancta Agnes, ora pro nobis.
Sancta Cæcília, ora pro nobis.
Sancta Catharína, ora pro nobis.
Sancta Anastásia, ora pro nobis.
Omnes sanctæ Vírgines et Víduæ, oráte.
Omnes Sancti et Sanctæ Dei, intercédite pro nobis.
Propítius esto, parce nobis, Dómine.
Propítius esto, exáudi nos, Dómine.
Ab omni malo, líbera nos, Dómine.
Ab omni peccáto, líbera nos, Dómine.
Ab ira tua, líbera nos, Dómine.
A subitánea et improvísa morte, líbera.
Ab insídiis diáboli, líbera nos, Dómine.
Ab ira et ódio, et omni mala voluntáte, líbera nos, Dómine.
A spíritu fornicatiónis, líbera nos, Dómine.
A fúlgure et tempestáte, líbera nos, Dómine.
A morte perpétua, líbera nos, Dómine.
Per Mystérium sanctæ Incarnatiónis tuæ, líbera nos, Dómine.
Per Advéntum tuum, líbera nos, Dómine.
Per Nativitátem tuam, líbera nos, Dómine.
Per Baptísmum et sanctum jejúnium tuum, líbera nos, Dómine.
Per Crucem et Passiónem tuam, líbera.
Per mortem et sepultúram tuam, líbera.

Per sanctam resurrectiónem tuam, líbera.
Per admirábilem Ascensiónem tuam, líbera.
Per adventum Spíritûs Sancti Paracléti, líb.
In die judícii, líbera nos, Dómine.
Peccatóres, te rogámus audi nos.
Ut nobis parcas, te rogámus audi nos.
Ut nobis indúlgeas, te rogámus audi nos.
Ut ad veram pœniténtiam nos perdúcere dignéris, te rogámus audi nos.
Ut Ecclésiam tuam sanctam régere et conserváre dignéris, te rogámus audi nos.
Ut domum Apostólicum, et omnes ecclesiásticos Ordines in sancta religióne conserváre dignéris, te rogámus audi nos.
Ut inimícos sanctæ Ecclésiæ humiliáre dignéris, te rogámus audi nos.
Ut Régibus et Princípibus Christiánis pacem et veram concórdiam donáre dignéris, te rogámus audi nos.
Ut cuncto pópulo Christiáno pacem et unitátem largíri dignéris, te rog. audi nos.
Ut nosmétipsos in tuo sancto servítio confortáre et conserváre dignéris, te rogám.
Ut mentes nostras ad cœléstia desidéria érigas, te rogámus audi nos.
Ut ómnibus benefactóribus nostris sempitérna bona retríbuas, te rogámus.

Ut ánimas nostras, fratrum, propinquórum, et benefactórum nostrórum ab ætérna damnatióne erípias, te rogámus.

Ut fructus terræ dare et conserváre dignéris, te rogámus audi nos.

Ut ómnibus fidélibus defúnctis réquiem ætérnam donáre dignéris, te rogámus.

Ut nos exaudíre dignéris, te rogámus.

Fíli Dei, te rogámus audi nos.

Agnus Dei qui tollis peccáta mundi, parce nobis, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, exáudi nos, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, miserére nobis.

Christe, audi nos. Christe, exáudi nos.

Kyrie eléison. Christe eléison.

Kyrie eléison.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

℟. Sed líbera nos à malo.

*Le Recteur commencera le premier Verset à voix basse, sans chanter; et le Chœur reprendra le Verset suivant, et ainsi ils continueront le Psaume 69.*

DEus, in adjutórium meum inténde: Dómine, ad adjuvándum me festína.

Confundántur et revertántur : qui quærunt ánimam meam.

Avertántur retrórsum, et erubéscant : qui volunt mihi mala.

Avertántur statim erubescéntes : qui dicunt mihi, Euge, euge!

Exúltent et læténtur in te omnes qui quærunt te : et dicant semper, Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego verò egénus et pauper sum : Deus, ádjuva me.

Adjútor meus et liberátor meus es tu : Dómine, ne moréris.

Glória Patri, etc.

*Le Recteur.* ℣. Salvos fac servos tuos.

℟. Deus meus, sperántes in te.

℣. Esto nobis, Dómine, turris fortitúdinis.

℟. A fácie inimíci.

℣. Nihil profíciat inimícus in nobis.

℟. Et fílius iniquitátis non appónat nocére nobis.

℣. Dómine, non secúndùm peccáta nostra fácias nobis.

℟. Neque secúndùm iniquitátes nostras retríbuas nobis.

℣. Orémus pro Pontifíce nostro N.

℟. Dóminus consérvet eum, et vivíficet

eum, et beátum fáciat eum in terra, et non tradat eum in ánimam inimícorum ejus.

℣. Orémus pro benefactóribus nostris.

℟. Retribuére dignáre, Dómine, ómnibus nobis bona faciéntibus propter nomen tuum, vítam ætérnam. Amen.

℣. Orémus pro fidélibus defúnctis.

℟. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, et lux perpétua lúceat eis.

℣. Requiéscant in pace. ℟. Amen.

℣. Pro frátribus nostris abséntibus.

℟. Salvos fac servos tuos, Deus meus, sperántes in te.

℣. Mitte eis, Dómine, auxílium de sancto.

℟. Et de Sion tuére eos.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, cui próprium est miseréri semper et párcere, súscipe deprecatiónem nostram : ut nos, et omnes fámulos tuos, quos delictórum caténa constríngit, miserátio tuæ pietátis cleménter absólvat.

EXáudi, quæsumus, Dómine, súpplicum preces, et confiténtium tibi parce peccátis : ut páriter nobis indulgéntiam tríbuas benígnus et pacem.

INeffábilem nobis, Dómine, misericórdiam tuam cleménter osténde : ut simul nos et à peccátis ómnibus éxuas, et à pœnis quas pro hís merémur, erípias.

DEus, qui culpâ offenderis, pœniténtiâ placáris, preces pópuli tui supplicántis propítius réspice : et flagélla tuæ iracúndiæ, quæ pro peccátis nostris merémur, avérte.

OMnipótens sempitérne Deus, miserére fámulo tuo Pontífici nostro N. et dírige eum secúndùm tuam cleméntiam in viam salútis ætérnæ : ut te donánte tibi plácita cúpiat, et totâ virtúte perfíciat.

DEus, à quo sancta desidéria, recta consília, et justa sunt ópera : da servis tuis illam, quam mundus dare non potest, pacem : ut et corda nostra mandátis tuis dédita, et hóstium subláta formídine, tempora sint tuâ protectióne tranquílla.

URe igne Sancti Spíritûs renes nostros, et cor nostrum, Dómine : ut tibi casto córpore serviámus, et mundo corde placeámus.

FIdélium Deus ómnium Cónditor et Redémptor, animábus famulórum, famulárumque tuárum remissiónem cunctó-

rum tríbue peccatórum : ut indulgéntiam, quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequántur.

ACtiónes nostras, quæsumus, Dómine, aspirándo prævéni, et adjuvándo proséquere : ut cuncta nostra orátio et operátio à te semper incípiat et per te cœpta finiátur.

IN hac hora hujus diéi, tuâ nos, quæsumus, Dómine, reple misericórdiâ : ut per totum diem exultántes in tuis láudibus, júgiter delectémur : ut nos fámulos tuos ab omni adversitáte custódias.

DEus, qui vigilántes in tuis láudibus, cœlésti mercéde remúneras, ténebras de córdibus nostris auférre dignéris : ut splendóre nóminis tui semper gaudeámus. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, etc.

℟. Amen.

---

PRIÈRES

# PRIÈRES

## POUR UN OU PLUSIEURS MALADES.

*Lorsqu'il y aura quelque Confrère malade, le Recteur ayant mandé les autres, et étant assemblés dans la Chapelle, étant tous à genoux, leur dira :*

MES FRÈRES, j'ai appris que N. l'un de nos Confrères est tombé malade, et il est de mon devoir de vous exhorter de lui donner tous les secours qui dépendent de vous. Commençons par prier le Dieu tout-puissant, de vouloir bien lui faire miséricorde, et lui accorder ce qu'il connoît lui être nécessaire pour la santé, tant spirituelle que corporelle; et si son bon plaisir est de l'appeler à lui, qu'il lui plaise de l'assister de son Saint-Esprit; afin que l'ame quittant ce siècle, jouisse de la récompense éternelle, et de la gloire promise à ceux qui meurent dans sa grâce. Nous dirons à cette intention les Prières accoutumées.

*Le Recteur. Ant.* Ne reminiscáris.

*Psaume* 6. Dómine, ne in furóre tuo árguas me, etc. *comme ci-devant, page* 364.

*Ant.* Ne reminiscáris, Dómine, delícta nostra, vel paréntum nostrórum : neque vindíctam sumas de peccátis nostris.

*Le Recteur.* ℣. Salvum fac servum suum, Dómine.

*Le Chœur.* ℟. Deus meus, sperántem in te.

℣. Mitte ei, Dómine, auxílium de Sancto.

℟. Et de Sion tuére eum.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui Ezéchiæ Regi Judæ, tecum lácrymis deprecánti, vitæ spátium protendísti : concéde indígno fámulo tuo fratri nostro N., longitúdinem diérum suórum : et ante diem mortis suæ tantum vitæ spátium, ut ómnia peccáta sua deploráre váleat, quátenùs véniam et indulgéntiam secúndùm tuam misericórdiam, consséqui mereátur.

DEus infirmitátis humánæ singuláre præsídium, auxílii tui super infírmum fámulum tuum N. osténde virtútem ; ut ope misericórdiæ tuæ adjútus, Ecclésiæ tuæ sanctæ incólumis repræsentári mereátur. Per Dóminum, etc.

*Pour les Confrères qui sont absens ou en voyage.*

OREMUS.

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris, et viam famulórum tuórum in salútis tuæ prosperitáte dispóne : ut inter omnes viæ et vitæ hujus varietátes, semper protegántur auxílio. Per Dóminum, etc.

*Quand l'on prie pour plusieurs, le Recteur dit l'Antienne* Ne reminiscáris.

℣. Salvos fac servos tuos, Dómine,.
℟. Deus meus, sperántes in te.
℣. Mitte eis, Dómine, auxílium de Sancto.
℟. Et de Sion tuére eos.
℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui Ezéchiæ Regi Judæ, tecum lácrymis deprecánti, vitæ spátium protendísti : concéde indígnis fámulis tuis frátribus nostris N. longitúdinem diérum suórum : et ante diem mortis eórum, tantum vitæ spátium, ut ómnia peccáta sua deploráre váleant : quátenùs véniam et indulgéntiam secúndùm tuam mirericórdiam conséqui mereántur. Per Dóminum nostrum, etc.

*Pour rendre grâces à Dieu, on dit l'Hymne* Te Deum laudámus, etc. *pag.* 56.

*Après, on dit l'Antienne :*

Te Deum Patrem ingénitum, te Fílium unigénitum, te Spíritum Sanctum Paraclétum, sanctam et indivíduam Trinitátem, toto corde et ore confitémur, laudámus atque benedícimus : tibi glória in sécula.

℣. Benedicámus Patrem et Fílium cum Sancto Spíritu.

℟. Laudémus et superexaltémus eum in sécula.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

## OREMUS.

DEus, cujus misericórdiæ non est númerus, et bonitátis infinitús est thesáurus, piíssimæ Majestáti tuæ pro collátis donis grátias ágimus, tuam semper cleméntiam exorántes : ut qui peténtibus postuláta concédis, eósdem non desérens, ad præmia futúra dispónas. Per Dóminum, etc.



# L'OFFICE DU SOIR

## DU MERCREDI SAINT,

*Ou les Matines pour le Jeudi, qui se disent après les Vêpres et Complies du Mercredi, commençant à trois heures après midi.*

---

¶ *L'on allume six cierges sur l'Autel, et quinze sur le grand chandelier qui est au-devant de l'Autel, et de ces quinze, on en éteint un à la fin de chaque Psaume.*

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur commencera* Pater noster, Ave, María, Credo in Deum, *le tout à voix basse. Ensuite on commence l'Office par l'Antienne du premier Psaume, et on dit les Antiennes deux fois toutes entières; savoir, devant et après les Psaumes; le Recteur les dit devant, et celui qui aura charge, les dira après. On ne dit point à la fin des Psaumes de* Glória Patri, *mais on les finit en ton de Passion.*

*Le Recteur. Ant.* Zelus domûs tuæ comédit me, et oppróbria exprobrántium tibi cecidérunt super me.

*Les deux Choristes entonneront le Ps. 68.*



SAlvum me fac, Deus : quóniã intravérunt



aquæ usque ad ánimam me-am.

Infíxus sum in limo profúndi : et non est substántia.

Veni in altitúdinem maris : et tempéstas demérsit me.

Laborávi clamans, raucæ factæ sunt fauces meæ : defecérunt óculi mei, dum spero in Deum meum.

Multiplicáti sunt supra capíllos cápitis mei : qui odérunt me gratis.

Confortáti sunt qui persecúti sunt me inimíci mei injústè : quæ non rápui, tunc exolvébam.

Deus, tu scis insipiéntiam meam : et delícta mea à te non sunt abscóndita.

Non erubéscant in me qui expéctant te, Dómine : Dómine virtútum.

Non confundántur super me : qui quærunt te, Deus Israël.

Quóniam propter te sustínui oppró-

brium : opéruit confúsio fáciem meam.

Extráneus factus sum frátribus meis : et peregrínus fíliis matris meæ.

Quóniam zelus domûs tuæ comédit me: et oppróbria exprobrántium tibi cecidérunt super me.

Et opérui in jejúnio ánimam meam : et factum est in oppróbrium mihi.

Et pósui vestiméntum meum cilícium: et factus sum illis in parábolam.

Advérsùm me loquebántur qui sedébant in porta : et in me psallĕbant qui bibébant vinum.

Ego verò oratiónem meam ad te, Dómine : tempus beneplácitì, Deus.

In multitúdine misericórdiæ tuæ exáudi me : in veritáte salútis tuæ.

Eripe me de luto ut non ínfigar : líbera me ab his qui odérunt me, et de profúndis aquárum.

Non me demérgat tempéstas aquæ, neque absórbeat me profúndum : neque úrgeat super me púteus os suum.

Exáudi me, Dómine, quóniam benígna est misericórdia tua : secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum réspice in me.

Et ne avértas fáciem tuam à púero tuo ;

quóniam tríbulor, velóciter exáudi me.

Inténde ánimæ meæ, et líbera eam: propter inimícos meos éripe me.

Tu scis impropérium meum, et confusiónem meam, et reveréntiam meam.

In conspéctu tuo sunt omnes qui tríbulant me: impropérium expectávit cor meum, et misériam.

Et sustínui qui simul contristarétur, et non fuit: et qui consolarétur, et non invéni.

Et dedérunt in escam meam fel: et in siti mea potavérunt me acéto.

Fiat mensa eórum coram ipsis in láqueum: et in retributiónes, et in scándalum.

Obscuréntur óculi eórum ne vídeant: et dorsum eórum semper incúrva.

Effúnde super eos iram tuam: et furor iræ tuæ comprehéndat eos.

Fiat habitátio eórum desérta: et in tabernáculis eórum non sit qui inhábitet.

Quóniam quem tu percussísti, persecúti sunt: et super dolórem vúlnerum meórum addidérunt.

Appóne iniquitátem super iniquitátem eórum: et non intrent in justítiam tuam.

Deleántur de libro vivéntium: et cum justis non scribántur.

Ego sum pàuper et dolens : salus tua, Deus, suscépit me.

Laudábo nomen Dei cum cántico : et magnificábo éum in laude.

Et placébit Deo super vítulum novéllum : córnua producéntem et úngulas.

Vídeant páuperes, et læténtur : quærite Deum, et vivet ánima vestra.

Quóniam exaudívit páuperes Dóminus : et vinctos suos non despéxit.

Laudent illum cœli et terra : mare, et ómnia reptília in eis.

Quóniam Deus salvam fáciet Sion, et ædificabúntur civitátes Juda.

Et inhabitábunt ibi : et hæreditáte acquírent eam.

Et semen servórum ejus possidébit eam : et qui díligunt nomen ejus, habitábunt in ea.

*Celui qui aura charge, dira l'Antienne* :

Zelus domûs tuæ comédit me, et oppróbria exprobrántium tibi cecidérunt super me *Et ainsi des suivantes.*

*Le Recteur. Ant.* Avertántur retrórsùm, et erubéscant, qui cógitant mihi mala.

*Psaume* 69.

DEus, in adjutórium meum inténde : Dómine, ad adjuvándum me festína.

Confundántur et revereántur : qui quærunt ánimam meam.

Avertántur retrórsùm, et erubéscant : qui volunt mihi mala.

Avertántur statim erubescéntes : qui dicunt mihi, Euge, euge!

Exúltent et læténtur in te omnes qui quærunt te : et dicant semper, Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego verò egénus et pauper sum : Deus, ádjuva me.

Adjútor meus et liberátor meus es tu : Dómine, ne moréris.

*Ant.* Avertántur retrórsùm, et erubéscant qui cógitant mihi mala.

*Le Recteur. Ant.* Deus meus, éripe me de manu peccatóris.

### *Psaume 70.*

IN te, Dómine, sperávi, non confundar in ætérnum : in justítia tua líbera me, et éripe me.

Inclína ad me aurem tuam : et salva me.

Esto mihi in Deum protectórem, et in locum munítum : ut salvum me fácias.

Quóniam firmaméntum meum : et refúgium meum es tu.

Deus meus, éripe me de manu peccatóris:

et de manu contra legem agéntis, et iníqui.

Quóniam tu es patiéntia mea, Dómine: Dómine, spes mea à juventúte mea.

In te confirmátus sum ex útero: de ventre matris meæ tu es protéctor meus.

In te cantátio mea semper: tanquam prodígium factus sum multis, et tu adjútor fortis.

Repleátur os meum laude, ut cantem glóriam tuam: totâ die magnitúdinem tuam.

Ne projícias me in témpore senectútis: cùm defécerit virtus mea, ne derelínquas me.

Quia dixérunt inimíci mei mihi: et qui custodiébant ánimam meam, consílium fecérunt in unum.

Dicéntes, Deus derelíquit eum, persequímini, et comprehéndite eum: quia non est qui erípiat.

Deus, ne elongéris à me: Deus meus, in auxílium meum réspice.

Confundántur et defíciant detrahéntes ánimæ meæ: operiántur confusióne et pudóre qui quærunt mala mihi.

Ego autem semper sperábo: et adjíciam semper omnem laudem tuam.

Os meum annuntiábit justítiam tuam: totâ die salutáre tuum.

Quóniam non cognóvi litteratúram; introíbo in poténtias Dómini : Dómine, memorábor justítiæ tuæ sólius.

Deus, docuísti me à juventúte mea : et usque nunc pronuntiábo mirabília tua.

Et usque in senéctam et sénium : Deus, Deus, ne derelínquas me.

Donec annúntiem bráchium tuum ; generatióni omni quæ ventúra est.

Poténtiam tuam et justítiam tuam, Deus, usque in altíssima quæ fecísti magnália : Deus, quis símilis tibi ?

Quantas ostendísti mihi tribulatiónes multas et malas, et convérsus vivificásti me : et de abyssis terræ íterum reduxísti me.

Multiplicásti magnificéntiam tuam : et convérsus consolátus es me.

Nam et ego confitébor tibi in vasis Psalmi veritátem tuam : Deus, psallam tibi in cíthara Sanctus Israël.

Exultábunt lábia mea cum cantávero tibi : et ánima mea quam redemísti.

Sed et lingua mea totâ die meditábitur justítiam tuam : cùm confúsi et reveríti fuerint qui quærunt mala mihi.

*Ant.* Deus meus, éripe me de manu peccatóris.

*Les Choristes.* ℣. Avertántur retrórsùm, et erubéscant.

*Le Recteur.* ℟. Qui cógitant mihi mala.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse, et tous les Pénitens à genoux.*

*Celui qui a charge de dire la première Lamentation, la dira au lieu et en la manière qui sera ordonnée; et au commencement d'icelle, et de toutes les autres Lamentations et Leçons de Tenèbres, on ne dit point la Bénédiction.*

---

## Première Leçon.

Incipit Lamentátio Jeremíæ Prophétæ.

### Aleph.

QUómodò sedet sola cívitas plena pópulo: facta est quasi vídua Dómina gentium: princeps provinciárum facta est sub tríbuto. BETH. Plorans plorávit in nocte, et lácrymæ ejus in maxíllis ejus: non est qui consolétur eam ex ómnibus charis ejus. Omnes amíci ejus sprevérunt eam, et facti sunt ei inimíci. GHIMEL. Migrávit Judas propter afflictiónem et mul-

titúdinem servitútis : habitávit inter gentes, nec invénit réquiem. Omnes persecutóres ejus apprehendérunt eam inter angústias. DALETH. Viæ Sion lugent, eò quòd non sint qui véniant ad solemnitátem, omnes portæ ejus destrúctæ, sacerdótes ejus geméntes, vírgines ejus squálidæ, et ipsa oppréssa amaritúdine. HE. Facti sunt hostes ejus in cápite, inimíci ejus locupletáti sunt, quia Dóminus locútus est super eam propter multitúdinem iniquitátum ejus. Párvuli ejus ducti sunt in captivitátem, ante fáciem tribulántis.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum tuum.

*Les deux Choristes, ou celui qui en a charge, dira les Répons suivans : car s'il y a Musique, les Musiciens diront les Répons de toutes les Leçons.*

℟. In monte Olivéti orávit ad Patrem : Pater, si fiéri potest, tránseat à me calix iste : Spíritus quidem promptus est, caro autem infírma.

*Celui qui a dit la Lamentation, dira le* ℣. Vigiláte et oráte, ut non intrétis in tentatiónem.

*Les deux Choristes.* ℣. Spíritus quidem promptus

promptus est, caro autem infírma.

*Et on observera cet ordre aux Leçons suivantes.*

## SECONDE LAMENTATION.

### VAU.

ET egréssus est à fília Sion omnis decor ejus: facti sunt princípes ejus velut ariétes non inveniéntes páscua, et abiérunt absque fortitúdine ante fáciem subsequéntis. ZAIN. Recordáta est Jerúsalem diérum afflictiónis suæ et prævaricatiónis ómnium desiderabílium suórum, quæ habúerat à diébus antíquis, cùm cáderet pópulus ejus in manu hostíli, et non esset auxiliátor. Vidérunt eam hostes, et derisérunt sábbata ejus. HETH. Peccátum peccávit Jerúsalem, proptérea instábilis facta est. Omnes qui glorificábant eam, sprevérunt illam: quia vidérunt ignomíniam ejus. Ipsa autem gemens convérsa est retrórsùm. TETH. Sordes ejus in pédibus ejus, nec recordáta est finis sui. Depósita est véhementer, non habens consolatórem. Vide, Dómine, afflictiónem meam, quóniam eréctus est inimícus.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* ℟. Tristis est ánima mea usque ad mortem : sustinéte hîc, et vigiláte mecum : nunc vidébitis turbam, quæ circumdábit me. Vos fugam capiétis, et ego vadam immolári pro vobis.

℣. Ecce appropínquat hora, et fílius hóminis tradétur in manus peccatórum.

℟. Vos fugam capiétis, et ego vadam immolári pro vobis.

## TROISIÈME LAMENTATION.

### JOD.

MAnum suam misit hostis ad ómnia desiderabília ejus : quia vidit gentes ingréssas Sanctuárium suum ; de quibus præcéperat ne intrárent in Ecclésiam suam. CAPH. Omnis pópulus ejus gemens, et quærens panem : dedérunt pretiósa quæque pro cibo ad refocillándam ánimam : Vide, Dómine, et consídera quóniam facta sum vilis. LAMED. O vos omnes, qui transítis per viam, atténdite et vidéte si est dolor sicut dolor meus : quóniam vindemiávit me, ut locútus est Dóminus in die iræ furóris sui. MEM. De excélso misit ignem in óssibus meis, et erudívit me : expándit rete pédibus meis, convértit me retrórsum : pósuit me

desolátam, totâ die mœróre conféctam. NUN. Vigilávit jugum iniquitátum meárum, in manu ejus convolútæ sunt, et impósitæ collo meo : infirmáta est virtus mea : dedit me Dóminus in manu, de qua non pótero súrgere.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* ℟. Ecce vídimus eum non habéntem spéciem neque decórem : aspéctus ejus in eo non est : hic peccáta nostra portávit, et pro nobis dolet : ipse autem vulnerátus est propter iniquitátes nostras. Cujus livóre sanáti sumus.

℣. Verè languóres nostros ipse tulit ; et dolóres nostros ipse portávit.

℟. Cujus livóre sanáti sumus.

*Ensuite tous trois ensemble répliqueront le* ℣.

Ecce vidimus eum non habéntem spéciem neque decórem : aspéctus ejus in eo non est : hic peccáta nostra portávit, et pro nobis dolet ; ipse autem vulnerátus est propter iniquitátes nostras, cujus livóre sanáti sumus.

## *SECOND NOCTURNE.*

*Le Recteur. Ant.* Liberávit Dóminus páuperem à poténte, et ínopem, cui non erat adjútor.

### *Psaume 71.*

DEus, judícium tuum regi da : et justítiam tuam fílio regis.

Judicáre pópulum tuum in justítia : et páuperes tuos in judício.

Suscípiant montes pacem pópulo : et colles justítiam.

Judicábit páuperes pópuli, et salvos fáciet fílios páuperum : et humiliábit calumniatórem.

Et permanébit cum Sole, et ante Lunam : in generatióne et generatiónem.

Descéndet sicut plúvia in vellus : et sicut stillicídia stillántia super terram.

Oriétur in diébus ejus justítia, et abundántia pacis, donec auferátur Luna.

Et dominábitur à mari usque ad mare : et à flúmine usque ad términos orbis terrárum.

Coram illo prócident Æthíopes : et inimíci ejus terram lingent.

Reges Tharsis, et Insulæ múnera ófferent :

reges Arabum, et Saba dona addúcent.

Et adorábunt eum omnes Reges terræ : omnes Gentes sérvient ei.

Quia liberábit páuperem à poténte : et páuperem cui non erat adjútor.

Parcet páuperi et ínopi : et ánimas páuperum salvas fáciet.

Ex usúris et iniquitáte rédimet ánimas eórum : et honorábile nomen eórum coram illo.

Et vivet, et dábitur ei de auro Arábiæ, et adorábunt de ipso semper : totâ die benedícent ei.

Et erit firmaméntum in terra in summis móntium, superextollétur super Líbanum fructus ejus : et florébunt de civitáte sicut fœnum terræ.

Sit nomen ejus benedíctum in sécula : ante Solem pérmanet nomen ejus.

Et benedicéntur in ipso omnes tribus terræ : omnes Gentes magnificábunt eum.

Benedíctus Dóminus Deus Israël : qui facit mirabília solus.

Et benedíctum nomen majestátis ejus in ætérnum : et replébitur majestáte ejus omnis terra ; fiat, fiat.

*Ant.* Liberávit Dóminus páuperem à

poténte, et ínopem cui non erat adjútor.

*Le Recteur. Ant.* Cogitavérunt ímpii, et locúti sunt nequítiam : iniquitátem in excélso locúti sunt.

*Psaume 72.*

QUàm bonus Israël Deus : his qui recto sunt corde !

Mei autem penè moti sunt pedes : penè effúsi sunt gressus mei.

Quia zelávi super iníquos : pacem peccatórum videns.

Quia non est respéctus morti eórum : et firmaméntum in plaga eórum.

In labóre hóminum non sunt : et cum homínibus non flagellabúntur.

Ideò ténuit eos supérbia : opérti sunt iniquitáte et impietáte suâ.

Pródiit quasi ex ádipe iniquítas eórum : transiérunt in afféctum cordis.

Cogitavérunt, et locúti sunt nequítiam : iniquitátem in excélso locúti sunt.

Posuérunt in cœlo os suum : et lingua eórum transívit in terra.

Ideò convertétur pópulus meus hic : et dies pleni inveniéntur in eis.

Et dixerunt, Quómodo scit Deus ? et si est sciéntia in Excélso ?

Ecce ipsi peccatóres, et abundántes in século : obtinuérunt divítias.

Et dixi, Ergo sine causa justificávi cor meum : et lavi inter innocéntes manus meas.

Et fui flagellátus totâ die : et castigátio mea in matutínis.

Si dicébam, Narrábo sic : ecce natiónem filiórum tuórum reprobávi.

Existimábant ut cognóscerem hoc : labor est ante me.

Donec intrem in sanctuárium Dei : et intélligam in novíssimis eórum.

Verúmtamen propter dolos posuísti eis : dejecísti eos, dum allevaréntur.

Quómodo facti sunt in desolatiónem, súbitò defecérunt : periérunt propter iniquitátem suam.

Velut sómnium surgéntium, Dómine : in civitáte tua, imáginem ipsórum ad nihílum rédiges.

Quia inflammátum est cor meum, et renes mei commutáti sunt : et ego ad nihílum redáctus sum, et nescívi.

Ut juméntum factus sum apud te : et ego semper tecum.

Tenuísti manum déxteram meam, et in voluntáte tua deduxísti me : et cum glória suscepísti me.

Quid enim mihi est in cœlo : et à te quid vólui super terram ?

Defécit caro mea, et cor meum : Deus cordis mei, et pars mea Deus in ætérnum.

Quia ecce qui elóngant se à te, períbunt: perdidísti omnes qui fornicántur abs te.

Mihi autem adhærére Deo bonum est : pónere in Dómino Deo spem meam.

Ut annúntient omnes prædicatiónes tuas: in portis fíliæ Sion.

*Antienne.* Cogitavérunt ímpii, et locúti sunt nequítiam : iniquitátem in excélso locúti sunt.

*Le Recteur. Ant.* Exúrge, Dómine, et júdica causam meam.

*Psaume 73.*

UT quid, Deus, repulísti in finem : irátus est furor tuus super oves páscuæ tuæ ?

Memor esto congregatiónis tuæ : quam possedísti ab inítio.

Redemísti virgam hæreditátis tuæ : mons Sion in quo habitásti in eo.

Leva manus tuas in supérbias eórum in finem : quanta malignátus est inimícus in sancto !

Et gloriáti sunt qui odérunt te : in médio solemnitátis tuæ.

Posuérunt signa sua, signa: et non cognovérunt, sicut in éxitu super summum.

Quasi in silva lignórum secúribus excidérunt jánuas ejus in idípsum: in secúri et áscia dejecérunt eam.

Incendérunt igni Sanctuárium tuum: in terra polluérunt tabernáculum nóminis tui.

Dixérunt in corde suo cognátio eórum simul; Quiéscere faciámus omnes díes festos Dei à terra.

Signa nostra non vídimus, jam non est Prophéta: et nos non cognóscet ámpliùs.

Usquequò Deus improperábit inimícus: írritat adversárius nomen tuum in finem?

Ut quid avértis manum tuam, et déxteram tuam: de médio sinu tuo in finem?

Deus autem rex noster ante sécula: operátus est salútem in médio terræ.

Tu confirmásti in virtúte tua mare: contribulásti cápita dracónum in aquis.

Tu confregísti cápita dracónis: dedísti eum escam pópulis Æthíopum.

Tu dirupísti fontes et torréntes: tu siccásti flúvios Ethan.

Tuus est dies, et tua est nox: tu fabricátus es auróram et solem.

Tu fecísti omnes términos terræ : æstátem et ver tu psalmásti ea.

Memor esto hujus, inimícus improperávit Dómino : et pópulus insípiens incitávit nomen tuum.

Ne trádas béstiis ánimas confiténtes tibi : et ánimas páuperum tuórum ne obliviscáris in finem.

Réspice in testaméntum tuum : quia repléti sunt, quia obscuráti sunt, terræ dómibus iniquitátum.

Ne avertátur húmilis factus confúsus : pauper et inops laudábunt nomen tuum.

Exúrge, Deus, júdica causam meam : memor esto improperiórum tuórum, eórum quæ ab insipiénte sunt totâ die.

Ne obliviscáris voces inimicórum tuórum : supérbia eórum qui te odérunt, ascéndit semper.

*Ant.* Exúrge, Dómine, et júdica causam meam.

*Les Choristes.* ℣. Deus meus, éripe me de manu peccatóris.

*Le Chœur.* ℟. Et de manu contra legem agéntis et iníqui.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

## QUATRIÈME LEÇON.

Ex tractátu S. Augustíni Epíscopi super Psalmos. *In Psalm.* 54.

EXáudi, Deus, oratiónem meam, et ne despéxeris deprecatiónem meam: inténde mihi, et exáudi me. Satagéntis, sollíciti, in tribulatióne pósiti, verba sunt ista. Orat multa pátiens, de malo liberári desíderans. Supérest ut videámus in quo malo sit: et cùm dícere cœperit, agnoscámus ibi nos esse; ut communicátâ tribulatióne, conjungámus oratiónem. Contristátus sum, inquit, in exercitatióne mea, et conturbátus sum. Ubi contristátus? Ubi conturbátus? In exercitatióne mea, inquit. Hómines malos, quos pátitur, commemorátus est; eamdémque passiónem malórum hóminum, exercitatiónem suam dixit. Ne putétis gratis esse malos in hoc mundo, et nihil boni de illis ágere Deum. Omnis malus aut ídeò vivit, ut corrigátur; aut ídeò vivit, ut per illum bonus exerceátur.

*Les Choristes.* ℟. Amícus meus ósculi me trádidit signo: Quem osculátus fúero, ipse est, tenéte eum: hoc malum fecit signum, qui per ósculum adimplévit homicídium! Infélix! prætermísit prétium sánguinis, et in fine láqueo se suspéndit.

℣. Bonum erat ei, si natus non fuisset homo ille.

℟. Infélix prætermísit prétium sánguinis, et in fine láqueo se suspéndit.

## CINQUIÈME LEÇON.

UTinam ergò qui nos modò exércent, convertántur, et nobíscum exerceántur ! tamen quándiu ita sunt ut exérceant nos, non eos odérimus : quia in eo quòd malus est quis eórum, utrùm usque in finem perseveratúrus sit, ignorámus. Et plerúmque cùm tibi vidéris odísse inimícum, fratrem odísti, et nescis. Diábolus et Angéli ejus in scriptúris sanctis manifestáti sunt nobis, quód ad ignem ætérnum sunt destináti. Ipsórum tantùm desperánda est corréctio, contra quos habémus occùltam luctam; ad quam luctam nos armat Apóstolus, dicens : Non est nobis colluctátio advérsùs cárnem et sánguinem, id est non advérsùs hómines quos vidétis, sed advérsus princípes et potestátes, et rectóres mundi, tenebrárum harum. Ne fortè cùm dixísset, mundi, intellígeres dæmones esse rectóres cœli et terræ : mundi dixit, tenebrárum harum : mundi dixit, amatórum mundi :

mundi dixit, impiórum et iniquórum: mundi dixit, et de quo dicit Evangélium: Et mundus eum non cognóvit.

*Les Choristes.* ℟. Judas mercátor péssimus ósculo pétiit Dóminum: ille ut agnus ínnocens non negávit Judæ ósculum: Denariórum número Christum Judæis trádidit.

℣. Méliùs illi erat, si natus non fuísset.

℟. Denariórum número Christum Judæis trádidit.

## SIXIÈME LEÇON.

QUòniam vidi iniquitátem et contradictiónem in civitáte. Attende glóriam crucis ipsíus. Jam in fronte regum crux illa fixa est, cui inimíci insultavérunt. Efféctus probávit virtútem. Dómuit orbem non ferro, sed ligno. Lignum crucis contuméliis dignum visum est inimícis, et ante ipsum lignum stantes caput agitábant, et dicébant: Si Fílius Dei est, descéndat de cruce. Extendébat ille manus suas ad pópulum non credéntem, et contradicéntem. Si enim justus est qui ex fide vivit, iníquus est qui non habet fidem. Quòd ergo hìc ait iniquitátem, perfídiam intéllige. Vidébat ergo Dóminus in civitáte iniquitátem et contradictiónem, et extendébat manus suas ad

pópulum non credéntem, et contradicéntem; et tamen ipsos expéctans dicébat: Pater, ignósce illis, quia nésciunt quid fáciunt.

*Les Choristes.* ℟. Unus ex discípulis meis tradet me hódie: Væ illi per quem tradar ego! Méliùs illi erat, si natus non fuísset.

℣. Qui intíngit mecum manum in paròpside, hic me traditúrus est in manus peccatórum.

℟. Méliùs illi erat, si natus non fuísset.

*Ensuite tous trois ensemble disent le Répons*

Unus ex discípulis meis tradet me hódie: Væ illi per quem tradar ego! Méliùs illi erat, si natus non fuísset.

---

## *TROISIÈME NOCTURNE.*

*Le Recteur. Ant.* Dixi iníquis: Nolíte loqui advérsùs Deum iniquitátem.

### *Psaume* 94.

CONfitébimur tibi, Deus: confitébimur, et invocábimus nomen tuum:

Narrábimus mirabília tua: cùm accépero tempus, ego justítias judicábo.

Liquefácta est terra, et omnes qui hábi-

tant in ea : ego confirmávi colúmnas ejus.

Dixi iníquis, Nolíte iníquè ágere : et delinquéntibus, Nolíte exaltáre cornu.

Nolíte extóllere in altum cornu vestrum: Nolíte lóqui advérsùs Deum iniquitátem.

Quia neque ab Oriénte, neque ab Occidénte, neque à desértis móntibus : quóniam Deux júdex est.

Hunc humíliat, et hunc exáltat : quia calix in manu Dómini, vini meri plenus misto.

Et inclinávit ex hoc in hoc, verùmtamen fæx ejus non est exinaníta ; bibent peccatóres terræ.

Ego autem annuntiábo in séculum : cantábo Deo Jacob.

Et ómnia córnua peccatórum confríngam : et exaltabúntur córnua justi.

*Ant.* Dixi iníquis : Nolíte loqui advérsùs Deum iniquitátem.

*Le Recteur. Ant.* Terra trémuit et quiévit, dum exúrgeret in judício Deus.

*Psaume 75.*

NOtus in Judæa Deus : in Israël magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus ; et habitátio ejus in Sion.

Ibi confrégit poténtias árcuum : scutum, gládium et bellum.

Illúminans tu mirabíliter à móntibus ætérnis : turbáti sunt omnes insipiéntes corde.

Dormiérunt somnum suum : et nihil invenérunt omnes viri divitiárum in mánibus suis.

Ab increpatióne tua Deus Jacob : dormitavérunt qui ascendérunt equos.

Tu terríbilis es, et quis resístet tibi? ex tunc ira tua.

De cœlo audítum fecísti judícium : terra trémuit et quiévit.

Cùm exúrgeret in judícium Deus : ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ.

Quóniam cogitátio hóminis confitébitur tíbi : et relíquiæ cogitatiónis diem festum agent tibi.

Vovéte, et réddite Dómino Deo vestro : omnes qui in circúitu ejus affértis múnera.

Terríbili, et ei qui aufert spíritum Príncipum : terríbili apud Reges terræ.

*Ant.* Terra trémuit et quiévit, dum exúrgeret in judício Deus.

*Le Recteur. Ant.* In die tribulatiónis meæ Deum exquisívi mánibus meis.

*Psaume*

## *Psaume* 76.

VOce meâ ad Dóminum clamávi : voce meâ ad Deum, et inténdit mihi.

In die tribulatiónis meæ Deum exquisívi, mánibus meis nocte contra eum : et non sum decéptus.

Rénuit consolári ánima mea : memor fui Dei, et delectátus sum, et exercitátus sum, et defécit spíritus meus.

Anticipavérunt vigílias óculi mei : turbátus sum, et non sum locútus.

Cogitávi dies antíquos : et annos ætérnos in mente hábui.

Et meditátus sum nocte cum corde meo : et exercitábar, et scopébam spíritum meum.

Numquid in ætérnum projíciet Deus : aut non appónet ut complacítior sit adhuc ?

Aut in finem misericórdiam suam abscíndet : à generatióne in generatiónem ?

Aut obliviscétur miseréri Deus : aut continébit in ira sua misericórdias suas ?

Et dixi, Nunc cœpi : hæc mutátio déxteræ Excélsi.

Memor fui óperum Dómini : quia memor ero ab inítio mirabílium tuórum.

Et meditábor in ómnibus opéribus tuis : et in adinventiónibus tuis exercébor.

Deus in sancto via tua, quis Deus magnus sicut Deus noster ? tu es Deus, qui facis mirabília.

Notam fecísti in pópulis virtútem tuam : redemísti in bráchio tuo pópulum tuum, fílios Jacob et Joseph.

Vidérunt te aquæ Deus, vidérunt te aquæ : et timuérunt, et turbáti sunt abyssi.

Multitúdo sónitûs aquárum : vocem dedérunt nubes.

Etenim sagíttæ tuæ tránseunt : vox tonítrui tui in rota.

Illuxérunt coruscatiónes tuæ orbi terræ : commóta est, et contrémuit terra.

In mari via tua, et sémitæ tuæ in aquis multis : et vestígia tua non cognoscéntur.

Deduxísti sicut oves pópulum tuum : in manu Moysi et Aaron.

*Ant.* In die tribulatiónis meæ Deum exquisívi mánibus meis.

*Les deux Choristes.* ℣. Exúrge, Dómine.

*Le Chœur.* ℟. Et júdica causam meam.

*Le Recteur.* Pater noster. *à voix basse.*

## SEPTIÈME LEÇON.

De Epístola prima Beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios. *Cap.* 11. *d.*

HOc autem præcípio, non laudans quòd non in méliùs, sed in détériùs, convénitis. Primùm quidem conveniéntibus vobis in Ecclésiam, áudio scissúras esse inter vos, et ex parte credo. Nam opórtet hæreses esse, ut et qui probáti sunt, manifésti fiant in vobis. Conveniéntibus ergo vobis in unum, jam non est Dóminicam cœnam manducáre. Unusquísque enim suam cœnam præsumit ad manducándum. Et álius quidem ésurit; álius autem ébrius est. Numquid domos non habétis ad manducándum et bibéndum? aut Ecclésiam Dei contémnitis, et confúnditis eos, qui non habent? Quid dicam vobis? Laudo vos? In hoc non laudo.

*Les deux Choristes.* ℟. Eram quasi agnus ínnocens; ductus sum ad immolándum, et nesciébam: consílium fecérunt inimíci mei advérsùm me, dicéntes: Veníte, mittámus lignum in panem ejus, et eradámus eum de terra vivéntium.

℣. Omnes inimíci mei advérsùm me

cogitábant mala mihi : verbum iníquum mandavérunt advérsùm me, dicéntes.

℟. Veníte, mittámus lignum in panem, ejus, et eradámus eum de terra vivéntium.

### HUITIÈME LEÇON.

EGo enim accépi à Dómino, quod et trádidi vobis : quóniam Dóminus Jésus, in qua nocte tradebátur, accépit panem, et grátias agens fregit, et dixit : Accípite et manducáte : Hoc est corpus meum, quod pro vobis tradetur; hoc fácite in meam commemoratiónem. Simíliter et cálicem, postquam cœnávit, dicens : Hic calix novum testaméntum est in meo sánguine. Hoc fácite, quotiescúmque bibétis, in meam commemoratiónem. Quotiescúmque enim manducábitis panem hunc, et cálicem bibétis, mortem Dómini annuntiábitis donec véniat.

*Les Choristes.* ℟. Unâ horâ non potuístis vigiláre mecum, qui exhortabámini mori pro me : Vel Judam non vidétis, quómodò non dormit; sed festínat trádere me Júdæis?

℣. Quid dormítis ? súrgite, et oráte, ne intrétis in tentatiónem.

℟. Vel Judam non vidétis, quómodò non dormit, sed festínat trádere me Júdæis.

## NEUVIÈME LEÇON.

ITaque quicúmque manducáverit panem hunc, vel bíberit cálicem Dómini indignè, reus erit córporis et sánguinis Dómini. Probet autem seipsum homo, et sic de pane illo edat, et de cálice bibat. Qui enim mandúcat et bibit indignè, judícium sibi mandúcat et bibit, non dijúdicans corpus Dómini. Ideò inter vos multi infírmi et imbecílles, et dórmiunt multi. Quòd si nosmetípsos dijudicarémus, non útique judicarémur. Dum judicámur autem, à Dómino corrípimur; ut non cum hoc mundo damnémur. Itaque, Fratres mei, cùm convenítis ad manducándum, ínvicem expectáte. Si quis ésurit, domi mandúcet; ut non in judícium conveniátis. Cætera autem, cùm vénero, dispónam.

*Les Choristes.* ℟. Senióres pópuli concílium fecérunt: Ut Jesum dolo tenérent, et occidérent: cum gládiis et fústibus exiérunt tanquam ad latrónem.

℣. Collegérunt Pontífices et Pharisæi concílium.

℟. Ut Jesum dolo tenérent, et occidérent: cum gládiis et fústibus exiérunt tanquam ad latrónem.

*Ensuite tous ensemble diront le Répons:*

Senióres pópuli concílium fecérunt, ut Jesum dolo tenérent, et occidérent: cum gládiis et fústibus exiérunt tanquam ad latrónem.

---

## A LAUDES.

*Le Recteur. Ant.* Justificéris, Dómine, in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

*Les Choristes.* *Psaume* 50.

MIserére meî, Deus: secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum: dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea: et à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ègo cognósco: et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci: ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus concéptus sum: et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti: incérta

et occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me, Dómine, hyssópo, et mundábor : lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam : et exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis : et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus : et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua : et spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui : et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas : et ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ : et exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries : et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique : holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte

tua Sion : ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes et holocáusta : tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Celui qui aura charge, dira l'Ant.* Justificéris, Dómine, in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris. *Et ainsi des autres.*

*Le Recteur. Ant.* Dóminus tanquam ovis ad víctimam ductus est, et non apéruit os suum.

## *Psaume* 89.

DOmine, refúgium factus es nobis : à generatióne in generatiónem.

Priúsquam montes fíerint, aut formarétur terra, et orbis : à século, et usque in séculum tu es Deus.

Ne avértas hóminem in humilitátem : et dixísti, Convertímini fílii hóminum.

Quóniam mille anni ante óculos tuos : tanquam dies hestérna quæ prætériit.

Et custódia in nocte : quæ pro nihilo habéntur, eórum anni erunt.

Manè sicut herba tránseat, manè flóreat, et tránseat : véspere décidat, indúret, et aréscat.

Quia defécimus in ira tua : et in furóre tuo turbáti sumus.

Posuísti iniquitátes nostras in conspéctu tuo : séculum nostrum in illuminatióne vultûs tui.

Quóniam omnes dies nostri defecérunt: et in ira tua deféćimus.

Anni nostri sicut aránea meditabúntur: dies annórum nostrórum in ipsis septuagínta anni.

Si autem in potentátibus octogínta anni : et ámpliùs eórum labor et dolor.

Quóniam supervénit mansuetúdo : et corripiémur.

Quis novit potestátem iræ tuæ : et præ timóre tuo iram tuam dinumeráre?

Déxteram tuam sic notam fac : et erudítos corde in sapiéntia.

Convértere, Dómine, úsquequò : et deprecábilis esto super servos tuos.

Repléti sumus manè misericórdiâ tuâ : et exultávimus et delectáti sumus ómnibus diébus nostris.

Lætáti sumus pro diébus, quibus nos humiliásti : annis, quibus vídimus mala.

Réspice in servos tuos, et in ópera tua : et dírige fílios eórum.

Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos; et ópera mánuum nostrárum dírige

super nos : et opus mánuum nostrárum dírige.

*Ant.* Dóminus tanquam ovis ad víctimam ductus est, et non apéruit os suum.

*Le Recteur. Ant.* Contrítum est cor meum in médio meî, contremuérunt ómnia ossa mea.

### *Psaume* 62.

DEus, Deus meus : ad te de luce vígilo. Sitívit in te ánima mea : quàm multiplíciter tibi caro mea.

In terra deserta, et ínvia, et inaquósa : sic in sancto appárui tibi, ut vidérem virtútem tuam, et glóriam tuam.

Quóniam mélior est misericórdia tua super vitas : lábia mea laudábunt te.

Sic benedícam te in vita mea : et in nómine tuo levábo manus meas.

Sicut ádipe et pinguédine repleátur ánima mea : et lábiis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tuî super stratum meum in matutínis meditábor in te : quia fuísti adjútor meus.

Et in velaménto alárum tuárum exultábo, adhæsit ánima mea post te : me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam

meam, introíbunt in inferióra térræ : tradéntur in manus gládii, partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabúntur omnes qui jurant in eo : quia obstrúctum est os loquéntium iníqua.

*Psaume* 66.

DEus misereátur nostrî, et benedícat nobis : illúminet vultum suum super nos, et misereátur nostrî.

Ut cognoscámus in terra viam tuam : in ómnibus géntibus salutáre tuum.

Confiteántur tibi pópuli, Deus : confiteántur tibi pópuli ómnes.

Læténtur et exúltent gentes, quóniam júdicas pópulos in æquitáte, et gentes in terra dírigis.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, confiteántur tibi pópuli ómnes : terra dedit fructum suum.

Benedícat nos Deus, Deus noster, benedícat nos Deus : et métuant eum ómnes fines terræ.

*Ant.* Contrítum est cor meum in médio meî, contremuérunt ómnia ossa mea.

*Le Recteur. Ant.* Exhortátus es in virtúte tua, et in refectióne sancta tua, Dómine.

## CANTIQUE DE MOYSE. Exod. 15.

CAntémus Dómino, glorióse enim magnificátus est : equum et ascensórem dejécit in mare.

Fortitúdo mea et laus mea, Dóminus: et factus est mihi in salútem.

Iste Deus meus, et glorificábo eum : Deus patris mei, et exaltábo eum.

Dóminus quasi vir pugnátor, omnípotens nomen ejus : currus Pharaónis, et exércitum ejus projécit in mare.

Elécti príncipes ejus submérsi sunt in mari Rubro, abyssi operuérunt eos : descendérunt in profúndum quasi lapis.

Déxtera tua, Dómine, magnificáta est in fortitúdine; déxtera tua, Dómine, percússit inimícum : et in multitúdine glóriæ tuæ deposuísti adversários tuos.

Misísti iram tuam, quæ devorávit eos sicut stípulam : et in spíritu furóris tui congregátæ sunt aquæ.

Stétit unda fluens : congregátæ sunt abyssi in médio mari.

Dixit inimícus; Pérsequar, et comprehendam : dívidam spólia, implébitur ánima mea.

Evaginábo gládium meum : interfíciet eos manus mea.

Flávit spíritus tuus, et opéruit eos mare : submérsi sunt quasi plumbum in aquis veheméntibus.

Quis símilis tuî in fórtibus, Dómine? Quis símilis tuî, magníficus in sanctitáte, terríbilis atque laudábilis, fáciens mirabília?

Extendísti manum tuam, et devorávit eos terra : dux fuísti in misericórdia tua pópulo, quem redemísti.

Et portásti eum in fortitúdine tua : ad habitáculum sanctum tuum.

Ascendérunt pópuli, et iráti sunt : dolóres obtinuérunt habitatóres Philístiim.

Tunc conturbáti sunt príncipes Edom, robústos Moab obtínuit tremor : obriguérunt omnes habitatóres Chánaan.

Irruat super eos formído et pavor : in magnitúdine bráchii tui.

Fiant immóbiles quasi lapis, donec pertránseat pópulus tuus, Dómine : donec pertránseat pópulus tuus iste, quem possedísti.

Introdúces eos, et plantábis in monte hæreditátis tuæ : firmíssimo habitáculo tuo, quod operátus es, Dómine.

Sanctuárium tuum, Dómine, quod fir-

mavérunt manus tuæ : Dóminus regnábit in ætérnum, et ultrà.

Ingréssus est enim eques Phárao cum cúrribus et equítibus ejus in mare : et redúxit super eos Dóminus aquas maris.

Fílii autem Israël ambulavérunt per siccum : in médio ejus.

*Ant.* Exhortátus es in virtúte tua, et in refectióne sancta tua, Dómine.

*Le Recteur. Ant.* Oblátus est, quia ipse vóluit, et peccáta nostra ipse portávit.

### *Psaume* 148.

LAudáte Dóminum de cœlis : laudáte eum in excélsis.

Laudáte eum omnes Angeli ejus : laudáte eum omnes Virtútes ejus.

Laudáte eum sol et luna : laudáte eum omnes stellæ et lumen.

Laudáte eum cœli cœlórum : et aquæ omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini.

Quía ipse dixit, et facta sunt : ipse mandávit, et creáta sunt.

Státuit ea in ætérnum, et in séculum séculi : præcéptum pósuit, et non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra : dracónes et omnes abyssi.

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum : quæ fáciunt verbum ejus.

Montes et omnes colles : ligna fructífera, et omnes cedri.

Béstiæ, et univérsa pécora : serpéntes, et vólucres pennátæ.

Reges terræ, et omnes pópuli : príncipes, et omnes júdices terræ.

Júvenes et vírgines, senes cum junióribus, laudent nomen Dómini : quia exaltátum est nomen ejus solíus.

Conféssio ejus super cœlum et terram : et exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus ómnibus Sanctis ejus : fíliis Israël, pópulo appropinquánti sibi.

## *Psaume* 149.

CAntáte Dómino cánticum novum : laus ejus in Ecclésia Sanctórum.

Lætétur Israël in eo qui fecit eum : et fíliæ Sion exúltent in Rege suo.

Laudent nomen ejus in choro : in tympano et psaltério psallant ei.

Quia beneplácitum est Dómino in pópulo suo : exaltábit mansuétos in salútem.

Exultábunt Sancti in glória : lætabúntur in cubílibus suis.

Exaltatiónes Dei in gútture eórum : et gládii ancípites in mánibus eórum.

Ad faciéndam vindíctam in natiónibus : increpatiónes in pópulis.

Ad alligándos Reges eórum in compédibus : et nóbiles eórum in mánicis férreis.

Ut fáciant in eis judícium conscríptum: glória hæc est ómnibus Sanctis ejus.

*Psaume* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus : laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus : laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ : laudáte eum in psaltério et cíthara.

Laudáte eum in tympano et choro : laudáte eum in chordis et órgano.

Laudáte eum in cymbális benesonántibus, laudáte eum in cymbális jubilatiónis: omnis spíritus laudet Dóminum.

*Ant.* Oblátus est, quia ipse vóluit; et peccáta nostra ipse portávit.

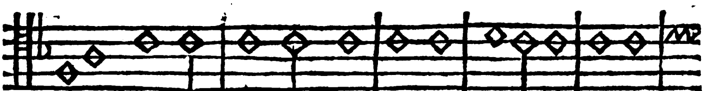
*Les Choristes.* ℣. Homo pacis meæ, in quo sperávi.

*Le Chœur.* ℞. Qui edébat panes meos, ampliávit advérsùm me supplantatiónem.

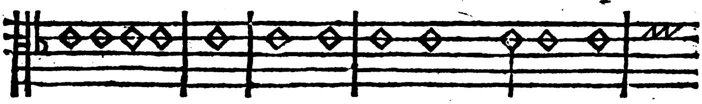
*A tous les deux Versets du* Benedíctus, *on éteint un des six cierges qui sont sur l'Autel; en sorte qu'il ne demeure que le cierge qui est demeuré allumé du reste des quinze qui étoient au chandelier du devant de l'Autel.*

*Le Recteur. Ant.* Traditor autem dedit eis signum, dicens : Quem osculátus fúero, ipse est, tenéte eum.

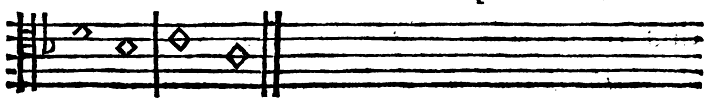
CANTIQUE DE ZACHARIE. Luc. 2.



BEnedíctus Dóminus Deus Israël : quia



visitávit et fecit redemptiónem



plebis suæ.

Et eréxit cornu salútis nobis : in domo David puéri sui.

Sicut locútus est per os Sanctórum : qui à seculo sunt, Prophetárum ejus.

Salútem ex inimícis nostris : et de manu ómnium qui odérunt nos.

Ad faciéndam misericórdiam cum pátri-

bus nostris : et memorári testaménti sui sancti.

Jusjurándum quod jurávit ad Abraham patrem nostrum : datúrum se nobis.

Ut sine timóre de manu inimicórum nostrórum liberáti : serviámus illi.

In sanctitáte et justítia coram ipso : ómnibus diébus nostris.

Et tu puer prophéta Altíssimi vocáberis : præíbis enim ante fáciem Dómini paráre vias ejus.

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus : in remissiónem peccatórum eórum.

Per víscera misericórdiæ Dei nostri : in quibus visitávit nos Oriens ex alto.

Illumináre his qui in ténebris, et in umbra mortis sedent : ad dirigéndos pedes nostros in viam pacis.

*Ant.* Tráditor autem dedit eis signum, dicens : Quem osculátus fúero, ipse est, tenéte eum.

*Tous les Pénitens à genoux, les Choristes diront le* ℣. Christus factus est pro nobis obédiens.

*Le Chœur.* ℟. Usque ad mortem.

*Le Recteur.* Pater noster. *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo.

*Tous les flambeaux et cierges étant éteints, excepté un, le Recteur commence le Psaume suivant, si ce n'est que la Musique le commence.*

## *Psaume* 50.

MIserére meî, Deus : secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum : dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea : et à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco : et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci : ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus concéptus sum : et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti : incérta et occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me, Dómine, hyssópo, et mundábor : lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam : et exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis : et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus: et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua : et spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui : et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas : et ímpii ad te convertèntur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ : et exaltábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries : et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique : holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion : ut ædificéntur muri Jerúsalem.

*Ensuite tous s'inclinent à terre durant le dernier Verset.*

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes et holocáusta : tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Le Recteur dira sans* OREMUS :

RESpice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre torméntum.

*Ensuite il dira à voix basse :* Qui tecum vivit, etc.

*Et la chandelle éteinte, on fait les ténèbres ; et ainsi finissent les Matines.*

---

## VÊPRES
## DES JEUDI ET VENDREDI SAINTS.

*Le Recteur dira* Pater noster, Ave María.

*Le Recteur. Ant.* Cálicem salutáris accípiam, et nomen Dómini invocábo.

### *Psaume* 115.

CRédidi propter quod locútus sum : ego autem humiliátus sum nimis.

Ego dixi in excéssu meo : omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino pro ómnibus quæ retríbuit mihi ?

Cálicem salutáris accípiam : et nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram omni

pópulo ejus : pretiósa in conspéctu Dómini mors Sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus : ego servus tuus, et fílius ancíllæ tuæ.

Dirupísti víncula mea : tibi sacrificábo hóstiam laudis, et nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspéctu omnis pópuli ejus : in átriis domûs Dómini, in médio tuî, Jerúsalem.

*Ant.* Cálicem salutáris accípiam, et nomen Dómini invocábo.

*Le Recteur. Ant.* Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus : cum loquébar illis, impugnábant me grátis.

*Psaume* 119.

AD Dóminum cùm tribulárer clamávi : et exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis : et à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi : ad linguam dolósam ?

Sagíttæ poténtis acútæ : cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, qui incolátus meus prolongátus est ! Habitávi cum habitántibus Cedar : multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus : cum loquébar illis, impugnábant me gratis.

*Ant.* Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus : cum loquébar illis, impugnábant me gratis.

*Le Recteur. Ant.* Ab homínibus iníquis líbera me, Dómine.

*Psaume* 139.

ERipe me, Dómine, ab hómine malo : à viro iníquo éripe me.

Qui cogitavérunt iniquitátes in corde : totâ die constituébant prælia.

Acuérunt linguas suas sicut serpéntis : venénum áspidum sub lábiis eórum.

Custódi me, Dómine, de manu peccatóris : et ab homínibus iníquis éripe me.

Qui cogitavérunt supplantáre gressus meos : abscondérunt supérbi láqueum mihi.

Et funes extendérunt in láqueum : juxta iter scándalum posuérunt mihi.

Dixi Dómino, Deus meus es tu : exáudi, Dómine, vocem deprecatiónis meæ.

Dómine, Dómine, virtus salútis meæ : obumbrásti super caput meum in die belli.

Ne tradas me, Dómine, à desidério meo peccatóri : cogitavérunt contra me, ne de-

relínquas me, ne fortè exalténtur.

Caput circúitûs eórum : labor labiórum ipsórum opériet eos.

Cadent super eos carbónes, in ignem dejícies eos : in misériis non subsístent.

Vir linguósus non dirigétur in terra : virum injústum mala cápient in intéritu.

Cognóvi quia fáciet Dóminus judícium inópis : et vindíctam páuperum.

Verúmtamen justi confitebúntur nómini tuo : et habitábunt recti cum vultu tuo.

*Ant.* Ab hominíbus íniquis líbera me, Dómine.

*Le Recteur. Ant.* Custódi me à láqueo quem statuérunt mihi, et à scándalis operántium iniquitátem.

*Psaume* 140.

DOmine, clamávi ad te, exáudi me : inténde voci meæ, cùm clamávero ad te.

Dirigátur orátio mea, sicut incénsum in conspéctu tuo : elevátio mánuum meárum sacrifícium vespertínum.

Pone, Dómine, custódiam ori meo : et ostium circumstántiæ lábiis meis.

Non declínes cor meum in verba malítiæ : ad excusándas excusatiónes in peccátis.

Cum homínibus operántibus iniquitátem :

et non communicábo cum eléctis eórum.

Corrípiet me justus in misericórdia, et increpábit me : óleum autem peccatóris non impínguet caput meum.

Quóniam adhuc et orátio mea in beneplácitis eórum ; absórpti sunt juncti petræ júdices eórum.

Audient verba mea, quóniam potuérunt : sicut crassitúdo terræ erúpta est super terram.

Dissipáta sunt ossa nostra secùs inférnum : quia ad te, Dómine, Dómine, óculi mei, in te sperávi, non áuferas ánimam meam.

Custódi me à láqueo quem statuérunt mihi ; et à scándalis operántium iniquitátem.

Cadent in retiáculo ejus peccatóres : singuláriter sum ego, donec tránseam.

*Ant.* Custódi me à láqueo quem statuérunt mihi, et à scándalis operántium iniquitátem.

*Le Recteur. Ant.* Considerábam ad déxteram, et vidébam : et non érat qui cognósceret me.

*Psaume* 141.

VOce mea ad Dóminum clamávi : voce mea ad Dóminum deprecátus sum.

Effúndo in conspéctu ejus oratiónem

meam tribulatiónem meam ante ipsum pronúntio.

In deficiéndo ex me spíritum meum ; et tu cognovísti sémitas meas.

In via hac quâ ambulábam : abscondérunt láqueum mihi.

Considerábam ad déxteram, et vidébam : et non erat qui cognósceret me.

Périit fuga à me : et non est qui requírat ánimam meam.

Clamávi ad te, Dómine, dixi, tu es spes mea : pórtio mea in terra vivéntium.

Inténde ad deprecatiónem meam : quia humiliátus sum nimis.

Líbera me à persequéntibus me : quia confortáti sunt super me.

Educ de custódia ánimam meam ad confiténdum nómini tuo : me expéctant justi donec retríbuas mihi.

*Ant.* Considerábam ad déxteram, et vidébam, et non erat qui cognósceret me.

*Le Recteur. Ant.* Cœnántibus autem illis, accépit Jesus panem, et benedíxit, ac frégit, deditque Discípulis suis.

*Cantique de la Vierge Marie.* Luc. I.

MAgníficat : ánima mea Dóminum.

Et exultávit Spíritus meus : in Deo salutári meo.

Quia respéxit humilitátem ancíllæ suæ : ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna qui potens est : et sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies, timéntibus eum.

Fecit poténtiam in bráchio suo : dispérsit supérbos mente cordis sui.

Depósuit poténtes de sede : et exaltávit húmiles.

Esuriéntes implévit bonis : et dívites dimisit inánes.

Suscépit Israël puérum suum : recordátus misericórdiæ suæ.

Sicut locútus est ad patres nostros : Abraham et sémini ejus in sécula.

*Ant.* Cænántibus autem illis, accépit Jesus panem, et benedíxit, ac fregit, deditque discípulis suis.

*Les Choristes.* ℣. Christus factus est pro nobis obédiens.

*Le Chœur.* ℟. Usque ad mortem.

*Le Recteur.* Pater noster. *à voix basse.* *Puis on dit le Psaume* 50. Miserére meî, Deus, etc. *avec l'Oraison* Respice, quæsumus, etc. *pag.* 435.

# A COMPLIES.

*Lesquelles on peut dire en particulier ou autrement, ainsi que le Recteur le trouvera à propos.*

*Le Recteur dira le* Confitéor, Miseréatur nostrî, Indulgéntiam, etc. *le tout au long.*

*Les Choristes commenceront le Psaume 4.*

CUm invocárem, exáudivit me Deus justítiæ meæ : in tribulatióne dilatásti mihi.

Miserére meî: et exáudi oratiónem meam.

Fílii hóminum úsquequò grávi corde : ut quid dilígitis vanitátem, et quæritis mendácium?

Et scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum : Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini, et nolíte peccáre : quæ dícitis in córdibus vestris, in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte sacrifícium justítiæ, et speráte in Dómino : multi dicunt, quis osténdit nobis bona?

Signátum est super nos lumen vultûs tui,

Dómine : dedísti lætítiam in corde meo.

A fructu fruménti, vini, et ólei sui : multiplicáti sunt.

In pace in idípsum : dórmiam et requiéscam.

Quóniam tu, Dómine, singuláriter in spe : constituísti me.

*Psaume* 30.

IN te, Dómine, sperávi, non confúndar in ætérnum : in justítia tua líbera me.

Inclína ad me aurem tuam : accélera ut éruas me.

Esto mihi in Deum protectórem, et in domum refúgii : ut salvum me fácias.

Quóniam fortitúdo mea : et refúgium meum es tu : et propter nomen tuum dedúces me, et enútries me.

Edúces me de láqueo hoc quem abscondérunt mihi : quóniam tu es protéctor meus.

In manus tuas comméndo spíritum meum : redemísti me, Dómine, Deus veritátis.

*Psaume* 90.

QUi hábitat in adjutório Altíssimi : in protectióne Dei cœli commorábitur.

Dicet Dómino, Suscéptor meus es tu, et refúgium meum : Deus meus, sperábo in eum.

Quóniam ipse liberávit me de láqueo venántium : et à verbo áspero.

Scápulis suis obumbrábit tibi : et sub pennis ejus sperábis.

Scuto circumdábit te véritas ejus : non timébis à timóre noctúrno.

A sagítta volánte in die, à negótio perambulánte in ténebris : ab incursu, et dæmónio meridiáno.

Cadent à látere tuo mille, et decem millia à dextris tuis : ad te autem non appropinquábit.

Verúmtamen óculis tuis considerábis : et retributiónem peccatórum vidébis.

Quóniam tu es, Dómine, spes mea : altíssimum posuísti refúgium tuum.

Non accédet ad te malum : et flagéllum non appropinquábit tabernáculo tuo.

Quóniam Angelis suis mandávit de te : ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

In mánibus portábunt te : ne fortè offendas ad lápidem pedem tuum.

Super aspídem et basilíscum ambulábis : et conculcábis leónem et dracónem.

Quóniam in me sperávit, liberábo eum : protégam eum, quóniam cognóvit nomen meum.

Clamábit ad me, et ego exáudiam eum: cum ipso sum in tribulatióne, erípiam eum, et glorificábo eum.

Longitúdine diérum replebo eum : et osténdam illi salutáre meum.

## *Psaume* 133.

ECce nunc benedicíte Dóminum : omnes servi Dómini.

Qui státis in domo Dómini : in átriis domûs Dei nostri.

In nóctibus extóllite manus vestras in sancta : et benedícite Dóminum.

Benedicat te Dóminus ex Sion : qui fecit cœlum et terram.

## *Cantique de S. Siméon.* Luc. 2.

NUnc dimíttis servum tuum, Dómine, secúndùm verbum tuum in pace.

Quia vidérunt óculi mei : salutáre tuum.

Quod parásti : ante fáciem ómnium populórum.

Lumen ad revelatiónem Géntium : et glóriam plebis tuæ Israël.

*Les Choristes.* ℣. Christus factus est pro nobis obédiens.

*Le Chœur.* ℟. Usque ad mortem.

*Psaume* 50.

Miserére meî, Deus, secúndùm magnam misericórdiam tuam; *comme à la page* 435.

*A la fin du Psaume, le Recteur dira :*

RESpice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit manibus tradi nocéntium, et crucis subíre torméntum. Per Dóminum nostrum, etc.

Amen.

---

## L'ORDRE

### DE LAVER LES PIEDS DES PAUVRES,

Qui se fait le Jeudi Saint par le Recteur ou Sous-Recteur.

*Les Sacristains apprêteront les choses necessaires pour faire la Cérémonie ; savoir, un bassin, un aiguière avec de l'eau, et du linge pour sécher les pieds des Pauvres. Ensuite le Diacre, revêtu à l'accoutumée, commencera l'Evangile suivant, à haute voix, sans chanter.*

ANte diem festum Paschæ, sciens Jesus quia venit hora ejus, ut tránseat ex hoc mundo ad Patrem : cùm dilexísset suos qui erant

erant in mundo, in finem diléxit eos. Et cœnâ factâ, cùm Diábolus jam misísset in cor, ut tráderet eum Judas Simónis Iscariótes, sciens Jesus quia ómnia dedit ei Pater in manus; et quia à Deo exívit, et ad Deum vadit, surgit à cœna.

*Le Recteur se lèvera de sa place; et quand le Diacre dira*, Et ponit vestiménta sua,

*Il ôtera son manteau :*

Et cùm accepísset línteum, præcínxit se.

*Il se ceindra du mantil, préparé pour essuyer les pieds des pauvres.* Deíndè misit aquam in pelvim, *prenant l'eau de la main des Sacristains, il la versera dans le vaisseau préparé à cet effet.*

Et cœpit laváre pedes, *il commencera à laver les pieds* Discipulórum suórum, *des pauvres*, et térgere línteo quo erat præcínctus. Venit ergo ad Simónem Petrum. Et dixit ei Petrus : Dómine, tu mihi lavas pedes? Respóndit Jesus, et dixit ei : Quod ego fácio, tu nescis modò : scies autem póstea. Dixit ei Petrus : Non lavábis mihi pedes in ætérnum. Respóndit ei Jesus : Si non lávero te, non habébis partem mecum. Dixit ei Simon Petrus : Dómine, non tantùm pedes meos, sed et manus et caput. Dixit ei

Jesus : Qui lotus est, non índiget, nisi ut pedes lavet, sed est mundus totus. Et vos mundi estis, sed non omnes. Sciébat enim quisnam esset qui tráderet eum; proptérea dixit : Non estis mundi omnes.

*Lors le Recteur s'arrêtera, et les Choristes ou Musiciens diront l'Hymne suivante, en tout ou en partie, selon que la cérémonie durera.*

DUlcis Jesu memória,
Dans vera cordis gáudia;
Sed super mel et ómnia,
Ejus dulcis præséntia.

Nil cánitur suávius,
Audítur nil jucúndius,
Nil cogitátur dúlcius,
Quàm Jesus Dei Fílius.

Jesu spes pœniténtibus,
Quàm dulcis te peténtibus!
Quàm pius te quæréntibus!
Sed quid inveniéntibus?

Nec lingua potest dícere,
Nec líttera exprímere:
Expértus novit crédere
Quid sit Jesum dilígere.

Jesu dulcédo córdium,
Fons vivus, lumen méntium,

Excédit omne gáudium,
Et omne desidérium.
Jesum quæram in léctulo,
Clauso cordis cubículo,
Privátìm et in público,
Quæram amóre sédulo.
Cum María dilúculo,
Jesum quæram in túmulo,
Cordis clamóre sédulo:
Mente quæram, non óculo.
Tumbam profúndam flétibus,
Replens locum gemítibus.
Jesu, provólvar pédibus,
Strictis hærens ampléxibus.
Jesu, stringam vestígia,
Et flendo figam lábia,
Ut detur mihi vénia,
Atque perfécta grátia.
Jesu Rex admirábilis,
Et triumphátor nóbilis;
Dulcédo ineffábilis,
Totus desiderábilis.
Mane nobíscum, Dómine,
Et nos illústra lúmine;
Pulsâ mentis calígine,
Reple mentem dulcédine.
Quando cor nostrum vísitas,

Tunc lucet ei véritas,
Viléscit mundi vánitas,
Et intùs fervet cháritas.

Amor Jesu dulcíssimus,
Et verè suavíssimus,
Plus míllies gratíssimus
Quàm dícere sufficimus.

Hoc probat ejus pássio,
Et sánguinis effúsio,
Per quam nobis redémptio
Datur, et Dei vísio.

Jesum omnes agnóscite,
Amórem pium póscite,
Jesum ardénter quærite,
Quæréndo inardéscite.

Jesus auctor cleméntiæ,
Totíus spes lætítiæ:
Dulcóris fons et grátiæ,
Veræ cordis lætítiæ.

Cùm dígnè loqui néqueam,
De re tamen non síleam:
Amóre fac ut árdeam,
Cùm de te solùm gáudeam.

Tua Jesu diléctio,
Grata mentis reféctio,
Replet sine fastídio,
Dans famem desidério.

Qui te gustant, esúriunt;
Qui bibunt, adhuc sítiunt;
Desideráre nésciunt,
Nisi Jesum quem séntiunt.
Quem tuus amor ébriat,
Novit quid Jesus sápiat,
Felix gustus quem sátiat,
Nil est ultrà quod cúpiat.
Jesu, decus angélicum,
In aure dulce cánticum,
In ore mel miríficum,
Corde pigméntum cœlicum.
Desídero te míllies:
Mi Jesu, quando vénies,
Quando me lætum fácies.
Tuo me vultu sáties.
Amor tuus contínuus,
Mihi languor assíduus,
Mihi Jesus Mellífluus,
Fructus vitæ perpétuus.
Jesu, summa benignítas,
Mira cordis jucúnditas,
Et incompréhensa bónitas,
Tua me trahet cháritas.
Bonum mihi dilígere
Jesum, nil ultra quærere,
Mihi prorsùs defícere,

Ut illi queam vívere.
O Jesu mi dulcíssime,
Spes suspirántis ánimæ,
Te piæ quærunt lácrymæ,
Et clamor mentis íntimæ.
Quocúnque loco fuéro,
Mecum Jesum desídero:
Quàm lætus cùm invénero!
Quàm felix cùm tenúero!
Tunc ampléxus, tunc óscula,
Quæ vincunt mellis pócula,
Sed in his parva mórula,
Nisi fruar in glória.
Jam quod quæsívi vídeo,
Quod concupívi téneo:
Amóre Jesu lángueo,
Et corde totus árdeo.
Hic amor ardet dúlciter,
Dulcéscit mirabíliter,
Sapit delectabíliter,
Et deléctat felíciter.
Hic amor missus cœlitùs,
Hæret cordi medúllitùs:
Mentem accéndit pénitùs,
Cùm delectátur spíritus.
O beátum incéndium,
O ardens desidérium,

O dulce refrigérium,
Amáre Dei Fílium.
Jesus cùm sic dilígitur,
Hic amor non extínguitur,
Nec tepéscit, nec móritur,
Sed crescit, et accénditur.
Jesu flos matris Vírginis,
Amor nostræ dulcédinis,
Tibi laus, honor núminis,
Regnum beatitúdinis.
Veni, veni, Rex óptime,
Pater immensæ glóriæ,
Effúlge clare cláriùs,
Jam expectáte sæpiùs.
Jam prosequámur láudibus
Jesum hymnis et précibus,
Ut nos donet cœléstibus
Frui cum Cœli Cívibus.

*Et l'hymne parachevée, le Diacre achèvera le reste de l'Evangile.*

POstquàm ergo lavit pedes eórum, accépit vestiménta sua.

*Le Recteur reprendra son manteau.*

Et cùm recubuísset íterum, dixit eis: Scitis quid fécerim vobis? Vos vocátis me, Magíster et Dómine: et benè dícitis: sum étenim. Si ergo lavi pedes vestros Dóminus

et Magíster : vos debétis alter altérius laváre pedes. Exémplum enim dedi vobis, ut quemádmodum ego feci vobis, ita et vos faciátis.

*Le Prêtre bénira les choses ordinaires pour la collation ; et puis ceux qui auront la charge, les distribueront, selon la coutume des lieux.*

*Et pendant que la distribution se fait, les deux Choristes commencent l'hymne* : Ubi cháritas et amor, Deus ibi est. *Tous les Pénitens répondront* : Ubi cháritas et amor, Deus ibi est. *Les Choristes suivront.*

Congregávit nos in unum Christi amor,
Exultémus et in ipso jucundémur,
Timeámus et amémus Deum vivum,
Et ex corde diligámus nos sincéro.
*Les Pénitens.* ℟. Ubi cháritas et amor,
Deus ibi est.

*Et ainsi des suivans.*

Qui non hábet charitátem, nihil habet,
Et in ténebris et umbra mortis manet:
Nos alterútrum amémus, et in die,
Sicut decet, ambulémus luce pleni.
℟. Ubi cháritas et amor, Deus ibi est.

Clamat Dóminus, et dicit clarâ voce :
Ubi fuérint in unum congregáti
Propter nomen meum, simul tres vel duo,

Et in médio eórum ego ero.
℟. Ubi cháritas et amor, Deus ibi est.
Simul ergo cùm in unum congregámur,
Ne nos mente dividámur, caveámus;
Cessent júrgia malígna; cessent lites;
Et in médio sit nostrî Christus Deus.
℟. Ubi cháritas et amor est, Deus ibi est.
Cháritas est summum bonum, amplum donum,
In qua pendet totus ordo præceptórum;
Per quam vetus, atque nova lex implétur,
Quæ de cœli celso mittit se replétos.
℟. Ubi cháritas et amor, Deus ibi est.
Nam ut cháritas conjúngit abséntes,
Sic discórdia disjúngit et præséntes,
Quia cháritas præcéptis in duóbus
Constat, quibus Deus, atque omnis homo.
℟. Ubi cháritas et amor, Deus ibi est.
Unanímiter Excélsum implorémus,
Ut det pacem Deus nostris in diébus,
Jungat fídei, speíque opus bonum,
Ut consórtium captémus supernórum.
℟. Ubi cháritas et amor, Deus ibi est.
Simul nosque cum beátis videámus
Gloriántes vultum tuum, Christe Deus:
Gáudium quod est imménsum, duratúrum
Sécula per infiníta seculórum. Amen.

℟. Ubi cháritas et amor, Deus ibi est.

*Celui à qui la charge en sera donnée, quand le Recteur lui en aura fait le signe, commencera le Sermon ; ou bien on dira l'Office qui suit.*

# L'OFFICE DU SOIR
## DU JEUDI SAINT;
### *Ou les Matines pour le Vendredi.*

*L'on tient le même ordre à l'égard du chant, des cierges, et autres cérémonies, comme l'on fait le Mercredi Saint.*

*Le Recteur.* Pater noster. Ave María. Credo in Deum ; *le tout à voix basse.*

*Le Recteur. Ant.* Astitérunt Reges terræ, et Príncipes convenérunt in unum, advérsùs Dóminum, et advérsùs Christum ejus.

*Les Choristes commenceront le Psaume 2.*

QUare fremuérunt gentes : et pópuli meditáti sunt inania?

Astitérunt Reges terræ, et Príncipes con-

venérunt in unum : advérsùs Dóminum, et advérsùs Christum ejus.

Dirumpámus víncula eórum : projiciámus à nobis jugum ipsórum.

Qui hábitat in cœlis, irridébit eos : et Dóminus subsannábit eos.

Tunc loquétur ad eos in ira sua : et in furóre suo conturbábit eos.

Ego autem constitútus sum Rex ab eo super Sion montem sanctum ejus : prædicans præcéptum ejus.

Dóminus dixit ad me : Fílius meus es tu ; ego hódie génui te.

Póstula à me, et dabo tibi gentes hæreditátem tuam : et possessiónem tuam términos terræ.

Reges eos in virga férrea : et tanquam vas fíguli confrínges eos.

Et nunc reges intellígite : erudímini qui judícátis terram.

Servíte Dómino in timóre : et exultáte ei cum tremóre.

Apprehéndite disciplínam, nequándo irascátur Dóminus : et pereátis de via justa.

Cùm exárserit in brevi ira ejus : beáti omnes qui confídunt in eo.

*Celui qui aura charge, dira l'Antienne :*

Astitérunt Reges terræ, et Príncipes convenérunt in unum, advérsùs Dóminum, et advérsùs Christum ejus.

*Et ainsi des suivantes.*

*Le Recteur. Ant.* Divisérunt sibi vestiménta mea : et super vestem meam misérunt sortem.

*Psaume* 21.

DEus, Deus meus, réspice in me, quare me dereliquísti? longè à salúte mea verba delictórum meórum.

Deus meus, clamábo per diem, et non exáudies : et nocte, et non ad insipientíam mihi.

Tu autem in sancto hábitas : laus Israël.

In te speravérunt patres nostri : speravérunt, et liberásti eos.

Ad te clamavérunt, et salvi facti sunt : in te speravérunt, et non sunt confúsi.

Ego autem sum vermis, et non homo : oppróbrium hóminum, et abjéctio plebis.

Omnes vidéntes me, derisérunt me : locúti sunt lábiis, et movérunt caput.

Sperávit in Dómino, erìpiet eum : salvum fáciat eum, quóniam vult eum.

Quóniam tu es qui extraxísti me de ventre : spes mea ab ubéribus matris meæ.

In te projéctus sum ex útero : de ventre matris meæ Deus meus es tu, ne discesséris à me.

Quóniam tribulátio próxima est : quóniam non est qui ádjuvet.

Circumdedérunt me vítuli multi : tauri pingues obsedérunt me.

Aperuérunt super me os suum : sicut leo rápiens et rúgiens.

Sicut aqua effúsus sum : et dispérsa sunt ómnia ossa mea.

Factum est cor meum tanquam cera liquéscens : in médio ventris mei.

Aruit tanquam testa virtus mea, et lingua mea adhæsit fáucibus meis : et in púlverem mortis deduxísti me.

Quóniam circumdedérunt me canes multi: concílium malignántium obsédit me.

Fodérunt manus meas, et pedes meos : dinumeravérunt ómnia ossa mea.

Ipsi verò consideravérunt, et inspexérunt me : divisérunt sibi vestiménta mea, et super vestem meam misérunt sortem.

Tu autem, Dómine, ne elongáveris auxílium tuum à me : ad defensiónem meam cónspice.

Erue à frámea, Deus, ánimam meam :

et de manu canis túnicam meam.

Salva me ex ore leónis : et à córnibus unicórnium humilitátem meam.

Narrábo nomen tuum fratribus meis: in médio Ecclésiæ laudábo te.

Qui timétis Dóminum, laudáte eum: univérsum semen Jacob, glorificáte eum.

Tímeat eum omne semen Israël : quóniam non sprévit, neque despéxit deprecatiónem páuperis.

Nec avértit fáciem suam à me : et cùm clamárem ad eum, exaudívit me.

Apud te laus mea in Ecclésia magna: vota mea reddam in conspéctu timéntium eum.

Édent páuperes, et saturabuntur, et laudábunt Dóminum qui requírunt eum: vivent corda eórum in séculum séculi.

Reminiscéntur, et converténtur ad Dóminum : univérsi fines terræ.

Et adorábunt in conspéctu ejus : univérsæ famíliæ géntium.

Quóniam Dómini est regnum : et ipse dominábitur géntium.

Manducavérunt, et adoravérunt omnes pingues terræ : in conspéctu ejus omnes qui descéndunt in terram.

Et ánima mea illi vivet : et semen meum serviet ipsi.

Annuntiábitur Dómino generátio ventúra : et annuntiábunt cœli justítiam ejus, pópulo qui nascétur, quem fecit Dóminus.

*Ant.* Divisérunt sibi vestiménta mea : et super vestem meam misérunt sortem.

*Psaume 26.*

Dominus illuminátio mea, et salus mea : quem timébo ?

Dóminus protéctor vitæ meæ : à quo trepidábo ?

Dum apprópiant super me nocéntes : ut edant carnes meas.

Qui tríbulant me inimíci mei : ipsi infirmáti sunt, et cecidérunt.

Si consístant advérsùm me castra : non timébit cor meum.

Si exúrgat advérsùm me prælium : in hoc ego sperábo.

Unam petii à Dómino, hanc requíram : ut inhábitem in domo Dómini ómnibus diébus vitæ meæ.

Ut vídeam voluptátem Dómini : et vísitem templum ejus.

Quóniam abscóndit me in tabernáculo suo : in die malórum protéxit me in abscóndito tabernáculi sui.

In petra exaltávit me : et nunc exaltávit

caput meum super inimícos meos.

Circuívi, et immolávi in tabernáculo ejus hóstiam vociferatiónis: cantábo, et psalmum dicam Dómino.

Exáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te: miserére meî, et exáudi me.

Tibi dixit cor meum, exquisívit te fácies mea: fáciem tuam, Dómine, requíram.

Ne avértas fáciem tuam à me: ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto, ne derelínquas me: neque despícias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus et mater mea dereliquérunt me: Dóminus autem assúmpsit me.

Legem pone mihi, Dómine in via tua: et dírige me in sémitam rectam propter inimícos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me: quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, et mentíta est iníquitas sibi.

Credo vidére bona Dómini: in terra vivéntium.

Expecta Dóminum, viríliter age: et confortétur cor tuum, et sústine Dóminum.

*Ant.* Insurrexérunt in me testes iníqui, et mentíta est iníquitas sibi.

*Les Choristes.* ℣. Divisérunt sibi vestiménta mea.

*Le*

*Le Chœur.* ℣. Et super vestem meam misérunt sortem.

*Le Recteur étant à genoux, dit :* Pater noster, *à voix basse.*

---

## Première Lamentation.

De Lamentatióne Jeremiæ Prophétæ.

Cap. 2. HETH.

COgitávit Dóminus dissipáre murum fíliæ Sion : teténdit funículum suum, et non avértit manum suam à perditióne; luxítque antemurále, et murus páriter dissipátus est. TETH. Defíxæ sunt in terra portæ ejus; pérdidit et contrívit vectes ejus, Regem ejus, et Príncipes ejus in géntibus. Non est lex, et Prophétæ ejus non invenérunt visiónem à Dómino. JOD. Sedérunt in terra, conticuérunt senes fíliæ Sion : conspersérunt cinere capita sua, accíncti sunt cilíciis: abjecérunt in terra cápita sua vírgines Jerúsalem. CAPH. Defecérunt præ lácrymis óculi meí, conturbáta sunt víscera mea. Effúsum est in terra jecur meum super contritiónem fíliæ pópuli mei, cùm defíceret párvulus, et lactens in pláteis óppidi.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les deux Choristes.* ℟. Omnes amíci mei dereliquérunt me, et prævaluérunt insidiántes mihi : trádidit me quem diligébam: Et terribílibus óculis, plagâ crudéli percutiéntes, acéto potábant me.

*Celui qui a dit la Lamentation.*

℣. Inter iníquos projecérunt me, et non pepercérunt ánimæ meæ.

*Les deux Choristes.* ℟. Et terribílibus óculis, plagâ crudéli percutiéntes, acéto potábant me.

*Et l'on observera cet ordre aux Leçons suivantes.*

## SECONDE LAMENTATION.

### LAMED.

MAtribus suis dixérunt : Ubi est tríticum et vinum, cùm defícerint quasi vulneráti in pláteis civitátis, cùm exhalárent ánimas suas in sinum matrum suárum. MEM. Cui comparábo te, vel cui assimilábo te, fília Jerúsalem! Cui exæquábo te, et consolábor te, vírgo fília Sion? Magna est enim velut mare contrítio tua : quis medébitur tuî? NUN. Prophétæ tui vidérunt tibi falsa et stulta ; nec aperiébant iniquitá-

tem tuam, ut te ad pœniténtiam provocárent. Vidérunt autem tibi assumptiónes falsas, et ejectiónes. SAMECH. Plausérunt super te mánibus omnes transeúntes per viam: sibilavérunt, et movérunt caput suum super fíliam Jerúsalem. Hæccinne est urbs, dicéntes, perfécti decóris, gáudium univérsæ terræ?

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* ℟. Velum templi scissum est: Et omnis terra trémuit. Latro de cruce clamábat, dicens: Meménto meî, Dómine, dum véneris in regnum tuum.

*Celui qui a dit la Lamentation.* ℣. Petræ scissæ sunt, et monuménta apérta sunt, et multa córpora Sanctórum, qui dormiérant, surrexérunt.

*Les Choristes.* ℟. Et omnis terra trémuit. Latro de cruce clamábat, dicens: Meménto meî, Dómine, dum véneris in regnum tuum.

## TROISIÈME LAMENTATION.

Cap. 3. ALEPH.

EGo vir, videns paupertátem meam in virga indignatiónis ejus, ALEPH., me minávit, et addúxit in ténebras, et non in

lucem. ALEPH. Tantùm in me vertit, et convértit manum suam totâ die. BETH. Vetústam fecít pellem meam et carnem meam, contrívit ossa mea. BETH. Ædificávit in gyro meo, et circumdédit me felle et labóre. BETH. In tenebrósis collocávit me, quasi mórtuos sempitérnos. GHIMEL. Circumædificávit advérsùm me, ut non egrédiar : aggravávit cómpedem meum. GHIMEL. Sed et cùm clamávero et rogávero, exclúsit oratiónem meam. GHIMEL. Conclúsit vias meas lapídibus quadrió, sémitas meas subvértit.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* ℟. Vínea mea elécta, ego te plantávi : Quómodo convérsa es in amaritúdinem, ut me crucifígeres, et Bárrabam dimítteres ?

℣. Sæpívi te, et lápides elégi ex te, et ædificávi turrim.

℟. Quómodo convérsa es in amaritúdinem ut me crucifígeres, et Bárrabam dimítteres ?

*Et puis tous trois ensemble disent :*

℟. Vínea mea elécta, ego te plantávi. Quómodo convérsa es in amaritúdinem, ut me crucifígeres, et Bárrabam dimítteres ?

## *SECOND NOCTURNE.*

*Le Recteur. Ant.* Vim faciébant, qui quærébant ánimam meam.

*Les deux Choristes. Psaume 37.*

DOmíne, ne in furóre tuo árguas me: neque in ira tua corrípias me.

Quóniam sagíttæ tuæ infíxæ sunt mihi: et confirmásti super me manum tuam.

Non est sánitas ín carne mea, à fácie iræ tuæ: non est pas óssibus meis, à fácie peccatórum meórum.

Quóniam iniquitátes meæ supergréssæ sunt caput meum: et sicut onus grave gravátæ sunt super me.

Putruérunt, et corrúptæ sunt cicatríces meæ: à fácie insipiéntiæ meæ.

Miser factus sum, et curvátus sum usque in finem: totâ die contristátus ingrediébar.

Quóniam lumbi mei impléti sunt illusiónibus: et non est sánitas in carne mea.

Afflíctus sum, et humiliátus sum nimis: rugiébam à gémitu cordis mei.

Dómine, ante te omne desidérium meum: et gémitus meus à te non est abscónditus.

Cor meum conturbátum est, derelíquit

me virtus mea : et lumen oculórum meórum, et ipsum non est mecum.

Amíci mei et próximi mei : advérsùm me appropinquavérunt, et stéterunt.

Et qui juxta me erant, de longè stetérunt : et vim faciébant qui quærébant ánimam meam.

Et qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes : et dolos totâ die meditabántur.

Ego autem tanquam surdus non audiébam : et sicut mutus non apériens os suum.

Et factus sum sicut homo non áudiens : et non habens in ore suo redargutiónes.

Quóniam in te, Dómine, sperávi : tu exáudies me, Dómine Deus meus.

Quia dixi, nequándo supergáudeant mihi inimíci mei : et dum commovéntur pedes mei, super me magna locúti sunt.

Quóniam ego in flagélla parátus sum : et dolor meus in conspéctu meo semper.

Quóniam iniquitátem meam annuntiábo : et cogitábo pro peccáto meo.

Inimíci autem mei vivunt, et confirmáti sunt super me : et multiplicáti sunt qui odérunt me iníquè.

Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi : quóniam sequébar bonitátem.

Ne derelínquas me, Dómine Deus meus : ne discésseris à me.

Inténde in adjutórium meum : Dómine, Deus salútis meæ.

*Ant.* Vim faciébant, qui quærébant ánimam meam.

*Le Recteur. Ant.* Confundántur et revereántur, qui quærunt ánimam meam, ut áuferant eam.

## *Psaume* 39.

EXpéctans expectávi Dóminum : et intendit mihi.

Et exaudívit preces meas : et edúxit me de lacu misériæ, et de luto fæcis.

Et státuit super petram pedes meos : et diréxit gressus meos.

Et immísit in os meum cánticum nóvum : carmen Deo nostro.

Vidébunt multi, et timébunt : et sperábunt in Dómino.

Beátus vir cujus est nomen Dómini spes ejus : et non respéxit in vanitátes, et insánias falsas.

Multa fecísti tu, Dómine Deus meus, mirabília tua : et cogitatiónibus tuis non est qui símilis sit tibi.

Annuntiávi, et locútus sum : multiplicáti sunt super númerum.

Sacrifícium et oblatiónem noluísti : aures autem perfecísti mihi.

Holocáustum et pro peccáto non postulásti : tunc dixi, Ecce vénio.

In cápite libri scriptum est de me, ut fácerem voluntátem tuam : Deus meus vólui, et legem tuam in médio cordis mei.

Annuntiávi justítiam tuam in Ecclésia magna : ecce lábia mea non prohibébo, Dómine, tu scisti.

Justítiam tuam non abscóndi in corde meo: veritátem tuam, et salutáre tuum dixi.

Non abscóndi misericórdiam tuam, et veritátem tuam : à concílio multo.

Tu autem, Dómine, ne longè fácias miseratiónes tuas à me : misericórdia tua, et véritas tua semper suscepérunt me.

Quóniam circumdedérunt me mala, quorum non est numérus : comprehendérunt me iniquitátes meæ, et non pótui ut vidérem.

Multiplicátæ sunt super capíllos cápitis mei : et cor meum derelíquit me.

Compláceat tibi, Dómine, ut éruas me : Dómine, ad adjuvándum me réspice.

Confundántur et revereántur simul, qui quærunt ánimam meam : ut áuferant eam.

Convertántur retrórsùm, et revereántur: qui volunt mihi mala.

Ferant conféstim confusiónem suam : qui dicunt mihi, Euge, euge.

Exúltent, et lætén tur super te omnes quæréntes te : et dicant semper, Magnificetur Dóminus qui díligunt salutáre tuum.

Ego autem mendícus sum et páuper : Dóminus sollícitus est meî.

Adjútor meus, et protéctor meus es tu : Deus meus ne tardáveris.

*Ant.* Confundántur et revereántur, qui quærunt ánimam meam, ut áuferant eam.

*Le Recteur. Ant.* Aliéni insurrexérunt in me, et fortes quæsiérunt ánimam meam.

## *Psaume* 53.

DEus, in nómine tuo salvum me fac : et in virtûte tua júdica me.

Deus, exáudi oratiónem meam : áuribus pércipe verba oris mei.

Quóniam aliéni insurrexérunt advérsùm me, et fortes quæsiérunt ánimam meam : et non proposuérunt Deum ante conspéctum suum.

Ecce enim Deus ádjuvat me : et Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

Avérte mala inimícis meis : et in veritáte tua dispérde illos.

Voluntárię sacrificábo tibi : et confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam bonum est.

Quóniam ex omni tribulatióne eripuísti me : et super inimícos meos despéxit óculus meus.

*Ant.* Aliéni insurrexérunt in me : et fortes quæsiérunt ánimam meam.

*Les deux Choristes.* ℣. Insurrexérunt in me testes iníqui.

*Le Chœur.* ℟. Et mentíta est iníquitas sibi.

*Le Recteur.* Pater noster. *à voix basse.*

## QUATRIÈME LEÇON.

Ex Tractátu Sancti Augustíni Epíscopi super Psalmos.

*In Psalmum 63. ad vers. 2.*

PRotexísti me, Deus ; à convéntu malignántium, à multitúdine operántium iniquitátem. Jam ipsum caput nostrum intueámur. Multi Mártyres tália passi sunt, sed nihil sic elúcet, quómodo caput Mártyrum : ibi méliùs intuémur, quod illi

expérti sunt. Protéctus est à multitúdine malignántium, protegénte se Deo, protegénte carnem suam ipso Fílio et hómine quem gerébat: quia fílius hóminis est, et Fílius Dei est; Fílius Dei, propter formam Dei; Fílius hóminis, propter formam servi, habens in potestáte pónere ánimam suam, et recípere eam. Quid ei potuérunt fácere inimíci? Occidérunt corpus, ánimam autem non occidérunt. Inténdite. Parùm ergo erat, Dóminum hortári Mártyres verbo, nisi firmáret exémplo.

*Les Choristes.* ℟. Tanquam ad latrónem exístis cum gládiis et fústibus comprehéndere me. Quotídiè apud vos eram in templo docens, et non me tenuístis: et ecce flagellátum dúcitis ad crucifigéndum.

℣. Cùmque injecíssent manus in Jesum, et tenuíssent eum, dixit ad eos.

℟. Quotídiè apud vos eram in templo docens, et non me tenuístis: et ecce flagellátum dúcitis ad crucifigéndum.

## CINQUIÈME LEÇON.

NOstis qui convéntus erat malignántium Judæórum, et quæ multitúdo erat operántium iniquitátem? Quam iniquitá-

tem? Quia voluérunt occídere Dóminum Jesum Christum. Tanta opéra bona, inquit, osténdi vobis: propter quod horum me vultis occídere? Pértulit omnes infírmos eórum, curávit omnes lánguidos eórum, prædicávit regnum cœlórum, non tácuit vítia eórum, ut ipsa pótiùs eis displicérent, non médicus à quo sanabántur. His ómnibus curatiónibus ejus ingráti, tanquam multa febre phrenétici, insaniéntes in médicum, qui vénerat curáre eos, excogitavérunt consílium perdéndi eum, tanquam ibi voléntes probáre, utrùm verè homo sit qui mori possit, an áliquid super hómines sit, et mori se non permíttat. Verbum ipsórum agnóscimus in Sapiéntia Salomónis. Morte turpíssima, inquiunt, condemnémus eum: interrogémus eum: erit enim respéctus in sermónibus illíus: Si enim verè Fílius Dei est, líberet eum.

*Les Choristes.* ℟. Ténebræ factæ sunt dum crucifixíssent eum Judæi: et circa horam nonam exclamávit Jesus voce magnâ: Deus meus, ut quid me dereliquísti? Et inclináto cápite, emísit spíritum.

℣. Exclámans Jesus voce magnâ, ait: Pater, in manus tuas commèndo spíritum meum.

℟. Et inclináto cápite, emísit spíritum.

## SIXIÈME LEÇON.

EXacuérunt tanquam gládium linguas suas. Non dicant Judæi, Non occídimus Christum. Etenim proptérea eum dedérunt júdici Piláto, ut quasi ipsi à morte ejus videréntur immúnes. Nam cùm dixísset eis Pilátus : Vos eum occídite; respondérunt: Nobis non licet occídere quemquam. Iniquitátem facinóris sui in júdicem hóminem refúndere volébant : sed numquid Deum júdicem fallébant? Quod fecit Pilátus, in eo ipso quod fecit, aliquántum párticeps fuit, sed in comparatióne illórum multò ipse innocéntior. Institit enim quantùm pótuit, ut illum ex eórum mánibus liberáret : nam proptérea flagellátum prodúxit ad eos. Non persequéndo Dóminum flagellávit, sed eórum furóri satisfácere volens : ut vel sic jam mitéscerent, et desínerent velle occídere, cùm flagellátum vidérent. Fecit et hoc. At ubi perseveravérunt, nostis illum lavísse manus, et dixísse quòd ipse non fecísset, mundum se esse à morte illíus. Fecit tamen. Sed si reus, quia fecit vel invítus : illi innocéntes, qui coegérunt ut fáceret? nullo modo. Sed ille dixit in eum senténtiam, et

jussit eum crucifígi, et quasi ipse occídit: et vos, ô Judæi! occidístis. Unde occidístis? Gládio linguæ: acuístis enim linguas vestras. Et quando percussístis, nisi quando clamástis: Crucifíge, crucifíge?

*Les Choristes.* ℟. Animam meam dílectam trádidi in manus iniquórum, et facta est mihi hæréditas mea, sicut leo in silva: dedit contra me voces adversárius, dicens: Congregámini, et properáte ad devorándum illum: posuérunt me in desérto solitúdinis, et luxit super me omnis terra: Quia non est invéntus qui me agnósceret, et fáceret benè.

℣. Insurrexérunt in me viri absque misericórdia, et non pepercérunt ánimæ meæ.

℟. Quia non est invéntus qui me agnósceret, et fáceret benè.

*Ensuite tous trois ensemble.* ℟. Animam meam diléctam trádidi in manus iniquórum, et facta est mihi hæréditas mea, sicut leo in silva: dedit contra me voces adversárius, dicens: Congregámini, et properáte ad devorándum illum: posuérunt me in desérto solitúdinis, et luxit super me omnis terra: Quia non est invéntus qui me agnósceret, et fáceret benè.

## TROISIÈME NOCTURNE.

*Le Recteur. Ant.* Ab insurgéntibus in me líbera me, Dómine ; quia occupavérunt ánimam meam.

*Les Choristes.* PSAUME 38.

ERipe me de inimícis meis, Deus meus : et ab insurgéntibus in me líbera me.

Eripe me de operántibus iniquitátem : et de viris sánguinum salva me.

Quia ecce cepérunt ánimam meam : irruérunt in me fortes.

Neque iníquitas mea, neque peccátum meum, Dómine : sine iniquitáte cucúrri, et diréxi.

Exúrge in me occúrsum meum, et vide : et tu Dómine, Deus virtútum, Deus Israël.

Inténde ad visitándas omnes gentes : non misereáris ómnibus qui operántur iniquitátem.

Convertêntur ad vésperam, et famem petiéntur ut canes, et circuíbunt civitátem.

Ecce loquéntur in ore suo, et gládius in lábiis eórum : quóniam quis audívit ?

Et tu, Dómine, deridébis eos : ad níhilum dedúces omnes gentes.

Fortitúdinem meam ad te custódiam, quia Deus suscéptor meus es : Deus meus misericórdia ejus prævéniet me.

Deus osténdet mihi super inimícos meos, ne occídas eos : nequándo obliviscántur pópuli mei.

Dispérge illos in virtúte tua : et depóne eos, protéctor meus Dómine.

Delíctum oris eórum sermónem labiórum ipsórum : et comprehendántur in supérbia sua.

Et de execratióne et mendácio annuntiabúntur in consummatióne : in ira consummatiónis et non erunt.

Et scient quia Deus dominábitur Jacob : et fínium terræ.

Convertèntur ad vésperam, et famem patiéntur ut canes : et circuíbunt civitátem.

Ipsi dispergéntur ad manducándum : si verò non fúerint saturáti, et murmurábunt.

Ego autem cantábo fortitúdinem tuam : et exaltábo manè misericórdiam tuam.

Quia factus es suscéptor meus : et refúgium meum in die tribulatiónis meæ.

Adjútor meus tibi psallam, quia Deus suscéptor meus es : Deus meus, misericórdia mea.

*Ant.*

*Ant.* Ab insurgéntibus in me, líbera me, Dómine, quia occupavérunt ánimam meam.

*Le Recteur. Ant.* Longè fecísti notos meos à me: tráditus sum, et non egrediébar.

*Psaume* 87.

DOmine, Deus salútis meæ: in die clamávi et nocte coram te.

Intret in conspéctu tuo orátio mea: inclína aurem tuam ad precem meam.

Quia repleta est malis ánima mea: et víta mea inférno appropinquávit.

Æstimátus sum cum descendéntibus in lacum: factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

Sicut vulneráti dormiéntes in sepúlcris, quorum non eos memor ámpliùs: et ipsi de manu tua repúlsi sunt.

Posuérunt me in lacu inferióri: in tenebrósis, et in umbra mortis.

Super me confirmátus est furor tuus: et omnes fluctus tuos induxísti super me.

Longè fecísti notos meos à me: posuérunt me abominatiónem sibi.

Tráditus sum, et non egrediébar: óculi mei languérunt præ inópia.

Clamávi ad te, Dómine, totâ die: expándi ad te manus meas.

Numquid mórtuis fácies mirabília : aut médici suscitábunt, et confitebúntur tibi?

Numquid narrábit áliquis in sepúlcro misericórdiam tuam et veritátem tuam in perditióne?

Numquid cognoscéntur in ténebris mirabília sua : et justítia tua in terra obliviónis?

Et ego ad te, Dómine, clamávi : et manè orátio mea prævéniet te.

Ut quid, Dómine, repéllis oratiónem meam : avértis fáciem tuam à me?

Pauper sum ego, et in labóribus à juventúte mea : exaltátus autem, humiliátus sum et conturbátus.

In me transiérunt iræ tuæ : et terróres tui conturbavérunt me.

Circumdedérunt me sicut aqua totâ die : circumdedérunt me simul.

Elongásti à me amícum et próximum : et notos meos à miséria.

*Ant.* Longè fecísti notos meos à me : tráditus sum, et non egrediébar.

*Le Recteur. Ant.* Captábunt in ánimam justi, et sánguinem innocéntem condemnábunt.

*Psaume* 93.

DEus ultiónum Dóminus : Deus ultiónum líberè egit.

Exaltáre qui júdicas terram : redde retributiónem supérbis.

Usquéquò peccatóres, Dómine : usquéquò peccatóres gloriabúntur ?

Effabúntur, et loquéntur iniquitátem : loquéntur omnes qui operántur injustítiam.

Pópulum tuum, Dómine, humiliavérunt : et hæreditátem tuam vexavérunt.

Víduam et ádvenam interfecérunt : et pupíllos occidérunt.

Et dixérunt, Non vidébit Dóminus : nec intélliget Deus Jacob.

Intellígite insipiéntes in pópulo : et stulti aliquándo sápite.

Qui plantávit aurem, non áudiet : aut qui fixit óculum, non consíderat ?

Qui córripit gentes, non árguet : qui docet hóminem sciéntiam ?

Dóminus scit cogitatiónes hóminum : quóniam vanæ sunt.

Beátus homo quem tu erudiéris, Dómine : et de lege tua docuéris eum.

Ut mítiges ei à diébus malis : donec fodiátur peccatóri fóvea.

Quia non repéllet Dóminus plebem suam : et hæreditátem suam non derelínquet.

Quoadúsque justítia convertátur in judí-

cium : et qui juxta illam omnes qui recto sunt corde.

Quis consúrget mihi advérsùs malignántes : aut quis stabit mecum advérsùs operántes iniquitátem ?

Nisi quia Dóminus adjúvit me : pauló minùs habitásset in inférno ánima mea.

Si dicébam, Motus est pes meus : misericórdia tua, Dómine, adjuvábat me.

Secúndùm multitúdinem dolórum meórum in corde meo : consolatiónes tuæ lætificavérunt ánimam meam.

Numquid adhæret tibi sedes iniquitátis : qui fingis labórem in præcépto ?

Captábunt in ánimam justi : et sánguinem innocéntem condemnábunt.

Et factus est mihi Dóminus in refúgium: et Deus meus in adjutórium spei meæ.

Et reddet illis iniquitátem ipsórum, et in malítia eórum dispérdet eos : dispérdet illos Dóminus Deus noster.

*Ant.* Captábunt in ánimam justi, et sánguinem innocéntem condemnábunt.

*Les deux Choristes.* ℣. Locúti sunt advérsùm me linguâ dolósâ.

*Le Chœur.* ℟. Et sermónibus ódii circumdedérunt me, et expugnavérunt me gratis.

*Le Recteur dira* Pater noster, *à voix basse.*

## SEPTIÈME LEÇON.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Hebræos.

CAP. 4. c.

FEstinémus ingrédi in illam réquiem, ne in idípsum quis íncidat incredulitátis exémplum. Vivus est enim sermo Dei, et éfficax, penetrabilíor omni gládio ancípiti: et pertíngens usque ad divisiónem ánimæ ac spíritûs, compágum quoque ac medullárum, et discrétor cogitatiónum, et intentiónum cordis. Et non est ulla creatúra invisíbilis in conspéctu ejus: ómnia autem nuda, et apérta sunt óculis ejus, ad quem nobis sermo. Habéntes ergo Pontíficem magnum, qui penetrávit cœlos, Jesum Fílium Dei, teneámus confessiónem. Non enim habémus Pontíficem qui non possit cómpati infirmitátibus nostris: tentátum autem per ómnia pro similitúdine absque peccáto.

*Les Choristes.* ℟. Tradidérunt me in manus impiórum, et inter iníquos projecérunt me, et non pepercérunt ánimæ meæ: congregáti sunt advérsùm me fortes: et sicut gigántes stetérunt contra me.

℣. Aliéni insurrexérunt advérsùm me,

et fortes quæsiérunt ánimam meam.

℟. Et sicut gigántes stetérunt contra me.

## HUITIÈME LEÇON.

ADeámus ergo cum fidúcia ad thronum grátiæ, ut misericórdiam consequámur, et grátiam inveniámus in auxílio oppórtuno. Omnis namque Póntifex ex homínibus assúmptus, pro homínibus constitúitur in iis quæ sunt ad Deum, ut ófferat dona et sacrifícia pro peccátis : qui condolére possit iis qui ignórant et errant : quóniam et ipse circumdátus est infirmitáte. Et proptérea debet, quemádmodum pro pópulo, ita étiam et pro semetípso offérre pro peccátis.

*Les Choristes.* ℟. Jesum trádidit ímpius summis Princípibus Sacerdótum, et Senióribus pópuli. Petrus autem sequebátur eum à longè, ut vidéret finem.

℣. Adduxérunt autem eum ad Caípham Príncipem Sacerdótum, ubi Scribæ et Pharisæi convénerant.

℟. Petrus autem sequebátur eum à longè, ut vidéret finem.

## NEUVIÈME LEÇON.

NEc quisquam sumit sibi honórem, sed qui vocátur à Deo, tanquam Aaron.

Sic et Christus non semetípsum clarificávit, ut Póntifex fíeret, sed qui locútus est ad eum, Fílius meus es tu, ego hódiè génui te. Quemádmodum et in álio loco dicit : Tu es Sacérdos in ætérnum secúndùm órdinem Melchísedech. Qui in diébus cárnis suæ preces supplicatiónesque ad eum qui possit illum salvum fácere à morte, cum clamóre válido: et lácrymis offérens, exaudítus est pro sua reveréntia. Et quidem cùm esset Fílius Dei, dídicit ex iis quæ passus est, obediéntiam, et consummátus, factus est ómnibus obtemperántibus sibi causa salútis ætérnæ, appellátus à Deo Póntifex, juxta órdinem Melchísedech.

*Les Choristes.* ℟. Caligavérunt óculi mei à flétu meo : quia elongátus est à me qui consolabátur me. Vidéte, omnes pópuli, si est dolor símilis sicut dolor meus.

*Celui qui a dit la Lamentation* :

℣. O vos omnes qui transítis per viam, atténdite et vidéte.

*Les Choristes.* Si est dolor símilis sicut dolor meus.

*Ensuite tous trois ensemble disent :*

℟. Caligavérunt óculi mei à flétu meo ; quia elongátus est à me qui consolabátur

me. Vidéte omnes pópuli, si est dolor símilis sicut dolor meus.

---

## A LAUDES.

*Le Recteur. Ant.* Próprio Fílio suo non pepércit Deus, sed pro nobis ómnibus trádidit illum.

### *Psaume* 50.

MIserére meî, Deus : secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum : dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea : et à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco : et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci : ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enìm in iniquitátibus concéptus sum : et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti : incérta et occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me, Dómine, hyssópo, et mun-

dábor : lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam : et exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis : et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus : et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua : et spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui : et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas : et ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ : et exaltábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries : et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique : holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion : ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ,

oblatiónes et holocáusta : tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Ant.* Próprio Fílio suo non pepércit Deus, sed pro nobis trádidit illum.

*Le Recteur. Ant.* Anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

### *Psaume* 142.

DOmine, exáudi oratiónem meam, áuribus pércipe obsecratiónem meam : in veritáte tua exáudi me, in tua justítia.

Et non intres in judícium cum servo tuo : quia non justificábitur in conspéctu tuo omnis vivens.

Quia persecútus est inimícus ánimam meam : humiliávit in terra vitam meam.

Collocávit me in obscúris sicut mórtuos séculi : et anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum; meditátus sum in ómnibus opéribus tuis : in factis mánuum tuárum meditábar.

Expándi manus meas ad te : ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exáudi me, Dómine : defécit spíritus meus.

Non avértas fáciem tuam à me : et símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam : quia in tè spéravi.

Notam fac mihi viam in qua ámbulem : quia ad te levávi ánimam meam.

Eripe me de inimícis meis, Dómine; ad te confúgi : doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam : propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me, in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam : et in misericórdia tua dispérdes inimícos meos.

Et perdes omnes qui tríbulant ánimam meam : quóniam ego servus tuus sum.

*Ant.* Anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

*Le Recteur. Ant.* Ait latro ad latrónem : Nos quidem digna factis recípimus ; hic autem quid mali fécit ? Meménto meî, Dómine, dum véneris in regnum tuum.

## *Psaume* 62.

DEus, Deus meus : ad te de luce vígilo. Sitívit in te ánima mea : quàm multiplíciter tibi caro mea.

In terra desérta, et ínvia, et inaquósa :

sic in sancto appárui tibi, ut vidérem virtútem tuam, et glóriam tuam.

Quóniam mélior est misericórdia tua super vitas : lábia mea laudábunt te.

Sic benedícam te in vita mea : et in nómine tuo levábo manus meas.

Sicut ádipe et pinguédine repleátur ánima mea: et lábiis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tuî super stratum meum, in matutínis meditábor in te : quia fuísti adjútor meus.

Et in velaménto alárum tuárum exultábo, adhæsit ánima mea post te : me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam meam, introíbunt in inferióra térræ : tradéntur in manus gládii, partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabúntur omnes qui jurant in eo : quia obstrúctum est os loquéntium iníqua.

### *Psaume* 66.

DEus misereátur nostrî, et benedícat nobis : illúminet vultum suum super nos, et misereátur nostrî.

Ut cognoscámus in terra viam tuam : in ómnibus géntibus salutáre tuum.

Confiteántur tibi pópuli, Deus: confiteántur tibi pópuli ómnes.

Lætentur et exúltent gentes, quóniam júdicas pópulos in æquitáte, et gentes in terra dírigis.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, confiteántur tibi pópuli ómnes: terra dedit fructum suum.

Benedícat nos Deus, Deus noster, benedícat nos Deus: et métuant eum omnes fines terræ.

*Ant.* Ait latro ad latrónem: Nos quidem digna factis recípimus; hic autem quid mali fecit? Meménto meî, Dómine, dum véneris in regnum tuum.

*Le Recteur. Ant.* Cùm conturbáta fúerit ánima mea, Dómine, misericórdiæ memor eris.

*Le Cantique d'Habacuc.* Chap. 3.

DOmine, audívi auditiónem tuam: et tímui.

Dómine, opus tuum: in médio annórum vivífica illud.

In médio annórum autem fácies: cùm irátus fuéris, misericórdiæ recordabéris.

Deus ab Austro véniet: et Sanctus de monte Pharan.

Opéruit cœlos glória ejus : et laudis ejus plena est terra.

Splendor ejus ut lux erit : córnua in mánibus ejus.

Ibi abscóndita est fortitúdo ejus : ante fáciem ejus ibit mors.

Et egrediétur diábolus ante pedes ejus : stetit, et mensus est terram.

Aspéxit et dissólvit gentes : et contríti sunt montes séculi.

Incurváti sunt colles mundi : ab itinéribus æternitátis ejus.

Pro iniquitáte vidi tentória Æthiópiæ turbabúntur pelles terræ Mádian.

Numquid in flumínibus irátus es, Dómine : aut in flumínibus furor tuus, vel in mari indignátio tua ?

Qui ascéndes super equos tuos : et quadrígæ tuæ salvatio.

Súscitans suscitábis arcum tuum : juraménta tribúbus, quæ locútus es.

Flúvios scindes terræ, vidérunt te, et doluérunt montes : gurges aquárum tránsiit.

Dedit abyssus vocem suam : altitúdo manus suas levávit.

Sol et Luna stetérunt in habitáculo suo : in luce sagittárum tuárum ibunt, in splen-

dóre fulguràntis hastæ tuæ.

In frémitu conculcábis terram : et in furóre obstupefácies gentes.

Egréssus es in salútem pópuli tui : in salútem cum Christo tuo.

Percussísti caput de domo ímpii : denudásti fundaméntum ejus usque ad collum.

Maledixísti sceptris ejus, cápiti bellatórum ejus : veniéntibus ut turbo ad dispergéndum me.

Exultátio eórum : sicut ejus qui dévorat páuperem in abscóndito.

Viam fecísti in mari equis tuis : in lutto aquárum multárum.

Audívi, et conturbátus est venter meus : à voce contremuérunt lábia mea.

Ingrediátur putrédo in óssibus meis : et subter me scáteat.

Ut requiéscam in die tribulatiónis : ut ascéndam ad pópulum accínctum nostrum.

Ficus enim non florébit : et non erit germen in víneis.

Mentiétur opus olívæ : et arva non áfferent cibum.

Abscindétur de ovíli pecus : et non erit arméntum in præsépibus.

Ego autem in Dómino gaudébo : et exul-

tábo in Deo JESU meo.

Deus Dóminus fortitúdo mea : et ponet pedes meos quasi cervórum.

Et super excélsa mea dedúcet me victor : in psalmis canéntem.

*Ant.* Cùm conturbáta fúerit ánima mea, Dómine, misericórdiæ memor eris.

*Le Recteur. Ant.* Meménto meî, Dómine, dùm véneris in regnum tuum.

*Psaume* 148.

LAudáte Dóminum de cœlis : laudáte eum in excélsis.

Laudáte eum omnes Angeli ejus : laudáte eum omnes Virtútes ejus.

Laudáte eum sol et luna : laudáte eum omnes stellæ et lumen.

Laudáte eum cœli cœlórum : et aquæ omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini.

Quía ipse dixit, et facta sunt : ipse mandávit, et creáta sunt.

Státuit ea in ætérnum, et in séculum séculi : præcéptum pósuit, et non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra : dracónes et omnes abyssi.

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum : quæ fáciunt verbum ejus.

Montes

Montes et omnes colles : ligna fructífera, et omnes cedri.

Béstiæ, et univérsa pécora : serpéntes, et vólucres pennátæ.

Reges terræ, et omnes pópuli : príncipes, et omnes júdices terræ.

Júvenes et vírgines, senes cum junióribus, laudent nomen Dómini : quia exaltátum est nomen ejus solíus.

Conféssio ejus super cœlum et terram : et exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus ómnibus Sanctis ejus : fíliis Israël, pópulo appropinquánti sibi.

## *Psaume* 149.

CAntáte Dómino cánticum novum : laus ejus in Ecclésia Sanctórum.

Lætétur Israël in eo qui fecit eum : et fílii Sion exúltent in Rege suo.

Laudent nomen ejus in choro : in tympano et psaltério psallant ei.

Quia beneplácitum est Dómino in pópulo suo : et exaltábit mansuétos in salútem.

Exultábunt Sancti in glória : lætabúntur in cubílibus suis.

Exaltatiónes Dei in gútture eórum : et gládii ancípites in mánibus eórum.

Ad faciéndam vindíctam in natiónibus: increpatiónes in pópulis.

Ad alligándos Reges eórum in compédibus: et nóbiles eórum in mánicis férreis.

Ut fáciant in eis judícium conscríptum: glória hæc est ómnibus Sanctis ejus.

*Psaume* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus: laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus: laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ: laudáte eum in psaltério et cíthara.

Laudáte eum in tympano et choro: laudáte eum in chordis et órgano.

Laudáte eum in cymbális benesonántibus, laudáte eum in cymbális jubilatiónis: omnis spíritus laudet Dóminum.

*Ant.* Meménto meî, Dómine, dùm véneris in regnum tuum.

*Les Choristes.* ℣. Collocávit me in obscúris.

*Le Chœur.* Sicut mórtuos séculi.

*Le Recteur. Ant.* Posuérunt super caput ejus causam ipsíus scriptam: Jesus Nazarénus, Rex Judæórum.

## CANTIQUE DE ZACHARIE. Luc. I.

BEnedíctus Dóminus Deus Israël : quia visitávit et fecit redemptiónem plebis suæ.

Et eréxit cornu salútis nobis : in domo David puéri sui.

Sicut locútus est per os Sanctórum : qui à seculo sunt, Prophetárum ejus.

Salútem ex inimícis nostris : et de manu ómnium qui odérunt nos.

Ad faciéndam misericórdiam cum pátribus nostris : et memorári testaménti sui sancti.

Jusjurándum quod jurávit ad Abraham patrem nostrum : datúrum se nobis.

Ut sine timóre de manu inimicórum nostrórum liberáti : serviámus illi.

In sanctitáte et justítia coram ipso : ómnibus diébus nostris.

Et tu puer prophéta Altíssimi vocáberis : præíbis enim ante fáciem Dómini paráre vias ejus.

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus : in remissiónem peccatórum eórum.

Per víscera misericórdiæ Dei nostri : in quibus visitávit nos Oriens ex alto.

Illumináre his qui in ténebris, et in

umbra mortis sedent : ad dirigéndos pedes nostros in viam pacis.

*Ant.* Posuérunt super caput ejus causam ipsíus scriptam : Jesus Nazarénus, Rex Judæórum.

*Les Pénitens se mettront tous à genoux, et les deux Choristes diront le* ℣. Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem.

*Le Chœur.* ℟. Mortem autem crucis.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

*Le Recteur.* Miserére meî, Deus, secúndùm magnam misericórdiam tuam.

*Et le Chœur suivra à voix basse.* Et secúndùm multitúdinem, etc. *page* 488.

*Et après, sans dire* OREMUS, *le Rect. dira :*

RESpice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre torméntum.

*Et puis à voix basse, il dira :* Qui tecum vivit, etc.

*Et les cierges éteints, on fera les Ténèbres ; et ainsi finiront les Matines.*

# OFFICE
## POUR LE VENDREDI SAINT.

## OFFICE DU MATIN.

*Après que le Prédicateur aura fini le Sermon de la Passion, les Pénitens se rendront à leur Chapelle, et là rangés en leurs places ordinaires, feront leur Office comme ci-après est contenu.*

*Premièrement, le Prêtre, revêtu d'une Chasuble noire, viendra avec les Sacristains, sans lumière ni Encensoir, mais seulement le missel porté par l'un d'eux : et étant à l'Autel, il s'agenouillera au milieu d'icelui avec les Sacristains. Cependant on y étendra une nappe toute seule : le Prêtre se relevant après son Oraison faite, baisera l'Autel au milieu, et ira au côté de l'Epître, tandis qu'un des Pénitens, capable de bien lire, et choisi par le Recteur et Maître du Chœur, se mettra derrière le Prêtre, et lira un peu hautement la Prophétie, et le Prêtre la lira aussi à voix secrète.*

PROPHÉTIE D'OSÉE. *Chap. 6.*

HÆc dicit Dóminus : In tribulatióne sua mane consúrgent ad me. Veníte, et revertámur ad Dóminum : qúia ipse cœpit, et sanábit nos : percútiet, et curábit nos : Vivificábit nos post duos dies : in die tértio suscitábit nos, et vivémus in conspéctu ejus. Sciémus, sequémurque, ut cognoscámus Dóminum. Quasi dilúculum præparátus est egréssus ejus : et véniet quasi imber nobis temporáneus et serotínus terræ. Quid fáciam tibi Ephraïm ? Quid fáciam tibi Juda ? Misericórdia vestra quasi nubes matutína : et quasi ros manè pertránsiens. Propter hoc dolávi in Prophétis, et occídi eos in verbis oris mei : et judícia tua, quasi lux, egrediéntur. Quia misericórdiam volui, et non sacrifícium : et sciéntiam Dei, plus quàm holocáusta.

*Le même dira le Trait, mais d'un ton plus bas.*

*Trait.* Dómine, audívi audítum tuum, et tímui : considerávi ópera tua, et expávi.

℣. In médio duórum animálium innotésceris : dùm appropinquáverint anni, cognósceris : dùm advénerit tempus, osténderis.

℣. In eo, dum conturbáta fuérit ánima mea : in ira, misericórdiæ memor eris.

℣. Deus à Líbano véniet, et Sanctus de monte umbróso et condénso.

℣. Opéruit cœlos Majéstas ejus : et laudis ejus plena est terra.

*Le Trait fini, le Prêtre dira*, OREMUS.
*L'un des Sacristains dira*, Flectámus génua.
*L'autre répondra*, Leváte.

*En même temps ils mettront un genou bas, et se relèveront toutes les fois qu'on dira le même.* *Le Prêtre.*

DEus, à quo et Judas réatûs sui pœnam, et confessiónis suæ latro præmium sumpsit : concéde nobis tuæ propitiatiónis efféctum : ut sicut in passióne sua Jesus Christus Dóminus noster divérsa utrísque íntulit stipéndia meritórum; ita nobis, abláto vetustátis erróre, Resurrectiónis suæ grátiam largiátur. Qui tecum vivit, etc.

*Le même Lecteur, ou un autre, s'il y en a plusieurs de capables, dira semblablement sans titre, et au même lieu :*

IN diébus illis, dixit Dóminus ad Moysen et Aaron in terra Ægypti : Mensis iste vobis princípium ménsium : primus erit in ménsibus anni. Loquímini ad univérsum

cœtum filiórum Israël, et dícite eis : Décimâ die mensis hujus tollat unusquísque agnum per famílias et domos suas. Sin autem minor est númerus, ut sufficere possit ad vescéndum agnum, assúmet vicínum suum, qui conjúnctus est dómui suæ, juxta númerum animárum quæ sufficere possunt ad esum agni. Erit autem agnus absque mácula, más-culus, anníeulus : juxta quem ritum tollétis et hœdum. Et servábitis eum usque ad quartam décimam diem mensis hujus. Immolábitque eum univérsa multitúdo filiórum Israël ad vésperam. Et sument de sánguine ejus; ac ponent super útrumque postem, et in superliminári bus domórum, in quibus comédent illum : Et edent carnes nocte illâ assas igni, et ázymos panes cum lactúcis agréstibus. Non comédetis ex eo crudum quid, nec coctum aquâ : sed tantùm assum igni. Caput cum pédibus ejus et intestínis vorábitis : et os ejus non confringétis : nec remanébit ex eo quidquam usque manè. Si quid resíduum fuérit, igne comburétis. Sic autem comedétis illum : Renes vestros accingétis; et calceaménta habébitis in pédibus, tenéntes báculos in mánibus, et comedétis festinánter. Est enim Phase (id est tránsitus) Dómini.

*Le même Lecteur dira le Trait, à voix un peu plus basse que la Leçon.*

*Trait.* Eripe me, Dómine, ab hómine malo : à viro iníquo líbera me.

℣. Qui cogitavérunt malítias in corde : totâ die constituébant prælia.

℣. Acuérunt linguas suas sicut serpéntes : venénum áspidum sub lábiis eórum.

℣. Custódi me, Dómine, de manu peccatóris : et ab homínibus iníquis líbera me.

℣. Qui cogitavérunt supplantáre gressus meos : abscondérunt supérbi láqueum mihi.

℣. Et funes extendérunt in láqueum pédibus meis : et juxta iter scándalum posuérunt mihi.

℣. Dixi Dómino : Deus meus es tu : exáudi, Dómine, vocem oratiónis meæ.

℣. Dómine, Dómine, virtus salútis meæ : obúmbra caput meum in die belli.

℣. Ne tradas me à desidério meo peccatóri : cogitavérunt advérsùs me : ne derelínquas me, ne unquam exalténtur.

℣. Caput circúitûs eórum : labor labiórum ipsórum opériet eos.

℣. Verumtámen justi confitébuntur nómini tuo : et habitábunt recti cum vultu tuo.

*Le Trait fini, on dit la Passion sur un pupître nu : laquelle le Prêtre qui célèbre lira à voix ordinaire, et non haute, au côté même de l'Epître.*

---

## PASSIO DOMINI NOSTRI JESU CHRISTI, Secúndùm Joannem. *Joann.* 18.

IN illo témpore : Egréssus est Jesus cum discípulis suis trans torréntem Cedron, ubi erat hortus in quem introívit ipse, et discípuli ejus. Sciébat autem et Judas, qui tradébat eum, locum : quia frequénter Jesus convénerat illuc cum discípulis suis. Judas ergo cùm accépisset cohórtem, et à Pontifícibus et Pharísæis ministros, venit illuc cum latérnis et fácibus, et armis. Jesus ítaque sciens ómnia quæ ventúra erant super eum, procéssit, et dixit eis : Quem quæritis ? Respondérunt ei : Jesum Nazarénum : Dixit eis Jesus : Ego sum. Stabat autem et Judas, qui tradébat eum, cum ipsis. Ut ergo dixit eis : Ego sum, abiérunt retrórsùm, et cecidérunt in terram. Iterùm ergo eos interrogávit : Quem quæritis ? Illi autem dixérunt : Jesum Nazarénum. Respóndit Jesus : Dixi vobis, quia ego sum. Si ergo

me quæritis, sínite hos abíre. Ut implerétur sermo, quem dixit: Quia quos dedisti mihi, non pérdidi ex eis quemquam. Simon ergo Petrus habens gládium, edúxit eum et percússit Pontíficis servum, et abscídit auriculam ejus déxteram. Erat autem nomen servo Malchus. Dixit ergo Jesus Petro: Mitte gládium tuum in vagínam. Cálicem quem dedit mihi Pater, non vis ut bibam illum? Cohors ergo et tribúnus et minístri Judæórum comprehendérunt Jesum, et ligavérunt eum, et adduxérunt eum ad Annam primùm. Erat enim socer Caïphæ, qui erat Póntifex anni illíus. Erat autem Caïphas, qui consílium déderat Júdæis: Quia éxpedit unum hóminem mori pro pópulo. Sequebátur autem Jesum Simon Petrus, et álius discípulus. Discípulus autem ille erat notus Pontífici, et introívit cum Jesu in átrium Pontíficis. Petrus autem stabat ad óstium foris. Exívit ergo discípulus ille, qui erat notus Pontífici, et dixit ostiáriæ, et introdúxit Petrum. Dixit ergo Petro ancílla ostiária: Numquid et tu ex discípulis es hóminis istíus? Dixit ille: Non sum. Stabant autem servi et minístri ad prunas, quia frigus erat, et calefaciébant se. Erat autem cum

eis, et Petrus stans, et calefáciens se. Pontífex ergo interrogávit Jesum de discípulis suis, et de doctrína ejus. Respóndit ei Jesus : Ego palam locútus sum mundo; ego semper dócui in synagóga, et in témplo, quò omnes Judæi convéniunt : et in occúlto locútus sum nihil. Quid me intérrogas? intérroga eos qui audiérunt quid locútus sum ipsis : ecce hi sciunt quæ dixérim ego. Hæc autem cùm dixísset, unus assístens ministrórum dedit álapam Jesu, dicens : Sic respóndes Pontífici? Respóndit ei Jesus : Si malè locútus sum, testimónium pérhibe de malo : si autem benè, quid me cædis? Et misit eum Annas lígatum ad Caïpham Pontíficem. Erat autem Simon Petrus stans, et calefáciens se. Dixérunt ergo ei : Numquid et tu ex discípulis ejus es? Negávit ille, et dixit : Non sum. Dixit ei unus ex servis Pontíficis, cognátus ejus cujus ábscidit Petrus auriculam : Nonne ego te vidi in horto cum illo? Iterúm ergo negávit Petrus; et statim gallus cantávit. Addúcunt ergo Jesum à Cáïpha in prætórium. Erat autem manè, et ipsi non introiérunt in prætórium, ut non contaminaréntur, sed ut manducárent Pascha. Exívit ergo Pilátus ad eos foràs, et dixit : Quam

accusatiónem affértis advérsùs hóminem hunc ? Respondérunt, et dixérunt ei : Si non esset hic malefáctor, non tibi tradidissemus eum. Dixit ergo eis Pilátus : Accípite eum vos, et secúndùm legem vestram judicáte eum. Dixérunt ergo ei Júdæi : Nobis non licet interfícere quemquam. Ut sermo Jesu impleréturquem dixit : signíficans quâ morte esset moritúrus. Introívit ergo íterùm in prætórium Pilátus, et vocávit Jesum, et dixit ei : Tu es Rex Judæórum ? Respóndit Jesus : A temetípso hoc dicis, an álii tibi dixérunt de me ? Respóndit Pilátus : Numquid ego Judæus sum ? Gens tua et Pontífices tradidérunt te mihi. Quid fecísti ? Respóndit Jesus. Regnum meum non est de hoc mundo : si ex hoc mundo esset regnum meum, minístri mei útique decertárent, ut non tradérer Judæis : nunc autem regnum meum non est hínc. Dixit ítaque ei Pilátus : Ergo rex es tu ? Respóndit Jesus : Tu dicis quia rex sum ego. Ego in hoc natus sum, et ad hoc veni in mundum, ut testimónium perhíbeam veritáti. Omnis qui est ex veritáte, audit vocem meam. Dixit ei Pilátus : Quid est véritas ? Et cùm hoc dixísset, iterùm exívit ad Judæos, et dixit eis : Ego

nullam invénio in eo causam. Est autem consuetúdo vobis, ut unum dimíttam vobis in Pascha. Vultis ergo dimíttam vobis Regem Judæórum? Clamavérunt rursùm omnes, dicéntes: Non hunc, sed Bárrabam. Erat autem Bárrabas latro. Tunc ergo apprehéndit Pilátus Jesum, et flagellávit. Et mílites plecténtes corónam de spinis, imposuérunt cápiti ejus, et veste púrpureâ circumdedérunt eum. Et veniébant ad eum, et dicébant: Ave, Rex Judæórum. Et dabant ei álapas. Exívit íterùm Pilátus foràs, et dixit eis: Ecce addúco eum vobis foràs, ut cognoscátis quia in eo nullam invénio causam. Exívit ergo Jesus, portans corónam spíneam, et purpúreum vestiméntum. Et dixit eis: Ecce homo. Cùm ergo vidissent eum Pontífices et Minístri, clamábant, dicéntes: Crucifíge, crucifíge eum. Dixit eis Pilátus: Accípite eum vos, et crucifígite; ego enim non invénio in eo causam. Respondérunt ei Judæi: Nos legem habémus, et secúndùm legem debet mori; quia Fílium Dei se fecit. Cùm ergo audísset Pilátus hunc sermónem, magis tímuit. Et ingréssus est prætórium íterùm, et dixit ad Jesum: Unde es tu? Jesus autem respónsum non dedit ei. Dixit ergo ei Pilá-

tus : Mihi non lóqueris; nescis, quia potestátem hábeo crucifígere te, et potestátem hábeo dimíttere te? Respóndit Jesus : Non habéres potestátem advérsùm me ullam, nisi tibi datum esset désuper. Proptérea qui me trádidit tibi, majus peccátum hábet. Et exínde quærébat Pilátus dimíttere eum. Judæi autem clamábant, dicéntes: Si hunc dimíttis, non es ámicus Cæsaris. Omnis enim qui se regem facit, contradícit Cæsari. Pilátus autem cùm audisset hos sermónes, addúxit foras Jesum, et sedit pro tribunáli in loco qui dícitur Lithóstrotos, hebráicè autem Gábbatha. Erat aútem parascéve Paschæ, horâ quasi sextâ, et dixit Judæis : Ecce rex vester. Illi autem clamábant : Tolle, tolle, crucifíge eum. Dixit eis Pilátus : Regem vestrum crucifígam? Respondérunt Pontifíces : Non habémus regem, nisi Cæsarem. Tunc ergo trádidit eis illum, ut crucifigerétur. Suscepérunt autem Jesum, et eduxérunt. Et bájulans sibi crucem, exívit in eum qui dícitur Calváriæ locum, hebráicè autem Gólgotha, ubi crucifixérunt eum, et cum eo álios duos hinc et hinc, médium autem Jesum. Scripsit autem et títulum Pilátus, et pósuit super crucem. Erat autem scriptum : Jesus Na-

zarénus, Rex Judæórum. Hunc ergo títulum multi Judæórum legérunt; quia propè civitátem erat locus ubi crucifíxus est Jesus. Et erat scriptum Hebráicè, Græcè et Latinè. Dicébant ergo Piláto Pontifíces Judæórum: Noli scribere, Rex Judæórum; sed quia ipse dixit, Rex sum Judæórum. Respóndit Pilátus. Quod scripsi, scripsi. Mílites ergo cùm crucifixíssent eum, accepérunt vestiménta ejus (et fecérunt quátuor partes, unicuíque míliti partem) et túnicam. Erat autem túnica inconsútilis, désuper contéxta per totum. Dixérunt ergo ad ínvicem: Non scindámus eam, sed sortiámur de illa, cujus sit. Ut scriptúra impleretur, dicens: Partíti sunt vestiménta mea sibi, et in vestem meam misérunt sortem. Et mílites quidem hæc fecérunt. Stabant autem juxta crucem Jesu Mater ejus, et soror matris ejus, María Cleophe et María Magdaléne. Cùm vidísset ergo Jesus Matrem, et discípulum stantem, quem diligébat, dixit Matri suæ: Múlier, ecce fílius tuus. Deínde dixit discípulo: Ecce mater tua. Et ex illa hora accépit eam discípulus in suam. Póstea sciens Jesus, quia jam ómnia consummáta sunt, ut consummarétur scriptúra, dixit: Sítio. Vas ergo pósitum erat

erat acéto plenum. Illi autem spóngiam plénam acéto, hyssópo circumponéntes, obtulérunt ori ejus. Cùm ergo accepísset Jesus acétum, dixit: Consummátum est. Et inclináto cápite trádidit spíritum.

† *Ici l'on fléchit le genou, et on fait quelque pause.*

Judæi ergo, quóniam parascéve erat, ut non remanérent in cruce córpora Sábbato (erat enim magnus dies ille Sábbati) rogavérunt Pilátum, ut frangeréntur eórum crura, et tolleréntur. Venérunt ergo mílites: et primi quidem fregérunt crura, et altérius qui crucifíxus est cum eo. Ad Jesum autem cùm venissent, ut vidérent eum jam mórtuum, non fregérunt ejus crura; sed unus mílitum lánceâ latus ejus apéruit, et contínuò exívit sanguis et aqua. Et qui vidit, testimónium perhíbuit: et verum est testimónium ejus. Et ille scit, quia vera dicit, ut et vos credátis: Facta sunt enim hæc, ut scriptúra impleretur: Os non comminuétis ex eo. Et íterum ália scriptúra dixit: Vidébunt in quem transfixérunt.

*Ce qui suit se lit au ton de l'Evangile, et l'on dit,* Munda cor meum: *mais l'on ne de-*

*mande point de Bénédiction; et l'on ne porte point de flambeau, ni de l'encens; et celui qui célèbre, ne baise point le livre à la fin.*

EVANGELIUM.

POst hæc autem rogávit Pilátum Joseph ab Arimathía (eò quòd esset discípulus Jesu); occúltus autem propter metum Judæórum, ut tólleret corpus Jesu. Et permísit Pilátus. Venit ergo, et tulit corpus Jesu. Venit autem et Nicodémus qui vénerat ad Jesum nocte primùm, ferens míxturam myrrhæ et áloës, quasi libras centum. Accepérunt ergo corpus Jesu, et ligavérunt illud línteis cum aromátibus, sicut mos est Judæis sepelíre. Erat autem in loco ubi crucifíxus est, hortus; et in horto monuméntum novum, in quo nondum quisquam pósitus fúerat. Ibi ergo propter parásceven Judæórum, quia juxtà erat monuméntum, posuérunt Jesum.

Deo grátias.

*Après la Passion, le Prêtre demeurant à côté de l'Epître, commencera à voix un peu haute:*

ORémus, dilectíssimi nobis, pro Ecclésia sancta Dei: ut eam Deus et Dóminus noster, pacificáre, adunáre, et custodíre dignétur toto orbe terrárum; subjíciens eis

principátus, et potestátes, detque nobis quiétam et tranquíllam vitam degéntibus, glorificáre Deum Patrem omnipoténtem.

OREMUS.

*Le premier Sacristain :* Flectámus génua

*Le second répondra :* Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, qui glóriam tuam ómnibus in Christo géntibus revelásti : custódi ópera misericórdiæ tuæ : ut Ecclésia tua toto orbe diffúsa, stábili fide in confessióne tui nóminis persevéret. Per eúmdem Dóminum, etc.

*Le Prêtre continuera, en disant :*

ORémus, et pro beatíssimo Papa nostro N., ut Deus et Dóminus noster, qui elégit eum in órdine Episcopátûs, salvum atque incólumen custódiat Ecclésiæ suæ sanctæ, ad regéndum pópulum sanctum Dei.

OREMUS.

*Le premier Sacristain :* Flectámus génua.

*Le second répondra :* Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, cujus judício univérsa fundántur : réspice propítius ad preces nostras, et eléctum nobis antístitem tuâ pietáte consérva : ut christiána

plebs, quæ te gubernátur auctóre, suo tanto Pontífice, credulitátis suæ méritis augeátur. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

ORémus, et pro ómnibus Epíscopis, Presbyteris, Diacónibus, Subdiacónibus, Acolytis, Exorcístis, Lectóribus, Ostiáriis, Confessóribus, Virgínibus, Víduis, et pro omni pópulo sancto Dei.

OREMUS.

*Le premier Sacristain :* Flectámus génua.
*Le second répondra :* Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, cujus spíritu totum corpus Ecclésiæ sanctificátur et régitur; exáudi nos pro univérsis Ordínibus supplicántes : ut grátiæ tuæ múnere ab ómnibus tibi grádibus fidéliter serviátur. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

ORémus, et pro Christianissimo Imperatóre nostro N., ut Deus et Dóminus noster súbditas illi fáciat omnes bárbaras natiónes, ad nostram perpétuam pacem.

OREMUS.

*Le premier Sacristain :* Flectámus génua.
*Le second répondra :* Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, in cujus manu sunt ómnium potestátes, et ómnium jura regnórum; réspice ad Gallicánum benígnus Regnum : ut gentes quæ in sua feritáte confídunt, potentiæ tuæ déxterâ comprimántur. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

ORémus, et pro Catechuménis nostris : ut Deus et Dóminus noster adapériat aures præcordiórum ipsórum, januámque misericórdiæ : ut per lavácrum regeneratiónis accéptâ remissióne ómnium peccatórum, et ipsi inveniántur in Christo Jesu Dómino nostro.

O R E M U S.

*Le premier Sacristain* : Flectámus génua.
*Le second* : Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, qui Ecclésiam tuam novâ semper prole fœcúndas : auge fidem et intelléctum Cathecuménis nostris; ut renáti fonte baptísmatis, adoptiónis tuæ fíliis aggregéntur. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

ORémus, Dilectíssimi nobis, Deum Patrem omnipoténtem; ut cunctis mundum purget erróribus; morbos áuferat;

famem depéllat; apériat cárceres; víncula dissólvat; peregrinántibus réditum; infirmántibus sanitátem; navigántibus portum salútis indúlgeat.

OREMUS.

*Le premier Sacristain* : Flectámus génua.
*Le second répondra* : Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, mœstórum consolátio, laborántium fortitúdo pervéniant ad te preces de quacúmque tribulatióne clamántium : ut omnes sibi in necessitátibus suis misericórdiam tuam gáudeant adfúisse. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

ORémus, et pro hæréticis, et schismáticis : ut Deus et Dóminus noster éruat eos ab erróribus univérsis : et ad sanctam matrem Ecclésiam Cathólicam atque Apostólicam revocáre dignétur.

OREMUS.

*Le premier Sacristain* : Flectámus génua.
*Le second répondra* : Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempíterne Deus, qui salvas omnes, et néminem vis períre : réspice ad ánimas diabólicâ fraude decéptas : ut

omni hærética pravitáte depósitâ, errántium corda resipíscant, et ad veritátis tuæ rédeant unitátem. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

ORémus et pro pérfidis Judæis : ut Deus et Dóminus noster áuferat velámen de córdibus eórum : ut et ipsi agnóscant Jesum Christum Dóminum nostrum.

*On ne répond point* Amen.

OMnípotens sempitérne Deus, qui étiam Judáïcam perfídiam à tua misericórdia non repéllis : exáudi preces nostras, quas pro illíus pópuli obcœcatióne deférimus : ut agnítâ veritátis tuæ luce, quæ Christus est, à suis ténebris eruántur. Per eúmdem Dóminum, etc. ℟. Amen.

ORémus, et pro pagánis, ut Deus omnípotens áuferat iniquitátem à córdibus eórum : ut relíctis idólis suis, convertántur ad Deum vivum et verum, et únicum Fílium ejus Jesum Christum Deum et Dóminum nostrum.

OREMUS.

*Le premier Sacristain* : Flectámus génua.

*Le second répondra* : Leváte.

*Le Prêtre.*

OMnípotens sempitérne Deus, qui non mortem peccatórum, sed vitam sem-

per inquíris : súscipe propítius oratiónem nostram, et líbera eos ab idolórum cultúra : et ággrega Ecclésiæ tuæ sanctæ, ad laudem et glóriam nóminis tui. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

---

## ORDRE qu'on doit garder le Vendredi Saint à découvrir la Croix.

*Les Oraisons étant finies, le Prêtre ira à la Sacristie pour poser la Chasuble, et ressortira en même temps pour venir à l'Autel, faisant marcher devant lui un Sacristain, portant le Crucifix voilé. Etant arrivés, le Porte-croix se mettra vers l'angle de l'Autel, du côté de l'Epitre en dehors; et là le Prêtre s'avançant et prenant le Crucifix, dévoilera le chef seulement, et le haussant pour le montrer au peuple, dira à voix haute :* Ecce lignum crucis.

*Les Sacristains poursuivront et diront avec lui :* In quo salus mundi pepéndit.

*Le Chœur répondra :* Veníte adorémus.

*Et en disant le dernier mot, tous mettront les genoux à terre; hormis le Prêtre, lequel avançant la Croix au devant de l'angle sur*

*les bords du marche-pied, découvrira le bras droit du Crucifix; et l'élevant un peu davantage, dira comme ci-devant, mais d'un ton plus haut* : Ecce lignum crucis.

*Les Sacristains poursuivront avec lui* : In quo salus mundi pepéndit.

*Le Chœur répond* : Veníte adorémus.

*Et tous s'agenouilleront, hormis le Prêtre, lequel de rechef venant au milieu de l'Autel, avec le Crucifix, le dévoilera entièrement, l'élèvera plus qu'auparavant pour le montrer au peuple, et dira d'un ton et d'une voix plus haute* : Ecce lignum crucis.

*Les Sacristains poursuivront avec lui, et diront* : In quo salus mundi pepéndit.

*Le Chœur achevera et dira* : Veníte adorémus, *en se prosternant comme ci-dessus.*

*Après, le Prêtre portera la croix en un endroit du Chœur préparé pour l'adoration, et orné d'un tapis, ou drap de pied fort étendu, ayant au haut un carreau de quelque riche étoffe, sur lequel il posera le Crucifix, et quittant sa chaussure, viendra les pieds nus à l'Adoration, fléchissant les genoux par trois fois, en s'approchant pour baiser la Croix; ensuite il se retirera pour se rechausser, et reprendra la Chasuble. Cependant le Recteur*

*et tous les Pénitens, l'un après l'autre, comme à l'Offertoire, viendront faire la même adoration; ensuite le peuple suivra : et durant cette cérémonie, le Prêtre ou les Choristes chanteront comme s'ensuit, d'une voix fort lamentable, tous les reproches et versets; et les Chœurs répondent.*

*Les Choristes.* ℣. Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi. ℣. Quia edúxi te de terra Ægypti : parásti crucem Salvatóri tuo.

*Le premier Chœur.* ℟. Agios ô Theos.

*Le second Chœur.* Sanctus Deus.

*Le premier Chœur.* Agios íschyros.

*Le second Chœur.* Sanctus fortis.

*Le premier Chœur.* Agios athánatos, eléïson imas.

*Le second Chœur.* Sanctus et immortális, miserére nobis.

*Les Choristes et le Prêtre continueront.*

Quia edúxi te per desértum quadragínta annis : et mannâ cibávi te, et introdúxi te in terram satis bonam, parásti crucem Salvatóri tuo. *Et ainsi en suivant.*

*Le premier Chœur.* Agios ô Theos.

*Le second Chœur.* Sanctus Deus.

*Le premier Chœur.* Agios íschyros.

*Le second Chœur.* Sanctus fortis.

*Le premier Chœur.* Agios athánatos, eléïson imas.

*Le second Chœur.* Sanctus et immortális, miserére nobis.

*Les Choristes.* Quid ultrà débui fácere tibi, et non feci? Ego quidem plantávi te vineam meam speciosíssimam : et tu facta es mihi nimis amára, acéto namque sitim meam potásti : et lánceâ perforásti latus Salvatóri tuo.

*Le premier Chœur.* Agios ô Theos.

*Le second Chœur.* Sanctus Deus.

*Le premier Chœur.* Agios íschyros.

*Le second Chœur.* Sanctus fortis.

*Le premier Chœur.* Agios Athánatos, eléïson imas.

*Le second Chœur.* Sanctus et immortális, miserére nobis.

*Les Choristes.* ℣. Ego propter te flagellávi Ægyptum cum primogénitis suis : et tu me flagellátum tradidísti.

*Le Chœur.* ℟. Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego edúxi te de Ægypto, demérso Pharaóne in mare rubrum; et tu me tradidísti princípibus sacerdótum.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego ante te apérui mare; et tu aperuísti lánceâ latus meum.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego ante te præívi in colúmna nubis; et tu me duxísti ad prætórium Piláti.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego te pavi mannâ per desértum; et tu me cecidísti álapis et flagéllis.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego te potávi aquâ salútis de petra; et tu me potásti felle et acéto.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego propter te Chananæórum reges percússi; et tu percussísti arúndine caput meum.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego dedi tibi sceptrum regále; et tu dedísti cápiti meo spíneam corónam.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Les Choristes.* Ego te exaltávi magnâ virtúte; et tu me suspendísti in patíbulo Crucis.

*Le Chœur.* Pópule meus, quid feci tibi? aut in quo contristávi te? respónde mihi.

*Ensuite tous les deux Chœurs disent ensemble, en adorant la Croix* : Crucem tuam adorámus, Dómine : et sanctam resurrectiónem tuam laudámus, et glorificámus : Ecce enim propter lignum venit gáudium in univérso mundo.

*Les deux Choristes. Psaume.* Deus misereátur nostrî, et benedícat nobis : illúminet vultum suum super nos, et misereátur nostrî.

*Les deux Chœurs répètent.* Crucem tuam adorámus, Dómine : et sanctam resurrectiónem tuam laudámus, et glorificámus : Ecce enim propter lignum venit gáudium in univérso mundo.

*Le premier Chœur dira.* ℣. Crux fidélis, inter omnes arbor una nóbilis : nulla silva talem profert, fronde, flore, gérmine. Dulce lignum, dulces clavos, dulce pondus sústinet.

*Les Choristes. Hymne.* Pange lingua gloriósi Prælium certáminis, Et super crucis trophæum Dic triúmphum nóbilem : Quá-

liter Redémptor orbis Immolátus vícerit.

*Le second Chœur.* Crux fidélis, inter omnes arbor una nóbilis : nulla silva talem profert, fronde, flore, gérmine.

*Les Choristes.* De paréntis protoplásti Fraude factor cóndolens, Quando pomi noxiális Morsu in mortem córruit, Ipse lignum tunc notávit, Damna lígni ut sólveret.

*Le second Chœur.* Dulce lignum, dulces clavos, dulce pondus sústinet.

*Les Choristes.* Hoc opus nostræ salútis Ordo depopóscerat; Multifórmis proditóris, Ars ut artem fálleret; Et medélam ferret inde, Hostis unde læserat.

*Le premier Chœur.* Crux fidélis, inter omnes arbor una nóbilis : nulla silva talem profert, fronde, flore, gérmine.

*Les Choristes.* Quando venit ergo sacri Plenitúdo témporis, Missus est ab arce Patris, Natus orbis cónditor, Atque ventre virgináli Caro factus pródiit.

*Le second Chœur.* Dulce lignum, dulces clavos, dulce pondus sústinet.

*Les Choristes.* Vagit infans inter arcta Cónditus præsépia : Membra pannis involúta Virgo mater álligat, Et manus pedésque, et crura, strictâ cingit fasciâ.

*Le premier Chœur.* Crux fidélis, inter omnes arbor una nóbilis : nulla silva talem profert, fronde, flore, gérmine.

*Les Choristes.* Lustris sex qui jam peráctis, Tempus implens córporis : Se voléntе, natus ad hoc, Passióni déditus, Agnus in crucis levátur immolándus stípite.

*Le second Chœur.* Dulce lignum, dulces clavos, dulce pondus sústinet.

*Les Choristes.* Hic acétum, fel, arúndo, Sputa; clavi, lánceâ, Mite corpus perforátur; Sanguis, unda prófluit : Terra, pontus, astra, mundus, Quo lavántur flúmine.

*Le premier Chœur.* Crux fidélis, inter omnes arbor una nóbilis : nulla silva talem profert, fronde, flore, gérmine.

*Les Choristes.* Flecte ramos arbor alta, Tensa laxa víscera : Et rígor lentéscat ille Quem dedit natívitas : Ut supérni membra regis Miti tendas stípite.

*Le second Chœur.* Dulce lignum, dulces clavos, dulce pondus sústinet.

*Les Choristes.* Sola digna tu fuísti Ferre secli prétium, atque portum préparáre Nauta mundo náufrago, Quem sacer cruor perúnxit, Fusus agni córpore.

*Le premier Chœur.* Crux fidélis inter

omnes arbor una nóbilis : nulla silva talem profert, fronde, flore, gérmine.

*Les Choristes.* Glória et honor Deo, usquequáque altíssimo, una Patri, Filióque, Inclyto Paráclito : Cui laus est et potéstas, Per ætérna sécula. Amen.

*Le second Chœur.* Dulce lignum, dulces clavos, dulce pondus sústinet.

*Tout le peuple ayant adoré la Croix, l'on allumera les cierges de l'Autel; le Prêtre étendra le Corporal comme pour célébrer; et un Pénitent destiné pour porter la croix, la prendra, et l'apportera au milieu de l'Autel, derrière le Prêtre. Cependant les Pénitens allumeront leurs flambeaux, et tous marchant en ordre de procession, le Prêtre étant le dernier, et ayant à ses côtés les Sacristains, avec leurs encensoirs ardens, et les acerres, s'en iront au lieu où le saint Sacrement aura été exposé le jour précédent; et y étant arrivés, sans chanter ni dire aucune chose, le Prêtre et les Pénitens à genoux feront un peu d'Oraison mentale; ensuite les Sacristains présenteront leurs acerres et leurs encensoirs au Prêtre, lequel sans bénédiction, mettra les parfums, et encensera le saint Sacrement; ensuite il se relèvera, et prenant le Ciboire,*

*dans*

*dans lequel reposera la sainte Eucharistie, les Maîtres du Chœur lui mettront le crêpe sur les épaules, et en poseront les extrémités sur la croix du ciboire, tout au-dessus; en même temps la Compagnie marchera au même ordre qu'elle sera venue; les Sacristains seront au côté du Prêtre, qui ne cesseront d'encenser le saint Sacrement au-dessus duquel sera porté le Poile; et pendant cette Procession, on dira l'hymne suivante à voix haute, et fort posément, sans chanter. Les Choristes commenceront les premières Vêpres, et le Chœur suivra.*

*Le Prêtre étant parvenu à l'Autel, encensera à genou le saint Sacrement, et fera la prière, pendant que tous les Pénitens chanteront l'Hymne.*

## *HYMNE.*

VExílla Regis pródeunt,
Fulget Crucis mystérium,
Quo carne carnis cónditor,
Suspénsus est patíbulo.

Quo vulnerátus ínsuper,
Mucróne diro lánceæ,
Ut nos laváret crímine,
Manávit undâ et sánguine.

Impléta sunt quæ cóncinit
David fidéli cármine,
Dicens : In natiónibus
Regnávit à ligno Deus.
Arbor decóra et fúlgida,
Ornáta Regis púrpurâ,
Elécta digno stípite
Tam sancta membra tángere.
Beáta cujus bráchiis
Sécli pepéndit prétium,
Statéra facta córporis,
Prædámque tulit tártari.
O Crux, ave, spes unica,
Hoc Passiónis témpore,
Auge piis justítiam,
Reísque dona véniam.
Te summa Deus Trínitas,
Colláudet omnis spíritus;
Quos per crucis mystérium
Salvas, rege per sécula. Amen.

*L'Hymne finie, le Prêtre se relevant, ôtera le saint Sacrement du Ciboire, et le mettra sur la Patène, qu'il posera sur le Corporal, sans rien dire; et s'il a touché l'Hostie, il lavera ses doigts en quelque vase particulier; ensuite il mettra du vin et de l'eau dans le Calice, sans le bénir, et sans*

*dire dessus les Oraisons accoutumées; mais mettant le Calice sur le Corporal, il prendra l'encensoir, mettra les parfums dedans, sans bénédiction, et encensera l'Autel et l'Hostie, à la manière accoutumée, fléchissant le genou avant et après, et sur-tout en passant devant le saint Sacrement; et donnant l'encens à la sainte Eucharistie, il dira :*

INcénsum istud à te benedíctum, ascéndat ad te, Dómine : et descéndat super nos misericórdia tua.

*Encensant l'Autel, il dira :*

DIrigátur, Dómine, orátio mea, sicut incénsum in conspéctu tuo : elevátio manuum meárum sacrifícium vespertínum. Pone, Dómine, custódiam ori meo, et óstium circumstántiæ lábiis meis : ut non declínet cor meum in verba malítiæ, ad excusándas excusatiónes in peccátis.

*Et rendant l'encensoir au Sacristain :* Accéndat in nobis Dóminus ignem sui amóris et flammam ætérnæ charitátis. ℟. Amen.

*Le Sacristain n'encensera pas le Prêtre, mais prenant la burette et le bassin, versera l'eau sur les mains du Prêtre, sans que ni l'un ni l'autre disent mot; ensuite le Prêtre*

*ira au milieu de l'Autel, et la tête inclinée en bas et les mains jointes, dira :*

IN spíritu humilitátis, et in ánimo contríto suscipiámur à te, Dómine : et sic fiat sacrifícium nostrum in conspéctu tuo hódie, ut pláceat tibi, Dómine Deus.

*Ensuite il se tournera à la manière accoutumée vers le peuple, et dira :*

ORáte, Fratres, ut meum ac vestrum sacrifícium acceptábile fiat apud Deum Patrem omnipoténtem.

*Il est à noter qu'il se tournera et retournera par le côté de l'Evangile, sans faire le tour entier : laissant les prières qu'on fait ordinairement ensuite aux autres Messes, il dira à haute voix :*

OREMUS.

PRæceptis salutáribus móniti, et divínâ institutióne formáti, audémus dícere : Pater noster qui es in cœlis : sanctificétur nomen tuum : advéniat regnum tuum : fiat volúntas tua, sicut in cœlo et in terra. Panem nostrum quotidiánum da nobis hódie : et dimítte nobis débita nostra, sicut et nos dimíttimus debitóribus nostris : Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℟. Sed líbera nos à malo.

*Le Prêtre en secret dira* Amen ; *et en la même voix qu'il aura dit le* Pater, *il continuera sans dire* Oremus.

LIbera nos, quæsumus, Dómine, ab ómnibus malis prætéritis, præséntibus, et futúris : et intercedénte beátâ et gloriósâ semper Vírgine Dei genitríce Maríâ, cum beátis Apóstolis tuis Petro et Paulo, atque Andreâ, et ómnibus Sanctis : da propítius pacem in diébus nostris : ut ope misericórdiæ tuæ adjúti, et à peccáto simus semper líberi, et ab omni perturbatióne secúri. Per eúmdem Dóminum, etc. ℟. Amen.

*Alors le Prêtre ayant fait la révérence jusqu'en terre, prendra le saint Sacrement de la main droite, et l'élevant fort haut, le montrant au peuple, et incontinent le divisera en trois parties, desquelles il mettra la dernière dans le calice, à la manière accoutumée, sans dire ni* Pax Dómini, *ni* Agnus Dei, *ni autres Oraisons ; il dira seulement :*

PErcéptio Córporis tui, Dómine Jesu Christe, quod ego indígnus súmere præsúmo, non mihi provéniat in judícium et condemnatiónem ; sed pro tua pietáte prosit mihi ad tutaméntum mentis et córporis, et ad medélam percipiéndam. Qui vivis et

regnas cum Deo Patre in unitáte Spíritûs Sancti Deus. Per ómnia sécula seculórum.

℟. Amen.

*Ensuite prenant le saint Sacrement avec la patène, après avoir fait une profonde révérence, il dira dévotement :*

PAnem cœléstem accípiam, et nomen Dómini invocábo.

*Et se frappant par trois fois la poitrine, il dira encore comme de coutume :*

DOmine, non sum dignus, ut intres sub tectum meum : sed tantùm dic verbo, et sanábitur ánima mea.

*Ensuite se signera du saint Sacrement, disant* : Corpus Dómini nostri Jesu Christi custódiat ánimam meam in vitam ætérnam. Amen ; *et le recevra avec révérence et dévotion. Immédiatement après, omettant tout ce qu'on a coutume de dire avant la réception du Calice, il prendra la particule de l'Hostie, et le vin qui sera dedans, humblement, respectueusement ; et les ayant reçus, fera l'ablution de ses doigts comme aux autres Messes, recevra la purification ; et à la fin, au milieu de l'Autel, inclinant le chef en bas, et les mains jointes, il dira :* Quod ore súmpsimus, Dómine, purâ

mente capiámus, et de múnere temporáli fiat nobis remédium sempitérnum.

*Il ne dira point* : Corpus tuum, Dómine ; *ni après la Communion* : Pláceat tibi ; *ni ne donnera la bénédiction ; mais seulement faisant la révérence à l'Autel, il se retirera avec le Sacristain, et l'on dira les Vêpres du jour précédent, pag. 437, sans chanter.*

*Cependant les Sacristains dépouilleront l'Autel, et remettront toutes choses en l'état qu'elles devront être. Il n'y aura rien de changé aux Vêpres de ce jour-là à celles du Jeudi, que l'Ant. de* Magníficat, *qui sera la suivante* : Cùm accepísset Jesus acétum, dixit : Consummátum est ; et inclináto cápite, emísit spíritum.

*A l'issue des Vêpres, tous se retireront.*

# L'OFFICE DU SOIR
## DU VENDREDI SAINT.

### A MATINES POUR LE SAMEDI.

*L'on tient le même ordre quant au chant, pour les cierges et autres cérémonies, comme l'on a fait les jours précédens.*

*Le Recteur.* Pater noster. Ave María. Credo in Deum, *le tout à voix basse.*

*Le Recteur. Ant.* In pace in idípsum, dórmiam et requiéscam.

*Les Choristes commenceront le Psaume 4.*

CUm invocárem, exaudívit me Deus justítiæ meæ: in tribulatióne dilatásti mihi.

Miserére meî: et exáudi oratiónem meam.

Fílii hóminum úsquequò gravi corde: ut quid dilígitis vanitátem, et quæritis mendácium?

Et scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum: Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini et nolíte peccáre: quæ dícitis in córdibus vestris; in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte sacrifícium justítiæ, et speráte in Dómino : multi dicunt, quis osténdit nobis bona ?

Signátum est super nos lumen vultûs tui, Dómine : dedísti lætítiam in corde meo.

A fructu fruménti, vini, et ólei sui : multiplicáti sunt.

In pace in idípsum : dórmiam et requiéscam.

Quóniam tu, Dómine, singuláriter in spe : constituísti me.

*Ant.* In pace in idípsum, dórmiam et requiéscam.

*Le Recteur. Ant.* Habitábit in tabernáculo tuo, requiéscet in monte sancto tuo.

### *Psaume* 14.

Domine, quis habitábit in tabernáculo tuo : aut quis requiéscet in monte sancto tuo ?

Qui ingréditur sine mácula : et operátur justítiam.

Qui lóquitur veritátem in corde suo : qui non egit dolum in lingua sua.

Nec fecit próximo suo malum : et oppróbrium non accépit advérsùs próximos suos.

Ad níhilum dedúctus est in conspéctu ejus.

malignus : timéntes autem Dóminum glórificat.

Qui jurat próximo suo, et non décipit : qui pecúniam suam non dedit ad usúram, et múnera super innocéntem non accépit.

Qui facit hæc : non commovébitur in ætérnum.

*Ant.* Habitávit in tabernáculo tuo, requiéscet in monte sancto tuo.

*Le Recteur. Ant.* Caro mea requiéscet in spe.

### *Psaume* 15.

CONsérva me, Dómine, quóniam spéravi in te : dixi Dómino, Deus meus es tu, quóniam bonórum meórum non eges.

Sanctis, qui sunt in terra ejus : mirificávit omnes voluntátes meas in eis.

Multiplicátæ sunt infirmitátes eórum : posteà acceleravérunt.

Non congregábo conventícula eórum de sanguínibus : nec memor ero nóminum eórum per lábia mea.

Dóminus pars hæreditátis meæ, et cálicis mei : tu es qui restítues hæreditatem meam mihi.

Funes cecidérunt mihi in præcláris : étenim hæréditas me præclára est mihi.

Benedícam Dóminum, qui tribuit mihi intelléctum: ínsuper et usque ad noctem increpuérunt me renes mei.

Providébam Dóminum in conspéctu meo semper: quóniam à dextris est mihi, ne commóvear.

Propter hoc lætátum est cor meum, et exultávit lingua mea: ínsuper et caro mea requiéscet in spe.

Quóniam non derelínques ánimam meam in inférno: nec dabis sanctum tuum vidére corruptiónem.

Notas mihi fecísti vias vitæ, adimplébis me lætítiâ cum vultu tuo: delectatiónes in déxtera tua usque in finem.

*Ant.* Caro mea requiéscet in spe.

*Les Choristes.* ℣. In pace in idípsum.

*Le Chœur.* ℟. Dórmiam et requiéscam.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

PREMIÈRE LAMENTATION.

De Lamentatióne Jeremiæ Prophetæ.

HETH.

MIsericórdiæ Dómini, quia non sumus consúmpti; quia non defecérunt miseratiónes ejus. HETH. Novi dilúculo, multa est fides tua. HETH. Pars mea Dóminus, dixit ánima mea; proptérea expectábo eum.

TETH. Bonus est Dóminus sperántibus in eum, ánimæ quærénti illum. TETH. Bonum est præstolári cum siléntio salutáre ejus. TETH. Bonum est viro cùm portáverit jugum ab adolescéntia sua. JOD. Sedébit solitárius, et tacébit, quia levávit super se. JOD. Ponet in púlvere os suum, si fortè sit spes. JOD. Dabit percutiénti se maxillam, saturábitur opprobriis.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* ℟. Sicut ovis ad occisiónem ductus est, et dum malè tractáretur, non apéruit os suum, tráditus est ad mortem, Ut vivificáret pópulum suum.

℣. Trádidit in mortem ánimam suam, et inter scelerátos reputátus est.

℟. Ut vivificáret pópulum suum.

## SECONDE LAMENTATION.

### ALEPH.

QUomodò obscurátum est aurum, mutátus est color óptimus, dispérsi sunt lápides Sanctuárii in cápite ómnium plateárum? BETH. Fílii Sion ínclyti, et amícti auro primo: quómodo reputáti sunt in vasa téstea, opus mánuum fíguli? GHIMEL. Sed et lámiæ nudavérunt mammam, lactavérunt

cátulos suos. Fília pópuli mei crudélis, quasi strúthio in desérto. DALETH. Adhæsit lingua lacténtis ad palátum ejus in siti: Párvuli petiérunt panem, et non erat qui frángeret eis. HE. Qui vescebántur voluptuósè, interiérunt in viis: qui nutriebántur in cróceis, amplexáti sunt stércora. VAU. Et major efl'ecta est iníquitas fíliæ pópuli mei peccáto Sodomórum; quæ subvérsa est in moménto, et non cepérunt in ea manus.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* ℟. Jerúsalem, surge, et éxue te véstibus jucunditátis: indúere cínere et cilício. Quia in te occísus est Salvátor Israël.

℣. Deduc quasi torréntem lácrymas per diem et noctem: et non táceat pupílla óculi tui.

℟. Quia in te occísus est Salvátor Israël.

## TROISIÈME LAMENTATION.

Incipit Orátio Jeremiæ Prophétæ.

RECordáre, Dómine, quid accíderit nobis: intuére, et réspice oppróbrium nostrum. Hæréditas nostra versa est ad aliénos: domus nostræ ad extráneos. Pupílli facti sumus absque patre: matres nostræ quasi víduæ. Aquam nos-

tram pecúniâ bíbimus : ligna nostra prétio comparávimus. Cervícibus nostris minabámur. Lassis non dabátur réquies. Ægypto dédimus manum, et Assyriis, ut saturarémur pane. Patres nostri peccavérunt, et non sunt : et nos iniquitátes eórum portávimus. Servi domináti sunt nostri; non fuit qui redímeret de manu eórum. In animábus nostris afferebámus panem nobis : à fácie gládii in desérto. Pellis nostra quasi clibánus, exústa est à fácie tempestátum famis. Muliéres in Sion humiliavérunt, et vírgines in civitátibus Juda.

Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

*Les Choristes.* Plange quasi virgo plebs mea : ululáte pastóres in cínere et cilício : Quia venit dies Dómini magna, et amára valdè.

℣. Accíngite vos sacerdótes, et plángite minístri altáris; aspérgite vos cínere.

℞. Quia venit dies Dómini magna, et amára valdè.

*Ensuite tous trois ensemble disent :*

℞. Plange quasi virgo plebs mea : ululáte pastóres in cínere et cilício : Quia venit dies Dómini magna, et amára valdè.

## *SECOND NOCTURNE.*

*Le Recteur. Ant* Elevámini portæ æternáles, et introíbit Rex glóriæ.

### *Psaume* 23.

DOmini est terra et plenitúdo ejus : orbis terrárum, et univérsi qui hábitant in eo.

Quia ipse super mária fundávit eum : et super flúmina præparávit eum.

Quis ascéndet in montem Dómini : aut quis stabit in loco sancto ejus ?

Innocens mánibus et mundo corde : qui non accépit in vano ánimam suam, nec jurávit in dolo próximo suo.

Hic accípiet benédictiónem à Dómino : et misericórdiam à Deo salutári suo.

Hæc est generátio quæréntium eum : quæréntium fáciem Dei Jacob.

Attóllite portas príncipes vestras, et elevámini portæ æternáles : et introíbit rex glóriæ.

Quis est iste rex glóriæ ? Dóminus fortis et potens, Dóminus potens in prælio.

Attóllite portas princípes vestras, et elevámini portæ æternáles : et introíbit rex glóriæ.

Quis est iste rex glóriæ? Dóminus virtútum ipse est rex glóriæ.

*Ant.* Elevámini, portæ æternáles : et introíbit rex glóriæ.

*Le Recteur. Ant.* Credo vidére bona Dómini in terra vivéntium.

*Psaume 26.*

DOminus illuminátio mea, et salus mea : quem timébo?

Dóminus protéctor vitæ meæ : à quo trepidábo?

Dum apprópiant super me nocéntes : ut edant carnes meas.

Qui tríbulant me inimíci mei : ipsi infirmáti sunt, et cecidérunt.

Si consístant advérsùm me castra : non timébit cor meum.

Si exúrgat advérsùm me prælium : in hoc ego sperábo.

Unam pétii à Dómino, hanc requíram : ut inhábitem in domo Dómini ómnibus diébus vitæ meæ.

Ut videam voluptátem Dómini : et vísitem templum ejus.

Quóniam abscóndit me in tabernáculo suo : in die malórum protéxit me in abscondito tabernáculi sui.

In

In petra exaltávit me : et nunc exaltávit caput meum super inimícos meos.

Circuívi, et immolávi in tabernáculo ejus hóstiam vociferatiónis : cantábo, et psalmum dicam Dómino.

Exáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te : miserére meî, et exáudi me.

Tibi dixit cor meum, exquisívit te fácies mea : fáciem tuam, Dómine, requíram.

Ne avértas fáciem tuam à me : ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto, ne derelínquas me : neque despícias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus et mater mea dereliquérunt me : Dóminus autem assúmpsit me.

Legem pone mihi, Dómine, in via tua : et dírige me in sémitam rectam propter inímicos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me : quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, et mentíta est iníquitas sibi.

Credo vídere bona Dómini : in terra vivéntium.

Expecta Dóminum, viríliter age : et confortétur cor tuum, et sústine Dóminum.

*Ant.* Credo vidére bona Dómini in terrâ vivéntium

*Le Recteur. Ant.* Dómine, abstraxísti ab ínferis ánimam meam.

*Psaume* 29.

EXaltábo te, Dómine, quóniam suscepísti me : nec delectásti inímicos meos super me.

Dómine, Deus meus, clamávi ad te : et sanásti me.

Dómine, eduxísti ab inférno ánimam meam : salvásti me à descendéntibus in lacum.

Psállite Dómino Sancti ejus : et confitémini memóriæ sanctitátis ejus.

Quóniam ira in indignatióne ejus : et vita in voluntáte ejus.

Ad vésperam demorábitur fletus ; et ad matutínum lætítia.

Ego autem dixi in abundántia mea : Non movébor in ætérnum.

Dómine, in voluntáte tua : præstitísti decóri meo virtútem.

Avertísti fáciem tuam à me : et factus sum conturbátus.

Ad te, Dómine, clamábo : et ad Deum meum deprecábor.

Quæ utílitas in sánguine meo : dum descéndo in corruptiónem.

Numquid confitébitur tibi pulvis : aut annuntiábit veritátem tuam.

Audívit Dóminus, et misértus est meî: Dóminus factus est adjútor meus.

Convertísti planctum meum in gáudium mihi : conscidísti saccum meum, et circumdedísti me lætítiâ.

Ut cantet tibi glória mea, et non compúngar : Dómine, Deus meus, in ætérnum confitébor tibi.

*Ant.* Dómine, abstraxísti ab ínferis ánimam meam.

*Les Choristes.* ℣. Tu autem, Dómine, miserére meî.

*Le Chœur.* ℟. Et ressúscita me, et retríbuam eis.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

## QUATRIÈME LEÇON.

Ex Tractátu sancti Augustíni Epíscopi super Psalmos.

ACcédet homo ad cor altum, et exaltábitur Deus. Illi dixérunt : Quis non vidébit? Defecérunt scrutántes scrutatiónes, et consília mala. Accéssit homo ad ipsa consília, passus est se tenéri ut homo. Non enim teneréturnisi homo, aut viderétur nisi homo, aut cæderetur nisi homo, aut crucifigerétur,

aut morerétur nisi homo. Accéssit ergo homo ad illas omnes passiónes, quæ in illo nihil valérent, nisi esset homo. Sed si ille non esset homo, non liberarétur homo. Accéssit homo ad cor altum, id est, cor secrétum, objíciens aspéctibus humánis hóminem, servans intùs Deum : celans formam Dei, in qua æquális est Patri, et ófferens formam servi, quâ minor est Patre.

*Les Choristes.* ℟. Recéssit pastor noster, fons aquæ vitæ, ad cujus tránsitum sol obscurátus est. Nam et ille captus est, qui captivum ténebat primum hóminem : hódie portas mortis et seras páriter Salvátor noster disrúpit.

℣. Destrúxit quidem claustra inférni, et subvértit poténtias diáboli.

℟. Nam et ille captus est, qui captívum tenébat primum hóminem : hódie portas mortis, et seras páriter Salvátor noster disrúpit.

## CINQUIÈME LEÇON.

QUò perduxérunt illas scrutatiónes suas, quas perscrutántes defecérunt ? Ut étiam mórtuo Dómino et sepúlto, custódes pónerent ad sepúlcrum : Dixérunt enim Piláto : Sedúctor ille. Hoc appellabátur nomine

Dóminus Jesus Christus, ad solátium servórum suórum; quando dicúntur seductóres. Ergo illi Piláto: Sedúctor ille, ínquiunt, dixit adhuc vivens: Post tres dies resúrgam. Jube ítaque custodíri sepúlcrum usque in diem tertium, ne fortè véniant discípuli ejus, et furéntur eum, et dicant plebi: Surréxit à mórtuis: et erit novíssimus error pejor prióre. Ait illis Pilátus: Habétis custódiam, ite, custodíte sicut scitis. Illi autem abeúntes, muniérunt sepúlcrum, signántes lápidem cum custódibus.

*Les Choristes.* ℟. O vos omnes qui transítis per viam, atténdite et vidéte, si est dolor símilis sicut dolor meus.

℣. Atténdite, univérsi pópuli, et vidéte dolórem meum.

℟. Si est dolor símilis sicut dolor meus.

SIXIÈME LEÇON.

POsuérunt custódes mílites ad sepúlcrum. Concússâ terrâ Dóminus resurréxit: mirácula facta sunt tália circà sepúlcrum, ut et ipsi mílites, qui custódes advénerant, testes fíerent, si vellent vera nuntiáre. Sed avarítia illa quæ captivávit discípulum cómitem Christi, captivávit et mílitem custódem sepúlcri. Damus, ínquiunt, vobis pecúniam:

et dícite, quia vobis dormiéntibus venérunt discípuli ejus, et abstulérunt eum. Verè defecérunt scrutántes scrutatiónes. Quid est quod dixísti, ô infélix astútia? Tantùmne déseris lucem consílii pietátis, et in profúnda versútia demérgeris, ut hoc dicas : Dícite, quia vobis dormiéntibus venérunt discípuli ejus, et abstulérunt eum? Dormiéntes testes ádhibes : verè tu ipse obdormísti, qui scrutándo tália defecísti.

℟. Ecce quómodo móritur justus, et nemo pércipit corde ; et viri justi tollúntur, et nemo consíderat : à fácie iniquitátis sublátus est justus. Et erit in pace memória ejus.

℣. Tanquam agnus coram tondénte se obmútuit, et non apéruit os suum : de angústia, et de judício sublátus est.

℟. Et erit in pace memória ejus.

*Ensuite tous trois ensemble disent* :

℟. Ecce quómodo móritur justus, et nemo pércipit corde : et viri justi tollúntur, et nemo consíderat; à fácie iniquitátis sublátus est justus : et erit in pace memória ejus.

## *TROISIÈME NOCTURNE.*

*Le Recteur. Ant.* Deus ádjuvat me, et Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

*Psaume* 53.

DEus, in nómine tuo salvum me fac: et in virtúte tuà júdica me.

Deus, exáudi oratiónem meam: áuribus pércipe verba oris mei.

Quóniam aliéni insurrexérunt advérsùm me, et fortes quæsiérunt ánimam meam: et non proposuérunt Deum ante conspéctum suum.

Ecce enim Deus adjúvat me: et Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

Avérte mala inimícis meis: et in veritáte tua dispérde illos.

Voluntáriè sacrificábo tibi: et confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam bonum est.

Quóniam ex ómni tribulatióne eripuísti me: et super inimícos meos despéxit óculus meus.

*Ant.* Deus ádjuvat me, et Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

*Le Recteur. Ant.* In pace factus est locus ejus: et in Sion habitátio ejus.

## *Psaume 75.*

NOtus in Judæa Deus : in Israël magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus : et habitátio ejus in Sion.

Ibi confrégit poténtias árcuum : scutum, gládium et bellum.

Illúminans tu mirabíliter à móntibus ætérnis : turbáti sunt omnes insipiéntes corde.

Dormiérunt somnum suum : et nihil invenérunt omnes viri divitiárum in mánibus suis.

Ab increpatióne tua, Deus Jacob : dormitavérunt qui ascendérunt equos.

Tu terríbilis es, et quis resístet tibi ? Ex tunc ira tua.

De cœlo audítum fecísti judícium : terra trémuit et quiévit.

Cùm exúrgeret in judícium Deus : ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ.

Quóniam cogitátio hóminis confitébitur tibi : et relíquiæ cogitatiónis diem festum agent tibi.

Vovéte, et réddite Dómino Deo vestro, omnes qui in circuítu ejus affértis múnera.

Terríbili, et ei qui aufert spíritum príncipum : terríbili apud reges terræ.

*Ant.* In pace factus est locus ejus : et in Sion habitátio ejus.

*Le Recteur. Ant.* Factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

*Psaume* 87.

DOmine, Deus salútis meæ : in die clamávi et nocte coram te.

Intret in conspéctu tuo orátio mea : inclína aurem tuam ad precem meam.

Quia repléta est malis ánima mea : et vita mea inférno appropinquávit.

Æstimátus sum cum descendéntibus in lacum : factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

Sicut vulneráti dormiéntes in sepúlcris, quorum non es memor ámpliùs : et ipsi de manu tua repúlsi sunt.

Posuérunt me in lacu inferióri : in tenebrósis, et in umbra mortis.

Super me confirmátus est furor tuus : et omnes fluctus tuos induxísti super me.

Longè fecísti notos meos à me : posuérunt me abominatiónem sibi.

Tráditus sum, et non egrediébar : óculi mei languérunt præ inópia.

Clamávi ad te, Dómine, totâ die : expándi ad te manus meas.

Numquid mórtuis fácies mirabília : aut médici suscitábunt, et confitebúntur tibi ?

Numquid narrábit áliquis in sepúlcro misericórdiam tuam : et veritátem tuam in perditióne ?

Numquid cognoscéntur in ténebris mirabília tua : et justítia tua in terra obliviónis ?

Et ego ad te, Dómine, clamávi : et manè orátio mea prævéniet te.

Ut quid, Dómine, repéllis oratiónem meam : avértis fáciem tuam à me ?

Pauper sum ego, et in labóribus à juventúte mea : exaltátus autem, humiliátus sum et conturbátus.

In me transiérunt iræ tuæ : et terróres tui conturbavérunt me.

Circumdedérunt me sicut aqua totâ die : circumdedérunt me simul.

Elongásti à me amícum et proxímum : et notos meos à miséria.

*Ant.* Factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

*Les Choristes.* ℣. In pace factus est locus ejus.

*Le Chœur.* ℟. Et in Sion habitátio ejus.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

## SEPTIÈME LEÇON.

De Epístola B. Pauli Apóstoli ad Hebræos.

CHristus assístens Póntifex futurórum bonórum per ámplius et perféctius tabernáculum non manu factum, id est non hujus creatiónis: neque per sánguinem hircórum, aut vitulórum, sed per próprium sánguinem introívit semel in sancta, ætérnâ redemptióne invéntâ. Si enim sánguis hircórum et taurórum, et cinis vítulæ aspérsus inquinátos sanctíficat ad emundatiónem carnis, quantò magis sanguis Christi, qui per Spíritum sanctum semetípsum óbtulit immaculátum Deo, emundábit consciéntiam nostram ab opéribus mórtuis, ad serviéndum Deo vivénti.

*Les Choristes.* Astitérunt reges terræ, et príncipes convenérunt in unum: Advérsùs Dóminum et advérsùs Christum ejus.

℣. Quarè fremuérunt géntes, et pópuli meditáti sunt inánia?

℟. Advérsùs Dóminum, et advérsùs Christum ejus.

## HUITIÈME LEÇON.

ET ídeò novi testaménti mediátor est: ut morte intercedénte, in redemptiónem eárum prævaricatiónum, quæ erant sub

prióri testaménto, repromissiónem accípiant qui vocáti sunt ætérnæ hæreditátis. Ubi enim testaméntum est, mors necésse est intercédat testatóris. Testaméntum enim in mórtuis confirmátum est : alióquin nondum valet, dum vivit qui testátus est. Unde nec primùm quidem sine sánguine dedicátum est.

*Les Choristes.* ℟. Æstimátus sum cum descendéntibus in lacum. Factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

℣. Posuérunt me in lacu inferióri, in tenebrósis, et in umbra mórtis.

℟. Factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

## NEUVIÈME LEÇON.

LEcto énim omni mandáto legis à Moyse univérso pópulo, accípiens sánguinem vitulórum et hircórum, cum aqua et lana coccínea et hyssópo, ipsum quoque librum et omnem pópulum aspérsit, dicens : Hic sanguis testaménti, quod mandávit ad vos Deus. Etiam tabernáculum, et ómnia vasa ministérii sánguine simíliter aspérsit. Et ómnia penè in sánguine secúndùm legem mundántur : et sine sánguinis effusióne non fit remíssio.

*Les Choristes.* ℟. Sepúlto Dómino, signá-

tum est monuméntum, volvéntes lápidem ad óstium monuménti : Ponéntes mílites, qui custodírent illum.

℣. Accedéntes príncipes sacerdótum ad Pilátum, petiérunt illum.

*Les Choristes.* Ponéntes mílites, qui custodírent illum.

*Ensuite tous trois ensemble.* ℟. Sepúlto Dómino, signátum est monuméntum, volvéntes lápidem ad óstium monuménti : Ponéntes mílites qui custodírent illum.

---

## A LAUDES.

*Le Recteur. Ant.* O mors ero mors tua, morsus tuus ero inférne.

*Psaume.* Miserére meî, Deus, etc. *comme ci-devant à l'Office du soir du Jeudi Saint, page 488, et ainsi des autres Psaumes qui seront renvoyés de ces Laudes dans ledit Office, à l'exception des Antiennes qui sont placées ici à leur rang.*

*Ant.* O mors ero mors tua, morsus tuus ero inférne.

*Le Rect. Ant.* Plangent eum quasi unigénitum, quia innocens Dóminus occísus est.

*Psaume* 24.

JUdica me, Deus, et discérne causam meam de gente non sancta : ab hómine iníquo et dolóso érue me.

Quia tu es, Deus, fortitúdo mea : quarè me repulísti, et quarè tristis incédo, dum afflígit me inimícus ?

Emítte lucem tuam, et veritátem tuam : ipsa me deduxérunt, et adduxérunt in montem sanctum tuum, et in tabernácula tua.

Et introíbo ad altáre Dei : ad Deum qui lætíficat juventútem meam.

Confitébor tibi in cíthara, Deus, Deus meus : quarè tristis es ánima mea, et quarè contúrbas me ?

Spera in Deo quóniam adhuc confitébor illi : salutáre vultûs mei, et Deus meus.

*Ant.* Plañgent eum quasi unigénitum, quia ínnocens Dóminus occísus est.

*Le Recteur. Ant.* Atténdite, univérsi pópuli, et vidéte dolórem meum.

*Psaume.* Deus, Deus meus, etc. *pag.* 491.

*Ps.* Deus misereátur nostrî, etc. *pag.* 492.

*Ant.* Atténdite, univérsi pópuli, et vidéte dolórem meum.

*Le Recteur. Ant.* A porta ínferi, érue, Dómine, ánimam meam.

*Cantique d'Ezéchiel.* Isaïe 38.

EGo dixi, in dimídio diérum meórum: Vadam ad portas ínferi.

Quæsívi resíduum annórum meórum: dixi, Non vidébo Dóminum Deum in terra vivéntium.

Non aspíciam hóminem ultrà: et habitatórem quiétis.

Generátio mea abláta est, et convolúta est à me: quasi tabernáculum pastórum.

Præcísa est velut à texénte vita mea, dum adhuc ordírer, succídit me: de manè usque ad vésperam fínies me.

Sperábam usque ad manè: quasi leo sic contrívit ómnia ossa mea.

De manè usque ad vésperam fínies me: sicut pullus hirúndinis sic clamábo, meditábor ut colúmba.

Attenuáti sunt óculi mei: suspiciéntes in excélsum.

Dómine, vim pátior, respónde pro me: quid dicam, aut quid respondébit mihi, cùm ipse fécerit?

Recogitábo tibi omnes annos meos: in amaritúdine ánimæ meæ.

Dómine, si sic vivítur, in tálibus vita spíritûs mei, corrípies me, et vivificábis me:

ecce in pace amaritúdo mea amaríssima.

Tu autem eruísti ánimam meam ut non períret : projecísti post tergum tuum ómnia peccáta mea.

Quia non inférnus confitébitur tibi, neque mors laudábit te : non expectábunt qui descéndunt in lacum, veritátem tuam.

Vivens, vivens ipse confitébitur tibi, sicut et ego hódie : pater fíliis notam fáciet veritátem tuam.

Dómine, salvum me fac : et psalmos nostros cantábimus cunctis diébus vitæ nostræ in domo Dómini.

*Ant.* A porta ínferi, érue, Dómine, ánimam meam.

*Le Recteur. Ant.* O vos omnes qui transítis per viam, atténdite, et vidéte, si est dolor sicut dolor meus.

*Psaume.* Laudáte Dóminum de cœlis, etc. *page* 496.

*Psaume.* Cantáte Dómino cánticum novum, etc. *page* 497.

*Psaume.* Laudáte Dóminum in Sanctis ejus, *page* 498.

*Ant.* O vos omnes qui transítis per viam, atténdite, et vidéte, si est dolor sicut dolor meus.

*Les*

*Les deux Choristes.* ℣. Caro mea requiéscet in spe.

*Le Chœur.* ℟. Et non dabis sanctum tuum vidére corruptiónem.

*Le Recteur. Ant.* Muliéres sedéntes ad monuméntum, lamentabántur, flentes Dóminum.

*Cantique de Zacharie.* Benedíctus Dóminus Deus Israël, *page* 499.

*Ant.* Muliéres sedéntes ad monuméntum, lamentabántur, flentes Dóminum.

*Les Pénitens s'étant mis à genoux, les deux Choristes diront le* ℣. Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem: mortem autem Crucis.

*Le Chœur.* ℟. Propter quod et Deus exaltávit illum, et donávit illi nomen, quod est super omne nomen.

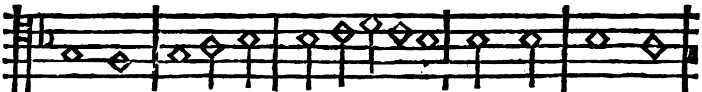
*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

*Ensuite on dit le* Miserére meî, Deus, etc. *comme ci-devant, page* 488.

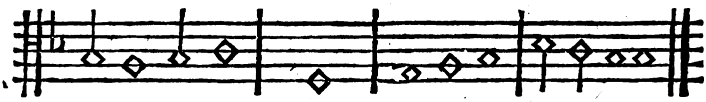
---

# MÉDITATION

*Sur les douleurs de la Vierge Marie, étant auprès de la Croix de son fils Jésus-Christ, qui se dit après l'Office précédent, ou quand le Recteur le jugera à propos.*



STabat Mater do-lorósa juxta Crucem



lacrymósa, Dum pendébat Fílius.

Cujus ánimam geméntem, Contristántem, et doléntem, Pertransívit gládius!

O quàm tristis et afflícta, Fuit illa benedícta, Mater Unigéniti!

Quæ mœrébat, et dolébat, Et tremébat cùm vidébat Nati pœnas ínclyti.

Quis est homo qui non fleret, Christi Matrem si vidéret, In tanto supplício?

Quis posset non contristári, Piam Matrem contemplári Doléntem cum Fílio?

Pro peccátis suæ gentis, Vidit Jesum in torméntis, Et flagéllis súbditum.

Vidit suum dulcem natum Moriéntem desolátum, Dum emísit spíritum.

Eïa mater fons amóris, Me sentíre vim dolóris, Fac ut tecum lúgeam.

Fac ut árdeat cor meum, In amándo Christum Deum, Ut sibi compláceam.

Sancta Mater, istud agas; Crucifíxi fige plagas Cordi meo válidè.

Tui nati vulneráti, Tam dignáti pro me pati, Pœnas mecum dívide.

Fac me verè tecum flere, Crucifíxo condolére, Donec ego víxero.

Juxta crucem tecum stáre, Et me tibi sociáre In planctu desidéro.

Virgo Vírginum præclára, Mihi jam non sis amára, Fac me tecum plángere.

Fac ut portem Christi mortem, Passiónis ejus sortem, Et plagas recólere.

Fac me plagis vulnerári, Cruce hâc inebriári, Ob amórem Fílii.

Inflammátus et accénsus, Per te, Virgo, sim defénsus In die judícii.

Fac me cruce custodíri, Morte Christi præmuníri, Confovéri grátiâ.

Quando corpus moriétur, Fac ut ánimæ donétur Paradísi glória. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Tuam ipsius ánimam dolóris gládius pertransívit.

*Le Chœur.* ℟. Ut revelêntur ex multis córdibus cogitatiónes.

OREMUS.

INtervéniat pró nobis, quæsumus, Dómine Jesu Christe, nunc et in hora mortis nostræ apud tuam cleméntiam, beáta Virgo María mater tua, cujus sacratíssimam ánimam in hora tuæ passiónis dolóris gládius pertransívit. Per te, Jesu Christe Salvátor mundi: Qui cum Patre et Spíritu Sancto vivis et regnas in sécula seculórum. ℟. Amen.

---

## LITANIES DE LA PASSION
## DE NOTRE SEIGNEUR JÉSUS-CHRIST,

*Pour dire ès Compagnies des Séculiers, durant leur Procession de la nuit du Jeudi au Vendredi Saint.*

*Les Choristes commencent, et le Chœur répond :*

KYrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Christe eléison. ℟. Christe eléison.
℣. Kyrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Christe audi nos. ℟. Christe exáudi nos.
Pater de cœlis Deus, miserére nobis.
Fili Redémptor mundi Deus, mis. nobis.
Spíritus Sancte Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas unus Deus, miserére nobis.

Jesu Christe, qui pro redemptióne nostra de cœlis descendísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui de gloriósa Vírgine María dignátus es nasci, miserére nobis.
Jesu Christe, qui pro nobis formam servi accepísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui in præsépio jacuísti, mis.
Jesu Christe, qui lacrymántem peccatrícem non horruísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui fame et siti corpus tuum macerásti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui à Judæis tentátus et injuriátus fuísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui pro nobis usque ad sudórem prolíxiùs orásti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui à Juda tradi et osculári te permisísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui ab ímpiis Judæis comprehénsus et in terram projéctus fuísti, mis.
Jesu Christe, qui ligátis mánibus post tergum te duci permisísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui Pontifícibus præsentátus, et mendáciter accusátus fuísti, miserére.
Jesu Christe, qui pugnis et álapis in fácie percússus fuísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui divérsis oppróbriis illúsus fuísti, miserére nobis.

Jesu Christe, qui Piláto tráditus fuísti, mis.
Jesu Christe, qui ad colúmnam ligátus, et usque ad sánguinem verberátus fuísti, mis.
Jesu Christe, qui à milítibus veste purpúrea indútus fuísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui spinis duríssimis coronátus fuísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui verbum duríssimum, Tolle, tolle, crucífige, sæpiùs audísti, miserére.
Jesu Christe, qui duríssimum lignum crucis fessus et onerátus sustinuísti, miserére.
Jesu Christe, qui in cruce levátus, cum latrónibus associátus fuísti, miserére nob.
Jesu Christe, qui mánibus et pédibus fixis in cruce, à prætereúntibus blasphemátus fuísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui speciósam fáciem tuam, quasi leprósam habuísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui pro crucifixóribus tuis orásti ad Patrem, et latrónem in cruce exaudísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui Maríam matrem tuam dulcíssimam Joánni commendásti, mis.
Jesu Christe, qui lánceâ perforátus fuísti, et próprio sánguine mundum redemísti, mis.
Jesu Christe, qui in monuménto sepúltus fuísti, miserére nobis.

Jesu Christe, qui tértiâ die à mórtuis resurréxisti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui quadragésimâ die in cœlum ascendísti, miserére nobis.
Jesu Christe, qui sedes ad déxteram Patris, miserére nobis.
Jesu Christe, qui ventúrus es judicáre vivos et mórtuos, miserére nobis.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Parce nobis, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Exáudi nos, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Miserére nobis.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Dona nobis pacem.
*Le Recteur.* Kyrie eléison.
*Le Chœur.* Christe eléison. Kyrie eléison.
*Le Chœur.* Pater noster *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo. Amen.

*Le Recteur dira les Oraisons suivantes sans* OREMUS.

DOmine Jesu Christe, qui pro salúte humáni géneris quinque vúlnera páti voluísti: tríbue, quæsumus, ut ob reverén-

tiam illórum vúlnerum tuórum, absólvi mereámur ab ómnibus peccátis nostris, et præséntem vitam bono fine terminári, et à tuæ dulcíssimæ visiónis contemplatióne nunquam separári.

*Oraison.*

IN hac hora hujus diéi, tuâ nos, Dómine, reple misericórdiâ, ut per totum diem exultántes, divínis láudibus júgiter delectémur; et nos fámulos tuos ab omni adversitáte custódias. Per Dóminum, etc.

*Oraison pour l'Empereur.*

DOmine Jesu Christe, fili Dei vivi, qui pro humáni géneris redemptióne in ligno crucis pependísti; te humíliter, piâ devotióne deprecámur, ut Christianíssimum Imperatórem nostrum N. ac civitátem istam, et omnes in ea existéntes ab ómnibus tam córporis quàm ánimæ deféndas perículis; ut Sanctórum méritis atque suffrágiis, vitam dignè cónsequi mereántur ætérnam.

*Oraison.*

OMnípotens clementíssime Deus, qui hodiérnâ die hanc Congregatiónem in loco isto, ad glorificándum nomen sanctum tuum adunári fecísti: te supplíciter obsecrámus, ut nos frátresque nostros fácias tuis

obtemperáre mandátis : et intercedénte gloriósâ semper Vírgine Maríâ cum ómnibus Sanctis, nos fámulos tuos atque loca nostra ab omni adversitáte custódi. Qui vivis, etc.

℟. Amen.

---

## LITANIES DE LA PASSION,

*PLUS particulières des actions et des tourmens de Jésus-Christ, pour dire comme les précédentes.*

*Les Choristes étant à genoux commencent :*

KYrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Christe eléison. ℟. Christe eléison.
℣. Kyrie eléison. ℟. Kyrie eléison.
℣. Christe audi nos. ℟. Christe exáudi nos.
Pater de cœlis Deus, miserére nobis.
Fili Redémptor mundi Deus, miserére.
Spíritus Sancte Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas unus Deus, miserére nobis.
Qui pro Redemptióne nostra de cœlis descendísti, miserére nobis.
Qui de gloriósa Vírgine María dignátus es nasci, miserére nobis.
Qui pro nobis formam servi accepísti, mis.
Qui in præsépio reclinátus fuísti, miserére.

Qui in vílibus pannis involútus fuísti, mis.
Qui in templo circumcídi voluísti, miser.
Qui pretiósum sánguinem tuum effudísti, miserére nobis.
Qui à Magis adorátus fuísti, miserére nobis.
Qui pauper et exul in Ægyptum fuísti, mis.
Qui paréntibus tuis súbditus fuísti, miser.
Qui à Joanne baptizári in Jordáne voluísti, miserére nobis.
Qui lacrymántem peccatrícem non horruísti, miserére nobis.
Qui fame et siti corpus tuum macerásti, mis.
Qui eméntes et vendéntes de templo ejecísti, miserére nobis.
Qui à Judæis tentátus et injuriátus fuísti, mis.
Qui dæmoniácus appellátus fuísti, miserére.
Qui cœnam cum discípulis tuis fecísti, mis.
Qui pedes eórum lavásti, miserére nobis.
Qui pretiósi Córporis tui Sacraméntum instituísti, miserére nobis.
Qui pro nobis usque ad sánguinem sudans prolíxiùs orásti, miserére nobis.
Qui Judæis te quæréntibus óbviam venísti, miserére nobis.
Qui à Juda ósculo tráditus fuísti, miserére.
Qui ab ipso osculári te permisísti, miserére.
Qui ab ímpiis Judæis comprehénsus fuísti, miserére nobis.

Qui in terram projéctus fuísti, miserére nob.
Qui ligátis post tergum mánibus te duci permisísti, miserére nobis.
Qui à discípulis derelíctus fuísti, miserére.
Qui Pontifícibus præsentátus fuísti, miser.
Qui pretiósum caput tuum velátum habuísti, miserére nobis.
Qui pugnis et álapis in fácie percússus fuísti, miserére nobis.
Qui sputis fœdátus fuísti, miserére nobis.
Qui divérsis oppróbriis illúsus fuísti, mis.
Qui multis injúriis blasphemátus fuísti, mis.
Qui in cárcere hórrido pósitus fuísti, miser.
Qui manè vinctus Piláto tráditus fuísti, mis.
Qui ad colúmnam à mundo ligári non horruísti, miserére nobis.
Qui pro nobis usque ad sánguinem verberátus fuísti, miserére nobis.
Qui milítibus à Piláto tráditus fuísti, miser.
Qui ab ipsis veste purpúreâ indútus fuísti, miserére nobis.
Qui spínis duríssimis coronátus fuísti, mis.
Qui verba duríssima, Tolle, tolle, crucifíge eum, sæpiùs audísti, miserére nobis.
Qui à Piláto falsò condemnátus fuísti, mis.
Qui duríssimum lignum crucis fessus et onerátus sustinuísti, miserére nobis.

Qui matri tuæ castíssimæ extra civitátem obviavísti, miserére nobis.
Qui pro compassióne ejus in te defíciens cum cruce sedísti, miserére nobis.
Qui cum latrónibus in cruce associátus fuísti, miserére nobis.
Qui véstibus própriis spoliátus fuísti, mis.
Qui in cruce levátus fuísti, miserére nobis.
Qui bráchiis tuis diréctis, in cruce pependísti, miserére nobis.
Qui à prætereúntibus blasphemátus fuísti, miserére nobis.
Qui lábia tua dulcíssima et mellíflua spùtis pállida habuísti, miserére nobis.
Qui mánibus fixis et pédibus in cruce pependísti, miserére nobis.
Qui speciósam fáciem tuam quasi lepró-sam habuísti, miserére nobis.
Qui pro crucifixóribus ad Patrem orásti, miserére nobis.
Qui latrónem in cruce exaudísti, miserére.
Qui Maríam matrem tuam dulcíssimam Joánni commendásti, miserére nobis.
Qui felle et acéto potátus fuísti, miserére.
Qui piíssimos óculos præ dolóre mortis lánguidos habuísti, miserére nobis.
Qui caput tuum dulcíssimum móriens in

cruce inclinásti, miserére nobis.
Qui lánceâ perforátus fuísti, miserére.
Qui próprio sánguine mundum redemísti, miserére nobis.
Qui de cruce depósitus fuísti, miserére.
Qui in monuménto sepúltus fuísti, miser.
Qui tertiâ die à mórtuis resurrexísti, miser.
Qui quadragésimâ die in cœlum ascendísti, miserére nobis.
Qui Spíritum paraclétum discípulis misísti, miserére nobis.
Qui sedes ad déxteram Dei Patris, miser.
Qui ventúrus es judicáre vivos et mórtuos, miserére nobis.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Parce nobis, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Exáudi nos, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Miserére nobis.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Dona nobis pacem.
*Le Recteur.* Kyrie eléison.
*Le Chœur.* Christe eléison. Kyrie eléison.
*Le Chœur.* Pater noster *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.
*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo. Amen.

*Le Recteur dira les Oraisons suivantes sans* OREMUS.

DOmine Jesu Christe, qui pro salúte humáni géneris quinque vúlnera pati voluísti : tríbue, quæsumus, ut ob reveréntiam illórum vúlnerum tuórum, absólvi mereámur ab ómnibus peccátis nostris, et præséntem vitam bono fine terminári, et à tuæ dulcíssimæ visiónis contemplatióne nunquam separári.

*Oraison pour l'Empereur.*

DOmine Jesu Christe, fili Dei vivi, qui pro humáni géneris redemptióne in ligno crucis pependísti; te humíliter, piâ devotióne deprecámur, ut Christianíssimum Imperatórem nostrum N. ac civitátem istam et omnes in ea existéntes ab ómnibus tam córporis quàm ánimæ deféndas perículis ; ut Sanctórum méritis atque suffrágiis, vitam dignè cónsequi mereántur ætérnam.

*Oraison.*

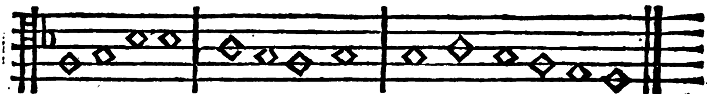
OMnípotens clementíssime Deus, qui hodiérnâ die hanc Congregatiónem in loco isto, ad glorificándum nomen sanctum tuum adunári fecísti : te supplíciter obsecrámus, ut nos frátresque nostros fácias tuis

obtemperáre mandátis : et intercedénte gloriósâ semper Vírgine Maríâ cum ómnibus Sanctis, nos fámulos tuos atque loca nostra ab omni adversitáte custódi. Qui vivis et regnas Deus. Per ómnia sécula seculórum. Amen.

---

## HYMNE DE LA PASSION,

*Qu'on dit la nuit du Jeudi au Vendredi Saint, à toutes les Stations.*



VExílla Re-gis pró-de-unt,
Fulget Crucis mystérium,
Quo carne carnis cónditor,
Suspénsus est patíbulo.

Quo vulnerátus ínsuper,
Mucróne diro lánceæ,
Ut nos laváret crímine,
Manávit undâ et sánguine.

Impléta sunt quæ cóncinit
David fidéli cármine,
Dicens : In natiónibus
Regnávit à ligno Deus.

Arbor decóra et fúlgida,
Ornáta Regis púrpurâ,
Eléсta digno stípite
Tam sancta membra tángere.

Beáta cujus bráchiis
Sécli pepéndit prétium,
Statéra facta córporis,
Prædámque tulit tártari.

O Crux, ave, spes unica,
Hoc Passiónis témpore,
Auge piis justítiam,
Reísque dona véniam.

Te summa Deus Trínitas,
Colláudet omnis spíritus;
Quos per crucis mystérium
Salvas, rege per sécula. Amen.

*Sans* OREMUS.

RESpice, quæsumus, Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus trádi nocéntium et crucis subíre torméntum. Qui tecum vivit et regnat, etc.

L'OFFICE

# L'OFFICE ENTIER
## DE LA GLORIEUSE
# VIERGE MARIE,

*Selon le Saint et Sacré Concile de Trente, et suivant la Réformation de nos Saints Pères les Papes Pie V, Grégoire XIII et Clément VIII, que les Pénitens du Saint Sacrement sont tenus de dire les principales Fêtes de la Sainte Vierge.*

---

## A MATINES.

*Le Recteur sonnera la clochette, et chacun se mettra à genoux; et ledit Recteur, la confession étant parachevée, commencera d'un ton bas:*

AVe María, grátiâ plena, Dóminus tecum.

*Le premier Chœur répondra du même ton:*

Benedícta tu in muliéribus, et benedíctus fructus ventris tui Jesus.

O

*Le second Chœur.* Sancta María, Mater Dei, ora pro nobis peccatóribus, nunc, et in hora mortis nostræ.

*Tous les Pénitens répondront :* Amen.

*Le Recteur faisant le signe de la Croix, entonnera :*

DOmine, lábia mea apéries.

*Tous les Pénitens se lèveront et répondront :*

Et os meum annuntiábit laudem tuam.

*Ensuite le Recteur faisant derechef le signe de la Croix, entonnera :*

Deus, in adjutórium meum inténde.

*Tous répondront.* Dómine, ad adjuvándum me festína.

*Tous inclineront la tête, comme ils feront à tous les* Glória Patri, etc. Allelúia.

¶ *Il faut noter que l'on dit* Allelúia, *depuis Pâques jusqu'au Dimanche de la Septuagésime, à toutes les heures : mais depuis le Dimanche de la Septuagésime jusqu'à Pâques, on dit :* Laus tibi, Dómine, etc.

¶ *Il faut aussi que chacun prenne garde de chanter posément les Psaumes, les bien ponctuer, et faire une pause là où ils verront qu'il y aura deux points, ainsi (:) ; et quand ce point (;) se trouvera devant les*

*deux points, ou après, il faudra aussi faire un peu de pause.*

*Ensuite tous les Pénitens étant debout, les deux Choristes devant le grand Autel, commenceront à haute voix l'Invitatoire :* Ave María, grátiâ plena, Dóminus tecum.

*Le Chœur répondra :* Ave María, grátiâ plena, Dóminus tecum.

¶ *Depuis le Samedi Saint jusqu'au Samedi devant la Trinité, à Vêpres, on ajoute à la fin de l'Invitatoire,* Allelúia, *et à la fin de toutes les Antiennes et Versets.*

*Les deux Choristes suivront. Psaume 94.*

VÉníte, exultémus Dómino, jubilémus Deo salutári nostro : præoccupémus fáciem ejus in confessióne, et in Psalmis jubilémus ei.

*Le Chœur.* ℟. Ave María, grátiâ plena : Dóminus tecum.

*Les Choristes suivront :* Quóniam Deus magnus Dóminus, et Rex magnus super omnes Deos : quóniam non repellet Dóminus plebem suam, quia in manu ejus sunt omnes fines terræ, et altitúdines móntium ipse cónspicit.

*Le Chœur.* Dóminus tecum.

*Les Choristes.* Quóniam ipsíus est mare, et ipse fecit illud, et áridam fundavérunt manuá ejus: veníte, adorémus et procidámus ante Deum: plorémus coram Dómino, qui fecit nos, quia ipse est Dóminus Deus noster: nos autem pópulus ejus, et oves páscuæ ejus.

*Le Chœur.* Ave María, grátiâ plena: Dóminus tecum.

*Les Choristes.* Hódie si vocem ejus audiéritis, nolíte obduráre corda vestra, sicut in exacerbatióne secúndùm diem tentatiónis in desérto, ubi tentavérunt me patres vestri, probavérunt, et vidérunt ópera mea.

*Le Chœur.* Dóminus tecum.

*Les Choristes.* Quadragínta annis próximus fui generatióni huic, et dixi: Semper hi errant corde: ipsi verò non cognovérunt vias meas, quibus jurávi in ira mea, si introíbunt in réquiem meam.

*Le Chœur.* Ave María, grátiâ plena.

*Les Choristes.* Glória Patri, etc.

*Le Chœur.* Dóminus tecum.

*Les Choristes.* Ave María, grátiâ plena.

*Le Chœur.* Dóminus tecum.

*Les deux Choristes commenceront l'Hymne, qui se chante par le Chœur à un Verset par chaque côté, tous les Pénitens étant à genoux.*

## *HYMNE.*

QUem terra, pontus, æthera,
Colunt, adórant, prædicant,
Trinam regéntem máchinam,
Claustrum Maríæ bájulat.

Cui Luna, Sol, et ómnia
Desérviunt, per témpora,
Perfúsâ cœli grátiâ,
Gestánt puéllæ víscera.

Beáta Mater múnere,
Cujus supérnus Artifex
Mundum pugíllo cóntinens,
Ventris sub arca clausus est.

Beáta cœli núntio,
Fœcúnda Sancto Spíritu,
Desiderátus géntibus
Cujus per alvum fusus est.

Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine.
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula.

*Tous répondront.* Amen.

## LES TROIS PSAUMES SUIVANS

*Se disent le Dimanche, le Lundi et Jeudi.*

*Le Recteur étant debout, dira à voix basse l'Ant.* Benedicta tu : *lui et tous les Pénitens assis, comme ils seront pendant qu'on chantera les Psaumes, jusqu'au* Glória Patri, *les deux Choristes commenceront, étant debout.*

### *Psaume* 8.

DOmine Dóminus noster.

*Le premier Chœur.* ℟. Quàm admirábile est nomen tuum in univérsa terra !

*Le second Chœur suivra.* Quóniam eleváta est magnificéntia tua : super cœlos. *Et ainsi des autres.*

Ex ore infántium et lacténtium perfecísti laudem propter inimícos tuos : ut déstruas inimícum et ultórem.

Quóniam vidébo cœlos tuos, ópera digitórum tuórum : lunam et stellas, quæ tu fundásti.

Quid est homo, quòd memor es ejus ? aut fílius hóminis, quóniam visitas eum ?

Minuísti eum paulò minùs ab Angelis : glóriâ et honóre coronásti eum, et consti-

tuísti eum super ópera mánuum tuárum.

Omnia subjecísti sub pédibus ejus: oves et boves univérsas, ínsuper et pécora campi.

Vólucres cœli, et pisces maris: qui perámbulant sémitas maris.

Dómine Dóminus noster: quàm admirábile est nomen tuum in univérsa terra!

Glória Patri, etc.

*Les Pénitens se lèveront, et inclineront la tête jusqu'à* Sicut, *et achèveront le Verset étant debout, et feront ainsi à tous les* Glória Patri.

*L'un des Confrères auquel on aura donné la charge, dira l'Antienne suivante:*

Benedícta tu in muliéribus, et benedíctus fructus ventris tui. *Et ainsi des autres.*

*Le Recteur. Ant.* Sicut myrrha.

*Psaume* 18.

CŒli enárrant glóriam Dei.

*Le premier Chœur* ℟. Et ópera mánuum ejus annúntiat firmaméntum.

*Le second Chœur suivra.* Dies diei erúctat verbum: et nox nocti índicat sciéntiam. *Et ainsi de tous les autres Psaumes.*

Non sunt loquélæ, neque sermónes: quórum non audiántur voces eórum.

In omnem terram exívit sonus eórum : et in fines orbis terræ verba eórum.

In sole pósuit tabernáculum suum : et ipse tanquam sponsus procédens de thálamo suo.

Exultávit ut gigas ad curréndam viam : à summo cœlo egréssio ejus.

Et occúrsus ejus usque ad summum ejus : nec est qui se abscóndat à calóre ejus.

Lex Dómini immaculáta, convértens ánimas : testimónium Dómini fidéle, sapiéntiam præstans párvulis.

Justítiæ Dómini rectæ, lætificántes corda : præcéptum Dómini lúcidum, illúminans óculos.

Timor Dómini sanctus, pérmanens in séculum séculi : judícia Dómini vera, justificáta in semetípsa.

Desiderabília super aurum et lápidem pretiósum multùm : et dulcióra super mel et favum.

Etenim servus tuus custódit ea : in custodiéndis illis retribútio multa.

Delícta quis intélligit? Ab occúltis meis munda me : et ab aliénis parce servo tuo.

Si mei non fuerint domináti, tunc immaculátus ero : et emundábor à delícto máximo.

Et erunt ut compláceant elóquia oris mei : et meditátio cordis mei in conspéctu tuo semper.

Dómine adjútor meus : et redémptor meus.

Glória Patri, etc.

*Celui qui aura charge dira l'Antienne :* Sicut myrrha elécta, odórem dedísti suavitátis, sancta Dei Génitrix.

*Le Recteur. Ant.* Ante torum.

## *Psaume* 23.

DOmini est terra et plenitúdo ejus : orbis terrárum, et univérsi qui hábitant in eo.

Quia ipse super mária fundávit eum : et super flúmina præparávit eum.

Quis ascéndet in montem Dómini : aut quis stabit in loco sancto ejus ?

Innocens mánibus et mundo corde : qui non accépit in vano ánimam suam, nec jurávit in dolo próximo suo.

Hic accípiet benedictiónem à Dómino : et misericórdiam à Deo salutári suo.

Hæc est generátio quæréntium eum : quæréntium fáciem Dei Jacob.

Attóllite portas príncipes vestras : et elevá-

mini portæ æternáles : et introíbit Rex glóriæ.

Quis est iste Rex glóriæ ? Dóminus fortis et potens, Dóminus potens in prælio.

Attóllite portas príncipes vestras, et elevámini portæ æternáles : et introíbit Rex glóriæ.

Quis est iste Rex glóriæ ? Dóminus virtútum ipse est Rex glóriæ.

Glória Patri, et Fílio, etc.

*Ant.* Ante torum hujus Vírginis frequentáte nobis dúlcia cántica drámatis.

*Les deux Choristes diront le* ℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

*Le Chœur.* ℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

*Le Recteur dira* Pater noster, *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* ℟. Sed líbera nos à malo

*Et après, le Recteur dira l'Absolution.*

PRécibus et méritis beátæ Maríæ semper Vírginis, et ómnium Sanctórum, perdúcat nos Dóminus ad regna cœlórum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

## LES TROIS PSAUMES SUIVANS

*Se disent le Mardi et le Vendredi.*

*Le Rect. Ant.* Spécie tua.

*Psaume* 44.

ERuctávit cor meum verbum bonum : dico ego ópera mea Regi.

Lingua mea cálamus scribæ : velóciter scribéntis.

Speciósus formâ præ fíliis hóminum, diffúsa est grátia in lábiis tuis : proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

Accíngere gládio tuo super fémur tuum : potentíssime.

Spécie tuâ, et pulchritúdine tuâ : inténde, próspere procéde, et regna.

Propter veritátem, et mansúetudinem, et justítiam ; et dedúcet te mirabíliter déxtera tua.

Sagíttæ tuæ acútæ, pópuli sub te cadent : in corda inimícorum Regis.

Sedes tua Deus in séculum séculi : virga directiónis, virga regni tui.

Dilexísti justítiam, et odísti iniquitátem : proptéreà unxit te Deus, Deus tuus, óleo lætítiæ præ consórtibus tuis.

Myrrha, et gutta, et cásia à vestiméntis tuis, à dómibus ebúrneis : ex quibus delectavérunt te fíliæ regum in honóre tuo.

Astitit Regína à dextris tuis in vestítu deauráto : circúmdata varietáte.

Audi, fília, et vide, et inclína aurem tuam : et oblivíscere pópulum tuum, et domum patris tui.

Et concupíscet Rex decórem tuum : quóniam ipse est Dóminus Deus tuus, et adorábunt eum.

Et fíliæ Tyri in munéribus : vultum tuum deprecabúntur omnes dívites plebis.

Omnis glória ejus fíliæ Regis ab intùs : in fímbriis auréis circumamícta varietátibus.

Adducéntur Regi vírgines post eam : próximæ ejus afferéntur tibi.

Afferéntur in lætítia et exultatióne : adducéntur in templum Regis.

Pro pátribus tuis nati sunt tibi fílii : constítues eos príncipes super ómnem terram.

Memóres erunt nóminis tui : in omni generatióne et generatiónem.

Proptéreà pópuli confitebúntur tibi in ætérnum : et in séculum séculi.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Spécie tua et pulchritúdine tua,

inténde, prósperè procéde, et regna.

*Le Recteur. Ant.* Adjuvábit eam.

*Psaume* 45.

DEus noster refúgium et virtus: adjútor in tribulatiónibus, quæ invenérunt nos nimis.

Proptéreà non timébimus dum turbábitur terra: et transferéntur montes in cor maris.

Sonuérunt, et turbátæ sunt aquæ eórum: conturbáti sunt montes in fortitúdine ejus.

Flúminis ímpetus lætíficat civitátem Dei: sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus.

Deus in médio ejus non commovébitur: adjuvábit eam Deus manè dilúculo.

Conturbátæ sunt gentes, et inclináta sunt regna: dedit vocem suam, mota est terra.

Dóminus virtútum nobíscum: suscéptor noster Deus Jacob.

Veníte, et vidéte ópera Dómini, quæ pósuit prodígia super terram: áuferens bella usque ad finem terræ.

Arcum cónteret, et confrínget arma: et scuta combúret igni.

Vacáte, et vidéte quóniam ego sum Deus: exaltábor in géntibus, et exaltábor in terra.

Dóminus virtútum nobíscum: suscéptor noster Deus Jacob.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Adjuvábit eam Deus vultu suo: Deus in médio ejus non commovébitur.

*Le Recteur. Ant.* Sicut lætántium.

*Psaume* 86.

FUndaménta ejus in móntibus sanctis: díligit Dóminus portas Sion super ómnia tabernácula Jacob.

Gloriósa dicta sunt de te: cívitas Dei.

Memor ero Rahab et Babylónis: sciéntium me.

Ecce alienígenæ et Tyrus, et pópulus Æthíopum: hi fuérunt illic.

Numquid Sion dicet, Homo, et homo natus est in ea: et ipse fundávit eam Altíssimus?

Dóminus narrábit in scriptúris populórum et príncipum: horum qui fuérunt in ea.

Sicut lætántium ómnium: habitátio est in te. Glória Patri, etc.

*Ant.* Sicut lætántium ómnium nostrûm habitátio est in te, sancta Dei Génitrix.

*Les Choristes.* ℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

*Le Chœur.* ℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

*Le Rect. dira* Pater noster, *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* Sed líbera nos à málo.

*Ensuite le Recteur dira l'absolution.* Précibus et méritis, etc. *page* 586.

---

## LES TROIS PSAUMES SUIVANS

*Se disent le Mercredi et le Samedi.*

*Le Recteur. Ant.* Gaude, María Virgo.

### *Psaume* 95.

CAntáte Dómino cánticum novum: cantáte Dómino omnis terra.

Cantáte Dómino, et benedícite nómini ejus: annunciáte de die in diem salutáre ejus.

Annunciáte inter gentes glóriam ejus: in ómnibus pópulis mirabília ejus.

Quóniam magnus Dóminus, et laudábilis nimis: terríbilis est super omnes deos.

Quóniam omnes dii géntium dæmónia Dóminus autem cœlos fecit.

Conféssio et pulchritúdo in conspéctu ejus: sanctimónia et magnificéntia in sanctificatióne ejus.

Afférte Dómino pátriæ géntium, afférte

Dómino glóriam et honórem : afférte Dómino glóriam nómini ejus.

Tóllite hóstias, et introíte in átria ejus : adoráte Dómino in átrio sancto ejus.

Commoveátur à fácie ejus univérsa terra: dícite in géntibus, Quia Dóminus regnávit.

Etenim corréxit orbem terræ, qui non commovébitur : judicábit pópulos in æquitáte.

Lætén tur cœli, et exúltet terra, commoveátur mare, et plenitúdo ejus : gaudébunt campi, et ómnia quæ in eis sunt.

Tunc exultábunt ómnia ligna sylvárum à fácie Dómini, quia venit : quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terræ in æquitáte : et pópulos in veritáte sua.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Gaude, María Virgo, cunctas hæreses sola interemísti in univérso mundo.

*Le Recteur. Ant.* Dignáre.

## *Psaume* 96.

DOminus regnávit, exúltet terra : lætén tur ínsulæ multæ.

Nubes et calígo in circúitu ejus : justítia et judícium corréctio sedis ejus.

Ignis ante ipsum præcédet : et inflammábit in circúitu inimícos ejus.

Illuxérunt fulgura ejus orbi terræ : vidit, et commóta est terra.

Montes sicut cera fluxérunt à fácie Dómini : à fácie Dómini omnis terra.

Annuntiavérunt cœli justítiam ejus : et vidérunt omnes pópuli glóriam ejus.

Confundántur omnes qui adórant sculptília : et qui gloriántur in simulácris suis.

Adoráte eum omnes Angeli ejus : audívit et lætáta est Sion.

Et exultavérunt fíliæ Judæ : propter judícia tua, Dómine.

Quóniam tu Dóminus altíssimus super omnem terram : nimis exaltátus es super omnes Deos.

Qui dilígitis Dóminum, odíte malum : custódit Dóminus ánimas sanctórum suórum, de manu peccatóris liberábit eos.

Lux orta est justo : et rectis corde lætítia.

Lætámini justi in Dómino : et confitémini memóriæ sanctificatiónis ejus.

Glória Patri, etc.

*Ant.* Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta : da mihi virtútem contra hostes tuos.

*Le Recteur. Ant.* Post partum Virgo.

II. OFFICE. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité.*

*Le Recteur. Ant.* Angelus Dómini.

*Psaume 97.*

CAntáte Dómino cánticum novum: quia mirabília fecit.

Salvávit sibi déxtera ejus : et bráchium sanctum ejus.

Notum fecit Dóminus salutáre suum : in conspéctu géntium revelávit justítiam suam.

Recordátus est misericórdiæ suæ : et veritátis suæ dómui Israël.

Vidérunt omnes términi terræ : salutáre Dei nostri.

Jubiláte Deo omnis terra : cantáte, et exultáte, et psállitc.

Psállite Dómino in cíthara, in cíthara et voce psalmi ; in tubis ductílibus, et voce tubæ córneæ.

Jubiláte in conspéctu Regis Dómini : moveátur mare, et plenitúdo ejus, orbis terrárum, et qui hábitant in eo.

Flúmina plaudent manu, simul montes exultábunt à conspéctu Dómini : quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terrárum in justítia : et pópulos in æquitáte. Gloria Patri, etc.

*Ant.* Post partum Virgo inviolàta permansísti: Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

II. OFFICE. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité.*

*Ant.* Angelus Dómini nuntiávit Maríæ, et concépit de Spíritu sancto. Allelúia.

*Les Choristes.* ℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

*Le Chœur.* ℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

*Le Rect.* Pater noster, *à voix basse, jusqu'au* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem.

*Le Chœur.* Sed líbera nos à malo.

*Le Recteur dit l'Absolution, qui se dit au même ton que la Leçon.*

PRécibus et méritis beátæ Maríæ semper Vírginis, et ómnium Sanctórum, perdúcat nos Dóminus ad regna cœlórum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Tous les Pénitens se lèveront, et celui auquel sera donnée la charge de dire la Leçon, se mettant à genoux au milieu de l'Eglise, demandera la Bénédiction au Recteur, disant :* ℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur répondra avec la même voix :* Nos cum prole pia, benedícat Virgo María.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Pénitent se levant ira au pupitre, et dira cette première Leçon, pendant laquelle les Pénitens seront assis, et on fera de même aux autres Leçons.*

PREMIÈRE LEÇON. Eccles. 24.

IN ómnibus réquiem quæsívi, et in hæreditáte Dómini morábor. Tunc præcépit, et dixit mihi Creátor ómnium, et qui creávit me, requiévit in tabernáculo meo, et dixit mihi : In Jacob inhábita, et in Israël hæreditáte, et in électis meis mitte radíces. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Pénitens se lèvent, et les deux Choristes disent :*

Sancta et immaculáta Virgínitas, quibus te láudibus écferam néscio : Quia quem cœli cápere non póterant, tuo grémio contulísti.

*Celui qui a dit la Leçon.*

℣. Benedícta tu in muliéribus, et benedíctus fructus ventris tui.

*Les Choristes.* ℟. Quia quem cœli cápere non póterant, tuo grémio contulísti.

*Le Pénitent s'étant mis à genoux devant le Crucifix, et ayant fait sa prière, retournera en sa place ; et l'autre Pénitent, auquel*

*on aura donné la charge de dire la seconde Leçon, dira à genoux comme dessus:*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur.* Ipsa Virgo vírginum intercédat pro nobis ad Dóminum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

## SECONDE LEÇON.

ET sic in Sion firmáta sum, et in civitáte sanctificáta simíliter requiévi, et in Jerúsalem potéstas mea. Et radicávi in pópulo honorificáto, et in parte Dei mei hæréditas illíus, et in plenitúdine Sanctórum deténtio mea. Tu autem, Dómine, miserére nobis. *Le Chœur* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Beáta es, Virgo María, quæ Dóminum portásti Creatórem mundi: Genuísti qui te fecit, et in ætérnum pérmanes Virgo.

*Celui qui a dit la Leçon:*

℣. Ave María, grátiâ plena: Dóminus tecum.

*Les Choristes.* ℟. Genuísti qui te fecit, et in ætérnum pérmanes Virgo.

*Quand on dit le* Te Deum, *celui qui a dit la Leçon, ajoute le* ℣. Glória Patri, etc.

*Les Choristes.* ℟. Genuísti qui te fecit, et in ætérnum pérmanes Virgo.

*Celui auquel on aura donné charge, dira :*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Rect.* Per Vírginem matrem concédat nobis Dóminus salútem et pacem.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

## TROISIÈME LEÇON.

QUasi cedrus exaltáta sum in Líbano, et quasi cypréssus in monte Sion : quasi palma exaltáta sum in Cades, et quasi plantátio rosæ in Jérico : quasi oliva speciósa in campis, et quasi plátanus exaltáta sum juxta aquas in platéis. Sicut cinnamómum et balsamum aromatízans, odórem dedi : Quasi myrrha elécta dedi suavitátem odóris. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Quand on ne dit pas le* Te Deum, *les Choristes disent :*

℟. Felix namque es sacra Virgo María, et omni laude digníssima : quia ex te ortus est sol justítiæ, Christus Deus noster.

*Celui qui a dit la Leçon.*

℣. Ora pro pópulo, intervéni pro clero, intercéde pro devóto fœmíneo sexu : séntiant omnes tuum juvámen, quicúmque célebrant tuam sanctam commemoratiónem.

*Les Choristes.* ℟. Quia ex te ortus est Sol justítiæ, Christus Deus noster.

*Celui qui a dit la Leçon, dira :* ℣. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui Sancto.

*Les Choristes.* Quia ex te ortus est Sol justítiæ, Christus Deus noster.

¶ *Au second Office, qui dure depuis l'Avent jusqu'à la Nativité, et le jour de l'Annonciation de Notre-Dame, 25 Mars, on dit les trois Leçons suivantes, en tenant le même ordre qu'aux autres ci-devant.*

*Celui qui aura charge dira :*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur.* Nos cum prole pia, benedícat Virgo María. *Le Chœur.* ℟. Amen.

PREMIÈRE LEÇON. Luc. I.

MIssus est Angelus Gábriel à Deo in civitátem Galiléæ, cui nomen Názareth, ad Vírginem desponsátam viro, cui nomen erat Joseph, de domo David, et nomen Vírginis, María. Et ingressus Angelus ad eam, dixit : Ave grátiâ plena, Dóminus tecum : benedícta tu in muliéribus. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Missus est Gábriel Angelus ad Maríam Vírginem desponsátam Joseph, núntians ei verbum : et expavéscit Virgo de lúmine : Ne tímeas, María, inve-

nísti grátiam apud Dóminum : ecce concípies, et páries, et vocábitur Altíssimi Fílius.

℣. Dabit ei Dóminus Deus sedem David patris ejus, et regnábit in domo Jacob in ætérnum.

*Les Choristes.* ℣. Ecce concípies, et páries, et vocábitur Altíssimi Fílius.

*Celui qui aura charge de dire la seconde Leçon, dira à genoux :*

℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur.* Ipsa Virgo vírginum intercédat pro nobis ad Dóminum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

## SECONDE LEÇON.

QUæ cùm audísset, turbáta est in sermóne ejus : et cogitábat, qualis esset ista salutátio. Et ait Angelus ei : Ne tímeas María, invenísti enim grátiam apud Dóminum : Ecce concípies in útero, et páries fílium, et vocábis nomen ejus Jesum. Hic erit magnus, et Fílius Altíssimi vocábitur : Et dabit illi Dóminus Deus sedem David patris ejus : et regnábit in domo Jacob in ætérnum, et regni ejus non erit finis. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes.* ℟. Ave María, grátiâ plena,

Dóminus tecum : Spíritus Sanctus supervéniet in te, et virtus Altíssimi obumbrábit tibi : Quod enim ex te nascétur sanctum, vocábitur Fílius Dei.

℣. Quómodo fiet istud, quóniam virum non cognósco ? Et respondens Angelus, dixit ei.

*Les Choristes.* ℟. Spíritus Sanctus supervéniet in te, et virtus Altíssimi obumbrábit tibi ; quod enim ex te nascétur sanctum, vocábitur Fílius Dei.

*Quand on dit le* Te Deum, *celui qui a dit la Leçon ajoute :* ℣. Glória Patri, etc.

*Les Choristes.* ℟. Quod enim ex te nascétur sanctum, vocábitur Fílius Dei.

*Celui qui dira la troisième Leçon, se mettra à genoux pour dire le* ℣. Jube domne benedícere.

*Le Recteur.* Per Vírginem matrem concédat nobis Dóminus salútem et pacem.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

## TROISIÈME LEÇON.

DIxit autem María ad Angelum ; Quómodo fiet istud, quóniam virum non cognósco ? Et respóndens Angelus, dixit ei : Spíritus Sanctus supervéniet in te, et virtus Altíssimi obumbrábit tibi. Ideoque, et quod nascétur ex te sanctum, vocábitur Fílius Dei.

Et ecce Elízabet cognáta tua, et ipsa concépit fílium in senectúte sua : et hic mensis est sextus illi, quæ vocátur stérilis, quia non erit impossíbile apud Deum omne verbum. Dixit autem María : Ecce ancílla Dómini, fiat mihi secúndùm verbum tuum. Tu autem, Dómine, miserére nobis.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Quand on ne dit pas le* Te Deum, *les deux Choristes disent :*

℟. Súscipe verbum, Virgo María, quod tibi à Dómino per Angelum transmíssum est : Concípies, et páries Deum páriter et hóminem : Ut benedícta dicáris inter omnes muliéres.

℣. Páries quidem fílium, et virginitátis non patiéris detriméntum : efficiéris grávida, et eris mater semper intácta.

*Les deux Choristes.* ℟. Ut benedícta dicáris inter omnes muliéres.

Glória Patri, etc.

*Les Choristes.* ℟. Ut benedícta dicáris inter omnes muliéres.

¶ *Au troisième Office que l'on dit depuis les Vêpres de la veille de Noël jusqu'au jour entier de la Purification, on dit les trois Leçons comme au premier Office, observant les mêmes cérémonies.*

¶ *Le* Te Deum *se dit quand on veut, comme depuis Noël jusqu'à la Septuagésime, et depuis Pâques jusqu'à l'Avent : quand on le dit, les Choristes ne disent point de Répons à la dernière Leçon; et après le second Répons de la seconde Leçon, celui qui a dit la Leçon, ajoute :* ℣. Glória Patri, etc.

¶ *Durant l'Avent, ni depuis la Septuagésime jusqu'à Pâques, on ne dit point le* Te Deum, *sinon aux Fêtes de Notre-Dame; et il se dit, les Pénitens étant tous debout.*

*Hymne.* Te Deum laudámus, *etc. comme ci-devant, page 56.*

## A LAUDES.

*Le Recteur commence à voix simple, sans chanter, faisant le signe de la Croix, et tous étant debout.*

DEUS, in adjutórium meum inténde.

*Le Chœur* ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína. Glória Patri, etc.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Rect. Ant.* Assúmpta est María.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Rect. Ant.* Missus est.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Rect. Ant.* O admirábile.

*Psaume 92.*

DOminus regnávit, decórem indútus est : indútus est Dóminus fortitúdinem, et præcínxit se.

Etenim firmávit orbem terræ : qui non commovébitur.

Paráta sedes tua, Deus, ex tunc : à século tu es.

Elevavérunt flúmina, Dómine : elevavérunt flúmina vocem suam.

Elevavérunt flúmina fluctus suos : à vócibus aquárum multárum.

Mirábiles elatiónes maris : mirábilis in altis Dóminus.

Testimónia tua credibília facta sunt nimis : domum tuam decet sanctitúdo, Dómine, in longitúdinem diérum.

Glória Patri, etc.

I.er Office. *Ant.* Assumpta est María in cœlum : gaudent Angeli, laudántes benedícunt Dóminum.

*Le Recteur. Ant.* María Virgo.

II. Office. *Ant.* Missus est Gabriël Angelus ad Maríam Vírginem desponsátam Joseph.

*Le Recteur. Ant.* Ave María.

III. Office. *Ant.* O admirábile commércium ! Creátor géneris humáni animátum corpus sumens, de Vírgine nasci dignátus est : et procédens homo sine sémine, largítus est nobis suam deitátem.

*Le Recteur. Ant.* Quando natus es.

*Psaume 99.*

JUbiláte Deo omnis terra : servíte Dómino in lætítia.

Introíte in conspéctu ejus : in exultatióne.

Scitóte quóniam Dóminus ipse est Deus: ipse fecit nos, et non ipsi nos.

Pópulus ejus, et oves páscuæ ejus : introíte portas ejus in confessióne, átria ejus in hymnis confitémini illi.

Laudáte nomen ejus, quóniam suávis est Dóminus, in ætérnum misericórdia ejus : et usque in generatiónem, et generatiónem véritas ejus. Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* María Virgo assumpta est ad æthéreum thálamum, in quo Rex regum stelláto sedet sólio.

*Le Recteur. Ant.* In odórem.

II. Office. *Ant.* Ave María, grátiâ plena, Dóminus tecum : benedícta tu in muliéribus, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Ne tímeas, María.

III. Office. Quando natus es ineffabíliter ex Vírgine, tunc implétæ sunt scriptúræ : Sicut plúvia in vellus descendísti, ut salvum fáceres genus humánum : te laudámus, Deus noster.

*Le Recteur. Ant.* Rúbum quem víderat Moyses.

*Psaume 62.*

DEus, Deus meus : ad te de luce vígilo. Sitívit in te ánima mea : quàm multiplíciter tibi caro mea.

In terra desérta, et ínvia, et inaquósa : sic in sancto appárui tibi, ut vidérem virtútem tuam, et glóriam tuam.

Quóniam mélior est misericórdia tua super vitas : lábia mea laudábunt te.

Sic benedícam te in vita mea : et in nómine tuo levábo manus meas.

Sicut ádipe et pinguédine repleátur ánima mea : et lábiis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tuî super stratum meum, in matutínis meditábor in te : quia fuísti adjútor meus.

Et in velaménto alárum tuárum exultábo, adhæsit ánima mea post te : me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam meam, introíbunt in inferióra terræ: tradéntur in manus gládii, partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabúntur omnes qui jurant in eo: quia obstrúctum est os loquéntium iníqua.

*Psaume* 66.

DEus misereátur nostrî, et benedícat nobis: illúminet vultum suum super nos, et misereátur nostrî.

Ut cognoscámus in terra viam tuam: in omnibus géntibus salutáre tuum.

Confiteántur tibi pópuli, Deus: confiteántur tibi pópuli omnes.

Læténtur et exúltent gentes, quóniam júdicas pópulos in æquitáte, et gentes in terra dírigis.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, confiteántur tibi pópuli omnes: terra dedit fructum suum.

Benedícat nos Deus, Deus noster, benedícat nos Deus: et métuant eum omnes fines terræ.

Glória Patri, et Fílio, etc.

I. Office. *Ant.* In odórem unguentórum tuórum cúrrimus: adolescéntulæ dilexérunt te nimis.

*Le Recteur. Ant.* Benedícta fília

II. Office. *Ant.* Ne tímeas, María, invenísti grátiam apud Dóminum : ecce concípies et páries fílium, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Dabit ei Dóminus.

III. Office. *Ant.* Rubum quem víderat Moyses incombústum, conservátam agnovímus tuam laudábilem virginitátem : Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

*Le Recteur. Ant.* Germinávit radix Jesse.

*Cantique des trois enfans.* Dan. 3.

BEnedícite ómnia ópera Dómini Dómino : laudáte et superexaltáte eum in sécula.

Benedícite Angeli Dómini Dómino : benedícite cœli Dómino.

Benedícite aquæ omnes quæ super cœlos sunt Dómino : benedícite omnes virtútes Dómini Dómino.

Benedícite sol et luna Dómino : benedícite stellæ cœli Dómino.

Benedícite omnis imber, et ros Dómino : benedícite omnes spíritus Dei Dómino.

Benedícite ignis et æstus Dómino : benedícite frigus, et æstus Dómino.

Benedícite rores, et pruína Dómino : benedícite gelu, et frigus Dómino.

Benedicite

Benedícite glácies et nives Dómino : benedícite noctes et dies Dómino.

Benedícite lux et ténebræ Dómino : benedícite fúlgura et nubes Dómino.

Benedícat terra Dóminum : laudet et superexáltet eum in sécula.

Benedícite montes et colles Dómino : benedícite univérsa germinántia in terra Dómino.

Benedícite fontes Dómino : benedícite mária et flúmina Dómino.

Benedícite cete, et ómnia quæ movéntur in aquis Dómino : benedícite omnes vólucres cœli Dómino.

Benedícite omnes béstiæ et pécora Dómino : benedícite fílii hóminum Dómino.

Benedícat Israël Dóminum : laudet et superexáltet eum in sécula.

Benedícite Sacerdótes Dómini Dómino : benedícite servi Dómini Dómino.

Benedícite spíritus et ánimæ justórum Dómino : benedícite sancti et húmiles corde Dómino.

Benedícite Anánia, Azária, Misaël, Dómino : laudáte et superexaltáte eum in sécula.

*Au verset suivant, tous s'inclinent comme au* Glória Patri.

Benedicámus Patrem et Fílium, cum Sancto Spíritu : laudémus et superexaltémus eum in sécula.

Benedíctus es, Dómine, in firmaménto cœli : et laudábilis, et gloriósus, et superexaltátus eum in sécula.

I. Office. *Ant.* Benedícta Fília tu à Dómino : quia per te fructum vitæ communicávimus.

*Le Recteur. Ant.* Pulchra es.

II. Office. *Ant.* Dabit ei Dóminus sedem David patris ejus; et regnábit in ætérnum.

*Le Recteur. Ant.* Ecce ancílla.

III. Office. *Ant.* Germinávit radix Jessé: orta est stella ex Jacob : Virgo péperit Salvatórem ; te laudámus, Deus noster.

*Le Recteur. Ant.* Ecce María.

*Psaume* 148.

LAudáte Dóminum de cœlis : laudáte eum in excélsis.

Laudáte eum omnes Angeli ejus : laudáte eum omnes Virtútes ejus.

Laudáte eum sol et luna : laudáte eum omnes stellæ et lumen.

Laudáte eum cœli cœlórum : et aquæ omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini.

Quia ipse dixit, et facta sunt : ipse mandávit, et creáta sunt.

Státuit ea in ætérnum, et in séculum séculi : præcéptum pósuit, et non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra : dracónes et omnes abyssi.

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum : quæ fáciunt verbum ejus.

Montes et omnes colles : ligna fructífera, et omnes cedri.

Béstiæ, et univérsa pécora : serpéntes, et vólucres pennátæ.

Reges terræ, et omnes pópuli : príncipes, et omnes júdices terræ.

Júvenes et vírgines, senes cum junióribus, laudent nomen Dómini : quia exaltátum est nomen ejus solíus.

Confésssio ejus super cœlum et terram : et exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus ómnibus Sanctis ejus : filiis Israël, pópulo appropinquánti sibi.

*Psaume* 149.

CAntáte Dómino cánticum novum : laus ejus in Ecclésia Sanctórum.

Lætétur Israël in eo, qui fecit eum : et filii Sion exúltent in Rege suo.

Laudent nomen ejus in choro : in tympano et psaltério psallant ei.

Quia beneplácitum est Dómino in pópulo suo : et exaltábit mansuétos in salútem.

Exultábunt Sancti in glória : lætabúntur in cubílibus suis.

Exaltatiónes Dei in gútture eórum : et gládii ancípites in mánibus eórum.

Ad faciéndam vindíctam in natiónibus : increpatiónes in pópulis.

Ad alligándos reges eórum in compédibus : et nóbiles eórum in mánicis férreis.

Ut fáciant in eis judícium conscríptum : glória hæc est ómnibus Sanctis ejus.

*Psaume* 160.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus : laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus : laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ : laudáte eum in psaltério et cíthara.

Laudáte eum in tympano et choro : laudáte eum in chordis et órgano.

Laudáte eum in cymbalis benesonántibus, laudáte eum in cymbalis jubilatiónis : omnis spíritus laudet Dóminum.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Pulchra es et decóra, fília Jerúsalem : terríbilis ut castrórum acies ordináta.

II. Office. *Ant.* Ecce ancílla Dómini, fiat mihi secúndùm verbum tuum.

III. Office. *Ant.* Ecce María génuit nobis salvatórem; quem Joánnes videns, exclamávit dicens : Ecce Agnus Dei, ecce qui tollit peccáta mundi, Allelúia.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur dira (après l'Antienne), à voix basse, le Chapitre suivant, étant les Pénitens debout.* Cant. 6.

VIdérunt eam fíliæ Sion, et beatíssimam prædicavérunt, et regínæ laudavérunt eam. *Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Recteur dira le même Chapitre, comme dessus.*

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur dira à voix basse le Chapitre suivant.* Isaïe 11.

EGrediétur virga de radíce Jesse, et flos de radíce ejus ascéndet, et requiéscet super eum Spíritus Dómini.

*Le Chœur.* ℟. Deo grátias.

*Les Choristes, étant à genoux, commenceront l'Hymne:*

O Gloriósa Dómina,
Excélsa super sydera,
Qui te creávit próvidè,
Lactásti sacro úbere.
Quod Eva tristis ábstulit,
Tu reddis almo gérmine,
Intrent ut astra flébiles,
Cœli fenéstra facta es.
Tu Regis alti jánua,
Et porta lucis fúlgida,
Vitam datam per Vírginem,
Gentes redémptæ pláudite.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula. ℟. Amen.

*Les Choristes.* ℣. Benedícta tu in muliéribus.

℟. Et benedíctus fructus ventris tui.

I. Office. *Ant.* Beáta Dei Génitrix.

*Et depuis Pâques jusqu'au Samedi d'après la Pentecôte, on dit l'Antienne* Regína cœli.

II. Office. *Ant.* Spíritus Sanctus.

III. Office. *Ant.* Mirábile Mystérium.

## CANTIQUE DE ZACHARIE. Luc. I.

BEnedíctus Dóminus Deus Israël : quia visitávit et fecit redemptiónem plebis suæ.

Et eréxit cornu salútis nobis : in domo David puéri sui.

Sicut locútus est per os Sanctórum : qui à seculo sunt, Prophetárum ejus.

Salútem ex inimícis nostris : et de manu ómnium qui odérunt nos.

Ad faciéndam misericórdiam cum pátribus nostris : et memorári testaménti sui sancti.

Jusjurándum quod jurávit ad Abraham patrem nostrum : datúrum se nobis.

Ut sine timóre de manu inimicórum nostrórum liberáti : serviámus illi.

In sanctitáte et justítia coram ipso : ómnibus diébus nostris.

Et tu puer prophéta Altíssimi vocáberis : præíbis enim ante fáciem Dómini, paráre vias ejus.

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus : in remissiónem peccatórum eórum.

Per víscera misericórdiæ Dei nostri : in quibus visitávit nos óriens ex alto.

Illumináre his qui in ténebris, et in

umbra mortis sedent : ad dirigéndos pedes nostros in viam pacis.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Beáta Dei Génitrix María, Virgo perpétua, templum Dómini, sacrárium Spíritûs Sancti : sola sine exémplo placuísti Dómino nostro Jesu Christo : ora pro pópulo ; intervéni pro clero ; intercéde pro devóto fœmíneo sexu.

*Depuis Pâques jusqu'au Samedi d'après la Pentecôte. Ant.* Regína cœli, lætáre, Allelúia. Quia quem meruísti portáre, Allelúia. Resurréxit sicut dixit, Allelúia. Ora pro nobis Deum, Allelúia.

II. Office. *Ant.* Spíritus Sanctus in te descéndet, María : ne tímeas, habébis in útero Fílium Dei, Allelúia.

III. Office. *Ant.* Mirábile mystérium declarátur hódie : innovántur natúræ, Deus homo factus est : id quod fuit permánsit, et quod non erat assúmpsit : non commixtiónem passus neque divisiónem.

*Le Recteur étant à genoux (comme tous les Pénitens, même pendant qu'on dira les Oraisons ci-après) dira depuis la Purification jusqu'à l'Avent :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Genitrícem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum, etc. ℟. Amen.

¶ *Ici il faut faire la Commémoraison de la Fête qui échoit ce jour-là, et de celles qu'il y a eu dans la semaine.*

*Celui qui a charge, ou l'un des Choristes, chantera l'Antienne :*

Sancti Dei omnes, intercédere dignémini pro nostra omniúmque salúte.
℣. Lætámini in Dómino, et exultáte justi.
℟. Et gloriámini omnes recti corde.

OREMUS.

PRotége, Dómine, pópulum tuum, et Apostolórum tuórum Petri et Pauli, et aliórum Apostolórum patrócinio confidéntem perpétuâ defensióne consérva.

OMnes Sancti tui, quæsumus, Dómine, nos ubique ádjuvent; ut dum eórum

mérita recólimus, patrocínia sentiámus: et pacem tuam nostris concéde tempóribus; et ab Ecclésia tua cunctam repélle nequítiam: iter, actus, et voluntátes nostras, et ómnium famulórum tuórum, in salútis tuæ prosperitáte dispóne: benefactóribus nostris sempitérna bona retríbue: et ómnibus fidélibus defúnctis réquiem ætérnam concéde. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

*Commémoraison de la Paix, qui se fait quand il plaît au Recteur.*

*Ant.* Da pacem, Dómine, in diébus nostris, quia non est álius qui pugnet pro nobis, nisi tu Deus noster.

℣. Fiat pax in virtúte tua.

℟. Et abundántia in túrribus tuis.

OREMUS.

DEus, à quo sancta desidéria, recta consília et justa sunt ópera: da servis tuis illam quam mundus dare non potest pacem; ut et corda nostra mándatis tuis dedíta, et hóstium sublátà formídine, tempora sint tuâ protectióne tranquílla. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

*Le Rect.* Pater noster, *tout bas. Ensuite à haute voix.* ℣. Dóminus det suam pacem.

℟. Et vitam ætérnam. Amen.

*Tous les Pénitens de l'un et de l'autre Chœur étant à genoux, diront l'une ou l'autre des Antiennes suivantes, entonnée par les Choristes. La première se dit depuis la Purification jusqu'au Samedi Saint.*

*Antienne.*

AVe Regína cœlórum,
Ave Dómina Angelórum,
Salve radix, salve porta,
Ex qua mundo lux est orta.
Gáude, Virgo gloriósa,
Super omnes speciósa,
Vale, ô valdè decóra,
Et pro nobis Christum exóra.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

OREMUS.

COncéde miséricors Deus, fragilitáti nostræ præsídium: et qui sanctæ Dei Genitrícis memóriam ágimus, intercessiónis ejus auxílio, à nostris iniquitátibus resurgámus. Per eúmdem, etc. ℟. Amen.

℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

*Depuis les Complies du Samedi Saint, jusqu'à celles du Samedi après la Pentecôte.*

*Antienne.*

REgína cœli, lætáre, Allelúia.
Quia quem meruísti portáre, Allelúia.
Resurréxit sícut dixit, Allelúia.
Ora pro nobis Deum, Allelúia.

℣. Gaude et lætáre, Virgo María, Allelúia.

℟. Quia surréxit Dóminus verè, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui per resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi, famíliam tuam lætificáre dignátus es: præsta quæsumus, ut per ejus Genitrícem Vírginem Maríam, perpétuæ capiámus gáudia vitæ. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

*Depuis les Complies du Samedi après la Pentecôte jusqu'à l'Avent, on dit l'Antienne suivante :*

SAlve Regína, Mater misericórdiæ, vita, dulcédo, et spes nostra, salve. Ad te clamámus éxules, fílii Evæ. Ad te suspirá-

mus geméntes et flentes in hac lacrymárum valle. Eïa ergo advocáta nostra, illos tuos misericórdes óculos ad nos convérte. Et Jesum benedíctum fructum ventris tui, nobis post hoc exílium osténde. O clemens! ô pia! ô dulcis Virgo María!

℣. Ora pro nobis, Sancta Dei Génitrix.

℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui gloriósæ Vírginis Matris Maríæ corpus et ánimam, ut dignum Fílii tui habitáculum éffici mererétur, Spíritu Sancto cooperánte præparásti; da, ut cujus commemoratióne lætámur, ejus piâ intercessióne ab instántibus malis, et à morte perpétua liberémur. Per eúmdem, etc. ℟. Amen.

℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

*A la fin on dit le* Miserére, *avec l'Oraison* Súscipe clementíssime, *et autres pour l'Empereur, ainsi que le Recteur avisera, selon les nécessités.*

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Après l'Antienne* Spíritus Sanctus, *tous les Pénitens à genoux, jusqu'à la fin*

*des commémoraisons, le Recteur dira* : Kyrie eléison.

*Le Chœur.* ℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Dei Genitrícem crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

¶ *Ici il faut faire la commémoraison de la Fête qui échoit ce jour-là, et de celles qu'il y a eu dans la semaine.*

*Celui qui aura charge, ou l'un des Choristes, dira l'Antienne* : Ecce Dóminus véniet, et omnes Sancti ejus cum eo, et erit in die illa lux magna, Allelúia.

℣. Ecce apparébit Dóminus super nubem cándidam.

℟. Et cum eo Sanctórum míllia.

*Le Recteur.* OREMUS.

COnsciéntias nostras, quæsumus, Dómine, visitándo púrifica ; ut véniens Jesus Christus Fílius tuus Dóminus noster

cùm omnibus Sanctis suis, parátam sibi in nobis invéniat mansiónem. Qui tecum vivit et regnat, etc. ℟. Amen.

¶ *Ici se fait la commémoraison de la paix, comme ci-devant, page 618, après laquelle le Recteur dira :*

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣ Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen.

*Etant tous à genoux, le Recteur dira à voix basse* : Pater noster.

℣. Dóminus det nobis suam pacem.

℟. Et vitam ætérnam. Amen.

*Antienne.*

ALma Redemptóris Mater, quæ pérvia cœli Porta manes, et stella maris, sucúrre cadénti, Súrgere qui curat pópulo, tu quæ genísti, Natúrâ miránte, tuum sanctum Genitórem, Virgo priùs ac postériùs, Gabriélis ab ore Sumens illud Ave, peccatórum miserére.

℣. Angelus Dómini nuntiávit Maríæ.

℟. Et concépit de Spíritu Sancto.

OREMUS.

GRátiam tuam, quæsumus, Dómine, mentibus nostris infúnde; ut qui Angelo nuntiánte, Christi Fílii tui incarnatiónem cognóvimus: per passiónem ejus et crucem ad resurrectiónis glóriam perducámur. Per eúmdem, etc. ℟. Amen.

℟. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur, après l'Antienne* Mirábile Mystérium, *dira, étant tous à genoux jusqu'à la fin,* Kyrie eléison.

*Le Chœur.* ℟ Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ beátæ Maríæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti: tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere, Dóminum nostrum Jesum, etc. ℟. Amen.

¶ *Ici il faut faire Commémoraison de la Fête qui échoit ce jour-là, et de celles qu'il y a eu dans la semaine.*

*Celui*

*Celui qui aura charge, ou l'un des Choristes, dira l'Antienne :*

Sancti Dei omnes, intercédere dignémini pro nostra omniúmque salúte.

℣. Lætámini in Dómino, et exultáte justi.

℟. Et gloriámini omnes recti corde.

OREMUS.

PRotége, Dómine, pópulum tuum, et Apostolórum tuórum Petri et Pauli, et aliórum Apostolórum patrócinio confidéntem perpétuâ defensióne consérva.

OMnes Sancti tui, quæsumus, Dómine, nos ubique ádjuvent; ut dum eórum mérita cólimus, patrocinia sentiámus, et pacem tuam nostris concéde tempóribus, et ab Ecclésia tua cunctam repélle nequítiam; iter, actus et voluntátes nostras, et ómnium famulórum tuórum in salútis tuæ prosperitáte dispone : benefactóribus nostris sempitérna bona retríbue : et ómnibus fidélibus defúnctis réquiem ætérnam concéde. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

*Ici se fait la commémoraison de la paix, comme ci-devant, page 618, après laquelle le Recteur dira :*

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, etc. *avec les Versets et Répons qui sont à la*

*page* 623, *jusqu'à la fin d'*Alma Redemptóris; *après quoi on dit:*

℣. Post partum Virgo invioláta permansísti.

℟. Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

OREMUS. Deus, qui salútis ætérnæ, etc. *comme ci-devant, pag.* 624, *après quoi on dit:*

℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

---

# A PRIME.

*Le Recteur dira* Ave María, *à voix basse, lui et tous les Pénitens à genoux.*

*Ensuite tous se lèvent et font le signe de la Croix; et le Recteur étant debout, entonne:*

DEUS, in adjutórium meum inténde.

℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.

Glória Patri, etc.

*Tous les Pénitens étant à genoux, les deux Choristes commenceront l'*HYMNE:

MEménto, salútis Auctor,
Quòd nostri quondam córporis,
Ex illibáta Vírgine,
Nascéndo formam súmpseris.
María, Mater grátiæ,
Mater misericórdiæ,

Tu nos ab hoste prótege,
Et horâ mortis súscipe.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula. ℟. Amen.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Ant.* Assúmpta est María.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Ant.* Missus est.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Ant.* O admirábile.

### *Psaume* 53.

DEus, in nómine tuo salvum me fac: et in virtúte tua júdica me.

Deus, exáudi oratiónem meam: áuribus pércipe verba oris mei.

Quóniam aliéni insurrexérunt advérsùm me, et fortes quæsiérunt ánimam meam: et non proposuérunt Deum antè conspéctum suum.

Ecce enim Deus adjúvat me: et Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

Avérte mala inimícis meis: et in veritáte tua dispérde illos.

Voluntáriè sacrificábo tibi: et confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam bonum est.

Quóniam ex ómni tribulátione eripuísti me : et super inimícos meos despéxit óculus meus.

Glória Patri ; etc.

*Psaume* 84.

BEnedixísti, Dómine, terram tuam : avertísti captivitátem Jacob.

Remisísti iniquitátem plebis tuæ : operuísti ómnia peccáta eórum.

Mitigásti omnem iram tuam : avertísti ab ira indignatiónis tuæ.

Convérte nos, Deus salutáris noster : et avérte iram tuam à nobis.

Numquid in ætérnum irascéris nobis ; aut exténdes iram tuam à generatióne in generatiónem ?

Deus tu convérsus vivificábis nos : et plebs tua lætábitur in te.

Osténde nobis, Dómine, misericórdiam tuam : et salutáre tuum da nobis.

Aúdiam quid loquátur in me Dóminus Deus : quóniam loquétur pacem in plebem suam.

Et super sanctos suos : et in eos qui convertúntur ad cor.

Verúmtamen propè timéntes eum salutáre ipsíus : ut inhábitet glória in terra nostra.

Misericórdia et véritas obviavérunt sibi: justítia et pax osculátæ sunt.

Véritas de terra orta est: et justítia de cœlo prospéxit.

Etenim Dóminus dabit benignitátem: et terra nostra dabit fructum suum.

Justítia ante eum ambulábit: et ponet in via gressus suos.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 116.

LAudáte Dóminum omnes gentes: laudáte eum omnes pópuli

Quóniam confirmáta est super nos misericórdia ejus: et véritas Dómini manet in ætérnum.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Assúmpta est María in cœlum: gaudent Angeli, laudántes benedícunt Dóminum.

II. Office. *Ant.* Missus est Gabriél Angelus ad Maríam Vírginem desponsátam Joseph.

III. Office. *Ant.* O admirábile commercium! Creátor géneris humáni animátum corpus sumens, de Vírgine nasci dignátus est: et procédens homo sine sémine, largítus est nobis suam deitátem.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre:* Cant. 6.

QUæ est ista quæ progréditur quasi auróra consúrgens, pulchra ut luna, eléćta ut sol, terríbilis ut castrórum ácies ordináta. ℟. Deo grátias.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

*Le Recteur, les Pénitens à genoux jusqu'à la fin, dira:* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui virginálem aulam Beátæ Maríæ Vírginis, in qua habitáres, elígere dignátus es: da quæsumus, ut suâ nos defensióne munítos, jucúndos fácias suæ interésse commemoratióni. Qui vivis et regnas cum Deo Patre, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre:* Isaïe 7.

ECce Virgo concípiet, et páriet fílium, et vocábitur nomen ejus Emmánuël: butyrum et mel comédet, ut sciat reprobáre malum, et elígere bonum.

℟. Deo grátias.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

*Le Recteur, et tous les Pénitens à genoux, dira:* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison, Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti: præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Dei Genitrícem crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Christum, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le chapitre :* Cant. 6.

QUæ est ista quæ progréditur quasi auróra consúrgens, pulchra ut luna, elécta ut sol, terríbilis ut castrórum ácies ordináta. ℟. Deo grátias.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

*Le Recteur, les Pénitens à genoux jusqu'à la fin, dira :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ Virginitáte fœcundâ humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum fílium tuum. Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs Sancti Deus. Per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
℟. Et clamor meus ad te véniat.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.
℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

---

## A TIERCE.

*Le Recteur dira* Ave María, *à voix basse, lui et tous les Pénitens à genoux.*
*Ensuite tous se lèvent et font le signe de la Croix; et le Recteur étant debout, entonne:*

DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, etc.

*Tous les Pénitens étant à genoux, les deux Choristes commenceront l'*HYMNE:

MEménto, salútis Auctor,
Quòd nostri quondam córporis,
Ex illibáta Vírgine,
Nascéndo formam súmpseris.
María, Mater grátiæ,
Mater misericórdiæ,
Tu nos ab hoste prótege,
Et horâ mortis súscipe.

Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula. ℟. Amen.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Ant.* María Virgo.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Ant.* Ave María.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Ant.* Quando natus es.

*Psaume* 119.

AD Dóminum cùm tribulárer clamávi: et exáudivit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis: et à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi: ad linguam dolósam.

Sagíttæ poténtis acútæ: cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est! habitávi cum habitántibus Cedar: multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus: cùm loquebar illis, impugnábant me gratis. Glória Patri, etc.

*Psaume* 120.

LEvávi óculos meos in montes: unde véniet auxílium mihi?

Auxílium meum à Dómino : qui fecit cœlum et terram.

Non det in commotiónem pedem tuum : neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit, neque dórmiet : qui custódit Israël.

Dóminus custódit te, Dóminus protéctio tua : super manum déxteram tuam.

Per diem sol non uret te : neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo : custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat intróitum tuum, et éxitum tuum : ex hoc nunc et usque in séculum.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 121.

LÆtátus sum in his quæ dicta sunt mihi : in domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri : in átriis tuis Jerúsalem.

Jerúsalem quæ ædificátur ut cívitas : cujus participátio ejus in idípsum.

Illuc enim ascendérunt tribus, tribus Dómini : testimónium Israël, ad confiténdum nómini Dómini.

Quia illic sedérunt sedes in judício : sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem: et abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua: et abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos, et próximos meos: loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri: quæsívi bona tibi. Glória Patri, etc.

I. Office.. *Ant.* María Virgo assúmpta est ad æthéreum thálamum, in quo Rex regum stelláto sedet sólio.

II. Office. *Ant.* Ave María, grátiâ plena, Dóminus tecum: benedícta tu in muliéribus, Allelúia.

III. Office. *Ant.* Quando natus es ineffabíliter ex Vírgine, tunc implétæ sunt Scripturæ: sicut plúvia in vellus descendísti, ut salvum fáceres genus humánum: te laudámus, Deus noster.

I. Office *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre:* Eccl. 24.

ET radicávi in pópulo honorificáto, et in parte Dei mei hæréditas illíus, et in plenitúdine sanctórum deténtio mea.

℟. Deo grátias.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira:*
Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti: tríbue quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere, Dóminum nostrum Jesum, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Tous les Pénitens debout, après l'Antienne, le Recteur dira le Chapitre:*

Isaïe 11.

EGrediétur virga de radíce Jesse, et flos de radíce ejus ascéndet, et requiéscet super eum Spíritus Dómini. ℟. Deo grátias.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira* : Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Mariæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Dei Genitrícem crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum. Qui tecum vivit et regnat, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre* : Eccl. 24.

ET sic in Sion firmáta sum, et in civitáte sanctificáta simíliter requiévi, et in Jerúsalem potestas mea. ℟. Deo grátias.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis.

℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira* : Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere, Dóminum nostrum Jesum, etc.

℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

# A SEXTE.

*Le Recteur dira,* Ave María, *à voix basse, lui et tous les Pénitens à genoux.*

*Ensuite tous se lèvent et font le signe de la Croix; et le Rect. étant debout, entonne:*

DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, etc.

*Tous les Pénitens étant à genoux, les deux Choristes commenceront l'*HYMNE:

MEménto, salútis Auctor,
Quòd nostri quondam córporis,
Ex illibáta Vírgine,
Nascéndo formam súmpseris.
María, Mater grátiæ,
Mater misericórdiæ,
Tu nos ab hoste prótege,
Et horâ mortis súscipe.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula. ℟. Amen.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Ant.* In odórem.

II.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Ant.* Ne timéas, María.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Ant.* Rubum quem víderat.

*Psaume* 122.

AD te levávi óculos meos : qui hábitas in cœlis.

Ecce sicut óculi servórum : in mánibus dominórum suórum.

Sicut óculi ancíllæ in mánibus dóminæ suæ : ita óculi nostri ad Dóminum Deum nostrum, donec misereátur nostrî.

Miserére nostrî, Dómine, miserére nostrî : quia multùm repléti sumus despectióne.

Quia multùm repléta est ánima nostra : oppróbrium abundántibus, et despéctio supérbis.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 123.

NIsi quia Dóminus erat in nobis, dicat nunc Israël : nisi quía Dóminus erat in nobis.

Cùm exúrgerent hómines in nos : fortè vivos deglutíssent nos.

Cùm irascerétur furor eórum in nos : fórsitan aqua absorbuísset nos.

Torréntem pertransívit ánima nostra :

fórsitan pertransísset ánima nostra aquam intolerábilem.

Benedíctus Dóminus : qui non dedit nos in captiónem déntibus eórum.

Anima nostra sicut passer erépta est : de láqueo venántium.

Láqueus contrítus est : et nos liberáti sumus.

Adjutórium nostrum in nómine Dómini : qui fecit cœlum et terram.

Glória Patri, et Fílio, etc.

*Psaume* 124.

QUi confídunt in Dómino, sicut mons Sion : non commovébitur in ætérnum, qui hábitat in Jerúsalem.

Montes in circúitu ejus : et Dóminus in circúitu pópuli sui, ex hoc, nunc et usque in séculum.

Quia non relínquet Dóminus virgam peccatórum super sortem justórum : ut non exténdant justi ad iniquitátem manus suas.

Benefac, Dómine, bonis : et rectis corde.

Declinántes autem in obligatiónes, addúcet Dóminus cum operántibus iniquitátem : pax super Israël. Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* In odórem unguentórum tuórum cúrrimus : adolescéntulæ dilexérunt te nimis.

II. Office. *Ant.* Ne tímeas, María, invenísti grátiam apud Dóminum : ecce concípies et páries Fílium, Allelúia.

III. Office. *Ant.* Rubum quem víderat Moyses incombústum, conservátam agnóvimus tuam laudábilem virginitátem : Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :* Eccl. 24.

ET radicávi in pópulo honorificáto, et in parte Dei mei hæréditas illíus, et in plenitúdine Sanctórum deténtio mea.

℟. Deo grátias.

℣. Benedícta tu in muliéribus.

℟. Et benedíctus fructus ventris tui.

*Le Recteur, tous les Pénitens à genoux jusqu'à la fin, dira :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

COncéde, miséricors Deus, fragilitáti nostræ præsídium : ut qui sanctæ Dei Genitrícis memóriam ágimus, intercessiónis

ejus auxílio, à nostris iniquitátibus resurgámus. Per eúndem, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :* Eccl. 24.

DAbit ei Dóminus Deus sedem David Patrís ejus, et regnábit in domo Jacob in ætérnum, et regni ejus non erit finis.

℟. Deo grátias.

℣. Benedícta tu in muliéribus.

℟. Et benedíctus fructus ventris tui.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus

tuis, ut qui verè eam Dei Genitrícem crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem, etc.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur, étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :* Eccl. 24.

ET radicávi in pópulo honorificáto, et in parte Dei mei hæréditas illíus, et in plenitúdine Sanctórum deténtio mea.

℟. Deo grátias.

℣. Benedícta tu in muliéribus.

℟. Et benedíctus fructus ventris tui.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ beátæ Maríæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri

præmia præstitísti : tríbue quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum, etc.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

---

## A NONE.

*Le Recteur dira,* Ave María, *à voix basse, lui et tous les Pénitens à genoux.*

*Ensuite tous se lèvent et font le signe de la Croix, et le Rect. étant debout, entonne:*

DEUS, in adjutórium meum inténde.

℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.

Glória Patri, etc.

*Tous les Pénitens étant à genoux, les deux Choristes commenceront l'*HYMNE :

MEménto, salútis Auctor,
Quód nostri quondam córporis,
Ex illibáta Vírgine,
Nascéndo formam súmpseris.

María, Mater grátiæ,
Mater misericórdiæ,
Tu nos ab hoste prótege,
Et horâ mortis súscipe.
Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula. ℟. Amen.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Ant.* Pulchra es.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Ant.* Ecce ancílla Dómini.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Ant.* Ecce María.

*Psaume* 125.

IN convertêndo Dóminus captivitátem Sion : facti sumus sicut consoláti.

Tunc replétum est gáudio os nostrum : et lingua nostra exultatióne.

Tunc dicent inter gentes : Magnificávit Dóminus fácere cum eis.

Magnificávit Dóminus fácere nobíscum : facti sumus lætántes.

Convérte, Dómine, captivitátem nostram : sicut torrens in austro.

Qui séminant in lácrymis : in exultatióne metent.

Euntes ibant et flebant : mitténtes sémina sua.

Veniéntes autem vénient cum exultatióne : portántes manípulos suos.

Glória Patri, etc.

*Psaume* 126.

NIsi Dóminus ædificáverit domum : in vanum laboráverunt qui ædíficant eam.

Nisi Dóminus custodiérit civitátem : frustra vígilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere : súrgite postquam sedéritis ; qui manducátis panem dolóris.

Cùm déderit diléctis suis somnum : ecce hæréditas Dómini, fílii merces, fructus ventris.

Sicut sagíttæ in manu poténtis ; ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis : non confundétur cum loquétur inimícis suis in porta. Glória Patri, etc.

*Psaume* 127.

BEáti omnes qui timent Dóminum : qui ámbulant in viis ejus.

Labóres mánuum tuárum quia manducábis : beátus es, et benè tibi erit.

Uxor tua sicut vitis abúndans : in latéribus domûs tuæ.

Fílii tui sicut novéllæ olivárum : in circúitu mensæ tuæ.

Ecce sic benedicétur homo : qui timet Dóminum.

Benedícat tibi Dóminus ex Sion : et vídeas bona Jerúsalem ómnibus diébus vitæ tuæ.

Et vídeas fílios filiórum tuórum : pacem super Israël. Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Pulchra es, et decóra, fília Jerúsalem : terríbilis ut castrórum ácies ordináta.

II. Office. *Ant.* Ecce ancílla Dómini, fiat mihi secúndùm verbum tuum.

III. Office. *Ant.* Ecce María génuit nobis Salvatórem; quem Joánnes videns, exclamávit, dicens : Ecce Agnus Dei, ecce qui tollit peccáta mundi.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre.* Eccl. 24.

IN platéis, sicut cinnamómum et bálsamum aromatízans odórem dedi : quasi myrrha elécta dedi suavitátem odóris.

℟. Deo grátias.

℣. Post partum Virgo invioláta permansísti.

℟. Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

*Le Recteur, et tous les Pénitens à genoux, dira :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

FAmulórum tuórum, quæsumus, Dómine, delíctis ignósce : ut qui tibi plácere de áctibus nostris non valémus, Genitrícis Fílii tui Dómini nostri intercessióne salvémur. Per eúmdem, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :* Isaïe 7.

ECce Virgo concípiet, et páriet fílium, et vocábitur nomen ejus Emmánuël : butyrum et mel comédet, ut sciat reprobáre malum, et elígere bonum.

℟. Deo grátias.

℣. Angelus Dómini nuntiávit Maríæ.

℟. Et concépit de Spíritu Sancto.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira* : Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Dei Genitrícem crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Christum, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

II. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre* : Eccl. 24.

IN platéis, sicut cinnamómum et bálsamum aromatízans odórem dedi : quasi myrrha elécta dedi suavitátem odóris.

℟. Deo grátias.

℣. Post partum Virgo inviolàta permansísti.

℟. Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

*le Recteur, et tous les Pénitens à genoux, dira* : Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ Virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum, etc.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣ Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen.

# A VÊPRES.

*Le Recteur dira* Ave María, *à voix basse, lui et tous les Pénitens à genoux.*

*Ensuite tous se lèvent et font le signe de la Croix; et le Rect. étant debout, entonne :*

DEUS, in adjutórium meum inténde.
℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.
Glória Patri, etc.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Ant.* Dum esset Rex.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Ant.* Missus est.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Ant.* O admirábile.

*Les deux Choristes commencent le Ps.* 109.

DIxit Dóminus Dómino meo : sede à dextris meis.

Donec ponam inímicos tuos : scabéllum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emíttet Dóminus ex Sion : domináre in médio inimícorum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ ;

in splendóribus sanctórum : ex útero ante lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, et non pœnitébit eum : tu es Sacérdos in ætérnum secúndùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis : confrégit in die iræ suæ reges.

Judicábit in natiónibus, implébit rúinas : conquassábit cápita in terra multórum.

De torrénte in via bibet : proptéreà exaltábit caput. Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Dum esset Rex in accúbitu suo, nardus mea dedit odórem suavitátis.

*Le Recteur. Ant.* Læva ejus.

II. Office. *Ant.* Missus est Gabriël Angelus, ad Maríam Vírginem desponsátam Joseph.

*Le Recteur. Ant.* Ave, María.

III. Office *Ant.* O admirábile commércium ! Creator géneris humáni animátum corpus sumens, de Vírgine nasci dignátus est : et procédens homo sine sémine, largítus est nobis suam deitátem.

*Le Recteur. Ant.* Quando natus es.

### *Psaume* 112.

LAudáte pueri Dóminum : laudáte nomen Dómini.

*Ici tous se lèvent et baissent la tête.*

Sit nomen Dómini benedíctum : ex hoc, nunc et usque in séculum.

A solis ortu usque ad occásum : laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes gentes Dóminus : et super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat : et humília réspicit in cœlo et in terra.

Súscitans à terra ínopem : et de stércore érigens páuperem.

Ut collócet eum cum princípibus : cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo : matrem filiórum lætántem.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Læva ejus sub cápite meo, et déxtera íllius amplexábitur me.

*Le Recteur. Ant.* Nigra sum.

II. Office. *Ant.* Ave María, grátiâ plena, Dóminus tecum : benedícta tu in muliéribus, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Ne tímeas.

III. Office. *Ant.* Quando natus es ineffabíliter ex Vírgine, tunc implétæ sunt scriptúræ : sicut plúvia in vellus descen-

dísti, ut salvum facéres genus humánum: te laudámus, Deus noster.

*Le Recteur. Ant.* Rubum quem víderat Moyses.

*Psaume* 121.

LÆtátus sum in his quæ dicta sunt mihi: in domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri: in átriis tuis Jerúsalem.

Jerúsalem quæ ædificátur ut cívitas: cujus participátio ejus in idípsum.

Illuc enim ascendérunt tribus, tribus Dómini: testimónium Israël, ad confitén-dum nómini Dómini.

Quia illic sedérunt sedes in judício: sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem: et abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua: et abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos et próximos meos: loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri: quæsívi bona tibi. Glória Patri, etc.

I. Office: *Ant.* Nigra sum, sed formósa fília Jerusalem: ídeò diléxit me Rex, et introdúxit me in cubículum suum.

*Le*

*Le Recteur. Ant.* Jam hiems transiit.

II. Office. *Ant.* Ne tímeas, María, invenísti grátiam apud Dóminum : ecce concípies et páries Fílium, Allelúia.

*Le Recteur. Ant.* Dabit ei Dóminus.

III. Office. *Ant.* Rubum quem víderat Moyses incombústum, conservátam agnóvimus tuam laudábilem virginitátem : Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

*Le Recteur. Ant.* Germinávit radix Jesse.

### *Psaume* 126.

NIsi Dóminus ædificáverit domum : in vanum laboravérunt qui ædíficant eam.

Nisi Dóminus custodiérit civitátem : frustra vígilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere : súrgite postquam sedéritis, qui manducátis panem dolóris.

Cùm déderit diléctis suis somnum : ecce hæréditas Dómini, fílii merces, fructus ventris.

Sicut sagíttæ in manu poténtis : ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis : non confundétur cùm loquétur inimícis suis in porta.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Jam hyems tránsiit, imber ábiit et recéssit; surge, amíca mea, et veni.

*Le Recteur. Ant.* Speciósa.

II. Office. *Ant.* Dabit ei Dóminus sedem David patris ejus, et regnábit in ætérnum.

*Le Recteur. Ant.* Ecce ancílla Dómini.

III. Office. *Ant.* Germinávit radix Jesse; orta est stella ex Jacob: Virgo péperit Salvatórem; te laudámus, Deus noster.

*Le Recteur. Ant.* Ecce María.

*Psaume 147.*

LAuda, Jerúsalem, Dóminum: lauda Deum tuum Sion.

Quóniam confortávit seras portárum tuárum: benedíxit fíliis tuis in te.

Qui pósuit fines tuos pacem: et ádipe fruménti sátiat te.

Qui emíttit elóquium suum terræ: velóciter currit sermo ejus.

Qui dat nivem sicut lanam: nébulam sicut cínerem spargit.

Mittit crystállum suam sicut buccéllas: ante fáciem frigóris ejus quis sustinébit?

Emíttet verbum suum, et liquefáciet ea: flabit spíritus ejus, et fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob: justítias et judícia sua Israël.

Non fecit táliter omni natióni : et judícia sua non manifestávit eis.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Speciósa facta es, et suávis in delíciis tuis, Sancta Dei Génitrix.

II. Office. *Ant.* Ecce ancílla Dómini, fiat mihi secúndùm verbum tuum.

III. Office. *Ant.* Ecce María génuit nobis salvatórem, quem Joánnes videns, exclamávit dicens : Ecce Agnus Dei, ecce qui tollit peccáta mundi, Allelúia.

I. Office *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :* Eccl. 24.

AB inítio et ante sécula creáta sum, et usque ad futúrum séculum non désinam, et in habitatióne sancta coram ipso ministrávi. ℟. Deo grátias.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Rect. étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :*

Isaïe 11.

EGrediétur virga de radíce Jesse, et flos de radíce ejus ascéndet, et requiéscet super eum Spíritus Dómini.

℟. Deo grátias.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur dira le premier Chapitre* : Eccl. 24. Ab inítio, etc.

*Tous les Pénitens étant à genoux, les deux Choristes commenceront l'*HYMNE :

AVe maris Stella,
Dei Mater alma,
Atque semper Virgo,
Felix cœli porta.

Sumens illud Ave
Gabriélis ore,
Funda nos in pace,
Mutans Evæ nomen.

Solve vincla reis,
Profer lumen cæcis,
Mala nostra pelle,
Bona cuncta posce.

Monstra te esse Matrem,
Sumat per te preces,
Qui pro nobis natus
Tulit esse tuus.

Virgo singuláris,
Inter omnes mitis,
Nos culpis solútos,
Mites fac et castos.

Vitam præsta puram,
Iter para tutum,

Ut vidéntes Jesum,
Semper collætémur.
Sit laus Deo Patri,
Summo Christo decus,
Spirítui Sancto,
Tribus honor unus. ℟. Amen.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis:
Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur. Ant.* Beáta Mater.

¶ *Depuis Pâques jusqu'au Samedi après la Pentecôte, on dit l'Ant.* Regína cœli.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Le Recteur. Ant.* Spíritus Sanctus.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur. Ant.* Magnum hæreditátis Mystérium.

*Cantique de la Vierge,*
*Les Pénitens debout:*

MAgníficat: ánima mea Dóminum.
Et exultávit spíritus meus: in Deo salutári meo.

Quia respéxit humilitátem ancíllæ suæ: ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna qui potens est: et sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies : timéntibus eum.

Fécit poténtiam in bráchio suo : dispérsit supérbos mente cordis sui.

Depósuit poténtes de sede : et exaltávit húmiles.

Esuriéntes implévit bonis : et dívites dimísit inánes.

Suscépit Israël puérum suum : recordátus misericórdiæ suæ.

Sicut locútus est ad patres nostros : Abraham et sémini ejus in sécula.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Beáta Mater, et intácta Virgo, gloriósa Regína mundi, intercéde pro nobis ad Dóminum.

*Depuis Pâques jusqu'au Samedi d'après la Pentecôte. Ant.* Regína cœli, lætáre, Allelúia. Quia quem meruísti portáre, Allelúia. Resurréxit sicut dixit, Allelúia. Ora pro nobis Deum, Allelúia.

II. Office. *Ant.* Spíritus Sanctus in te descéndet, María : ne tímeas, habébis in útero Fílium Dei, Allelúia.

III. Office. *Ant.* Magnum hæreditátis mystérium, templum Dei factus est úterus, nésciens virum : non est pollútus, ex ea car-

nem assúmens; omnes géntes vénient, dicéntes : Glória tibi, Dómine.

*Le Recteur étant à genoux (comme tous les Pénitens, même pendant qu'on dira les Oraisons ci-après), dira depuis la Purification jusqu'à l'Avent :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

O R E M U S.

COncéde nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis et córporis sanitáte gaudére, et gloriósæ beátæ Maríæ semper Vírginis intercessióne, à præsenti liberári tristítia et ætérnâ pérfrui lætítiâ. Per Dóminum, etc.

¶ *Ici il faut faire la commémoraison de la Fête du jour.*

*Celui qui aura charge, ou l'un des Choristes, chantera l'Antienne :*

Sancti Dei omnes, intercédere dignémini pro nostra ómniumque salúte.

℣. Lætámini in Dómino, et exultáte justi.

℟. Et gloriámini omnes recti corde.

O R E M U S.

PRotége, Dómine, pópulum tuum, et Apostolórum tuórum Petri et Pauli,

et aliórum Apostolórum patrocínio confidéntem perpétuâ defensióne consérva.

OMnes Sancti tui, quæsumus, Dómine, nos ubique ádjuvent; ut dum eórum mérita recólimus, patrocínia sentiámus; et pacem tuam nostris concéde tempóribus, et ab Ecclésia tua cunctam repélle nequítiam : iter, actus, et voluntátes nostras, et ómnium famulórum tuórum, in salútis tuæ prosperitáte dispóne : benefactóribus nostris sempitérna bona retríbue; et ómnibus fidélibus defúnctis réquiem æternam concéde. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

*Commémoraison de la paix, qui se fait quand il plaît au Recteur.*

*Ant.* Da pacem, Dómine, in diébus nostris, quia non est álius qui pugnet pro nobis, nisi tu Deus noster.

℣. Fiat pax in virtúte tua.

℟ Et abundántia in túrribus tuis.

OREMUS.

DEus, à quo sancta desidéria, recta consília et justa sunt ópera : da servis tuis illam quam mundus dare non potest pacem; ut et corda nostra mandátis tuis dedíta et hóstium sublátâ formídine, témpora

sint tuâ protectióne tranquílla. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

¶ *Si l'on ne dit point Complies, il faut dire l'une des quatre antiennes (avec leurs versets et oraisons) qui courent selon la saison, ainsi qu'elles ont été mises ci-devant à Laudes, pag. 619, sauf le jour de la Purification seulement; encore que l'on dise Complies, on dit l'Ant.* Alma Redemptóris Mater, etc. *comme à la pag. 623. Et à la fin des Complies du même jour, l'on commence à dire l'Ant.* Ave, Regína cælórum, etc. *comme ci-devant, page 619.*

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité, après l'Ant.* Spíritus Sanctus, etc.

*Tous les Pénitens à genoux jusqu'à la fin des Commémoraisons, le Recteur dira:* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti: præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Genitrícem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum, etc. Amen.

¶ *Ici on fait Comm*é*mor. de la Fête du jour.*

*Celui qui aura charge, ou l'un des Choristes dira l'Antienne :* Ecce Dóminus véniet, et omnes Sancti ejus cum eo, et erit in die illa lux magna, Allelúia.

℣. Ecce apparébit Dóminus super nubem cándidam.

℟. Et cum eo Sanctórum míllia.

*Le Recteur.* OREMUS.

COnsciéntias nostras, quæsumus, Dómine, visitándo púrifica; ut véniens Jesus Christus Fílius tuus Dóminus noster cùm omnibus Sanctis suis, parátam sibi in nobis invéniat mansiónem. Qui tecum vivit et regnat, etc. ℟. Amen.

¶ *Ici se fait la comm*é*moraison de la paix, comme ci-devant, page 618, après laquelle le Recteur dira :*

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

℟. Amen

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur, après l'Antienne,* Magnum hæreditátis mystérium, *dira, étant à genoux,* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere, Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum. Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs Sancti Deus. Per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

*Celui qui aura charge, ou l'un des Choristes chantera l'Ant.* Sancti Dei omnes, etc. *comme à la page 663 ; et ensuite la Commémoraison de la paix, page 664.*

## A COMPLIES.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira :* Pater noster. Ave, María. Credo in Deum. Confíteor. Misereátur. Indulgentiam, etc. *comme ci-devant à Complies de l'Office du Saint Sacrement, pag.* 30 *et* 31.

*Ensuite tous étant debout, le Rect. entonne :*

CONvérte nos, Deus salutáris noster.
*Le Chœur.* ℟. Et averte iram tuam à nobis.

*Tous font le signe de la Croix, et le Recteur dira :*

℣. Deus, in adjutórium meum inténde.

℟. Dómine, ad adjuvándum me festína.

℣. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui Sancto.

℟. Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in sécula seculórum. Amen.

*Les deux Choristes entonneront le Ps.* 128.

SÆpè expugnavérunt me à juventúte mea : dicat nunc Israël.

Sæpè expugnavérunt me à juventúte mea : étenim non potuérunt mihi.

Supra dorsum meum fabricavérunt peccatóres : prolongavérunt iniquitátem suam.

Dóminus justus concídit cervíces peccatórum : confundántur et convertántur retrórsum omnes qui odérunt Sion.

Fiant sicut fœnum tectórum : quod priúsquam evellátur, exáruit.

De quo non implévit manum suam qui métit : et sinum suum qui manípulos cólligit.

Et non dixérunt qui præteríbant, Benedictio Dómini super vos : benedíximus vobis in nómine Dómini.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui Sancto, etc.

## *Psaume* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine : Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes : in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine : Dómine, quis sustinébit ?

Quia apud te propitiátio est : et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus : sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem : speret Israël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia : et copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Israël : ex ómnibus iniquitátibus ejus.

Gloria Patri, etc.

*Psaume* 130.

DOmine, non est exaltátum cor meum : neque eláti sunt óculi mei.

Neque ambulávi in magnis : neque in mirabílibus super me.

Si non humíliter sentiébam : sed exaltávi ánimam meam.

Sicut ablactátus est super matre sua : ita retribútio in ánima mea.

Speret Israël in Dómino : ex hoc, nunc, et usque in séculum.

Glória Patri, etc.

*Tous les Pénitens étant à genoux, les deux Choristes commenceront l'*HYMNE :

MEménto, salútis Auctor,
Quòd nostri quondam córporis,
Ex illibáta Vírgine,
Nascéndo formam súmpseris.

María, Mater grátiæ,
Mater misericórdiæ,
Tu nos ab hoste prótege,
Et horâ mortis súscipe.

Glória tibi, Dómine,
Qui natus es de Vírgine,
Cum Patre et Sancto Spíritu,
In sempitérna sécula. ℟. Amen.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent. Le Recteur étant debout, et les Pénitens de même, après l'Antienne, dira le Chapitre :* Eccl. 24.

EGo Mater pulchræ dilectiónis, et timóris, et magnitúdinis, et sanctæ spei.

℟. Deo grátias.

℣. Ora pro nobis, Sancta Dei Génitrix.

℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

*Le Recteur. Ant.* Sub tuum præsídium.

*Depuis le Samedi Saint jusqu'au Samedi après la Pentecôte, on dit l'Ant.* Regína cœli.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité. Tous les Pénitens debout, après l'Antienne, le Recteur dira le Chapitre :*

Isaïe 7.

ECce Virgo concípiet, et páriet fílium, et vocábitur nomen ejus Emmánuël : butyrum et mel comédet, ut sciat reprobáre malum, et elígere bonum.

℟. Deo grátias.

℣. Angelus Dómini nuntiávit Maríæ.

℟. Et concépit de Spíritu Sancto.

*Le Recteur. Ant.* Spíritus Sanctus.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification. Le Recteur étant debout, dira le Chapitre :* Eccl. 24.

EGo Mater pulchræ dilectiónis, et timóris, et magnitúdinis et sanctæ spei.

℟. Deo grátias.

℣. Ora pro nobis Sancta Dei Génitrix.

℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

*Le Recteur. Ant.* Magnum hæreditátis mystérium.

*Cantique de Saint Siméon.* Luc. 1.

NUnc dimíttis servum tuum, Dómine : secúndùm verbum tuum, in pace.

Quia vidérunt óculi mei : salutáre tuum.

Quod parásti : ante fáciem ómnium populórum.

Lumen ad revelatiónem géntium : et glóriam plebis tuæ Israël.

Glória Patri, etc.

I. Office. *Ant.* Sub tuum præsídium confúgimus, Sancta Dei Génitrix, nostras deprecatiónes ne despícias in necessitátibus, sed à perículis cunctis líbera nos semper, Virgo glorióſa et benedícta.

*Depuis*

### *Depuis Pâques jusqu'au Samedi d'après la Pentecôte.*

*Ant.* Regína cœli, lætáre, Allelúia. Quia quem meruísti portáre, Allelúia. Resurréxit sicut dixit, Allelúia. Ora pro nobis Deum, Allelúia.

II. Office. *Ant.* Spíritus Sanctus in te descéndet, María; ne tímeas, habébis in útero Fílium Dei, Allelúia.

III. Office. *Ant.* Magnum hæreditátis mystérium: Templum Dei factus est úterus nesciens virum; non est pollútus ex ea carnem assúmens: omnes gentes vénient, dicéntes: Glória tibi, Dómine.

I. Office. *Depuis la Purification jusqu'à l'Avent, après l'Ant.* Sub tuum præsídium, *ou* Régina cœli.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira* : Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

Beátæ et gloriósæ, sempérque Vírginis Maríæ, quæsumus, Dómine, intercéssio gloriósa nos prótegat, et ad vitam perdúcat ætérnam. Per Dóminum nostrum Jesum

Christum Fílium tuum. Qui tecum vivit, etc.

℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Benedícat et custódiat nos omnípotens et miséricors Dóminus, Pater, et Fílius, et Spíritus Sanctus. *Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

*Le Recteur.* ℣. Dóminus det nobis suam pacem.

*Le Chœur.* ℟. Et vitam ætérnam. Amen.

*Et après, on dit l'une des Ant. suivantes.*

*La première se dit depuis la Purification jusqu'au Samedi Saint.*

*Antienne.*

AVe Regína cœlórum,
Ave Dómina Angelórum,
Salve radix, salve porta,
Ex qua mundo lux est orta.
Gáude, Virgo gloriósa,
Super omnes speciósa,
Vale, ô valdè decóra,
Et pro nobis Christum exóra.

℣. Dignáre me laudáre te, Virgo sacráta.

℟. Da mihi virtútem contra hostes tuos.

OREMUS.

COncede, miséricors Deus, fragilitáti nostræ præsídium: ut qui sanctæ Dei Genitrícis memóriam ágimus, intercessiónis ejus auxílio, à nostris iniquitátibus resurgámus. Per Dóminum, etc. ℟. Amen.

*Le Rect.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Depuis les Complies du Samedi Saint jusqu'aux Complies du Samedi après la Pentecôte.* *Antienne.*

REgína cœli, lætáre, Allelúia.
Quia quem meruísti portáre, Allelúia.
Resurréxit sicut dixit, Allelúia.
Ora pro nobis Deum, Allelúia.

℣. Gaude, et lætáre, Virgo María, Allelúia.

℟. Quia surréxit Dóminus verè, Allelúia.

OREMUS.

DEus, qui per Resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi, famíliam tuam lætificáre dignátus es: præsta quǽsumus, ut per ejus Genitrícem Vírginem Maríam, perpétuæ capiámus gáudia vitæ. Per eúmdem Christum, etc. ℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. *Le Chœur.* Amen.

*Depuis les Complies du Samedi après la Pentecôte jusqu'à l'Avent, on dit l'Ant. suivante, tous à genoux.*

*Antienne.*

SAlve Regína, Mater misericórdiæ, vita, dulcédo, et spes nostra, salve. Ad te clamámus éxules, fílii Evæ. Ad te suspirámus geméntes et flentes in hac lacrymárum valle. Eïa ergo advocáta nostra, illos tuos misericórdes óculos ad nos convérte. Et Jesum benedíctum fructum ventris tui, nobis post hoc exílium osténde. O clemens ! ô pia ! ô dulcis Virgo María !

℣. Ora pro nobis, Sancta Dei Génitrix.

℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

OREMUS.

OMnípotens sempitérne Deus, qui gloriósæ Vírginis Matris Maríæ corpus et ánimam, ut dignum Fílii tui habitáculum éffici mererétur, Spíritu Sancto cooperánte præparásti ; da, ut cujus commemoratióne lætámur, ejus piâ intercessióne ab instántibus malis, et à morte perpétua liberémur. Per eúmdem, etc. ℟. Amen.

℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

II. Office. *Depuis l'Avent jusqu'à la Nativité, après l'Ant.* Spíritus Sanctus, etc.

*Tous les Pénitens à genoux, le Recteur dira :* Kyrie eléison.

℟. Christe eléison. Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus qui de beátæ Maríæ Vírginis útero, Verbum tuum, Angelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti : præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam Dei Genitrícem crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum. Qui tecum vivit et regnat, etc. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣ Benedícat et custódiat nos omnipotens et misericors Dóminus, Pater, et Fílius, et Spíritus Sanctus.

*Le Chœur.* Amen.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

℣. *Le Recteur.* Dóminus det nobis suam pacem.

*Le Chœur.* ℟. Et vitam ætérnam. Amen.

*Antienne.*

ALma Redemptóris Mater, quæ pérvia cœli Porta manes, et stella maris, sucúrre cadénti, Súrgere qui curat pópulo, tu quæ genuísti, Natúrâ miránte, tuum sanctum Genitórem, Virgo priùs ac postériùs, Gabriélis ab ore Sumens illud Ave, peccatórum miserére.

℣. Angelus Dómini nuntiávit Maríæ.

℟. Et concépit de Spíritu Sancto.

OREMUS.

GRátiam tuam, quæsumus, Dómine, méntibus nostris infúnde; ut qui Angelo nuntiánte, Christi Fílii tui incarnatiónem cognóvimus: per passiónem ejus et crucem ad resurrectiónis glóriam perducámur. Per eúmdem, etc. ℟. Amen.

℟. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

III. Office. *Depuis la Nativité jusqu'à la Purification, après l'Ant.* Magnum hæreditátis, etc.

*Le Recteur, tous les Pénitens à genoux, dira :*

℟. Christe eléison, Kyrie eléison.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

OREMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ virginitáte fœcúndâ, humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum : Qui tecum vivit et regnat, in unitáte Spíritûs Sancti Deus. Per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

℣. Benedícat et custódiat nos omnípotens, et misericors Dóminus, Pater, et Fílius, et Spíritus Sanctus.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur.* Pater noster, *à voix basse.*

℣. Dóminus det nobis suam pacem.

℟. Et vitam ætérnam. Amen.

*Antienne.*

ALma Redemptóris Mater, quæ pérvia cœli

Porta manes, et stella maris, succúrre cadenti,

Súrgere qui curat pópulo, tu quæ genuísti,

Natúrâ miránte, tuum sanctum Genitórem,

Virgo priùs ac postériùs, Gabriélis ab ore
Sumens illud ave, peccatórum miserére.

℣. Post partum Virgo invioláta permansísti.

℟. Dei Génitrix, intercéde pro nobis.

ORÉMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ Virginitáte fœcundâ, humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum fílium tuum. Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs Sancti Deus. Per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

*Le Recteur.* ℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

¶ *Il faut remarquer que le jour de la Purification, à Complies, on dit,* Ave Regína cœlórum, etc. *pag.* 674.

# MANIÈRE
## DE DISTRIBUER LES SAINTS DU MOIS.

*Le Recteur aura les Saints et Sentences du mois entre ses mains, en nombre égal aux noms du catalogue de la Compagnie; et les Sacristains mettront dans une boîte tous les noms mêlés confusément; et l'heure de les distribuer étant venue, le Recteur sortira de sa place ordinaire pour aller s'agenouiller aux marches de l'Autel; pendant cela, tous les Confrères s'agenouilleront aussi chacun en son banc, et le Recteur commencera et dira seul:*

Sancti Dei omnes intercédere dignémini pro nostra ómniumque salúte.

℣. Lætámini in Dómino, et exultáte justi.

*Le Ch.* ℟. Et gloriámini omnes recti corde.

*Le Recteur.* OREMUS.

PRótege, Dómine, pópulum tuum, et Apostolórum tuórum Petri et Pauli, et aliórum Apostolórum patrocínio confidéntem perpétuâ defensióne consérva.

OMnes Sancti tui, quæsumus, Dómine, nos ubíque ádjuvent; ut dum eórum mérita cólimus, patrocínia sentiámus, et pacem tuam nostris concéde tempóribus, et ab Ecclésia tua cunctam repélle nequítiam;

iter, actus et voluntátes nostras, et ómnium famulórum tuórum in salútis tuæ prosperitáte dispone : benefactóribus nostris sempitérna bona retríbue : et ómnibus fidélibus defúnctis réquiem ætérnam concéde. Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

*L'Oraison finie, le Recteur se lèvera et se mettra dans sa chaire, et alors le premier Sacristain tirera une des cartes sur lesquelles chacun des noms contenus au catalogue seront inscrits, et lira à haute voix le nom de celui qui se trouvera marqué ; à l'instant, s'il est en la compagnie, il sortira de sa place, et ira se mettre à genoux à côté dudit Recteur, ayant, comme lui, le visage tourné vers l'Autel. Pendant cela, le Recteur tirera la Sentence sans choix, telle qu'elle lui viendra à la main, et la lira tout haut, et la donnera à celui qui sera venu la prendre, qui, en la recevant, la baisera dévotement. Ensuite, le premier Sacristain tirera un autre carton, et le lira, et ainsi on continuera jusqu'à la fin. Si celui qui sera appelé est absent, le Recteur lira seulement le nom du Saint, et remettra sa Sentence au second Sacristain, pour la rendre quand il en sera requis. La distribution faite, le Recteur retournera aux marches de l'Autel pour s'agenouiller, et dira les Litanies des Saints, auxquelles les Confrères à genoux répondront, comme ci-devant, page 375.*

# MANIÈRE

## *De sonner les Offices, Sermons, Processions, Enterremens et Assemblées particulières.*

LES Confrères sauront la manière qu'on tiendra à sonner les Offices, les Sermons et les Processions, afin qu'ils puissent juger, par la distinction de la sonnerie, le temps qu'ils auront pour se trouver en la Chapelle à l'heure qu'on les commencera; et que venant à la charge de Sacristain, ils soient tous instruits à cet Office.

Vêpres et Matines seront sonnées à cloche ébranlée par trois diverses fois, distinguées à la fin par tints, un, deux et trois.

Au *Te Deum*, on sonnera la cloche ébranlée sans tinter.

Au *Benedictus*, de même à cloche ébranlée; mais on ajoutera à la fin, pour marque du premier coup de la Messe, vingt tints.

A la fin de Prime, quarante tints seulement, pour le second coup de la Messe.

A la fin de Tierce, trois tints pour faire entrer le Prêtre à l'Autel.

Sexte et None étant dites après la Messe, ne seront point sonnées.

Les Processions seront sonnées à trois divers coups, et à cloche ébranlée, en égalité d'interstices, une heure et demie avant qu'on les commence; les coups seront distingués par les tints à la fin : le premier en aura deux; le second, quatre; le troisième, six.

Les Sermons seront sonnés en un seul coup par tints, l'espace d'un quart d'heure.

Les Assemblées particulières, en un seul coup aussi, mais distinguées en cette sorte: c'est qu'au commencement on sonnera à cloche ébranlée; au milieu, par tints; et à la fin, à cloche encore ébranlée.

Aux Offices pour les Morts, on sonnera à l'heure du trépas d'un Confrère, ou d'une Sœur, l'espace d'une demi-heure, par tints lentement touchés.

Le soir, avant l'Enterrement, et avant le jour d'Office pour eux, on sonnera, après l'*Ave Maria*, pour un homme, trois fois à cloche ébranlée; pour une femme, deux fois seulement.

## *PRIÈRES ET ORAISONS qui se disent à la fin de l'Office.*

*Le Recteur dira* : Mes Frères, nous dirons le *Salve Regina* pour nos Confrères malades, et pour ceux qui sont en voyage.

*L'un et l'autre Chœur disent ensemble* :

SAlve, Regína, Mater misericórdiæ, vita, dulcédo, et spes nostra, salve. Ad te clamámus éxules, fílii Evæ. Ad te suspirámus geméntes et flentes in hac lacrymárum valle. Eia ergo Advocáta nostra, illos tuos misericórdes óculos ad nos convérte. Et Jesum benedíctum fructum ventris tui, nobis post hoc exílium osténde. O clemens ! ô pia ! ô dulcis Virgo María !

*Le Recteur*. ℣. Ora pro nobis, Sancta Dei Génitrix.

*Le Chœur*. ℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

*Le Recteur*. OREMUS.

OMnípotens, sempitérne Deus, salus ætérna credéntium, exáudi nos pro fámulis tuis et frátribus nostris infírmis quibus misericórdiæ tuæ implorámus auxílium,

ut rédditâ eis sanitáte, gratiárum tibi in Ecclésia tua réferant actiónes. Per Christum Dóminum nostrum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Si c'est pour un seul, il dira :*

EXáudi nos pro infirmo fámulo tuo fratre nostro, pro quo misericórdiæ tuæ implorámus auxílium : ut rédditâ ei sanitáte, gratiárum tibi in Ecclésia tua réferat actiónes. Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

*Pour ceux qui sont en voyage.*

*Le Recteur.* OREMUS.

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris, et viam famulórum tuórum in salútis tuæ prosperitáte dispóne : ut inter omnes vitæ hujus varietátes, tuo semper protegántur auxílio. Per Dóminum, etc.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur.* Nous dirons le *De profundis* pour nos Confrères trépassés.

*Le premier Chœur dit :*

DE profúndis clamávi ad te, Dómine, Dómine, exáudi vocem meam.

*Le second Chœur répond :*

Fiant aures tuæ intendéntes in vocem deprecatiónis meæ, etc. *comme ci-devant, page 373.*

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine.
Et lux perpétua lúceat eis.
*Le Recteur.* ℣. A porta ínferi.
*Le Chœur.* ℟. Erue, Dómine, ánimas eórum.
*Le Recteur.* ℣. Requiéscant in pace.
*Le Chœur.* ℟. Amen
*Le Recteur.* ℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.
*Le Chœur.* ℟. Et clamor meus ad te véniat.
*Le Recteur.* OREMUS.

DEus, véniæ largítor et humánæ salútis amátor, quæsumus cleméntiam tuam; ut nostræ Congregatiónis frátres, propínquos, et benefactóres, qui ex hoc século transiérunt, beátâ Maríâ semper Vírgine intercedénte cum ómnibus Sanctis tuis, ad perpétuæ beatitúdinis consórtium perveníre concédas.

FIdélium Deus ómnium cónditor et redémptor, animábus famulórum famularumque tuárum remissiónem cunctórum tríbue peccatórum : ut indulgéntiam quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequántur. Qui vivis et regnas, Deus, per ómnia sécula seculórum.

*Le Chœur.* ℟. Amen.
*Le Recteur.* ℣. Requiem ætérnam dona eis, Dómine.

*Le Chœur.* ℟. Et lux perpétua lúceat eis.

*Le Recteur.* ℣. Requiéscant in pace.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Chœur.* ℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace.

*Le Chœur.* ℟. Amen.

*Le Recteur dira* : Nous dirons un *Pater* et un *Ave* pour nos bienfaiteurs.

---

# LES LITANIES

## DE LA GLORIEUSE VIERGE MARIE,

QUI se disent toutes les fêtes de Notre-Dame, et tous les Samedis au soir de l'année, et quand le Recteur le trouve à propos.

*Il faut remarquer que lorsqu'on dit les Litanies suivantes pour un malade, au lieu de dire* Ora pro nobis, *on dit* Ora pro eo. *Et pour plusieurs on dit* Ora pro eis. *Les Choristes commencent, et le Chœur répond.*

KYrie eléison.

*Le Chœur.* Christe eléison.

Kyrie eléison, Christe eléison.

Christe audi nos.

Christe

Christe exáudi nos.
Pater de cœlis Deus, miserére nobis.
Fili Redémptor mundi Deus, mis. nobis.
Spíritus Sancte Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas unus Deus, miserére nobis.
Sancta María, ora pro nobis.
Sancta Dei Génitrix, ora pro nobis.
Sancta Virgo Virgínum, ora pro nobis.
Mater Christi, ora pro nobis.
Mater dívinæ grátiæ, ora pro nobis.
Mater puríssima,
Mater castíssima,
Mater invioláta,
Mater intemeráta,
Mater amábilis,
Mater admirábilis,
Mater Creatóris,
Mater Salvatóris,
Virgo prudentíssima,
Virgo veneránda,
Virgo prædicánda,
Virgo potens,
Virgo clemens,
Virgo fidélis,
Spéculum justítiæ,
Sedes Sapiéntiæ,
Causa notræ lætítiæ,

Ora pro nobis.

Vas Spirituále,
Vas honorábile,
Vas insígne devotiónis,
Rosa mystica,
Turris Davídica,
Turris ebúrnea,
Domus áurea,
Fœderis arca,
Jánua cœli,
Stella matutína,
Salus infirmórum,
Refúgium peccatórum,
Consolátrix afflictórum,
Auxílium Christianórum,
Regína Angelórum,
Regína Patriarchárum,
Regína Prophetárum,
Regína Apostolórum,
Regína Martyrum,
Regína Confessórum,
Regína Vírginum,

Ora pro nobis.

Regína Sanctórum ómnium, ora pro nobis.
Regína per infiníta sécula, ora pro nobis.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi,
Parce nobis, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi,
Exáudi nos, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, miserére nobis.

*Le Recteur.* ℣. Ora pro nobis, Sancta Dei Génitrix.

*Le Chœur.* ℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi. OREMUS.

COncéde nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis et córporis sanitáte gaudére : et gloriósâ beátæ Maríæ semper Vírginis intercessióne à præsénti liberári tristítia, et ætérnâ pérfrui lætítiâ. Per Dóminum nostrum, etc.

IN hac hora hujus diéi, tuâ nos, Dómine, reple misericórdiâ, ut per totum diem exultántes divínis láudibus júgiter delectémur : et nos fámulos tuos ab omni adversitáte custódi.

OMnípotens clementíssime Deus, qui hodiernâ die hanc Congregatiónem in loco isto, ad glorificándum nomen sanctum tuum adunári fecísti, te supplíciter obsecrámus, ut nos fratrésque nostros, fácias tuis obtemperáre mandátis : et intercedénte gloriósâ semper Vírgine Maríâ cum ómnibus Sanctis, nos fámulos tuos, atque loca nostra ab omni adversitáte custódi. Qui vivis, etc. ℟. Amen.

## *Oraison pour les Malades.*

OMnípotens sempitérne Deus, salus ætérna credéntium, exáudi nos pro fámulis tuis frátribus nostris infírmis, pro quibus misericórdiæ tuæ implorámus auxílium; ut rédditâ eis sanitáte, gratiárum tibi in Ecclésia tua réferant actiónes. Per Christum Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

*Quand c'est pour un seul, il faut dire :*

EXáudi nos pro infírmo fámulo tuo fratre nostro, pro quo misericórdiæ tuæ implorámus auxílium; ut rédditâ ei sanitáte, gratiárum tibi in Ecclésia tua réferat actiónes. Per Christum Dóminum, etc. ℟. Amen.

---

## *Prières pour le Roi, que l'on dit tous les matins après la Messe, et tous les Samedis au soir après les Litanies de la Vierge.*

### *Psaume* 19.

EXáudiat te Dóminus in die tribulatiónis : prótegat te nomen Dei Jacob.

Mittat tibi auxílium de sancto; et de Sion tueátur te.

Memor sit omnis sacrifícii tui : et holocáustum tuum pingue fiat.

Tríbuat tibi secúndùm cor tuum : et omne consílium tuum confírmet.

Lætábimur in salutári tuo : et in nómine Dei nostri magnificábimur.

Impleat Dóminus omnes petitiónes tuas: nunc cognóvi quoniam salvum fecit Dóminus Christum suum.

Exáudiet illum de cœlo sancto suo : in potentátibus salus déxteræ ejus.

Hi in cúrribus, et hi in equis : nos autem in nómine Dómini Dei nostri invocábimus.

Ipsi obligáti sunt, et cecidérunt : nos autem surréximus, et erécti sumus.

Dómine, salvum fac Regem : et exáudi nos in die quâ invocavérimus te.

Glória Patri, etc.

*Le Rect.* ℣. Dómine, salvum fac Regem nostrum Ludovicum.

*Le Chœur.* ℟. Et exáudi nos in die quâ invocavérimus te.

OREMUS.

DEus regnórum ómnium, et Christiáni maximè, protéctor impérii : da servo tuo Regi nostro Ludovico triúmphum vírtútis tuæ scienter excólere : ut, qui tuâ institutióne est princeps, tuo sit semper múnere potens. Per Dóminum nostrum. etc. Amen.

*A la fin de tous les Offices, on dit le* Miserére meî, etc. *comme ci-devant, pag.* 369.

*Etant à genoux, le Recteur dit :*

SUscipe, clementíssime Deus, précibus et méritis beátæ Maríæ semper Vírginis, et ómnium Sanctórum et Sanctárum, offícium servitútis nostræ; et si quid dignum laude égimus, propítius réspice. Qui in Trinitáte perfécta vivis et regnas, Deus : Per ómnia sécula seculórum. Amen.

---

## ANTIENNE

### DE LA GLORIEUSE VIERGE MARIE,

*Qui se chante aux Fêtes de Notre-Dame, à la fin de l'Office, ou quand le Recteur le trouve à propos.*

INvioláta, íntegra et casta es, María,
Quæ es effécta fúlgida cœli porta.
O Mater alma Christi charíssima,
Súscipe pia laudum præcónia.
Nostra ut pura péctora sint et córpora,
Te nunc flágitant devóta corda et ora;
Tua per precáta dulcísona,
Nobis concédas véniam per sécula.

O benígna ! ô Regína ! ô María !
Quæ sola inviolàta permansísti.

*Le Recteur.* ℣. Ora pro nobis, Sancta Dei Génitrix.

*Le Chœur.* ℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

ORÉMUS.

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ Virginitáte fœcúnda, humáno géneri præmia præstitísti : tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus Auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum, etc.

---

## *ACTE D'ACCEPTATION de la Mort.*

J'Adore, ô mon Dieu ! votre être éternel, je remets entre vos mains celui que vous m'avez donné, pour être détruit quand il vous plaira, par la mort que j'accepte avec soumission, en union de celle de JÉSUS-CHRIST, en esprit de pénitence ; et dans cette vue je m'en réjouis, et j'espère que l'acceptation que j'en fais attirera sur moi votre miséricorde, pour me faire faire heureusement ce redoutable passage.

Je désire, ô mon Dieu ! par ma mort, vous faire un sacrifice de moi-même, pour rendre hommage à la grandeur de votre être par l'anéantissement du mien.

Je désire que ma mort soit un sacrifice d'expiation qui vous agrée, ô mon Dieu ! pour satisfaire à votre justice

pour tant d'offenses que j'ai commises; et dans cette vue j'accepte tout ce que la mort a de plus affreux aux sens et à la nature.

Je consens, ô mon Dieu! à la séparation de mon âme avec mon corps, en punition de ce que par mes péchés je me suis séparé de vous; j'accepte la privation de l'usage de mes sens, en satisfaction des péchés que j'ai commis par eux.

J'accepte, ô mon Dieu! que je sois foulé aux pieds et caché en terre, pour punir mon orgueil qui m'a fait chercher à paroître aux yeux des créatures; j'accepte qu'elles m'oublient, et qu'elles ne se souviennent plus de moi, en punition des plaisirs que j'ai eu d'être aimé d'elles.

J'accepte la solitude et l'horreur du tombeau, pour réparer mes dissipations et mes amusemens; j'accepte enfin la réduction de mon corps en poudre et en cendre, et qu'il soit la pâture des vers, en punition de l'amour désordonné que j'ai eu pour mon corps. O poudre! ô cendre! ô vers! je vous reçois, je vous chéris et je vous regarde comme les instrumens de la justice de mon Dieu, pour punir la gloire et l'orgueil qui m'ont rendu rebelle à ses ordres; vengez ses intérêts; réparez les injures que je lui ai faites; détruisez ce corps de péchés, cet ennemi de Dieu, ces membres d'iniquités, et faites triompher la puissance du Créateur sur la foiblesse de son indigne créature: je m'y soumets, ô mon Dieu! et au jugement, tel qu'il soit, que vous ferez de mon âme au moment de ma mort.

Ainsi soit-il.

*FIN.*

# TABLE

*POUR trouver facilement ce qui est contenu en ce Bréviaire.*



*Les Règles et Statuts de la Compagnie des Pénitens Blancs de Saint Laurent-les-Grenoble.*

PREMIÈRE PARTIE.

# TABLE.

## SECONDE PARTIE

*Contenant les Règles particulières des Officiers de la Compagnie.*

# TABLE.

## *La Manière de recevoir les Novices.*



## *Commémoraisons des Dimanches, Fêtes mobiles et jours fériés de toute l'année.*

### *Commémoraisons propres des Saints.*



### *Fêtes de Décembre.*



### *Fêtes de Janvier.*

### *Fêtes de Février.*



### *Fêtes de Mars.*



### *Fêtes d'Avril.*



*Fêtes*

*Fêtes de Mai.*



*Fêtes de Juin.*



*Fêtes de Juillet.*

## *Fêtes d'Août.*



## *Fêtes de Septembre.*

*Fêtes d'Octobre.*



*Fêtes de Novembre.*



*ORAISONS COMMUNES DES SAINTS.*

*Fin de la Table.*

*On trouve chez le même Libraire :*

GRADUEL ROMAIN, noté, avec les rubriques françaises, *in*-12, jolie édition sur caractère neuf, *Lyon*, 1806, *reliure en basane noire, trnache cinabrée*, 3 fr.

VESPÉRAL ROMAIN, noté, avec les rubriques françaises, *in*-12, jolie édition sur caractère neuf, *Lyon*, 1806, *reliure en basane noire, tranche cinabrée*, 3 fr.

OFFICE du très-Auguste et très-Saint Sacrement de l'Autel, pour dire dans les compagnies des Séculiers, et très-utile et nécessaire à ceux qui sont de la Confrérie ; augmenté de plusieurs Oraisons pour la Confession et la Communion ; *nouvelle édition*, *in*-12, *petit format*, *reliure en parchemin*, 1 fr. 25 c.